

(SJIF) Impact Factor-7.675

2021-22  
ISSN-2278-9308

# *B.Aadhar*

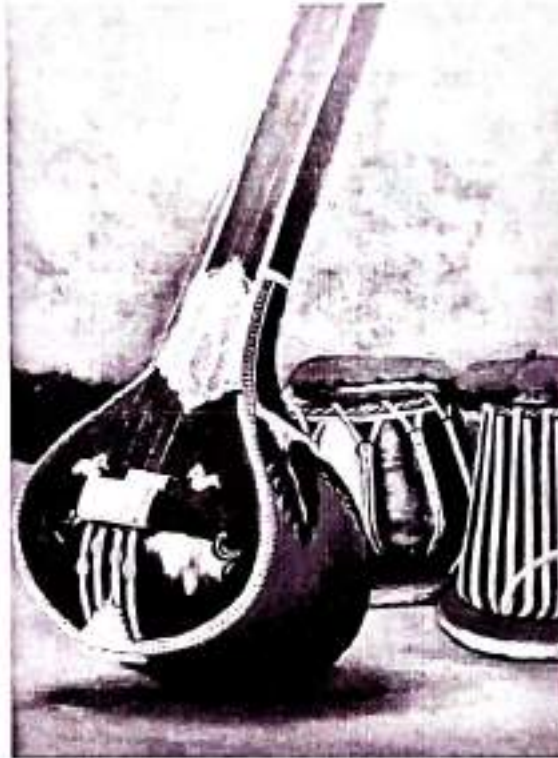
Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

**November -2021**

SPECIAL ISSUE 328 (CCCXXVIII)

**नवीन शैक्षणिक धोरणात संगीताची भूमिका**



Chief Editor

**Prof. Virag S. Gawande**

Director

Aadhar Social

Research & Development

Training Institute Amravati

Editor

**Prof. Kaumudi Dattatry Kshirsagar**

Department of Music

Sitabai Arts, Commerce &

Science College Akola

Dist.Akola.



**This Journal is indexed in :**

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

**Aadhar PUBLICATIONS**





## लोककलाओं में लोकसंगीत की महत्वपूर्णता

डॉ. मीनल भोंडे

प्राचार्य, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय,  
अमरावती

सोनाली आसरकर शिलेदार

सहाय्यक प्राध्यापक  
महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय,  
अमरावती

सारांश :

'लोककला' इस शब्द में 'लोक' का अर्थ जन साधारण से है। लोककलाओं में लोकसंस्कृति लोक परंपरा द्वारा जन साधारण का जीवन प्रतिबिंबित होता है। भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन होने का सहज मार्ग लोककलाओं में है। लोकसंगीत में भी भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब सहजरूपसे दिखाई देता है। जन साधारण का संगीत यह लोकसंगीत है जो लोक मानस की सहज भावनाओं की अभिव्यक्ति है। लोकसंगीत की विशेषताओं से उसकी महत्वपूर्णता सिद्ध होती है। जो नई पिढी को ज्ञात होना आवश्यक है।

प्रस्तावना -

कला मानवी जीवन के अत्यंत निकट है। कला और मानवी जीवन एक दुसरे के पुरक है ऐसा भी कहा जा सकता है। विशेष रूप से लोककलाओं का जन सामान्य से गहरा संबंध है। जन सामान्यों की जीवन शैली लोककलाओं में प्रतिबिंबित होती है, तथा व्यक्ती के सहज भावों की अभिव्यक्ती की अमता लोककलाओं में है। भारत जैसे विशाल देश की सभ्यता एवं संस्कृति बहुत प्राचीन है, तथा विशेषताओंसे परिपूर्ण है। इन विशेषताओं में आदर्शों, मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है, एवं साथ ही भाषा, वेशभूषा में भी विविधता दिखाई देती है। इसी विविधता तथा संस्कृति का दर्शन लोककलाओं में होता है। भारत में लोककलाओं में भी विभिन्नता होते हुए अनेक लोककलाएं विद्यमान हैं। प्रयोगसिद्ध लोककला में लोकनाट्य, लोककला, विधीनाट्य के साथ लोक संगीत और नृत्य समाविष्ट होते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से लोकनृत्य का बहुत महत्व है जिससे समाज के विभिन्न संस्कारों, पूजापद्धतियों, धार्मिक विश्वास तथा व्यवहार आदी का परिचय मिलता है किसी भी प्रांत की विशेषता का दर्शन लोकनृत्य से बखूबी होता है यह सामुहिक सौंदर्य का प्रतिक होते हुए इस से विविधता में एकता दिखाई देती है। इन सबके गीत नृत्य के साथ प्रयुक्त वाद्यों में भी प्रांतानुसार विविधता दिखाई देती है। लोकसंगीत में सौंदर्य के साथ सहजता तथा भिन्न प्रसंगों में भाव प्रकटीकरण का अवसर प्राप्त होता है।

लोकसंगीत की कई विशेषताएं हैं और इन विशेषताओं के साथ ही लोकसंगीत नई पिढी को ज्ञात होने से लोकसंस्कृति तथा परंपरा का संवर्धन होने में सहायता होती है और यह आवश्यक है।

लोकसंगीत की महत्वपूर्णता

लोकसंगीत एक ऐसा संगीत है जो प्रकृति एवं सृष्टि से प्रभावित होते हुए किसी भी नियमों तथा सिद्धांतों के बंधन में न रहकर अपने भावों को प्रकट करने के लिए सहज रूप से गाया जाता है तथा सरल भाषा एवं धुनों से जन सामान्यों को आकर्षित करता है, वह लोकसंगीत कहा जाता है। संस्कृति में सन्निहित कला परंपरा, प्रथा, संस्कार का दर्शन लोकसंगीत में होता है। इससे संस्कृति का मूल स्वरूप सामने आता है। रवीन्द्र नाथ टागोर के अनुसार संस्कृति का सुखद संदेश देजाने वाली कला को लोकसंगीत कहते हैं।

लोकसंगीत जन - जीवन की उल्लासमय अभिव्यक्ती है अतः लोकमानसका जीवन सदैव संगीतमय रहा है। जनसाधारण द्वारा गायन, वादन और नृत्य के माध्यम से मनोभावों को स्वाभाविक रूपसे अभिव्यंजीत करना यह लोकसंगीत की विशेषता है, जिससे भारतीय संगीत का सच्चा रूप उभरकर सामने आता है। लोकसंगीत की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं।

मौखिक परंपरा - लोकसंगीत स्वयंप्रकृत है। विशेष रूप से किसी प्रकारकी शिक्षा की आवश्यकता न होते हुए प्रसंगानुरूप आंतरिक भावनाओं को संगीत के माध्यम से स्वाभाविकतः स्वयं प्रस्फुटीत होता है। पिढी दर पिढी यह सुपुर्द होता है तथा पिढी दर पिढी गाये जाने वाले गीतों के गीत प्रकार या संगीतकारोंका उल्लेख भीकहीप्राप्त नहीं होता। यहकिसी व्यक्ती विशेष का न रहने हुए जनसाधारण का लोकसंगीत हो जाता है।

लोकभाषा - लोकसंगीत, विविध प्रांत की भाषा अनुसार होते हैं। सहज एवं सरल लोकभाषा में गीत व्यक्ती सहज समझकर गाता है। लोकभाषा का लालित्य, मिठास, लहेजा इनका प्रतिबिंब लोकगीतों में दिखाई देता है। किसी भी प्रकारका शास्त्र, सिद्धांत तथा व्याकरण न होने से स्वच्छंद संगीत है। तांत्रिक युग में वह आज भी कृत्रिमता से दूर है।





लोकसंगीत का काव्य अत्यंत सरल एवं प्रसंगानुरूप होता है। काव्य भाव अनुसार वाद्य का प्रयोग होता है मूल गीत किसी व्यक्ती की शब्द एवं स्वर रचना होते हुए भी वह गाते गाते लोकगीत हो जाती है।

स्वरतत्व - लोकसंगीत में लोकधुन तीन या चार स्वरों पर ही आधारित होती है। या कभी पाच स्वरों पर। इन्हीं स्वरों पर सरल भाषा में सामुहिक गीतों के पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन के भावों को व्यक्त किया जाना यह एक विशेषता है। स्वररचना प्रसंग के अनुरूप होती है। कई लोकधुनों में शास्त्रीय संगीत के अनेक रागों की छाया दिखाई देती है तथा कई राग इससे निर्माण हुए हैं। इसीलिए कहा जाता है की भारतीय शास्त्रीय संगीत या रागसंगीत का मूल स्रोत लोकधुने है। अनेक लोकगीतों में सारंग, खमाज, काफी, तिलककामोद इन रागों की छाया मिलती है। देस, पिलू, पहाड़ी, गारा यह परंपरागत धून उगम राग है जो सभी गाते हैं। कुछ राग स्वतंत्र रूप से गाये जाते हैं या कुछ राग उपशास्त्रीय प्रकार में प्रयुक्त होते हैं। लोकसंगीत से धून उगम रागों की निर्मिती में पं. कुमार गंधर्वजी का महत्वपूर्ण योगदान है उन्होंने अनेक धून उगम रागों की निर्मिती की है अहीमोहिनी, वीहड भैरव, मधसुरजा, सहेलीतोड़ी, लगनगंधार, मालवती, संजारी यह पं. कुमार गंधर्वजी द्वारा निर्मित कुछ धून उगम राग है अनुपरागविलास इस पुस्तक में इन रागों की बंदिशे है जो पं. कुमार गंधर्वजी का ही है।

ताल एवं लय तत्व- लय लोकसंगीत का एक अविभाज्य अंग है। इसीलिए उसका संरक्षण तथा संवर्धन लोकसंगीत की सभी धाराओं में आदिकाल से विद्यमान है। लोकगीत गाने, बाजाने या नृत्य के लिए विशिष्ट लय होती है। साधारणतः मध्य तथा द्रुत लय का प्रयोग अधिकतर होता हुआ दिखाई देता है। विलंबित लय का प्रयोग अल्प स्वरूप में होता है या केवल अनिबद्ध रचना में होता है। विभिन्न अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग लोकसंगीत के प्रकार अनुसार होता है तथा लोकगीत एवं नृत्य की लय का निश्चित स्वरूप जानते हुए विविधता का प्रयोग होता है। अतः अन्य देशों के लोक संगीत की तुलना भारतीय लोक संगीत में लयात्मकता का महत्व अधिक रहा है। शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त ताल लोकसंगीत की लयात्मकता से ही निर्माण हुए हैं। दादरा तथा केहरवा जैसे तालों का उपयोग लय प्रकार नुसार होता है। गीत या नृत्य के आरंभ में जो लय होती है वह सामुहिक तौर पर कायम रखना यह भी लोकसंगीत का वैशिष्ट्य है।

#### निष्कर्ष -

लोक संगीत शैली की विशेषताओं पर ध्यान देते हुए यह प्रतीत होता है कि लोक संगीत यह आदिम संगीत है, जो जन साधारण की सहज प्रवृत्ति है तथा लोक जीवन से प्रभावित होकर निकला है। लोकसंगीत व्यक्ती की जीवन शैली से जुड़े प्रत्येक प्रसंग के अत्यंत निकट है। अतः लोक संगीत की उत्पत्ति सहज, स्वाभाविक रूप से भावों की अभिव्यक्ती से है। लोक संगीत किसी व्यक्ती विशेष का न होते हुए जन सामान्य का है। मौखिक परंपरा, लोकभाषा, स्वरतत्व ताल एवं लयात्मकता इन लोकसंगीत की विशेषताओं पर ध्यान देते हुए यह ज्ञात होता है की संगीत की दृष्टि से तथा भारतीय संस्कृती के संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि से लोकसंगीत का महत्वपूर्ण स्थान है जो संगीत की सभी विधाओं की जननी है। लोकसंगीत स्वाभाविक होने से सभी कालों में विद्यमान है तथा चिरकाल रहनेवाला है।

#### संदर्भ ग्रंथ सूची -

- |                    |   |                     |
|--------------------|---|---------------------|
| १) निबंध संगीत     | - | लक्ष्मी नारायण गर्ग |
| २) भारतीय लोकसंगीत | - | विणा श्रीवास्तव     |
| ३) संगीत विशारद    | - | बसंत                |





20	ललित कलाओं में संगीत का स्थान	डॉ. नेत्रा श्रीकांत तेलहारकर	58
21	संगीत चिकित्सा	डॉ. मोनाली मसीह	61
22	संगीत चिकित्सा (Music Therapy)	डॉ. भाग्यश्री धनंजय मोकासदार	64
23	लोककलाओं में लोकसंगीत की महत्वपूर्णता	डॉ. मीनल भोंडे / सोनाली आसकर शिलेदार	66
24	संगीत चिकित्सा	प्रा. डॉ. धाडेश्वर संतोषराव मदनकर	68
25	संगीतकला आणि भारताचा सांस्कृतिक विकास	गंधार विश्राम कुलकर्णी	72
26	सांगीतिक चिकित्सा—सिध्दांत व प्रत्यक्ष उपयोगिता	डॉ. प्राजक्ता मोहन हसबनीस	79
27	संगीत और अध्यात्म एक विवेचन	सहा. प्रा. गजानन बी. काळे	81
28	संगीत कला: उपजीविकेचे एक सशक्त साधन	प्रा. किरण प्रकाश सावंत	84
29	आख्यानाचे लोककलेतील स्थान	प्रा. जगनाथ इंगोले	87
30	साहित्य व संगीत	प्रा. डॉ. साधना हरणे (मोहोड)	89
31	scope and limitations of online music theory	प्रा. डॉ. जयश्री विश्राम कुलकर्णी	93
31	सैध्दांतिक शास्त्र आणि संगीत कला	प्रा. डॉ. मुक्ता महल्ले	100
32	संगीत आणि सामाजिकशास्त्र	प्रतिभा क्षिरसागर	102
33	संगीत रोजगाराचे विविध आयाम - एक अभ्यास	प्रा. वैशाली चौरपगार (मोहोड)	105
34	महाराष्ट्राच्या लोकसंगीतामधील विविध अंतरंग	प्रा. डॉ. सुधीर मोहोड	109
35	ऑनलाईन संगीत शिक्षण पध्दती—मर्यादा आणि व्याप्ती !	प्रा. डॉ. ज्वाला नागले	111
36	Stress management through Music	Ms. Uttara Ratansing Tadavi	117
37	Music-For Mentally Challenged?	Ms. Mitali Katarnikar-Prabhune	119
38	Role of Hindustani Classical Music Therapy	Dr. Ajaykumar G. Solanke	123
39	Role of Music in Academic Stress Management	Dr. Niraj Lande	125
40	Chronicling Classical Music is Dispersion of Culture.	Miss. Amruta Vinayrao Kale	128
41	Role Of Music In Academic Stress Management	Dr Prachi S. Halgaonkar	131



**DIASPORIC ELEMENTS IN JHUMPA LAHIRI'S *THE NAMESAKE*,  
WITH AN EMPHASIS ON GOGOL****DR. MARIAM THOMAS**Associate Professor,  
Mahatma Phule College,  
Amravati**ABSTRACT**

*Diasporic writings record the experiences of diasporic communities that co-exist in varied socio-cultural settings. The Indian diasporic literature covers almost every continent and part of the world and its study reveals the common facets visible in the writings of the old diaspora and the new diaspora. These are, usually, nostalgia, homesickness, and sufferings due to being far off from their homeland. The mental trauma and anguish arising from the pull and push factors of belonging to the land of adoption while retaining their cultural traditions and thereby maintaining their attitude towards their motherland, made them reject everything Indian glorifying west and criticizing India. Dispersal of roots involves pain, alienation, identity crisis and other feelings to the acculturated ones. The Indo-American diasporic writer Jhumpa Lahiri has depicted the suffering of the protagonist in an unexpected manner. Her novel indicates how immigrants face cultural problems and difficulties in the foreign system. Lahiri shows that the immigrants feel enthusiastic about sticking to their own cultural beliefs but are forced to gradually accept and follow the cultural ways of the host country. They groom their own kids to be "bilingual" and "bicultural", and the children end up facing cultural dilemmas and displacement. Lahiri has a philosophical approach, presenting dislocation as a permanent human condition which cannot be changed through physical and simple actions. By analysing the novel, one can understand how the first generation immigrant suffers in an alien country as also the feelings of their children.*

**Keywords:** Diaspora, nostalgia, homesickness, alienation, homeland, identity crisis, trauma, cultural dilemma, immigrants, bilingual, bicultural, multiculturalism

**Introduction**

"Multiculturalism" is defined as the co-existence of different cultures. There is no homogenization or direct conformity in multiculturalism, neither does it encourage overtly different ethnic religious, lingual or racial constituents of a particular society to denigrate and alienate each other.

Jhumpa Lahiri's first novel, *The Namesake* (2003) explores the theme of transnational identity and trauma of cultural dislocation. Being "an Indian by ancestry, British by birth, American by immigration" (Nayak:206:2002) and her parents having the experience of "the perplexing bicultural universe" of Calcutta in India and the United States, she brings out the feelings of the characters poignantly.

**Special Issue****149****06 April 2022****Website:** [www.langlit.org](http://www.langlit.org)**Contact No.:** +919890290602

UGC Sponsored One Day Virtual International Conference on *Diasporic Literature, Culture and Identity* organized by Shri Shri Arts & Commerce College, Amravati, Maharashtra State, India and Late Narayanrao Amrutrao Deshmukh Arts & Commerce College, Chandur Bazar, Amravati, Maharashtra State, India.

Indexed: ICI, Google Scholar, Research Gate, Academia.edu, IBI, HFC, DRJI, The CiteFactor, COSMOS



**Multiculturalism**

If one is merely tolerating group differences, the person is not multicultural. Multiculturalism involves treating members of minority groups as equal citizens; offering recognition and positive accommodation through "group-differentiated rights," a term coined by Will Kymlicka (1995). It is the phenomenon of multiple cultures co-existing within a singular society, largely following the arrival of immigrant individuals and, later, entire communities. Supporters of multiculturalism state that the presence of different traditions and cultures can enrich society but the concept also has its critics. Multiculturalism occurs naturally when a society is willing to accept the culture of immigrants and the immigrants also willing to accept the culture of the land to which they migrate.

Kenan Malik, an Indian born English writer and lecturer states that "The experience of living in a society transformed by mass immigration, a society that is less insular, more vibrant and more cosmopolitan is positive."

While multiculturalism has been used as an umbrella term to characterize the moral and political claims of a wide range of disadvantaged groups, including African American, woman, gays and the disabled, most theorists of multiculturalism tend to focus their arguments on immigrants who are ethnic and religious minorities, nations and indigenous people.

Multiculturalism is closely associated with "Identity politics", "The politics of difference", and "The politics of recognition", all of which share a commitment to revaluing disrespected identities and changing dominant patterns of representation and communication that marginalizes certain groups.

**Immigrant Fiction**

People usually think of immigrant fiction as the encounter of the foreign-born with a presumably dominant Anglo-American culture. "Thematically, this fiction is the site where self-invention encounters its limits, where compromise and accommodation wrestle with the unappeasable. Linguistically, it is a fertile estuary infusing the Puritans' English with the dialect seasonings, syntactical corkscrews, and passionate utterances of the other", Philip Lopate.

In these novels, the immigrant experience is usually seen as initiating in a wild and open-ended adventure, with the protagonists moving across the world in the hope of beginning a new and more fruitful life. Accordingly, they break away from their past lives and enter the new land with eyes full of hope. However, with time, they become relegated to an urban ghetto or small town, and they begin looking for what they have lost— a feeling of home and community – in the diasporic community existing in the new lands.

Jhumpa Lahiri asserts in an interview,

**Special Issue****150****06 April 2022**Website: [www.langlit.org](http://www.langlit.org)

Contact No.: +919890290602

UGC Sponsored One Day Virtual International Conference on *Diaspora: Literature, Culture and Identity* organized by Shri Shivaji Arts & Commerce College, Amravati, Maharashtra State, India and Late Narayanrao Amrutrao Deshmukh Arts & Commerce College, Chandur Bazar, Amravati, Maharashtra State, India

- Indexed: ICI, Google Scholar, Research Gate, Academia.edu, IBI, IIFC, DRJI, The CiteFactor, COSMOS



*"I don't know what to make of the term 'immigrant fiction.' Writers have always tended to write about the worlds they come from. And it just so happens that many writers originate from different parts of the world than the ones they end up living in, either by choice or by necessity or by circumstance, and therefore, write about those experiences. If certain books are to be termed immigrant fiction, what do we call the rest? Native fiction? Puritan fiction? This distinction doesn't agree with me. Given the history of the United States, all American fiction could be classified as immigrant fiction. Hawthorne writes about immigrants. So does Willa Cather. From the beginnings of literature, poets and writers have based their narratives on crossing borders, on wandering, on exile, on encounters beyond the familiar. The stranger is an archetype in epic poetry, in novels. The tension between alienation and assimilation has always been a basic theme."*

She means to say that immigrant fiction need not be a genre in itself, for, it arises through the experiences of the writer. It is what the writers have themselves lived. The very act of categorizing or distinguishing her work from other American stories isolated and marginalized them, placing them in a "minority" bin. Whether it was meant to or not, it stamped an "us" and "them" label on stories and experiences, which is disheartening. It harks back to the basic dichotomy of 'Self' and the 'Other'.

### **Multicultural elements in Immigrant Fiction**

In most immigrant fiction, we witness the following multicultural issues: Diasporic communities, living in between, hybridity, alienation, sense of displacement, cultural dislocation, assimilation, cultural nostalgia and a sense of uprootedness.

Diaspora communities are communities of people living together in one country, who acknowledge that the old country- an idea seen in language, religion, custom always has some claim on their loyalties and emotions. Living in between is the feeling of being neither here nor there, without a sense of belonging experienced by both migrants and their children.

Hybridity is defined as the rejection of a single identity and a preference for multiple cultural locations and identities. Alienation is the feeling of not belonging to the culture of the country in which one is living. Sense of displacement or cultural dislocation is feeling of being in a place where one does not belong and sometimes does not even like.

Exile, another common phenomenon, in its literal sense, is a physical condition but the sense of exile is not necessarily a manifestation of a dislocated existence. The Indian diaspora in the West has experienced a physical displacement and, at times, feels exiled. The constant reinvention of characters is another facet of multiculturalism as, living in a country that is not one's own, leads a person to have multiple perspectives of life.

### ***The Namesake***

*The Namesake*, written in 2003 is the first novel by Jhumpa Lahiri. It explores many emotional and cultural themes, moving between events in Calcutta, Boston and New York. The novel examines the life of characters caught between two conflicting cultures with highly





distinct religious, social and ideological differences. The novel describes the struggles and hardships of a Bengali couple who immigrate to the United States to form a life outside of everything they are accustomed to.

Jhumpa Lahiri mentions the source of her novel when she says, "The way my parents explain it to me is that they have spent their immigrant lives, feeling as if they are on a river with a foot in two different boats. Each boat wants to pull them in a separate direction, and my parents are always torn between the two. They are always hovering, literally straddling two worlds."

The same sense of floating in between applies to Lahiri's character Ashoke and Ashima. In the novel, Lahiri explores the tug between the Indian World and the American world and the exploration is based on her own experience growing up in America as the child of immigrant parents. Her fictional character Gogol is very similar to herself. The novel has themes of identity, family, foreignness, dissatisfaction and the contrasting regions.

*The Namesake* is the story of Gogol, a kid, whose father decided to move to Boston after seeing his life saved unexpectedly, after a deadly train journey. The story notices its various characters being forced to reinvent themselves constantly to become familiar and comfortable with a new country and its underlying cultural concepts, aspects which are absolutely different from the ones they have known previously.

When Lahiri began writing it, she wanted to focus on the experiences of a Bengali American Kid. The unsettling ambivalence she herself has felt as an American– Indian, the feeling of somehow being "illegitimate in both cultures" has seeped into her novel also.

Based in a country where multiculturalism normally denotes ethnicity as well as race, the novel increasingly evolves issues related with diasporic hybridity. The characters in *The Namesake* constantly struggle with their hyphenated identity to seek out or to stick to their cultural definitions.

### Gogol

The protagonist of the novel lives in a world of deception, where we see that the inherent sense of security is not actual safety but rather a mirage. The post-modernist fragmentation of his psyche prompts Gogol to look desperately for the elusive feeling of peace in his various relationships. Lahiri is fascinated by people who have to mingle their identities with the practices of different lands in order to lead their life. The novel reminds the readers of her debut story collection not only by recapturing the motifs of diasporic literature and alienation but also by evoking the beauty of her enigmatic writing style.

Gogol is the child of immigrants born and raised in America. After his birth, his father named him Gogol because the name meant for him got lost in the mail. He is bought up with this name and finds it difficult to adjust to his proper name, Nikhil. The quote "He is afraid to be Nikhil, someone he doesn't know. Someone who doesn't know him," depicts his personality aptly.



The name Gogol is very unique as it is neither Indian nor American. This makes him feel a strange connection to Russian literature as well. In school the uniqueness of his name makes him feel strange and a little ashamed, due to which he changes his name to Nikhil in college.

The very first instance of identity crisis and alienation in Gogol is brought about by his unique name. But Gogol begins to realise the importance of his name when his father narrates to him the incident of the train accident. From the first conscious memory, he has hated his name. He feels angry when his teacher Mr. Lawson discusses Gogol and calls him an eccentric genius. When invited to a dorm party by Colin's older brother, he introduces himself to Kim as Nikhil, tentatively at first, and then inhaling the sensation of liberation it evoked in him. Thrilled by it, and inspired further by a Reader's Digest article on "Second Baptism", he legally adopts the new name.

Gogol feels at home at Yale, even though Ashima is outraged at it. Despite experiencing a sense of ease at the institution, his assimilation of the American culture is not absolutely spontaneous. As the first child, Gogol also inherits more of the homesickness of his parents than his younger sister Sonia. Therefore, he fails to merge with the American psyche but cannot feel at home in India either, enduring a feeling of aloofness and alienation in all his surroundings.

When he goes to join his father for the Thanksgiving, his train is suddenly halted because of a suicide attempt on the tracks. His father chooses this moment to tell him the story of his christening, and Gogol is overwhelmed suddenly. Not only through his name but also through his skin colour, his culture and his family values Gogol feels alienated in America. Consequently, he also feels alienated when he comes to India because though he looks like the Indians, he is not an Indian but a hybrid of the Indian and American cultures.

He is attracted to American girls who are modern and romantic and he finds his family is different from the typical American families. Gogol's relationships, first with Ruth, and then with Maxine, are a part of his growing up process. But these associations fail to impart him any sense of inner fulfilment. Rather, the cultural clash he has always felt within comes to the foreground in strange ways. For instance, Maxine's parents are very open and comfortable about Gogol's relationship with her and treat him like a member of their family. But, Ashoke and Ashima are conservative and uncomfortable around the couple.

Employing a banal, third person, present tense narrator she presents before us the pulls and tussles of the two cultures Gogol has to simultaneously inhabit. Jhumpa Lahiri, being the second generation immigrant herself, stands at a cross-roads of culture where she finds herself isolated in two separate cultures—one impenetrable culture of the past and a totally dissimilar one of the present. Hence, the representation of multiple identities of the protagonists in her works is the perfect metaphor for her own as well as general diasporic experiences. The second generation immigrants like herself, are depicted by her as hovering in the in-between spaces-between self and other, familiarity and strangeness, presence (present) and absence (past).





Throughout the novel, Gogol seems to be searching for the elusive feeling of belongingness which he is unable to attain. He says that Sonia, his sister found happiness in America but he cannot. He feels that most of the events in his life, including his marriage is a misstep and at the end of the novel he resigns himself to a life where he is unsure of the future.

### Conclusion

The autobiographical parallels to Lahiri's own childhood visits to India are quite obvious. She recalls how her parents could truly relax only during the weekend parties when they were with their Bengali friends. She had realized that she was not really Indian the way her cousins in Kolkata were, and she also found it hard to think of herself as fully American: "I thought it would be very much a betrayal of my parents. I inherited a sense of exile from them."

Lahiri presents before us an account of how a man, without clear cultural moorings, suffocates in a standardised world. The soulless comforts of Gogol's life fail to provide any inner fulfilment to him. The issues and problems Lahiri has raised in *The Namesake* are not exactly particulars of certain questions concerning circumstances within which men live, suffer or seek happiness; while the issues she has raised possess a topicality, they also touch upon some of the eternal dilemmas man has always faced. She probes into the problems of existence, suffering, love and loneliness, exposing the horrors of self-delusion. She shows us the impulses in man's nature, the sources his thoughts and emotions spring from.

Simultaneously she also shows us how chaotic the individual feelings can be, how much there is in a man which is contradictory and beyond understanding. Thus, we see the difficult elements of multiculturalism in the characters of *The Namesake*. Like Gogol faces alienation, a sense of displacement and cultural hybridity, while Ashoke feels the problems of an immigrant a little less, because of his comparatively cosmopolitan outlook. He also has a sense of being rooted in the Indian culture. Whereas Gogol has no culture, that is completely his own. Ashima, though in the beginning faces alienation and culture shocks, manages to settle down in the hybrid way of life. Jhumpa Lahiri depicts the feelings and experiences of immigrants and their children aptly.

Lahiri's *The Namesake* is an example of the Contemporary immigrant narration which doesn't place the idea of an 'American Drama' at the centre of the story, but rather positions the immigrant ethnic family within a community of cosmopolitan travellers. She chronicles dislocation and social unease in a fresh manner. She blends the two cultures and creates inner turmoil for many of her characters who struggle to balance the Western and Indian influence.

### REFERENCES

1. Ashcroft, Bill. Gareth Griffiths and Helen Tiffin. *Key Concept in Post-Colonial Studies: the key concept*, London: Routledge, 1989. Print.
2. Bhabha, Homi. *The Location of Culture*. London: Routledge, 1994. Print.
3. Cohen, Robert. *Global Diaspora: An Introduction*. UCL Press, 1997. Print.
4. Hall, Stuart. *Cultural Identity and Cinematic Representation*. Framework 36(1989): 68-81 print.
5. Lahiri, Jhumpa. *The Namesake*. Great Britain: Flamingo, 2003. Print.





## REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7031(UIF)

VOLUME - 11 | ISSUE - 7 | APRIL - 2022



### PORTRAYAL OF HUMANITARIAN PERSPECTIVES BY MULK RAJ ANAND

Dr. Marlam Thomas

Head, Dept. of English, Mahatma Jyotiba Fule M.V. Amravati.

#### ABSTRACT:

*This paper is an attempt to trace the humanitarian elements and perspectives in the novels of Indian English writers. For this purpose it deals mainly with the famous novelist and author Mulk Raj Anand and his incomparable novel "The Old Woman and the Cow". After a brief description of the story and the characters, the various aspects of humanitarian perspectives in the novel are analyzed and dealt with in detail. Different characters in the novel, their nature, behaviour with the major one, how they conspire to ruin and torture the helpless woman etc. are portrayed and the myriad shades of humanitarian perspectives they embody and exhibit throughout the story are delineated.*



**KEY WORDS:** humanist, perspectives, inception, multifarious, feasible, penchant, compassion, enlightenment, combatant, appeasement.

#### INTRODUCTION:

Indian writings in English had achieved a great depth of fame, name and importance in the realm of literature since its inception. There are many writers of Indian English on the scene, be it novelists, poets, dramatists, short story writers etc. in ancient times Indian writers in English were very few but with the arrival of the English men and their stay and rule in India and the onset of the Colonial Period, the number had increased tremendously. Undoubtedly, these new writers have tried their best to excel in every genre of writing and had achieved quite a creditable performance and carved a niche for themselves with their successfully creative depiction of multifarious themes. As it is not feasible to deal with all the Indian English novelists and their works in this paper, only one of them has been selected and his famous novel "The Old Woman and the Cow" has been preferred for this purpose.

#### Humanism of Mulk Raj Anand

The novelist Mulk Raj Anand was particularly chosen for this paper on account of his being the most famous humanist of modern times. Moreover he is an internationally hailed Indian novelist in English. He is a humanist to the core and some of the major characteristics of Anand's humanism are as follows: Always he upheld and emphasized the dignity of man overlooking factors like caste, creed and wealth. He was so zealous to use compassion as a living value. He strongly believed and proclaimed that art and poetry are the supreme tools for making possible the development of mankind. He was immensely popular for his crusade against superstition, feudalism and imperialism. Another prominent factor is that Anand's themes and characters are created with the major intention to bring back to life



the contemporary social situation as experienced by the individual himself. In many occasions it is seen that the writer's character finds himself in an unenviable circumstance. He realizes that he had become a victim of feeble traditions malignant customs such as a defied social order or a cruel administration.

Anand can most rightly be described as a humanist to the core. It is this constant faith in humanism that had enabled him to become a lovable man with infinite charm and several interests. Thus, in essence, he is a true friend, a tireless worker, an excited organizer, a prolific writer, a relentless champion for the cause of the poor and the meek, a savage combatant against inequality and injustice and above all a trustworthy humanist with unceasing faith in man and creative arts.

### The Purpose of Anand's Characterisation

It has already been mentioned above that Anand is a great humanist. Many of his characters have well acclaimed position in Indian English as well as in different spheres of literature. Anand has a clear intention while depicting his characters in his unique and typical fashion. The goal of his characterization was none other than to touch and awaken the humanist chords of the readers' heart. For this he portrays graphically the helpless characters grappling with their fate in their pitiful and hapless condition.

Another appreciable aspect of Anand's characterization is that he is a ruthless critic of all that is worn out and decaying, namely, dehumanizing and degrading traditions, customs, manners, out dated social and political institutions, reactionary thoughts, ideologies etc. he has a great yearning for delineating the soul of Indian thought and her culture. He could accomplish this most efficiently as he was the store house of a profound knowledge of the Indian mind and the outdated social systems and institutions that had undermined her fabric.

### The Technique of His Characterisation

Mulk Raj Anand was in possession of a peculiar and unique style of his own in depicting his characters. Truly, he was gifted with a penchant for exposing the contemporary situation through an analysis of the predicament of the men and women he portrays. He could achieve this easily and exactly as he had witnessed India in her myriad shades of enslavement, caste, poverty, religious archaism etc. It won't be an overstatement to claim that through the different characters of his works, Anand salutes the enduring heroism of the poor and the oppression women are forced to undergo. A closer look into the lives of his women characters reveal that all of them are the victims of habit, where man is ascribed the pride of place and is assigned with the social-cultural confirmation of female banishment.

### The Old Woman and the Cow

Anand is extremely popular for creating diverse novels and a plethora of characters. But this paper deals only with the novel "The Old Woman and the Cow". In this book Anand beautifully narrates the story of Gauri, a meek and gentle country woman who endures silently the entire quantum of the injustice and hardships imposed on her. There are many characters like her mother, mother in law, Kesari and even her husband Panchi who trouble her constantly. Fortunately for her, the meeting with the enlightened Colonel Mahindra paves the way for a transformation in her dull and dry life and also in her attitude to life. Under the influence of this man, Gauri becomes glowingly conscious of her intrinsic worth as an independent individual. Gauri "the gentle cow" is married to Panchi, "the holy bull". In course of time her husband Panchi also tries to free himself from the debasing influence of his uncle and aunt and the whole village was keen on finding fault. But, as usual, he fails and this very combat and effort of his, just like Gauri's fate, attracts the attention and arouses the sympathy of the readers.

### Humanistic Note in The Old Woman and the Cow

There are diverse aspects and perspectives humanism noticed in the novel "The Old Woman and the Cow". Anand's humanistic note is obviously reflected in the novel's strong plea for the identification and approval of women's rights. In the conventional socio-cultural set up of India, women remained unrealized, trapped, caged, oppressed and suppressed. The major principle of Anand's



humanism is that women need equality with men. He quite confidently voices his strong opinion that Indian women have every right to be treated equally with men folk of our country. While analyzing the major character of the novel, Gauri's life, it is noticed that her entire life a tale of torture and trauma. She is utterly powerless and just groans and moans under the distress male chauvinism. She is tortured and accused of being an inauspicious creature responsible for the mishaps of the family as well as even the draught in the village.

Panchi, being a bad husband, does not consider the veritable predicament of his wife Gauri and easily becomes a victim of Kesari's machinations. Kesari quite successfully makes him to believe that Gauri is really inauspicious and immoral. Later on, Gauri, like an animal or an object, is bartered away by a malicious and licentious uncle Amru and a greedy mother Lakshmi, all for money. On account of the fever and unhealthy condition of Gauri, she is shifted to Dr. Mahindra's hospital where she encounters a ray of hope for the first time in her life. Her contact and experiences with the reformist and gentle natured Mahindra effects a sea change in Gauri's life. Therefore, her transformation from a gentle cow to a self-willed woman with her own individuality takes place here. With immense hope, she goes back to Panchi her husband who doubts her virginity. As usual he scolds and strikes her and orders her to leave his house.

In this part of the book, Anand has captured and pictured quite realistically and beautifully the transformation of Gauri. Now, she is no longer a passive creature to tolerate such despicable and rude behavior. The writer portrays her as a symbolic representation of the modern woman who is quite conscious of her rights and individuality. Thus Gauri is no longer a gentle cow who silently suffered all the abusive behavior meted out to her by all of her family members and relatives. Quite boldly and convincingly, she leaves her husband's house and his life forever and embarks on a journey ... a new life completely devoted for the dejected, poor and wretched sections of the society.

Another aspect of the humanistic note in "The Old Woman and the Cow" is the stress it lays on the demand for deserting pain and barbarity and its exercise on appeasement and softness. This has been accomplished through the portrayal of a true scene of the gloomy plot against which the tragedy takes place. Anand has drawn the picture of Gauri meeting with savage suffering wherever she goes. Still she faces all these severe tests in her life with equanimity. It's really very heart rending to note that the only humane characters Gauri meet are Rafiquechacha and Dr. Mahindra. It's a really laudable effort on the part of the novelist as to how he tries to combat against man's age old faith in charms and omens, his material power, possessions, money, karma, God etc. The novelist clarifies that all the above mentioned notions serve as a great obstruction in the development of man and his progress.

## CONCLUSION

While analyzing the novel in detail, it is seen that, at the outset, the novelist shares with us a realistic picture of Gauri's sufferings. For her inherent qualities of endurance and isolation, she is depicted as a cow. With the entry of Dr. Mahindra in the scene, Gauri awakens to the reality that the key to her salvation are not her endurance and obedience to the age old corrupted systems and traditions of the society, but in fighting against it with all her might. Hence the novelist in this novel questions and fights against the evils in the then prevalent society like falsity, hypocrisy, savagery, insensibility and the lack of love and compassion. In this novel, Mulk Raj Anand very efficiently and successfully delineates the whole process of the change of a woman Gauri from a mere puppet in men's hands to an independent and self-sufficient woman who asserts her equal rights with man and demands recognition. One of the most significant aspects of the writer's humanism as portrayed through this novel is the emphasis on the enhancement of woman's condition and significance. For him, man is the chief exponent of humanism. According to the novelist, the real meaning of humanism is "illumination or enlightenment in the interest of man, true to his highest nature and his noblest vision". Thus after a detailed analysis of Anand's novel "The Old Woman and the Cow", it can be rightly concluded that the novelist's top priority here was to delineate the humanitarian perspectives thoroughly in this novel and he has given the best picture possible of these elements through the main character Gauri and her plight.



**REFERENCES:-**

1. Making a Difference: Feminist Literary Criticism (Newyork: Methuen and Company,1985)
2. Mulk Raj Anand's "The Old women and The Cow". A Humanistic Note- RameshKumar Gupta.
3. Mulk Raj Anand, " Old Myths and New Myths Recital Versus Novel", Indian Literature of the Past fifty Years ed. C.D. Narasimhaiah, Mysore, 1970.
4. Mulk Raj Anand, "Appology for Heroism" (Bombay,1957)
5. Mulk Raj Anand, "Lines Written to an Indian Air" (Bombay, 1949)
6. Indian English Novels. New Perspectives. K.V. Surendran. Google Books.2002.
7. <https://books.google.co.in>
8. <https://www.amazon.in> Indian- English -Fiction>
9. <https://books.google.com>
10. <https://www.abcbooks.com>Indian-English-Fiction>



Dr. B.P. Yeale

Impact Factor-8.575 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# *B.Aadhar*

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2022

(CCCXXXVII) 337

The Contribution Of The Great Thinkers  
And Saints In The Making Of India



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social

Research & Development  
Training Institute Amravati



Editor

Dr. Maya S. Watane

Head, Dept. of Political Science  
Smt. Kesharbai Lahoti  
College, Amravati

Executive Editor

Dr. V. L. Bhangdia

Principal

Smt. Kesharbai Lahoti  
College, Amravati



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Dept. of Political Science

Smt. Kesharbai Lahoti College, Amravati

For Details Visit To : [www.aadhar-social.com](http://www.aadhar-social.com)

Aadhar International Publication





20	राष्ट्रनिर्मितीत लोकमान्य टिळकांच्या राष्ट्रवादाचे योगदान डॉ. ब्रविता येवले	85
21	महात्मा गांधी यांचे स्वातंत्र्य लढ्यातील योगदान प्रा.डॉ. तिर्थनंद बन्नगरे	88
22	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व्यक्तीदर्शन : राष्ट्रसंतांचा जीवनप्रवास डॉ. साहेबलाल एच. भैरम	93
23	भारतीय विचारवंतांचे व संतांचे भारताच्या जडणघडणीत योगदान संत तुकडोजी महाराज यांचे शैक्षणिक कार्य प्रा. डि. वि. भुईभार	95
24	भागवत धर्माची पताका —संत ज्ञानेश्वर डॉ. चैनलाल एस. राणे	99
25	वर्दनिय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे राजकीय व सामाजिक योगदान प्रा. मनोज के. सरोदे	103
26	स्वतंत्र प्रज्ञेचे विचारवंत : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज प्रा. डॉ. वैशाली बाबुराव कोटवे	108
27	राष्ट्रीय चळवळ: महात्मा गांधी डॉ. शर्मिला अशोक सावळे	111
28	छत्रपती शाहू महाराज यांचे विविध क्षेत्रात मोलाचे योगदान प्रा.डॉ. लखपती वा. गायकवाड	118
29	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व कार्य डॉ.जयवंत पिराजी जुकरे	120
30	स्वामी विवेकानंदांचे शिक्षण विषयक विचार सहा. प्रा. राजाराम नामदेव निगडे/डॉ. महेश नारायणराव मोटे	125
31	कर्मयोगी संत गाडगे महाराज : एक बदभूत रसावन प्रा. निकेश दिगांबरराव काळे	128
32	संत कवयित्री जनाबाईच्या अमंगलीत सामाजिकता प्रा. डॉ. नरेंद्र पाखरे	132
33	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या शैक्षणिक दृष्टिकोनाचे अद्ययन. प्रा.डॉ.रमेश इंगोले	135
34	राष्ट्रसंतांची ग्रामोद्धारक चळवळ प्रा.डॉ. दिनेशचंद्र की. राऊत	138
35	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे बौद्ध धम्म विषयक कार्य प्रा. सतोप मारोतराव रामटेके	142
36	गांधी प्रतिबिंबित महिलाओं कि सहभागिता : एक चिंतन सतीश भाधवराव बाटाणे	148
37	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के काव्य में सामाजिक चेतना प्रा. डॉ. सुशांत एस. ठोके	152
38	भारतीय जडणघडणीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची सामाजिक कार्ये प्रा. सुजाता पाटील	155
39	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे शिक्षण विषयक विचार प्रा.सौ.सुपमा सु.जाजु	161
40	आधुनिक भारताच्या जडण घडणीत छत्रपती शाहू महाराजांचे योगदान प्रा. प्रमोद रामकृष्ण तायडे	165
41	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक क्षेत्रातील योगदान डॉ.विजय रामदास तिरपुडे	168



**राष्ट्रनिर्मितीत लोकमान्य टिळकांच्या राष्ट्रवादाचे योगदान****डॉ. बविता येवले**

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती

ई-मेल :- bpyeole@gmail.com

**सारांश -**

स्वातंत्र्य आंदोलनात टिळकांचे योगदान इतर राजकीय सुधारकांच्या तुलनेत बरेच वेगळे आहे. या योगदानाचे अध्ययन दोन दृष्टीने महत्वाचे आहे. पहिली ले म्हणजे स्वातंत्र्य आंदोलनाला टिळकांनी सर्वव्यापी बनविले अर्थात जनसामान्यांना या चळवळीत सहभागी करण्यासाठी पृष्ठभूमीतयार केली आणि दुसरे राजकीय चळवळीला भारतीय संस्कृती आणि अस्मितेचा आधार देवून राष्ट्रवादाची भावना निर्माण केली. १८८१ ते १९२० या दरम्यान ५१३ अग्रलेख केसरी आणि मराठा या वर्तमानपत्रातून लिहून ही पृष्ठभूमी त्यांनी तयार केली. १९२० पासून तर स्वातंत्र्यमिलेपर्यंत या लढ्यात जो जनसहभाग वाढला त्याला हे एक मुख्य कारण अध्ययन अंती पुढे येते म्हणून टिळकांचे वेगळेपण सिद्ध होते. टिळकांनी निर्माण केलेल्या राष्ट्रवादानेच राष्ट्रनिर्मितीस पोषक वातावरण मिळाले असले तरी त्यांच्या राष्ट्रवादाचा आधार धार्मिक असल्यामुळे व त्यासाठी हिंदू धर्मातील प्रतीकांचा वापर झाल्यामुळे त्यांच्या राष्ट्रवादावर मर्यादा येतात जर टिळकांच्या राष्ट्रवादाचा आधार आर्थिक असता तर कदाचित टिळकांच्या राष्ट्रवादाचे स्वरूप अधिक व्यापक झाले असते असे अध्ययनाअंती आढळते.

**उद्दिष्टे -**

- १) टिळकांच्या राजकीय तत्वज्ञानाचे अध्ययन करणे.
  - २) भारतीय संस्कृतीच्या आधारे टिळकांच्या राष्ट्रवादाचे अध्ययन करणे.
  - ३) टिळकांच्या राजकीय विचारांचा भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनवर पडलेल्या प्रभावाचे अध्ययन करणे.
- ❖ टिळकांच्या राजकीय तत्वज्ञानाला सांस्कृतिक अधिष्ठान -

राष्ट्रनिर्मितीच्या कार्यात परंपरागत विचार आणि आचार यांना समाविष्ट करण्यात टिळकांचे योगदान मोठे असल्याचे आढळते. टिळकांच्या राजकीय तत्वज्ञानाचा आधार भारतीय सांस्कृतिक मूल्ये आहेत. टिळकांच्या राजकीय तत्वज्ञानाच्या जडणघडणीचे अध्ययन करतांना असे आढळते की ब्रिटीशांचे भारतातील साम्राज्यवादी धोरण राजकीय क्षेत्रापुरतेच मर्यादित नव्हते तर भारतीय समाजव्यवस्था, अर्थव्यवस्था आणि सांस्कृतिक व शैक्षणिक व्यवस्थाही व्यापणारी होती. त्याकाळात भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था ही अनिश्चिततून जात होती. कारण जवळजवळ एक हजार वर्षांपासून भारतावर परकियांची आक्रमणे सतत सुरू होती. अश्या अनिश्चिततेच्या काळात भारताने आपली सांस्कृतिक मूल्यव्यवस्था कशीबशी जपली होती. ती नष्ट झालेली नसली तरी तीची गतिशीलता कमी झालेली होती आणि एका सनातन धर्माचे स्वरूप तिला प्राप्त झालेले होते. ब्रिटीशांचे राजकीय सार्वभौमत्व भारतात प्रस्थापीत झाल्यावर ही जुनी सांस्कृतिक मूल्ये भारतात पुन्हा पुनरुत्थीवीत व्हायला सुरुवात झाली दुसरीकडे पाश्चिमात्य संस्कृती अनेक कारणामुळे जसे नैतिक अनिश्चितता, बुद्धीवादाचा अतीरेक, औद्योगिक भौतिकवाद, गरिबांची शोषिताकडून होणारी पिळवणूक इत्यादी अनेक कारणामुळे हादरे बसत होते.<sup>१</sup> पाश्चिमात्य संस्कृतीचा नैतिक आधार डळमळीन होवून त्यामुळे जीवनमुल्ये बदलू लागली आणि या परिवर्तनाचा परिणाम राजकीय तत्वज्ञानावर पडत होता. त्यामुळे याकाळात पाश्चिमात्य सांस्कृतिक मूल्यांच्या कल्पनेविरुद्ध एक प्रतिक्रिया म्हणून भारतीय सांस्कृतिक मूल्ये पुन्हा जागरूक झाली आणि भारतीय राजकीय तत्वज्ञानाचा पुनरोदय झाला. याच भारतीय सांस्कृतिक मूल्यांना भारतातील स्वातंत्र्य आंदोलनाशी जोडून स्वातंत्र्य प्राप्तीची आपली राजकीय आकांक्षा पूर्तता करणारे जे सुधारक होते त्यापैकी लोकमान्य टिळक अग्रणी होते. भारताच्या स्वातंत्र्य आंदोलनाला भारताच्या प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यांचे अधिष्ठान प्राप्त करून देण्याचा प्रयत्न टिळकांनी केला. भारतीयांमध्ये राष्ट्रीयत्वाची भावना निर्माण करतांना आपली राष्ट्रीय मूल्ये कोणती आणि त्यावर आधारित राष्ट्र कसे निर्माण होईल याचा प्रयत्न त्यांनी केला 'स्वराज्य हे माझा जन्यसिद्ध हक्क आहे' या घोषणेत स्वराज्य हा भारतीय संस्कृतीची, जीवनविषयक मुल्यांची व तत्वज्ञानाची एक अत्यावश्यक व अनिवार्य बाब आहे. हे सिद्ध करण्याचा त्यांनी प्रयत्न केला अश्यापद्धतीने टिळकांच्या राजकीय तत्वज्ञानाचे अधिष्ठान भारतीय संस्कृती होते. म्हणून 'लोकमान्याचे राजकारण हे आर्य संस्कृतीचे पुनरुज्जीवन' होते.<sup>२</sup> असे म्हटले जाते स्वातंत्र्य आंदोलन काळात सार्वजनिक गणेशउत्सव आणि शिवजयंती सुरू करण्यामागे त्यांचा





हाच उद्देश होता. धार्मिक उत्सव हा भारतीय संस्कृतीचा एक भाग असून धार्मिक उत्सवामुळे लोक एकत्र येतात व राष्ट्रवादास पोषक वातावरण मिळते.<sup>१</sup>

पाश्चिमात्य संस्कृती, शिक्षण आणि तत्त्वज्ञान यांनी प्रभावित झालेल्या थोर पुरण्यांनी एक मोठी फळी भारतात होती ज्याचा या तत्त्वज्ञानावर विश्वास होता की, भारताचा किंवा इंग्लंडचा संबंध काही ईश्वरी संकेताने घडून आलेला असून त्यातून भारतीयोंचे मोठे कल्याण होणार आहे. याला दैवी व्यवस्था सिद्धांत किंवा (Divine Dispensation)ची संकल्पना असे म्हणतात. त्यामुळे भारतात ब्रिटीश काळातच सामाजिक सुधारणा व्हाव्यात, भारतातील अनिष्ट प्रथा आणि चालीरिती ब्रिटीश काळाच्या माध्यमातून नष्ट व्हाव्यात यावर या नेत्यांचा भर होता त्याला टिळकांनी मतत विरोध केला. यामागील टिळकांची भूमिका सर्वसामान्य जनतेत श्वेतवर्णायांचे वर्चस्व (Whiteman's Burden) व (Divine Dispensation) ची संकल्पना होती, तिला वाद करणे होते. गोऱ्या लोकांना आपल्या उद्धारासाठी ईश्वराने पाठविले असून ते येवून जावूच नये अशा प्रेमात भारतातील सर्वसामान्य होते ब्रिटीश भारताच्या उद्धारासाठी आलेले आहे याला Whiteman's Burden संकल्पना असे म्हणतात.<sup>२</sup> ब्रिटीशवादून भारतीयोंच्या मनात असणारी दैवी व्यवस्थेची भावना घालवून त्याजागी असंतोषाची भावना निर्माण करण्याचे श्रेय लोकमान्यांचे आहे. Divine Dispensation and Whiteman's Burden ही दोन्ही तत्वे भारतीय राजकारणातून वाद करणे आणि क्रियासिद्धी ही साधनांवर नसून स्वतःच्या पौरुष्यावर अवलंबून आहे हे लोकांच्या मनात निव्वळण्याचे श्रेय लोकमान्यांना जाते. राष्ट्रवादाच्या निर्मितीसाठी ही पृष्ठभूमी तयार करण्याचे कार्य प्रथम टिळकांनी केल्यामुळेच त्यांना बिरॉलने 'भारतीय असंतोषाचे जनक' म्हटले आहे. जनतेत हा असंतोष निर्माण करण्यासाठी त्यांनी धार्मिक उत्सव, वर्तमानपत्रे किंवा जाहीर व्याख्यान या साधनांचा आधार घेतला.

टिळकांच्या नुसार राष्ट्रवाद ही एक वृत्ती आहे. ती मनात रुजत असतांना व्यक्तीच्या व समाजाच्या कृतीमधून व्यक्त होणे तितकेच आवश्यक असते. म्हणून काँग्रेसने बनारस - कोलकत्ता येथील अधिवेशनात निवारलेला चार सूची कार्यक्रम (बही प्रकार, स्वदेशी, स्वराज्य व राष्ट्रीय शिक्षण) हा राष्ट्रवादाचा कृती आराखडा अशा व्यवहार्य स्वरूपात पुढे आला.

असे निदर्शनास येते की टिळकांच्या राष्ट्रवादाची बैठक आध्यात्मिक होती. त्यांनी राष्ट्रवाद निर्माण करण्यास हिंदू प्रतीके वापरली ती सामाजीकरण प्रभावी करण्यासाठी, लोकांना समजण्यास सोपी व्हावी यासाठी, भारतीय संस्कृती आणि संस्थांचे इंग्रजीकरण होऊ नये आणि राष्ट्रवादाचा पाया भारतीय संस्कृतीवर आधारलेला असावा हा त्यांचा रास्त आग्रह होता.<sup>३</sup> राष्ट्रीय उत्सवातून संघ-भावना वाढीला लागेल, शिक्षणाचा प्रसार नसलेल्या देशात या संघभावनेच्या माध्यमातून विचारांचे आदान-प्रदान होईल आणि परकीयावद्दलची अनिष्टा व आपल्या राष्ट्रविषयीचे प्रेम जागरूक होईल राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आंदोलन अश्यापद्धतीने व्यापक होईल हा त्यांच्या राष्ट्रवादाचा उद्देश होता

❖ टिळकांच्या राजकीय विचारांचा भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनावर पडलेला परिणाम.

१) टिळकांनी स्वराज्याच्या संकल्पनेला भारतीय संस्कृतीच्या मूल्यांशी जोडल्यामुळे यातून दोन हेतू सफल झाले एकतर भारतीय संस्कृतीचा पुनरोदय झाला आणि दुसरे जनतेमध्ये पुरेशी जनजागृती घडवून जनता स्वच्छेने राष्ट्रीय स्वातंत्र्यसंग्रामात सहभागी झाली. त्यामुळे आंदोलन सर्वव्यापी झाले.

२) टिळकांच्या चतुःसुत्रीने आपोआपच राष्ट्रवादाचा पाया देशात निर्माण झाला. परकीय वस्तु, संस्कार, साही त्या याचा बही प्रकार, स्वतःच्या राष्ट्रात निर्माण झालेल्या वस्तूंचा वापर करण्याची वृत्ती, मातृभाषेतून शिक्षण व स्वराज्य म्हणजे स्वधर्माचरण यातून राष्ट्रवादाची देशात उभारणी झाली. मानसिक धारणा आहेत त्यासाठी लोकांमध्ये परस्पर प्रेम, जिज्ञाळा, संघ भावना, आपुलकी लागते ती निर्माण करण्याचे कार्य टिळकांनी केले. गरज पडली तेव्हा त्यासाठी हिंदू प्रतीकांचाही वापर केला.

३) टिळकांच्या मते राजकीय सुधारणांच्या माध्यमातून राष्ट्रनिर्मिती आणि राष्ट्रनिर्मितीनंतर सामाजिक सुधारणा स्वयंप्रेरित जनता आपोआपच घडवून आणेल. Divine Dispensation & white man's Burden या दोन्ही संकल्पना भारतीय राजकारणातून वाद करणे आणि परकीय सत्तेविरुद्धचा तिरस्कार निर्माण केल्यावर बरील बदल आपोआप घडून येतील असे टिळकांना वाटत होते व टिळक युगात हे घडल्याचे आढळते.

४) काँग्रेसमधील सुधारकांच्या मिळमिळीत धोरणाला छेद देवून त्यांनी जहाल विचारांचा जो प्रचार केला त्यामुळे प्रखर राष्ट्राभिमान, आपल्या देशधर्माविषयी आत्मीयता, परकीय गुलामगिरीविषयी बीड, इंग्रजी सत्तेविषयी प्रतिकूल मताचा प्रचार आणि त्यांच्याशी असहकार पुकारण्यात ते यशस्वी झाले. ब्रिटीश सत्ता ही ईश्वरी देणगी नसून त्यामुळे भारतीय संस्कृती ओकाळली गेलेली आहे. भारताच्या आर्थिक शोषण व नैतिक अधःपतनास ब्रिटीश सत्ता कारणीभूत आहे. हा विचार टिळकांनी जनमानसात रुजविला.

५) १९१९ च्या मद्रिगु - चेम्सफोर्ड ॲक्टचे लोकमान्यांनी स्वागत करून काँग्रेस डेमोक्रेटिक फ्रंटचा जाहीरनामा तयार केला. या जाहीरनाम्याच्या माध्यमातून त्यांनी राजकीय कार्यक्रमाचा जो व्यापक पाया रचला त्याचे प्रतिबिंब पुढे



Dr. B.P. Yeole

Impact Factor - 7.676

ISSN - 2278-9308

# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed  
Multidisciplinary International Research Journal

15 December -2021

ISSUE No- (CCCXXV ) 325

लोकशाही आणि पर्यावरण



## DEMOCRACY AND ENVIRONMENT

Chief Editor

**Prof. Virag S. Gawande**

Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Editor

**Dr. Vijay Bhangre**

Dept. of English

Bharatiya Mahavidyalaya, Amravati

The journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Journal Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Service (IIFS)





# **B.Aadhar**

**Peer-Reviewed & Refereed Indexed  
Multidisciplinary International Research Journal**

**December -2021**

ISSUE No- (CCCXXV) 325

## **Democracy & Environment**

Chief Editor

**Prof. Virag. S.Gawande**

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Editor

**Dr. Vijay Bhangre**

Dept. of English

Bharatiya Mahavidyalaya, Amravati

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher





## INDEX

Sr. No.	Title of the paper	Author's Name	Page No.
1	Environment and Indian Constitution : An Overview of the Constitutional Provisions	Dr. Sunil S. Ingale	1
2	Libraries Going Green: Sustainable thinking goes beyond	Dr. Rajesh Ganeshrao Bobade / Mr. Rajesh Onkarrao Patil	5
3	Solid Waste Management	Dr Vijay M. Gawande	9
4	Democracy, Human Rights and Indian Constitution	Dr. Ajay D. Jadhao	12
५	लोकशाही शासन व्यवस्थेसमोरील पर्यावरणातील विषयक आव्हाने	डॉ. प्रशांत विघे	१७
६	पर्यावरण आणि शाश्वतता तसेच पर्यावरण व्यवस्थापन	डॉ. विलास एस. टाले	२४
७	पर्यावरण संरक्षणाचा अधिकार आणि भारतीय घटना दुरुस्ती : एक अवलोकन	प्रा. विजय रा. ढेंगळे	२७
८	पर्यावरण शास्त्र-एक मानवी वरदान	डॉ. अनिल श्री. खांडेकर	२९
९	पर्यावरण व मानवाधिकार	प्रा. डॉ. अनिल रा. कडू	३२
१०	पर्यावरण विषयक प्रदूषणाचे प्रश्न	प्रा. अनुप अ. नांदगावकर	३६
११	एकविसाव्या शतकातील जैवविविधतेचे संवर्धन	प्रा. प्रविण ना. वानखडे	३९
१२	जलसंवर्धन व जलव्यवस्थापन हिच काळाची गरज	डॉ. आशिष दि. काळे	४२
१३	ध्वनीप्रदूषणाचे मानवी जीवनावर होणारे परिणाम	प्रा. लाभेश सा. साबळे	४५
१४	पर्यावरण बदल - मानवी आरोग्यावर होणार परिणाम	डॉ. सचिन जयस्वाल	४८
१५	वातावरणीय किंवा हवामानातील बदल व पृथ्वीच्या तापमानातील वाढ - एक मनुष्यासमोरील मोठे आव्हान	डॉ. योगेश वडतकर	५१
१६	"आर्थिक समृद्धी आणि रोजगार निर्मितीत पर्यटनाची भूमिका" (गडचिरोली जिल्ह्याच्या विशेष संदर्भात )	डॉ. योगीराज. एस. उरकुडे	५४
१७	लोकशाही आणि पर्यावरण	डॉ. स्वप्ना लेंडे	५७
१८	भारतीय संविधानातील पर्यावरण विषयक तरतुदींचा जनसामान्यांवर झालेला परिणाम	रविंद्र शंकरराव फटंग	६१
१९	हवामान बदलाचा कृषी व्यवस्थेवर होणारा परिणाम	डॉ. बी. जे. जैन	६४
२०	पर्यावरण संरक्षण व भारतीय संविधान	डॉ. बबिता येवले	६९
२१	पर्यावरण व्यवस्थापन	डॉ. विनोद व्ही. कपिले	७२
२२	कोकणातील पर्यटन विकास प्रक्रियेतील समस्या	डॉ. गोविंद एम. तिरमनवार	७६
२३	पर्यावरण आणि राजकारण	प्रा. डॉ. एल. एफ. शिराळे	८०
२४	पर्यावरण आणि विकास	हर्षवर्धन विष्णु रोंटे	८४
२५	पर्यावरण संवर्धनात माझा सहभाग	प्रा. डॉ. धर्मनंद तेलंगोटे	८७
२६	ओझोन थर व त्याचे मानवी जीवनावर होणारे परिणाम	डॉ. ममता विजयराव पाशीकर	९०
२७	लोकशाहीचे पर्यावरणीय सिद्धांत	डॉ. हनुमंत फाटक	९४
२८	भारताच्या पर्यावरणावर कोविड-१९ मुळे लावण्यात आलेल्या लॉकडाऊनचा प्रभाव	डॉ. सुजाता शेंडे	९६
२९	पर्यावरण और पर्यटन	डॉ. विभा देशपांडे(चौबे)	१०२





## पर्यावरण संरक्षण व भारतीय संविधान

डॉ. बबिता येवले

राज्यशास्त्र विभाग

महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती

Email : bpyeole@gmail.com

### सारांश -

भारताच्या संविधानातील कलम २१ अंतर्गत स्वस्थ वातावरणात जीवन जगण्याचा अधिकार मनेका गांधी विरुद्ध भारत संघ या १९७८ च्या खटल्यात निर्णय देताना सर्वोच्च न्यायालयाने मान्य केला. परंतु सद्या भारतातील पर्यावरणाची स्थिती पाहता भारतीय संविधानातील तरतुदीवर आणि कायदे आणि प्रयत्नांवर फेरविचार करण्याची आवश्यकता आहे. २०२० च्या विश्व वायु गुणवत्ता इंडेक्समध्ये (WAQI) जगातील सर्वाधिक प्रदूषित ५० शहरांच्या यादीत भारतातील ३५ शहरे प्रदूषित होती. तर २०२१ च्या WAQI च्या अहवालांमध्ये जे दहा शहरे यादीत बरच्या स्थानावर आहे त्यात दिल्ली ने प्रथम (AQI 556) कलकत्ता चवथ्या तर मुंबई सहाव्या क्रमांकावर आहे. एकीकडे संविधान आणि सर्वोच्च न्यायालयाचे विभिन्न निर्णय भारतीयांना निकोप व स्वच्छ वातावरणाचा जीवन जगण्याचा मुलभूत अधिकार प्रदान करीत असतांना दुसरीकडे शुद्ध हवा आणि शुद्ध पाण्यासारखी त्याची नैसर्गिक गरज पूर्ण होताना दिसत नाही १९७४ च्या स्टॉकहोम परिषदेनंतर भारताच्या विभिन्न सरकारांनी महत्वाचा विषय म्हणून या विषयाला प्राधान्य दिले. या संबंधात घटनादुरुस्ती करून नीतिनिर्देशक तत्वात यांचा समावेश करण्यात आला विविध स्वरूपाचे कायदे करून प्रदूषणाला प्रतिबंध घालण्याचा प्रयत्न झाला. परंतु तरीही पर्यावरण प्रदूषणाची समस्या किती उग्र रूप धारण करीत आहे हे नुकत्याच प्रकाशित झालेल्या अहवालावरून सिद्ध होत आहेच. असे निदर्शनास येते की या समस्येसाठी केवळ कायदे करून निभावणार नाहीतर कायद्याची प्रभावीपणे अंमलबजावणी होणे गरजेचे आहे. दुसरे भारतीय संविधानात याचा उल्लेख कलम ४७, कलम ४८ A व कलम ५१ A मुलभूत कर्तव्ये यात आहे. प्रकरण ४ मधील नीति निर्देशक तत्वे किंवा मुलभूत कर्तव्ये न्यायप्रविष्ट नाहीत. त्यामुळे त्यांच्याशी संबंधित कायदे केंद्र व राज्य सरकारांनी करावे असे अपेक्षित आहे पण सरकारांना बंधनकारक नाही आणि तिसरे म्हणजे पर्यावरण प्रदूषित झाल्यास मानवी जीवनाचे अस्तित्व धोक्यात येवू शकते याची जाणीव सामान्य माणसाला होणे नितांत गरजेचे आहे. त्यामुळे कायद्याबरोबर पर्यावरण जागरूकता व संवेदनशीलता निर्माण होण्याची नितांत आवश्यकता आहे तेव्हाच या समस्येला पायबंद बसू शकतो.

### प्रस्तावना -

पर्यावरणाशी मानवाचा निकटचा संबंध आहे कारण मनुष्य स्वतः या पर्यावरणाचा एक भाग असून त्याचे अस्तित्व पूर्णपणे पर्यावरणावर अवलंबून आहे. अन्न, वस्त्र, निवारा या प्राथमिक गरजांपेक्षा त्याच्या पूर्व प्राथमिक गरजा शुद्ध हवा आणि शुद्ध पाणी आहे जे निकोप पर्यावरणातूनच त्याला प्राप्त होऊ शकतात.

प्रस्तुत संशोधनापर पत्रातून पर्यावरणाशी संबंधित भारतीय संविधानातील तरतुदी, त्याची अंमलबजावणी, त्यासंबंधीचे विभिन्न कायदे आणि पर्यावरणासंबंधी भारताची वर्तमान स्थिती यांची चर्चा करून त्यासंबंधी उपाय योजना सुचविलेली आहे.

### भारतीय संविधानात पर्यावरण विषयक तरतुदी :-

भारताच्या मूळ संविधात प्रकरण ४ कलम ४७ चा अपवाद वगळता अन्यत्र कुठेही पर्यावरणाचा प्रत्यक्ष उल्लेख आढळत नाही संविधान लागू झाल्यावर या संदर्भात महत्वाची पाउले उचलली गेली.

**कलम ४७ नुसार -** पोषणमान व राहणीमान उचावणे व सार्वजनिक आरोग्य सुधारणे हे राज्याचे प्रथम कर्तव्य राहिल. मादकद्रव्ये, आरोग्यास अपायकारक अशी द्रव्ये यांचे औषधीय प्रयोजनाखेरीज सेवन करण्यावर बंदी आणण्यासाठी राज्य प्रयत्नशील राहिल असे नमूद केलेले आहे.

१९७२ च्या स्टॉकहोम परिषदेनंतर भारत सरकारने याकडे प्रकर्षाने लक्ष घातले आणि १९७६ साली ४२ व्या घटनादुरुस्तीने कलम ४८ (A) संविधानात घालण्यात आले.

**कलम ४८ (A) नुसार -** पर्यावरणाचे संरक्षण, संवर्धन आणि वने व वन्यजीवांचे रक्षण करण्यासाठी राज्य प्रयत्नशील राहिल असे नमूद केलेले आहे.





**४२ व्या घटनादुरुस्ती नुसार** - प्रकरण ४ मध्ये कलम ५१ (A) अंतर्गत मुलभूत कर्तव्याची स्वतंत्र यादी जोडण्यात आली व १० मुलभूत कर्तव्यांमध्ये समावेश करण्यात आला. या ५१ (A) छ नुसार नैसर्गिक पर्यावरणाची, ज्या अंतर्गत वने, तलाव, नदी व वन्य जीवांचे संरक्षण करणे तसेच प्राणीमात्रावर दया दाखविणे असे नमूद करण्यात आलेली आहे.<sup>१</sup>

**कलम २१ नुसार** - भारतीय संविधानाच्या कलम २१ नुसार भारतीय नागरिकांना जीवन जगण्याचा मुलभूत अधिकार प्रदान करण्यात आला त्यानुसार पर्यावरणाचा अधिकार, स्वास्थ्य संबंधी आणि संक्रमणाच्या धोक्यापासून मुक्तीचा अधिकार आंतर्निहित आहे. या कलमांतर्गत कायद्याद्वारे स्थापित बंधनांना सोडून कोणत्याही व्यक्तीला जीवन जगण्यापासून आणि वैयक्तिक स्वातंत्र्यापासून वंचित ठेवता येणार नाही. या कलमान्वये प्रत्येक नागरिकाला चांगले वातावरण आणि शांततामय जीवन जगण्याचा अधिकार प्राप्त होतो.<sup>२</sup>

भारतीय संविधानात वरील प्रमाणे विविध कलमांतर्गत पर्यावरण संरक्षणाची तरतुद असली तरी पर्यावरणासंबंधीच्या या तरतुदी प्रकरण ४ मधील नीतिनिर्देशक तत्वे आणि मुलभूत कर्तव्यात आहे. कलम २१ चा अपवाद वगळता हि ऐच्छिक आहेत, ती न्यायप्रविष्ट नाहीत नुकतेच आर घनसेकरण विरुद्ध तामिळनाडू सरकारच्या एका खटल्यात मद्रास उच्च न्यायालयाने हे स्पष्ट केले की, कलम ४७ अंतर्गत मादक पदार्थावर बंदी आणणे पूर्णतः सरकारचे धोरण आहे. न्यायव्यवस्था त्यात हस्तक्षेप करू शकत नाही सर्वोच्च न्यायालयाचे अॅडव्होकेट उपेंद्र मिश्रा असे म्हणतात की, "मद्य आणि मादक पदार्थावर बंदी आणणे हे शासनाचे प्राथमिक कर्तव्य असले तरी ते लागू करण्यासाठी सरकारला बाध्य करता येणार नाही आणि सरकार मद्यावर प्रतिबंध घालीत नाही म्हणून सरकार विरुद्ध न्यायालयात जाता येणार नाही."<sup>३</sup>

कलम ३२ अंतर्गत कलम २२६ जनहीत याचिका एक पर्याय या संबंधामध्ये उपलब्ध आहे. नुकतीच या संबंधात उत्तर प्रदेशाच्या कासगंज जिल्ह्यातील सुरतपुर खुशकरी गावाच्या एका सामाजिक कार्यकर्त्याने (सर्वोच्च न्यायालयात एक पत्र पाठवून जल, वृक्ष आणि पर्यावरणा संबंधी शासन गंभीर नसल्याची तक्रार केलेली आहे. सर्वोच्च न्यायालयाने हि जनहीत याचिका २३ नोव्हेंबर २०२१ ला दाखल करून घेतली मात्र त्यासंबंधी अजून कोणताही निर्णय दिलेला नाही.<sup>४</sup>

भारतीय संविधानाच्या कलम २१ अंतर्गत स्वस्थ वातावरणात जीवन जगण्याच्या अधिकाराला पहिल्यांदा १९८८ मध्ये रुल लिटीगेशन एंड एंटाइटलमेंट केंद्र बनाम राज्य (देहरादून खदान केस म्हणून प्रसिद्ध) खटल्याने पहिल्यांदा मान्यता दिली पर्यावरण संरक्षण कायदा १९८६ च्या अंतर्गत पर्यावरण आणि पर्यावरण संतुलनासंबंधी मुद्द्यांना घ्यानात घेवून बेकायदेशीर खाणकामाला थांबविण्याचे आदेश दिले. यापूर्वी १९८७ मध्ये एम. सी. मेहता विरुद्ध भारतीय संघ या खटल्यात प्रदूषण विरहीत वातावरणात जीवन जगण्याचा अधिकार भारतीय संविधानाच्या कलम २१ अंतर्गत मुलभूत अधिकार म्हणून मान्य करण्यात आला होता.<sup>५</sup>

१९७२ च्या स्टॉकहोम परिषदेनंतर भारताने पर्यावरण संरक्षनाला अधिक महत्व देवून या संबंधात विभिन्न कायदे केलेत. जसे जल, प्रदूषण प्रतिबंधक आणि नियंत्रण कायदा १९७४, वायू प्रदूषण आणि नियंत्रण कायदा १९८१, १९८४ मध्ये भोपाळ गैस कांड झाल्यावर पर्यावरण संरक्षण कायदा १९८६ करण्यात आला वन्य जीव संरक्षण अधिनियम १९८२, जैव विविधता अधिनियम २०००, इत्यादी. १९८० साली पर्यावरणाच्या बाबींवर अध्ययन करण्यासाठी एक तिहारी समिती गठीत केली गेली. तिने केलेल्या शिफारशीनुसार १ नोव्हेंबर १९८० ला (DOE) पर्यावरण विभाग स्थापन करण्यात आला. या विभागाचे कार्य केवळ प्रदूषणाचे निरीक्षण, मूल्यांकन किंवा नियंत्रण पुरते मर्यादित नसून हवा आणि पाण्याची गुणवत्ता तपासणे आणि या संबंधी दोन्ही सरकारांमध्ये सांमजस्य घडवून आणण्याचे प्रयत्न या विभागाद्वारे केले जाते. एन. सी. ई. पी. सी. (National Committee on Environment Planning) १९८० साली गठीत झालेली हि समिती मुख्यतः पर्यावरणीय जागरूकता निर्माण करते आणि विकास योजनांमुळे पर्यावरणावर होणाऱ्या परिणामांचे अध्ययन करते. पर्यावरण संरक्षणातील त्रुटी दूर करण्यासाठी १९८५ साली शासनात पर्यावरण व वन मंत्रालय हा स्वतंत्र विभाग निर्माण करण्यात आला.

एकूणच पर्यावरण संरक्षण आणि संवर्धनासाठी विधानिक तरतुदीबरोबरच विभिन्न विभाग व कायद्यांच्या माध्यमातून प्रयत्न केले जात आहे. तरी वर्तमान काळात भारताची पर्यावरणीय स्थिती चिंताजनक आहे.



**भारताची वर्तमान स्थिती -**

जागतिक वायू गुणवत्ता इंडेक्सच्या ताज्या अहवालानुसार सर्वाधिक प्रदूषित देशाच्या यादीत भारत तिसऱ्या क्रमांकावर आहे. डेन्मार्क सारखा युरोपातील छोटा देश मात्र जगातील सर्वाधिक स्वच्छ देश आहे. जगातील प्रदूषित शहरांमध्ये पाकिस्तानच्या लाहोर नंतर भारतातील दिल्लीचा दुसरा क्रमांक आहे WAQT नुसार दिल्लीची AQI मूल्यांकन २०२१ च्या अहवालानुसार ५५६ आहे. नॉंद घेण्यासारखी बाब ही आहे की WHO च्या अनुसार जर हे मूल्यांकन २०० पेक्षा अधिक असेल तर त्या भागातील वायू श्वासनासाठी अतो घातक असतो आणि वयोवृद्ध नागरिक व लहान मुलासाठी ते धोकादायक असून त्यातून श्वासाचे आजार होण्याची शक्यता असते.<sup>१</sup> २०२० च्या अहवालामध्ये जागतिक स्तरावरील ५० अतिप्रदूषित शहरांमध्ये भारतातील ३५ शहरे समाविष्ट आहेत. तर २०२१ च्या AQI च्या ताज्या अहवालानुसार प्रदूषित अती संवेदनशील शहरांमध्ये भारतातील दिल्ली (AQI Value ५५६) प्रथम क्रमांकावर आहे (AQI Value १७०) चवथ्या तर मुंबई (AQI Value १६२) क्रमांकावर आहे. दहा संवेदनशील शहरांमध्ये भारतातील वरील तीन शहरे समाविष्ट आहे. त या अध्ययनावरून असे आढळते की, भारतातील काही शहरातील पर्यावरणाची स्थिती मानवी जीवनासाठी अत्यंत घातक असून हा विषय प्राधान्यक्रमाने हाताळला जाणे अनिवार्य आहे. भारतातील संविधानिक तरतुदी, पूरक कायदे आणि वेगवेगळ्या प्राधिकरणाची व्यवस्था असतांनाही फारसे यश भारताला प्राप्त होत नाही.

**याचे अध्ययनांती प्रमुख तीन करणे आढळतात:-**

१) संविधानिक तरतुदीअंतर्गत पर्यावरण संरक्षण हा विषय ऐच्छिक झालेला आहे. कारण प्रकरण ४ मधील राज्य धोरणाची नीतिनिर्देशक तत्वे कल्याणकारी राज्याची स्थापना करण्यासाठी आहेत त्यामुळे त्यासंबंधात केंद्र किंवा राज्य सरकारने कायदे केलेच पाहिजे असे बंधन नाही. हीच स्थिती कलम ५१(A) ची आहे परिशिष्ट ७ मध्ये केंद्र व राज्य यांच्या अधिकाराची विभागणी आहे. त्यानुसार 'जल' हा विषय राज्यसूचित समाविष्ट असून त्यासंबंधी केंद्रसरकारला कायदा करावयाचा असेल तर तसा ठराव राज्य सभेच्या २/३ सदस्यांनी किंवा दोन किंवा त्यापेक्षा जास्त घटकराज्यांनी विधिमंडळाकडून मंजूर करून संसदेकडे येण्याची गरज आहे. अशा काही तांत्रिक अडचणीमुळे याबाबत केंद्रसरकार राज्य सरकारावर अवलंबून असते त्यामुळे केंद्र सरकारवर मर्यादा पडतात.

२) या विषयांवर कायदे करणे ही जटिल व गुंतागुंतीची प्रक्रिया आहे. कायदे अस्तित्वात आहेत पण कायद्याची प्रभावी अंमलबजावणी हा भागही तितकाच महत्वाचा आहे. कायदे केवळ कागदोपत्री असून चालणार नाही व्यावहारिक स्तरावर कायद्याचा वारंवार पाठ्यपुरावा व सुधारणा अनिवार्य आहे.

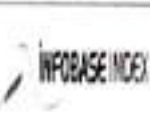
३) सर्वाधिक महत्वाचे कारण आहे ते म्हणजे पर्यावरणाविषयी सामान्य नागरिकांमध्ये असणाऱ्या जागरूकतेचा अभाव होय. पर्यावरणातील संसाधने मर्यादित आहे. मनुष्याच्या गरजा वाढल्या, लोकसंख्या वाढली, पर्यावरणाला दोहन करून वैयक्तिक लाभ घेण्याची मनुष्याची क्षमता वाढली तरी संसाधने वाढणार नाहीत पर्यावरणातील संसाधनाचा मर्यादित वापर आणि व्यक्तिगत लाभासाठी पर्यावरण प्रदूषित करण्यातही मानसिकता सामान्य माणसाची बदलेलाच पर्यावरण सुरक्षित राहिले तर आपले जीवन सुरक्षित राहील याची जाणीव खोलवर मनुष्याला होईल. या जाणीवेचा अभाव असल्यामुळे ही समस्या अधिक उग्र रूप धारण करीत आहे.

एकूणच पर्यावरण संरक्षण हा विषय संपूर्ण मानवजातीशी, तिच्या अस्तित्वाशी निगडित आहे त्यामुळे ही देशातील, राजकरणातीलचा विषय आहे. म्हणून प्रत्येकाने आपल्या अस्तित्वाची लढाई जिंकण्यासाठी पर्यावरण संरक्षणाकडे लक्ष देण्याची नितांत आवश्यकता आहे.

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. <https://hi.vikaspedia.in> भारत की पर्यावरण निती
2. अस्तित्व, देश मे पर्यावरण की सेहत (पर्यावरण रिपोर्ट - २०१८) <http://www.dristiiias.com>>
3. <https://hindi.livelaw.in>>know-the.com संविधान का अनुच्छेद 47
4. पर्यावरण सुप्रीम कोर्ट ने स्विकार की जनहीत याचिका, <http://www.amarujala.com>
5. अस्तित्व, देश मे पर्यावरण की सेहत <https://www.dristiiias.com>>
6. World's Air Pollution Real-Time Air-Quality Index, <http://wagi.info>





पा. डॉ. बबिता येवले

स. प्रा. राज्यशास्त्र विभाग  
महात्मा ज्योतिबा फुले  
महाविद्यालय,  
अमरावतीOne Day International Interdisciplinary E-Conference On  
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISISOn 16<sup>th</sup> October, 2021 @Mahatma Jyotiiba Fule Mahavidyalaya, Amravati, Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati, & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

राजकारणात खेळाचे महत्त्व

**ABSTRACT**

वरवरराजकारण आणि खेळ ही दोन भिन्न क्षेत्रे आहेत त्यांचा प्रत्यक्ष दर्शी परस्परसंश्लेष संबंध आहे असे वाटत नाही. परंतु प्राचीन काळापासूनच राजकारणात खेळाचे महत्त्व असल्याचे आढळते आणि आधुनिक काळात ते वाढलेले आहे. आधुनिक राजकीय व्यवस्था खेळाचा उपयोग करून आपल्या राष्ट्रीय ही तात्काळ सुरक्षित करण्याचा प्रयत्न आंतरराष्ट्रीय स्तरावर करताना आढळतात. राजकारणात खेळाचे सकारात्मक व नकारात्मक महत्त्व आहे. एखादी राजकीय व्यवस्था आपल्या राजकीय विचारधारेचा प्रसार व प्रचार करण्यासाठी खेळाचा माध्यम म्हणून उपयोग करते. राष्ट्रप्रेमाची भावना निर्माण करण्यासाठी, आंतरराष्ट्रीय संबंधात सुधारणा करण्यासाठी, राजकीय सत्ता प्राप्त करण्यासाठी, आंतरराष्ट्रीय शांतता व सुव्यवस्था प्रस्थापीत करण्यासाठी, जनसामान्यांची अधिमान्यता प्राप्त करण्यासाठी खेळाचा साधन म्हणून उपयोग होताना आढळतो. राजकारणाला सकारात्मक दिशा देण्यासाठी जसा खेळाचा वापर होतो त्याचप्रमाणे राजकारणात खेळाचा गैरवापर करणे ही त्याची नकारात्मक बाजू होय. आत्यंतिक राष्ट्रवाद निर्माण करण्यासाठी खेळाचा उपयोग द्वितीय महायुद्धापूर्वी इटलीत मुसोलीनीने किंवा जर्मनीत ही टलरने केल्याचे आढळते. खेळाचा संबंध राष्ट्रवादाशी जोडल्याने नागरिकांचे मुलमूल अधिकार धोक्यात येतात, हे वरील दोन राष्ट्रांच्या उदाहरणावरून सिद्ध होते. आधुनिक राजकीय व्यवस्था खेळांना राजकारणात प्रवेशित करून आपल्या राजकीय सत्तेला अधिष्ठान प्राप्त करून देण्याचा प्रयत्न करते. राजकीय क्षेत्रात खेळाचे महत्त्व नसात घेतो राष्ट्रीयच नव्हे आंतरराष्ट्रीय स्तरावरही शांतता व सुव्यवस्था प्रस्थापीत होण्यात महत्त्वाची भूमिकात बजावू शकतात.

**विषय प्रवेश -**

प्रस्तुत शोधनिबंध राजकीय क्षेत्र आणि क्रीडा क्षेत्र यांचा परस्पर संबंध अधोरेखित करण्यापुरता मर्यादित असून या शोधपत्राचा उद्देश राजकीय व्यवस्थेत खेळाचे महत्त्व स्पष्ट करणे हा आहे. "राजकारणात याचा अर्थ राजकीय व गैरराजकीय क्षेत्रात चालणाऱ्या औपचारिक व अनौपचारिक क्रिया - प्रक्रियांचा समुच्चय होय." एखाद्या देशात आयोजित केलेली एखादी स्पर्धा गैरराजकीय आणि अनौपचारिक असली तरी तिचे पडसाद राजकीय व्यवस्थेवर उमटतात व आंतरराष्ट्रीय राजकारणालाही प्रभावित करतात. त्याचे अध्ययन करणे प्रस्तुत शोध निबंधाचा हेतू आहे.

**गृहीतक -** खेळ / क्रीडा राजकारणाला सकारात्मक दृष्टीने प्रभावित करतात.

**उद्दिष्टे -** खालील उद्दिष्टांच्या आधारे प्रस्तुत अध्ययन केले जाईल.

- 1) राजकारण आणि खेळ यांचा सहसंबंध स्पष्ट करणे.
- 2) राजकारणातील खेळाचे महत्त्व विशद करणे.
- 3) खेळाच्या सकारात्मक व नकारात्मक परिणामाची चर्चा करणे.
- 4) नकारात्मक परिणामासाठी उपाययोजना सुचविणे.

**प्रस्तावना :**

'अधिकृत निर्णयाची बंधनकारक रीतीने अंमलबजावणी करण्याची क्षमता असणारी संरचना म्हणजे राजकीय व्यवस्था होय'. प्रत्येक राजकीय व्यवस्था अनेक उपव्यवस्था किंवा रचना मिळून बनलेली असते. समाज, राज्य, अर्थ, धर्म, शिक्षण, धर्म, या तिच्या उपव्यवस्था किंवा रचना आहेत. यांचा परस्परसंश्लेष असणारा संबंध परस्परपूरक व परस्परवर्तमान असतो. यामध्ये चालणाऱ्या औपचारिक व अनौपचारिक क्रिया - प्रक्रिया किंवा व्यवहार औपचारिक म्हणजे राजकारण. त्यामुळे राजकारणाचा संबंध केवळ राजकीय बाबींशी नसून गैरराजकीय बाबींशीही असतो. त्याअर्थी विविध देशांमध्ये आयोजित केलेल्या क्रीडा



स्पर्धा या त्या देशाच्या राजकारणाचा भाग असतो आणि राजकारणाला प्रभावित करतो. त्यामुळे राजकारणात खेळ आणि खेळाचे राजकारण या दोन्ही बाबींचा एकमेकांशी अन्वयोन्य संबंध आहे.

अॅलीसनच्या मते - 'कौशल्य आणि सत्ता यांचे संस्थीकरण म्हणजे खेळ होय.'<sup>1</sup> राजकीय क्षेत्रात खेळाला अनन्य साधारण महत्व असून केवळ राष्ट्रीय स्तरावरच नव्हे तर आंतरराष्ट्रीय स्तरावरही, त्याचे महत्व आहे. आंतरराष्ट्रीय संबंधात खेळाचा वापर करणे आंतरराष्ट्रीय संबंधातील आधुनिक राजनय असून सत्ताधान्यांच्या कौशल्यपूर्ण नीतीचा एक भाग आहे. आंतरराष्ट्रीय स्तरावर संघर्षाची दिशा ठरविण्यासाठी किंवा त्यात बदल करण्यासाठी प्रामुख्याने खेळाचा आधार घेतला जातो.

त्यानुषंगाने राजकारण आणि खेळ यांचे क्षेत्र भिन्न असले तरी त्यांच्यामध्ये वरीलप्रमाणे सहसंबंध आढळतो.

**राजकारणात खेळाचे महत्व :**

**१. राजकीय विचारसरणीचा प्रचार व प्रसार करण्यासाठी-**

कोणत्याही राजकीय व्यवस्थेचा प्रमुख आधार असतो राजकीय सत्ता राज्यकर्ते राजकीय सत्ता प्राप्त करण्यासाठी प्रयत्न करतात. अधीमान्यतेच्या जोरावर राजकीय सत्ता प्राप्त करणे सोपे व सोयीचे जाते. ही अधीमान्यता प्राप्त करण्यासाठी राजकीय नेते वेगवेगळ्या मार्गांचा अवलंब करतात. त्यापैकी एक म्हणजे एखाद्या विशिष्ट राजकीय विचारसरणीचा आधार घेणे. या विचारसरणीच्या प्रसार, प्रचार करण्यासाठी खेळाचा उपयोग मोठ्या प्रमाणावर होतांना आढळतो. १९३४ मध्ये मुसोलीनीने इटलीन फिफा वर्ल्ड कपचे आयोजन करून तर १९६३ मध्ये अर्जेंटिना हिटलरने समर ऑलम्पिक स्पर्धांचे आयोजन करून अत्रुमे फासीझम व नाझीझमचा प्रचार व प्रसार करण्यासाठी केल्याचे आढळले. द. आफ्रिकेत वर्णभेदाला विरोध करण्यासाठी तेथील खेळाडूंनी सर्व खेळांवर बहिष्कार टाकला काही लोक असे मानतात.<sup>2</sup> द. आफ्रिकेतील वर्णभेदाचा प्रचार व प्रसार रोखण्यासाठी खेळाडूंनी वापरलेल्या या अस्त्राचा पुढे फायदा झाला. अर्थात केवळ विचारसरणी प्रसार व प्रचार करण्यासाठीच नव्हे तर राजकीय व्यवस्थेच्या एखाद्या धोरणावर नाराजी व्यक्त करण्यासाठी सुद्धा खेळाचा साधन म्हणून उपयोग होतो.

**२. राजकीय सत्ता प्राप्त करण्यासाठी :**

राजकीय सत्ता प्राप्त करण्यासाठी राजकीय नेत्यांकडून याचा उपयोग मोठ्या प्रमाणावर होतांना आढळतो. सत्ता प्राप्त करण्यासाठी राजकीय क्षेत्रातील नेते मतदारांना प्रभावित करण्यासाठी प्रसिद्ध खेळाडूंना निवडणूक प्रचारात शामिल करतात किंवा त्यांना Road Show साठी आमंत्रित करतात.

नॅशनल अँकडमी ऑफ सायन्स च्या एका अध्ययन अहवालानुसार, निवडणुकीपूर्वी आयोजित केलेल्या क्रीडास्पर्धेचे यजमानपद ज्या राष्ट्राकडे असेल व ते राष्ट्र या स्पर्धेमध्ये विजेते ठरले असेल तर विजयी खेळाडूंचे मतदान करण्याचे प्रमाण दीडपटीने वाढते आणि जर यजमान राष्ट्र हरले तर मतदार सहभाग कमी होतो वॉशिंग्टन रेडाकिन्स टीम निवडणुकीपूर्वी त्यांची फायनल स्पर्धा जिंकली तर तत्कालीन राष्ट्रपतींचा विजय ठरतो पण जर विरुद्ध संघ जिंकला तर यजमान देशाचे राष्ट्रपती निवडणुकीत हरल्यासारखे आहे. त्यामुळे हा नियम रेडाकिन्स रूल या नावाने प्रसिद्ध झालेला आढळतो.<sup>3</sup>

**३. खेळाडूंचा राजकारणात प्रवेश :**

आधुनिक काळात अनेक राष्ट्रात खेळाडूंना निवडणुकीत उभे करण्याचा किंवा राजकीय पदे देण्याचा Trend आढळतो उदा. भारतात पूर्व क्रिकेटर नवज्योत सिद्धू प्रथम भाजपाचे सदस्य म्हणून निर्वाचित झाले आणि आज पंजाबच्या सत्तांतराच्या घडामोडीत वादग्रस्त आहेत. २००९ साली पूर्वकप्तान मोहम्मद अझरुद्दीन, २०१२ मध्ये राज्यसभेत राष्ट्रपतीव्दारा नामनिर्देशीत संघीन तैल्लकर, ऑलम्पिक विजेता, २०१९ राज्यवर्धन सिंग राठोड, २०१४ मोहम्मद कैफ, पूर्व फुटबॉल खेळाडू एकदोन फटार्डो, हॉकी खेळाडू परगट सिंग अकाली दल कडून खासदार म्हणून निर्वाचित आहेत.<sup>4</sup> केवळ भारतातच नव्हे तर इतर देशात सुद्धा प्रसिद्धीच्या झोमात असणाऱ्या खेळाडूंना राजकीय पदे विभूषित करतांना आढळतात.

केवळ भारतातच नव्हे तर विदेशात सुद्धा प्रसिद्ध खेळाडू राजकारणात येतांना दिसतात २०१२ मध्ये विटाली क्लीटर्को यांना युक्रेनच्या संसदेसाठी युक्रेनी डेमोकॉटिक एलायंस फार रीफॉर्म चे नेता म्हणून निर्वाचित आहेत. कॅनडाचे रेड केली, पूर्व शतरंज खिलाडी गैरी कासारावे, पूर्वीचे पाकिस्तानचे क्रिकेट कॅप्टन इमरान खान, यांनी आपला स्वतःचा राजकीय पक्ष (PTI हा पक्ष) स्थापन करून सद्या पाकिस्तानची धुरा सांभाळत आहेत. पावरवोट रेसर पूर्व डेनियल सियोली २००३ आणि २००७ मध्ये अर्जेन्टीनाचे उपाध्यक्ष बनले सद्या ते ब्युनॉस आयर्स प्रांताचे गव्हर्नर आहेत.<sup>5</sup> प्रसिद्ध खेळाडू जनतेच्या लोकप्रीयतेला प्राप्त होत असल्यामुळे अश्या खेळाडूंची एक दिव्यवलयी अधिसत्ता राजकारणात निर्माण होते. या सत्तेमध्ये अडचण एवढीच असते की हे दिव्यवलय जर काही कारणाने नष्ट झाले तर त्या खेळाडूंची व त्यांच्या पक्षाची लोकप्रियता कमी होते अधिमान्यता नष्ट होते.

**४. राष्ट्रीय एकात्मतेचे प्रतिक :**



खेळाच साधन म्हणून उपयोग होतो आत्यंतिक राष्ट्रप्रेमाची भावना निर्माण होण्यासाठी होतो. खेळामध्ये लोकांना एकत्र बांधण्याचे किंवा एकमेकांप्रती जिव्हाळा निर्माण करण्याची क्षमता आहे. त्यामुळे खेळातून राष्ट्रीय एकात्मता निर्माण होण्यास मदत होते. नुकतेच भारतात साजरा होणारा २१ जून हा 'योग दिवस' याचे उत्कृष्ट उदाहरण होय. योग दिवसाचे औचित्य साधून लोकांना मोठ्या संख्येने एकत्र आणून योगाभ्यास केला जातो. त्यामुळे हे भारतीयांमध्ये एकात्मता निर्माण करण्याचे साधन असून त्यामुळे आंतरराष्ट्रीय स्तरावर भारताला प्रतिष्ठा प्राप्त झालेली आहे.

#### ५. आंतरराष्ट्रीय संबंधात सुधारणा होण्यासाठी :

खेळाचा कुटनीतिक प्रयोग करून राष्ट्रांमधील सामाजिक, राजकीय संबंध प्रस्थापीत होऊ शकतात. राष्ट्रांमधील तणावपूर्ण संबंध सुव्यवस्थित आणण्यासाठी खेळाचा साधन म्हणून उपयोग होऊ शकतो. उदा. १९६२ नंतर भारत - चीन संबंधांमध्ये निर्माण झालेला तणाव १९७४ मध्ये कोटणीस खेळ समिती चीनमधील गेल्यामुळे दूर झाला आणि पुढे अनेक दिवस हे संबंध स्थिर राहिले.<sup>६</sup> आताच्या अनेक ऑलिम्पिक स्पर्धांच्या आयोजनातून असा निष्कर्ष पुढे येतो की, ऑलिम्पिक स्पर्धांचा उपयोग कुटनीतिक संबंध प्रस्थापीत करण्यासाठी राजन्याये एक साधन म्हणून होतांना दिसतो.

आंतरराष्ट्रीय राजकारण हे खेळप्रमाणे असते प्रतीस्पर्धीचे डावपेच व कुटनीती विचार घेवून खेळाडूला आपली रणनीती निश्चित करावी लागते. खेळप्रमाणेच आंतरराष्ट्रीय राजकारणात आपले स्थान निर्माण करण्यासाठी प्रत्येक राष्ट्र आपले राष्ट्रीय ही त डोक्यासमोर ठेवून एका निश्चित कुटनीतीचा स्वीकार करित असतो आणि यशस्वी होतो. असे निदर्शनास येते की दुसऱ्या महायुद्धानंतर जगाचे विध्वनीकरण होऊन जग दोन महासत्तांमध्ये विभाजित झाले १९४५ - १९८९ हा कालावधी शीतयुद्धाचा असून दोन महासत्तांमध्ये तणावाचा परिणाम आंतरराष्ट्रीय वातावरणावर झालेला आढळतो या दरम्यान पूर्व जर्मनीने खेळाचा आधार होवून हा तणाव बऱ्याच प्रमाणात कमी केलेला होता. कारण राष्ट्रांमधील नेत्यांना संवाद साधण्यासाठी अकार्यालयीन व्यासपीठे उपलब्ध होते. ज्यामुळे तणावपूर्ण परिस्थितीची वृत्ता कमी करता येते.

१९७० पश्चिमकडील राष्ट्रांनी खेळांना इतके महत्व दिले नाही परंतु १९७० नंतर मात्र सुरवातीत (शीतयुद्धाच्या शेवटच्या टप्प्यात) आंतरराष्ट्रीय संबंधांना समाधानकारक महत्व देऊन त्यांनी आंतरराष्ट्रीय तणाव बऱ्याच प्रमाणात कमीकरी पाश्चिमात्य राष्ट्रांमध्ये विशेषत अमेरिका, कॅनडा या दोन राष्ट्रांना खेळाच्या आंतरराष्ट्रीय महत्वाची जाणीव झाल्यामुळेच

त्यांनी चीनमध्ये ऑथेलेटीक्स स्पर्धेत भाग घेण्यासाठी आपली १९७३ मध्ये चीनला पाठविली आणि चीनसोबतच्या आपल्या संबंधाला पुन्हा आकार देण्याचा प्रयत्न केला.<sup>७</sup>

#### ६. आंतरराष्ट्रीय दबाव निर्माण करण्यासाठी :

एखादे राष्ट्र आंतरराष्ट्रीय कायद्याचा भंग करित असेल, आंतरराष्ट्रीय शांतता व सुव्यवस्थेचा भंग करित असेल तर संयुक्त राष्ट्रांच्या सुरक्षा परिषदेकडून अश्या राष्ट्रासाठी सैनिक कार्यवाहीचा वापर न करता काही मार्गांचा अवलंब केला जातो. उदा. अश्या राष्ट्राशी इतर राष्ट्रांनी संबंध (व्यापारिक, राजकीय, आर्थिक किंवा सांस्कृतिक) न ठेवणे, अश्या राष्ट्राचे सदस्यत्व काही काळ निलंबित करणे, इत्यादी. त्यापैकीच एक मार्ग म्हणजे आंतरराष्ट्रीय स्तरावर होणाऱ्या क्रीडा स्पर्धांपासून अश्या राष्ट्रांना अलिप्त ठेवणे किंवा सहभागी होण्यावर प्रतिबंध आणणे. रंगभेदाविरुद्धच्या द. आफ्रिकेच्या धोरणाला विरोध करण्यासाठी सर्वप्रथम १९६४ मध्ये द. आफ्रिका उन्हाळी ऑलिम्पिक मधून बाहेर काढण्यात आले.<sup>८</sup> कालंतराने द. आफ्रिकेला सर्वच खेळांमधून निलंबित करण्यात आले. याचाच अर्थ एखाद्या राष्ट्रावर आंतरराष्ट्रीय दबाव निर्माण करण्यासाठीही क्रीडांचा उपयोग होतो.

#### ७. आंतरराष्ट्रीय शांतता व सुव्यवस्था प्रस्थापीत करण्यासाठी :

आंतरराष्ट्रीय शांतता व सुव्यवस्था प्रस्थापीत करण्यासाठी खेळनीती चा उपयोग होतो. आंतरराष्ट्रीय क्रीडास्पर्धा या युद्धासारख्या असल्या तरी त्या शांततेसाठी असतात. आंतरराष्ट्रीय क्रीडास्पर्धेचे नियम हे देशाच्या कायद्याप्रमाणे असतात. प्राचीन ग्रीकांपासून आजतागायतच्या आधुनिक काळातही खेळाचे तेच नियम आढळतात, जो खेळात उत्तम असतो तो क्रीडाक्षेत्रात बलवान ठरतो व त्यांना खेळाचे लाभही मिळतात. याउलट जे खेळात सुमार दर्जाचे असतात त्यांना लाभही कमी मिळतात खेळाडूंचे सार्वभौमत्व आणि सुविधा यांच्या आधारे अश्याप्रकारे आपण खेळाडूंच्या वैयक्तिक भावनेच्या सुधारणेचे मुल्यांकन करू शकतो. अश्या प्रकारे तुलनात्मक दृष्ट्या राष्ट्राचे व लोकांचे मुल्यांकन कर्ता येते. अर्थात खेळ किंवा क्रीडा शांतीचा संदेश देणाऱ्या युद्धाचे व्यासपीठ आहे, असे मानावे लागेल. एका सर्वेक्षणामध्ये असे निदर्शनास आले की, ज्या राजकीय डावपेचात कोणतेही एक साधन अपयशी झाले तर खेळाला दुसरे राजकीय साधन म्हणून वापरले जाते आणि ऑलिम्पिक क्रीडा स्पर्धा यांचे उत्तम उदाहरण होय. २१ जून हा भारतात २०१४ पर्यंत नाममात्र स्वरूपात योग दिवस म्हणून साजरा होत होता. पण २०१४ नंतर पंतप्रधान नरेंद्र मोदींच्या प्रयत्नाने त्याचे आंतरराष्ट्रीय योग दिनात रुपांतर झाले. २०२१ च्या जून महिन्यात झारखंड येथे आयोजित एका



कार्यक्रमात ४०,००० लोकांसोबत योगा करतांना प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी म्हणाले की, "आमचे बोधवाक्य शांती, प्रगती व सौहार्दासाठी आहे".

एका ठिकाणी नेल्सन मंडेल म्हणाले होते की, "जगात बदल घडवून आणणे, लोकांना एकत्र आणणे व त्यासाठी प्रेरित करण्याची क्षमता केवळ खेळात आहे अन्य ते थोड्या प्रमाणात करू शकतात." <sup>10</sup> वरीलप्रमाणे राजकारणात खेळाचे महत्त्व आढळत असले तरी याचे राजकारणावर पुढीलप्रमाणे परिणाम होतात.

**राजकारणावर खेळाचे सकारात्मक परिणाम :**

- १) खेळामुळे राष्ट्रातील नागरिकांच्या मनात देशप्रेमाची भावना निर्माण होते. ज्वलंत राष्ट्रभिमान निर्माण होतो.
- २) राष्ट्रातील राजकीय संबंध सुधारतात, तणाव कमी होतो.
- ३) राजकीय सत्ता प्राप्त करण्यास आधार प्राप्त होतो.
- ४) अनीपचारिक स्तरावर चर्चेसाठी आंतरराष्ट्रीय व्यासपीठ उपलब्ध होते.
- ५) राजकीय नेत्यांना अधिमान्यता प्राप्त होऊन त्यांची सत्ता अधिक टिकाऊ होते.
- ६) राजकीय विचारधारेचा प्रचार व प्रसार सहज होतो.
- ७) आंतरराष्ट्रीय सहकार्याची भावना वाढीस लागते.
- ८) वैश्विक कुटुंबाची (वसूषीय कुटुंबाची) भावना वाढीस लागते.

**राजकारणावर खेळाचे नकारात्मक परिणाम :**

खेळामुळे आत्यंतिक राष्ट्रवादाचा जन्म होऊन कालांतराने त्याचा संबंध आक्रमक राष्ट्रवादात होतो. खेळाचा संबंध राष्ट्राच्या प्रतिष्ठेशी जोडला जातो. परिणामस्वरूप जागतिक स्पर्धेत पराभूत झालेल्या चमूला आपल्या राष्ट्रात परत जाण्याची इतकी धास्ती वाटते की तो प्रश्न चमूच्या जीवन-मरणाचा असतो उदा. भारत - पाकिस्तान क्रिकेट स्पर्धेत हरलेल्या पाकिस्तान चमूला आपल्या देशात परत जाण्याची धास्ती वाटते कारण त्यांना आपल्या देशातील नागरिकांच्या रोषाला सामोरी जावे लागते.

**उपाय योजना व शेट :** आत्यंतिक राष्ट्रवादाची भावना खेळ आणि राष्ट्र दोघांसाठी अत्यंत घातक असून त्याला प्रतिबंध घालण्याची गरज आहे. राजकीय सत्ताधीश आणि क्रीडा व्यवस्थापक यांच्या योग्य समन्वयाने राजकीय क्षेत्रासाठी सकारात्मक पद्धतीने खेळाचा कसा उपयोग करून आंतरराष्ट्रीय सहकार्याची भावना वाढीस लावण्याची नितांत आवश्यकता आहे.

**संदर्भ :**

1. Sport diplomacy 'A Review - use of sport in International Relation
2. Politicsandsports.org

3. The role of sports in international relations, fuat, ahmet oguz Acta universities danubius, relations internationals, vol 9, No - (2016) Page - 5 Acta universities danubius, relations internationals, vol. 9, No - (2016) Page - 5
4. Sports, politics & international relations in the 20<sup>th</sup> century, The International Journal of History of Sports vol. 25, No - 13 Nov - 2020
5. The Role of Sports in International Relations, fuat, ahmet oguz Acta universities danubius, relations internationals, vol. 9, No - (2016) Page - 5 Acta universities danubius, relations internationals, vol. 9, No - (2016) Page - 5
6. तत्रैव
7. तत्रैव
8. Sport diplomacy 'A review - use of sports
9. <https://www.thehindu.com/news, India uses yoga diplomacy to assert rising global influences.>
10. Sports, Politics & International Relations in 20<sup>th</sup> century the International Journal of History of Sports vol. -25, No - 13 Nov. 2020





Dr. B. P. Yeole

Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed Journal  
(Journal No. 47026)



ISSN 2319-359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY  
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

**MONEY**

Volume - IX, Issue - II  
March - August - 2021  
Marathi Part - II

Impact Factor/Indexing  
2019-6.601  
[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

**IDEAL**

**Ajanta Prakashan**



## ❧ CONTENTS OF MARATHI PART - II ❧

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सामाजिक सुधारणा डॉ. अर्जुन गंगाराम नेरकर	१-५
२	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या कृषी विषयक विचारांचा : भौगोलिक दृष्टिकोनातून अभ्यास प्रा. डॉ. दिलीप नि. लांजेवार	६-९
३	भारतीय संविधान-मानवाधिकार आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर डॉ. प्रतिभा सुरेश जाधव	१०-१५
४	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सामाजिक सुधारणा डॉ. व्ही. बी. चांदजकर	१६-१८
५	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे भारतीय राज्यघटना निर्मितीतील योगदान सहा. प्रा. डी. डी. ठाकरे	१९-२५
६	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे लोकशाही संबंधी विचार व आजची परिस्थिती डॉ. विशाखा जगन्नाथ डेरे	२६-३१
७	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे सामाजिक व आर्थिक दृष्टिकोण प्रा. पवार रामेश्वर भाऊसाहेब	३२-३४
८	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या आर्थिक विचारांचा परामर्श अमोल पर्वत गरुड	३५-३९
९	भारतातील जलधोरणाच्या पायाभरणीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान व त्यांच्या विचारांची प्रासंगिकता डॉ. अमोल जगन्नाथ शेंडे डॉ. आर. बी. शंभरकर	४०-४३
१०	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक आणि राजकीय दृष्टिकोण वापचोरे अशोक भावराव	४४-४८
११	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार आणि सद्यस्थितीतील उपयुक्तता दिलीप आप्पा जगताप	४९-५२
१२	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि महिला सक्षमीकरण अश्विनकुमार अर्जुनराव जोगदंड	५३-५७



## ❧ CONTENTS OF MARATHI PART - II ❧

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे स्त्रियांबाबत सुधारणावादी कार्य प्रा. कविता अशोक मोराडे	५८-६०
१४	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार के. एस. तिडके	६१-६६
१५	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार आणि सामाजिक आशयाचे चित्रपट लक्ष्मीकांत साळुबा जाधव	६७-७०
१६	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक व सामाजिक सुधारणा विषयक विचार प्रा. निखिल गणेश जगताप	७१-७५
१७	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषी विषयक विचार प्रा. विनायक यशवंत वनमोरे प्रा. डॉ. बाळासाहेब कोंडीबा माने	७६-८१
१८	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे लोकशाही विषयक विचार आणि सद्यस्विती डॉ. सुनिता आत्माराम टेंगसे	८२-८८
१९	भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे संसदीय लोकशाही संबंधीचे विचार डॉ. सोमवंशी मुक्ता (गंगणे)	८९-९४
२०	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे अस्पृश्यता निवारणासंबंधी कार्य प्रा. डॉ. अरुण मुकुंदराव शेळके	९५-९९
२१	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर एक समाज सुधारक डॉ. अंभुरे एस. डी.	१००-१०४
२२	भारतीय संविधान आणि भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. मोकळ प्रभाकर रामजी	१०५-१०८
२३	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा लहान राज्याविषयीचा दृष्टीकोण प्रा. सुभाष दामोदर	१०९-११३
२४	आरक्षण आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. बबिता येवले	११४-११७



## ❧ CONTENTS OF MARATHI PART - II ❧

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२५	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या शैक्षणिक विचारांची प्रासंगिकता प्रा. डॉ. सुनिल प्रल्हाद गायगोळ	११८-१२२
२६	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर: स्वातंत्र्य, समता, बंधुता व न्यायाचा विचार करणारे महानायक प्रा. डॉ. प्रदीप रामकृष्ण राऊत	१२३-१२५
२७	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे लोकशाही विषयक विचार डॉ. मनिषा शंकर यादव	१२६-१२९
२८	भारतीय स्त्रियांचे मुक्तीदाते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. सोनवले राजकुमार रंगनाथ	१३०-१३५
२९	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सामाजिक चळवळी कु. प्रियंका कि. जगदेवे	१३६-१३९
३०	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार प्रा. यादव जे. बी.	१४०-१४५
३१	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार आणि सद्यस्थितीतील उपयुक्तता डॉ. एन. एल. गोंडाने	१४६-१५०
३२	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या सामाजिक विचारांचा अभ्यास प्रा. ए. बी. राऊत	१५१-१५५



## २४. आरक्षण आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

प्रा. डॉ. बबिता येवले

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती.

आरक्षण हा स्वातंत्र्योत्तर काळातील भारतातील सर्वाधिक विवादास्पद विषय प्रथमपासूनच राहिलेला आढळतो. भारतीय संविधानातील विविध कलम मधून भारतातील वंचित शोषित आणि मागासवर्गीयांना दिलेले आरक्षण स्पष्ट होते. आरक्षण देण्यामागील घटनाकारांची भूमिका संरक्षणात्मक भेदभाव या स्वरूपाची असली तरी त्यासंबंधी आजतागायत समर्थक आणि विरोधक यांच्यामध्ये कायमस्वरूपी खंडाजंगी निर्माण झालेली आढळते मात्र आरक्षणाची सैद्धांतिक किंवा संकल्पनात्मक बाजू आणि व्यवहार्य दृष्टिकोन यातील फरक समजून घेऊन हा मुद्दा अधिक चांगल्या प्रकारे अवगत होतो डॉ. आंबेडकरांचा यासंबंधीचा दृष्टिकोन हा 'संरक्षणात्मक भेदभाव' यावर आधारित आहे. गत अनेक वर्षांपासून समाजातील जो एक मोठा वर्ग विशेष सत्ता संपत्ती आणि सेवा या सामाजिक सुविधांपासून अलिप्त राहिला अशा वर्गाला विकासाच्या मुख्य प्रवाहात आणण्यासाठी थोड्या जास्त सुविधा देणे हा संरक्षणात्मक भेदभावाचा अर्थ असून यालाच भारतातील आरक्षणाचा मुख्य सैद्धांतिक आधार मानला जावा. असा त्यांचा कयास होता व त्या दृष्टीने आरक्षणाचा समावेश भारतीय संविधानात करण्यात आला पण विवाद्य मुद्द्यात मूळ उद्देशाचे अध्ययन न करता समर्थक व विरोधक परस्पर विरोधी भूमिका घेताना आढळतात. प्रस्तुत शोध पत्राच्या माध्यमातून आरक्षणाची सैद्धांतिक बाजू समजून घेणे व घटना परिषद आणि डॉ. बाबासाहेबांची भूमिका अभ्यासणे आणि त्याचबरोबर व्यवहार्य बाजूतील उणिवांची चर्चा करणे हा हेतू आहे.

भारतीय संविधानाने स्वातंत्र्योत्तर भारतात अनेक कलमांच्या माध्यमातून आरक्षण दिलेले आहे. भारतीय संविधानाच्या कलम ३३० ते ३३४ मध्ये राजकीय आरक्षणाची (लोकसभा, विधानसभा) आरक्षणाचा तुलनेत आहे. कलम १५, शिक्षण कलम १६ मध्ये नोकरीतील आरक्षण, कलम २३४ - पंचायत राजव्यवस्थेची आरक्षण कलम ३०; अल्पसंख्यांक समुदाय आरक्षण, या सांविधानिक तरतुदी शिवाय प्रत्यक्षतः पेट्रोल पंप, आवास योजना, स्कॉलरशीप, बँकलोन घेतांना, अश्या विविध स्तरावर आरक्षण आढळते. स्वातंत्र्योत्तर काळात विभिन्न आयोग यासंबंधात गठीत झालेत. जे मागासवर्गीयांच्या तक्रारी, अटी अडचणी समजून त्यावर उपाययोजना करतांना आढळतात व तसा अहवाल केंद्र सरकारला सादर करतात.

मुळात अत्यंत विवादस्पद राहिलेल्या आरक्षण या संकल्पने बाबतीत अनुकूल व प्रतिकूल वर्ग आढळतात. आरक्षणाचे समर्थक करणारे अधिकाधिक ते वर्ग आहेत ज्यांना आरक्षणाचे लाभ मिळतात आणि ज्यांना लाभ मिळत नाहीत किंवा आरक्षणामुळे ज्यांची अशी धारणा आहे की आपले हक्क हिरावून घेतले जातात ते यांचे विरोधक आहे.



विरोधकांचे आरक्षणाच्या संदर्भातील काही मते अशी आहेत की जर भारतीय संविधानाने भारतातील सर्व नागरिकांना समानता प्रदान केलीली आहे तर मग आरक्षण समानतेच्या तत्वाला विरोधी आहे. दुसरे जातीच्या आधारे आरक्षण का देले जाते? तिसरे आरक्षणाची मर्यादा किती असावी? चवथे आरक्षण घटनेच्या निर्मितीपासून केवळ पहिल्या १० वर्षांतच होते पुढे राजकीय लाभासाठी ते वाढविण्यात आले? बगैरे. या प्रश्नांची उत्तरे देण्यातूनच डॉ. बाबासाहेबांचा आरक्षणाचा दृष्टीकोन स्पष्ट होतो.

### आरक्षणाचा अर्थ

आरक्षणाचा खरा संबंध समतेच्या तत्वांशी पूरक आहे. विरोधी नाही. समानतेचा अर्थ प्रत्येकवेळी समतलता प्रस्थापित करणे असाच होतो असे नाही. भेदभाव नष्ट करणे व सर्वांना एकाच समान पातळीवर आणणे, सर्वांना सारखेच नियम लागू करणे हा समतेचा नकारात्मक अर्थ. याउलट शोषित करणारा भेदभाव नष्ट करणे उदा. गुलामगिरी, वर्णभेद इत्यादी हा शोषण मुळक भेदभाव होय आणि कुणाचे शोषण होणार नाही यासाठी त्यांना सुरक्षा देणे हा संरक्षणात्मक भेदभाव उदा. वृद्ध महिलांना बस मध्ये सुरक्षित पण राखीव जागा प्रदान करणे इत्यादी हे दोन्ही पैलू समानतेच्या सकारात्मक बाजूत मोडतात. नकारात्मक भेदभावाचे परिणाम सारखे नसतात कारण ज्यांना सुरवातीपासूनच समाजाचे लाभ मिळत राहिल त्यांना यामुळे लाभ मिळत राहतात. लाभापासून वंचित राहिले त्यांना याचा कोणताच लाभ मिळत नाही त्यामुळे समानतेच्या सकारात्मक अर्थानुसार जर आपण आरक्षणाचा विचार केला तर केवळ विषमता नष्ट करणे एवढाच अर्थ आरक्षणाचा नसून शोषणापासून बचाव करण्यासाठी करण्यात आलेला भेदभाव म्हणजे 'संरक्षणात्मक भेदभाव' होय जो आरक्षणाचा खरा आधार आहे.<sup>(1)</sup>

कोणत्याही व्यवस्थेत केवळ विषमता नष्ट केल्याने शोषित वर्गाचे कल्याण होत नाही तर त्याच्या एक पाऊल पुढे जाऊन संरक्षणात्मक भेदभावाची गरज पडते आणि त्यासाठी अश्या शोषित घटकांना मुख्य प्रवाहात आणण्यासाठी त्यांना अतिरिक्त सोयी पुरविणे किंवा देणे आवश्यक असते. याचा अर्थ आरक्षण हे समानतेच्या नकारात्मक पैलूच्या विरोधी आहे पण समानतेच्या सकारात्मक पैलूंचे समर्थक आहे.<sup>(2)</sup>

भारतातील एका मोठ्या वर्गाला हजारोवर्षांपासून सामाजिक संसाधनाच्या लाभापासून वंचित राहावे लागले कारण त्याच्या क्षमता कमी पडल्या असे नसून त्यांना ते प्राप्त करण्याची संधी मिळाली नाही. म्हणून अश्या वर्गाला संधी उपलब्ध करून देवून मुख्य प्रवाहात आणणे म्हणजे संधीची समानता होय. ज्या व्यवस्थेत संधीची समानता प्रस्थापित होते तेथे आपोआपच सामाजिक न्याय प्रस्थापित होतो. त्यामुळे आरक्षण सामाजिक न्याय प्रस्थापित करण्यासाठी एक पूरक पाऊल ठरते.

आरक्षणाची ही सैद्धांतिक व्याख्या विचारात घेतली की डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची त्यामागील भूमिका अधिक स्पष्ट होते.



### बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर स्वतः सामाजिक भेदभावाचे लहानपणापासून बळी ठरले. स्वतंत्रपूर्व भारतात सामाजिक भेदभाव इतका अधिक व्यापला होता याचे उदाहरण त्याकाळातील प्रत्येक घटकराज्यात दिसत होते. दलित, निम्न जाती किंवा अस्पृश्य समुदायच नव्हे तर महिला सुद्धा याच्या बळी होत्या. विशेषतः दलित समाजातील महिलांची स्थिती किती भयंकर होती याचे उदाहरण केरळ मधील ब्राह्मणकोरमचे नागेली च्या घटनेतून स्पष्ट होते.<sup>(1)</sup> केरळमध्ये नाडर समुदाय, महाराष्ट्रात अस्पृश्य समुदाय याचे उदाहरण आहे.

१. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आरक्षणाचे समर्थक होते. त्याची अशी मान्यता होती की भारतात आदर्श लोकशाही तेव्हाच प्रस्थापित होऊ शकेल जेव्हा या देशात राहणाऱ्या प्रत्येक समुदायाला त्याच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात सत्तेत सहभागी होण्याचा अधिकार मिळेल अर्थात जर भारतात दलितवर्ग २०% आहे तर किमान संसदेत दलितांची भागीदारी २०% असावयास पाहिजे.
२. डॉ. आंबेडकरांचे असे मत होते की समावेशन आवश्यक आहे. जर देशाचा खऱ्या अर्थाने विकास करावयाचा असेल तर सामाजिक, राजकीय व आर्थिक सहभागापासून कोणताच वर्ग वंचित राहू नये. दुर्बल घटकांना मुख्य धारेत आणण्यासाठी आरक्षण हा उत्तम उपाय आहे.
३. आरक्षणामुळे देशाप्रती विश्वास वाढेल व जीवनमनाचा दर्जा सुधारेल असे आंबेडकरांचे मन होते. एक मोठा वर्ग लाभपासून वंचित राहिल्यास असंतुष्ट भाव निर्माण होईल. परिणामस्वरूप राष्ट्रउभारणीत अडचणी येतील म्हणून राष्ट्रउभारणीसाठी आरक्षण अनिवार्य आहे.

डॉ. आंबेडकरांच्या आरक्षणविषयक विचारावर जॉन रॉल्सचा प्रभाव आढळतो. जॉन रॉल्सने आपला 'Theory of Justice' या ग्रंथात सामाजिक न्यायाची व्याख्या करतांना असे म्हंटले आहे की, 'वर्षानुवर्ष सत्ता, संपत्ती व सेवा यापासून वंचित राहिलेल्या दुर्बल घटकांना थोडे अधिक देवून समान न्याय प्रस्थापित करता येतो'.<sup>(2)</sup>

१७ ऑगस्ट १९३२ मध्ये ब्रिटीश सरकारने 'कॅमिन्सुअल अवार्ड (जातीय निवाड्याची) घोषणा केली. यानुसार दलितांना स्वतंत्र मतदानाचा अधिकार प्राप्त झाला. त्याचप्रमाणे दलितांसाठी राखीव मतदारसंघ देण्याची घोषणा करण्यात आली. त्यामुळे दलितांना दुहेरी मतदानाचा अधिकार प्राप्त झाला. लंडनमध्ये १९३० ते १९३२ यादरम्यान झालेल्या तीन गोलमेज परिषदांची ही फलश्रुती होती. यामुळे दलितांना स्वतंत्र आलेख व राजकीय अधिकार प्राप्त होणार होते. राजमोहन गांधीचे पुस्तक 'अंडरस्टॅंडिंग दि फायंडिंग फादर्स' च्या नुसार गांधीजींचा याला विरोध होता. ब्रिटीशांच्या 'फोडा व झोडा' या नीतीचे हे विस्तारित स्वरूप असून जाणीवपूर्वक दलितांना हिंदुपासून विलग करण्याची ही योजना आहे. असा गांधीजींचा तर्क होता. परिणामतः म. गांधींनी पुण्याच्या येरवडा तुरुंगात आमरण उपोषणाला सुरुवात केली. परिणामस्वरूप २४ सप्टेंबर १९३२ रोजी 'पुणे कराराच्या' माध्यमातून जातीय निवाड्याचा निर्णय अमान्य करण्यात आला. या करारात प्रांतीय विधिमंडळात दलितांना आरक्षित जागांच्या संख्या ७१ वरून १४८ करण्यात आली, केंद्रीय विधिमंडळात १८ % आणि नागरी सेवेत दलितांना योग्य प्रतिनिधी देण्याचे या कराराने मान्य करण्यात आले.<sup>(3)</sup>



जातीय निवाड्याचा निर्णय मान्य करून दलित वृकांना राजकीय सत्तेत सहभागी होण्याचा अधिकार मिळेल या अपेक्षेने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी याचे समर्थन केलेले होते.

#### निष्कर्ष

१. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा आरक्षणासंबंधीचा दृष्टीकोन हा जॉन रॉल्सप्रमाणे सामाजिक न्याय प्रस्थापित करण्यासाठी आहे अशा स्वरूपात होता.
२. अध्ययनातून असेही निदर्शनास येते की, भारतासारख्या विशाल लोकशाही देशात अनेक वर्षे राजकीय, सामाजिक लाभापासून वंचित राहिलेल्या दुर्बल घटकांना केवळ दलितच नव्हे स्त्रिया सुद्धा यांना अधिकार देऊन प्रवाहात आणल्याशिवाय लोकशाही फलद्रूप होऊ शकत नाही असे आंबेडकरांचे मत होते.
३. आरक्षणाचा विरोध करणारे असे मानतात की, संविधानात आरक्षणाची तरतूद केवळ पहिल्या दशकपूर्वी मर्यादित होती परंतु राजकीय लाभासाठी ती वेळोवेळी वाढविण्यात आली. पण अध्ययनाअंती असे निदर्शनास येते की, ही तरतूद केवळ राजकीय आरक्षणासाठी होती इतर आरक्षणासाठी नाही.
४. विद्यमान भारतात आरक्षणासंदर्भात अनेक वाद-विवाद केले जातात की आरक्षणामुळे कार्यक्षमता आणि योग्यता डावलली जाते आणि वैश्विक स्पर्धेत टिकण्यासाठी भारताला हे परवडण्यासारखे नाही. परंतु आज जगात कोणतेच राष्ट्र पूर्णतः योग्यतेच्या आधारे संधी देताना आढळत नाही ही वस्तुस्थिती आहे.

भारतात आरक्षणासंदर्भात होणार्या वाद-विवादांना सोडविण्यासाठी प्रथम डॉ. आंबेडकरांची त्यामागील भूमिका समजून घेऊन आरक्षण मुद्यावर फेरविचार होण्याची आवश्यकता आहे. संविधानाने दिलेल्या आरक्षणाचा लाभ ज्यांना गरज नाही त्यांना मिळत असेल तर ज्यांना मिळत नाही त्यांचा विरोध स्वाभाविक आहे. म्हणून आरक्षणाचा पुनर्विचार करून त्याचे मापदंड वर्तमान व भविष्यकालीन परिस्थितीच्या संदर्भात निर्धारित करण्याची अत्यंत आवश्यकता आहे.

#### संदर्भ ग्रंथ

१. <https://www.socialjustice.nic.in>
२. <https://www.deccanchromicle.com>
३. <https://www.vbc.com/news>
४. भोळे, राजकीय सिद्धांत, पिंपळापुरे प्रकाशन, पहिली आवृत्ती, पृ. ४१
५. <https://www.prabhasakshi.com>



(SJIF) Impact Factor-8.575  
ISSUE No- (CCCXXXIX) 339

ISSN-2278-9308

# ***B.Aadhar***

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2022

**Sustainability Management: Concept,  
Applications and Research Opportunities**



Prof. Virag.S.Gawande  
Chief Editor  
Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Dr.Vijay Tompe  
Editor

G. S. Tompe Arts Comm & Sci. College Chandur Bazar Dist. Amravati

Dr. Sachin Bhombe  
Dr. Shashikant Dupare  
Co-Editors

G. S. Tompe Arts Comm & Sci. College Chandur Bazar Dist. Amravati

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher





Impact Factor - 8.575

ISSN - 2278-9308

# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed  
Multidisciplinary International Research Journal

## February -2022

ISSUE No- (CCCXXXIX ) 339

**Sustainability Management: Concept,  
Applications and Research Opportunities**

**Prof. Virag.S.Gawande**

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

**Dr.Vijay Tompe**

Editor

G. S. Tompe Arts Comm & Sci. College Chandur Bazar Dist. Amravati

**Dr. Sachin Bhombe**

**Dr. Shashikant Dupare**

G. S. Tompe Arts Comm & Sci. College Chandur Bazar Dist. Amravati

## Aadhar International Publication

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher





महाराष्ट्र राज्यातील वनक्षेत्र आणि वणव्यामुळे जळलेले वनक्षेत्र - भौगोलिक आढावा  
प्रा. दिपक उ अंबोरे

विभाग प्रमुख (भूगोल विभाग) महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती  
मोबाईल नं - ९७३०१९८६७८, ईमेल - deepakambore710@gmail.com

सारांश

वने ही राष्ट्रीय संपत्ती आहे आणि पर्यावरणाचा समतोल राखणारा महत्वाचा दुवा आहे. महाराष्ट्र राज्यात विविध प्रकारची वने आढळत असून महाराष्ट्र राज्यातील हवामानावर त्याचा प्रभाव आढळून येतो. वनांचे नुकसान झाल्यावर त्याचा थेट परिणाम स्थानिक हवामानावर होतो व त्यामुळे, मृदेची धूप होते, पर्जन्याचे प्रमाण कमी होते, प्रदूषण वाढते आणि पर्यावरणाचा समतोल बिघडतो.

प्रस्तुत लेखा अंतर्गत महाराष्ट्र राज्यातील वनक्षेत्राचा धोडक्यात आढावा घेतला असून मागील काही वर्षात आगीमुळे वनक्षेत्राच्या प्रमाणात झालेल्या नुकसानीचे विश्लेषण केलेले आहे.

बीजसंज्ञा

महाराष्ट्र राज्य, वनक्षेत्र, पर्यावरण, घट, आग, वणवा

प्रस्तावना

महाराष्ट्र राज्यातील वन्याच जिल्ह्यात नैसर्गिक वनसंपत्तीचे मुख्यक आच्छादन आहे आणि त्यातून गिळणाऱ्या साधन संपत्तीचा विविध घटकांसाठी उपयोग केल्या जातो. महाराष्ट्र राज्यात वनक्षेत्राचे प्रमाण सर्वत्र एकसारखे नसून त्याच्या वितरणात तफावत आढळून येते. मागील काही वर्षात वृक्षरोपणाचे उपक्रम सुरू असले तरी राज्यात वन्याच भागाने ह्याचे प्रमाण कमी झालेले आहे. अवैध जंगल तोड, जंगलात लागलेल्या आगी हे यामागचे प्रमुख कारणे आहेत. प्रस्तुत संशोधन लेखामध्ये महाराष्ट्र राज्यातील वनक्षेत्राचा आढावा घेतलेला असून मागील काही वर्षात वनक्षेत्रात लागलेल्या आगीमुळे झालेल्या नुकसानीचे विश्लेषण करण्यात आलेले आहे.

उद्दिष्टे

प्रस्तुत अभ्यासाची मुख्य उद्दिष्टे पुढील प्रमाणे.

- १) महाराष्ट्र राज्यातील विविध वनसंपत्तीचे विश्लेषण करणे
- २) महाराष्ट्र राज्यातील वनक्षेत्रात लागलेल्या आगीमुळे झालेल्या हानीचे विश्लेषण करणे

माहिती स्रोत व अभ्यास पद्धती

प्रस्तुत संशोधन लेखाच्या अभ्यासासाठी उपयोगात आलेली माहिती ही प्रामुख्याने द्वितीय स्त्रोतांद्वारे प्राप्त केलेली असून ही माहिती, प्रकाशित व अप्रकाशित शासकीय अहवाल, संशोधन लेख, इंटरनेटवर उपलब्ध असलेली माहिती इत्यादी द्वारे करण्यात आलेली आहे.

प्राप्त केलेल्या माहितीचे विश्लेषण करून मुख्य आकडेवारीचे प्रदर्शन आलेखाच्या सहाय्याने करण्यात आलेले आहे तर एकूण वनक्षेत्र हे नकाशात दर्शविले आहे.

अभ्यास प्रदेश

महाराष्ट्र राज्याचा अक्षवृत्तीय विस्तार हा १५° ४४' उत्तर ते २२° ०६' उत्तर असून रेखावृत्तीय विस्तार ७२° ३६' पूर्व ते ८०° ५४' पूर्व आहे. महाराष्ट्र राज्य हे भारतातील प्रमुख राज्य असून त्याचे स्थान मध्य भारतात पश्चिमेकडे आहे. राज्याचे एकूण भौगोलिक क्षेत्रफळ ३०७७१३ चौकिमी असून भारताच्या एकूण भौगोलिक क्षेत्राशी त्याचे प्रमाण १.३७% आहे.

महाराष्ट्र राज्यात एकूण ३६ जिल्हे असून २०११ च्या जनगणनेनुसार एकूण लोकसंख्या ११२३७४३३३ आहे तर देशातील एकूण लोकसंख्येपेक्षा त्याचे प्रमाण ९.३०% आहे.

महाराष्ट्र राज्यातील वनक्षेत्र

महाराष्ट्र राज्यात ऑगस्ट २०१७ वर्षी अखेर पर्यंत एकूण वनक्षेत्र ६१९३९ चौकिमी होते तर त्याचे एकूण भौगोलिक क्षेत्राशी प्रमाण २०.१२% असल्याचे आढळून आले होते. या एकूण वनांपैकी राखीव वनक्षेत्र ५११७० चौकिमी, संरक्षित वने ६६८१ चौकिमी, अवर्गीकृत वनक्षेत्र ३७३० चौकिमी होते.





भारतातील एकूण वनक्षेत्रांपैकी महाराष्ट्र राज्यातील वनक्षेत्र हे सुमारे ७.७८% असून राज्य वनविभागाचे मुख्यालय नागपूर येथे स्थित आहे. महाराष्ट्र राज्यातील वट वनांचे प्रमाण ११.५% असून राज्यातील अभयारण्यस्थानील क्षेत्र १००५७ चौकिमी (३.२६%) आहे. महाराष्ट्र राज्यात सर्वाधिक वनक्षेत्र गडचिरोली जिल्ह्यात (९०.४%) तर सर्वात कमी वनक्षेत्र लातूर जिल्ह्यात (०.६%) आहे.

महाराष्ट्र राज्यातील वनांचे वर्गीकरण

१) उष्ण कटिबंधीय सदाहरित वने - ह्या प्रकारची वने महाराष्ट्र राज्यात वार्षिक पर्जन्य २०० सेमी पेक्षा अधिक असलेल्या प्रदेशात आढळून येतात. पश्चिम घाट, सह्याद्रीचा घाटमाथा, गेलघाट मधील गाविलगड, चंद्रपूर व गडचिरोली या जिल्ह्यात ही वने प्रामुख्याने आढळून येतात. या वनातील प्रमुख वृक्ष म्हणजे जांबूळ, पिसा, नागचंपा, फणस, शिसम, ओक, बांबू, कोकम, हीरडा हे आहेत.

२) उष्ण कटीबंधीय निम सदाहरित वने - वार्षिक पर्जन्य १५० ते २०० सेमी असणाऱ्या प्रदेशात ह्या प्रकारची वने आढळून येतात. सह्याद्री पर्वताचा पश्चिम व पूर्व उतार तसेच सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी, लोणावळा या प्रदेशात ही वने आढळून येतात. या प्रकारच्या वनांमध्ये : किंजल्क, हीरडा, वेहडा, रानफणस, कदंब, शिसम, किंडल, चिंचळा, मावर, मिन्हर्दे, ऐन, वाबळी, जीवत, नाणा, शेव, गेळा इत्यादी वृक्ष आढळतात.

३) उपोष्ण कटिबंधीय सदाहरित वने - वार्षिक पर्जन्य २५० ते ८०० सेमी प्रदेशात ही वने आढळतात. महाबळेश्वर, पाचगणी, माथेरान, आंबोली, भीमशंकर, गाविलगड टेकड्यात ही वने आढळतात. अंजन, हीरडा, वेहडा, आंबा, जांबूळ, शेंद्री, रानफणस, सुरंगी, पिशा, नाल देवदार, चारजांव, काटेकुवर, पेवती, फोंगळा, रामेण, वामणी, दिंडा, ओंढळ इत्यादी या वनक्षेत्रातील प्रमुख वृक्ष आहेत.

४) आर्द्र पानझडी वने (मोसमी वने) - साधारणतः वार्षिक १२५ ते २०० सेमी पर्जन्याच्या प्रदेशात ही वने आढळून येतात. महाराष्ट्र राज्यातील एकूण वनक्षेत्रात ह्या वनांचे प्रमाण सुमारे ३०% असून गडचिरोली जिल्ह्यातील भामरागड, नुरजागड, टिपरागड, चांदूरगड (चंद्रपूर), भंडारा जिल्ह्यातील नवेगाव तसेच हरिश्चंद्र-बालाघाट, मातमाळा, व महादेव डोंगरात ह्या प्रकारची वने आहेत.

ह्या वनक्षेत्रात प्रामुख्याने साग, शिसम, सावर, इळदू, बीजा, कळंब, ऐन, बोडारा, शिर्षि, धावडा, अंजन, अर्जुन, मादडा, खैर, आवळा, आदळत असून साग हा आर्थिक दृष्ट्या महत्वाचा आहे. गडचिरोली जिल्ह्यात अहेरी येथे प्राणहीता नदीकाठी आढळणाऱ्या या वनांना 'आषापल्ली वने' म्हणतात.

५) शुष्क पानझडी वने - ज्या प्रदेशातील वार्षिक पर्जन्य हे ५० ते १०० सेमी दरम्यान असते अशा प्रदेशात हे वनक्षेत्र आढळते. ही वने प्रामुख्याने सह्याद्रीचा पूर्व उतार, सातपुडा रांग, धुळे, नागपूर, अमरावती, बुलडाणा, भंडारा या जिल्ह्यात दिसून येतात. ह्या वनांचे प्रमाण राज्यातील वनक्षेत्रात ६० ते ६२% दरम्यान आहे.

ह्या वनक्षेत्रात आवळा, निवम, बारोळी, वेहडा, शेंदरी, चेरी, फळम, वारतोडी, बेल, खैर, धामज, टेकुर्णी, वोर, जांबूळ, बीजगान इत्यादी प्रमुख वृक्ष आढळतात.

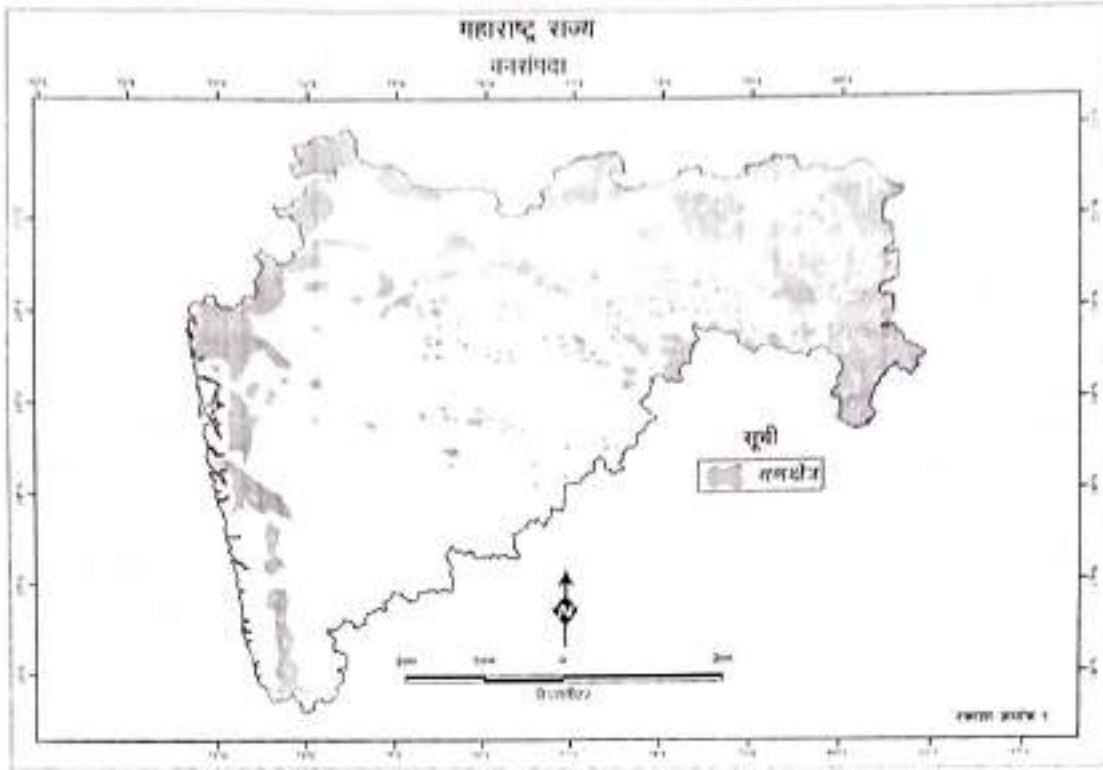
६) शुष्क वाटेरी वने - ज्या क्षेत्रात वार्षिक पर्जन्याचे प्रमाण ५० सेमीपेक्षा कमी आहे अशा प्रदेशात ही वने निदर्शनास येतात. मध्य महाराष्ट्र, मराठवाडा, जळनाथ, धुळे, सोलापूर, अहमदनगर, सातारा व सांगली जिल्ह्यात ही वने दिसून येतात.

ह्या वनक्षेत्रात प्रामुख्याने वोर, जांबूळ, बोरफड, खैर, सालई, निवडुंग, निव, हीवर, इत्यादी वृक्ष आढळत असून या वनांचे प्रमाण राज्यातील वनक्षेत्राच्या सुमारे १७% आहे.

७) खाजणवने - ही वने राज्याच्या पश्चिम किनाऱ्यावर तळाच्या मुखाशी दलदल क्षेत्रात खाजण क्षेत्रात निदर्शनास येतात. ह्या वनांचे राज्यातील एकूण वनांपैकी प्रमाण ०.१ ते ०.२ % असून ह्या वनप्रदेशात नारळ, ताड, माड, पोफळी, कांदळ, चिपी, मरांडी, तीस, तिवर, काजळी, मुंद्री इत्यादी प्रमुख वृक्ष प्रकार आढळतात.

नकाशा क्रमांक १ मध्ये महाराष्ट्र राज्यातील एकूण वनक्षेत्र दर्शविलेले आहे.





#### महाराष्ट्र राज्यातील वनक्षेत्रात झालेली घट

महाराष्ट्र राज्यातील वनसंपदा ही कमी होत असल्याचे दिसून येत आहे. गेल्या तीन वर्षांत जवळपास ६३३ चौकिमी वनक्षेत्र हे कमी झालेले विविध सरकारी अड्ड्यांवरून आढळून येते.

मागील तीन दशकातील गंगलाचे प्रमाण बघितले तर १९८४-८५ या काळात वनक्षेत्र ६२९७१ चौकिमी होते आणि सध्या हे प्रमाण ६१३६९ चौकिमी आहे. म्हणजेच मागील तीन दशकात सुमारे १६०२ चौकिमी एवढे वनक्षेत्र राज्याने कमी झालेले आहे. राष्ट्रीय वन कायदा १९८५ नुसार कुठल्याही प्रदेशाच्या ३३% क्षेत्र हे वनाखाली असणे आवश्यक आहे. परंतु महाराष्ट्र राज्यातील हे प्रमाण कमी होत असल्याचे आढळून येते.

#### महाराष्ट्र राज्यात मागील १० वर्षांत आगीमुळे घटलेले वनक्षेत्र

पुढील सारणी क्रमांक १ मध्ये राज्यातील २००९ ते २०१९ पर्यंत आगीच्या घटना आणि जळलेले वनक्षेत्र दर्शविलेले आहे.

#### सारणी क्रमांक १

#### महाराष्ट्र राज्य - आगीच्या घटना व जळलेले वनक्षेत्र (२००९ ते २०१९)

वर्ष	घटना	जळलेले क्षेत्र (हेक्टर)	वनक्षेत्राची टक्केवारी
२००९	३३०१	४९,४०९.७६७	०.८०
२०१०	२७९६	३३,४८४.०६४	०.५४
२०११	२७२९	३३,१८२.४६२	०.५४
२०१२	६७४३	७१,४८१.६२	१.१२
२०१३	२९२८	२१,०६४.५४	०.३४
२०१४	२६८३	१६,८३८.७९	०.२७
२०१५	१८७९	११,०७५.७९	०.१८
२०१६	४६४१	३५,८३८.९४	०.५८



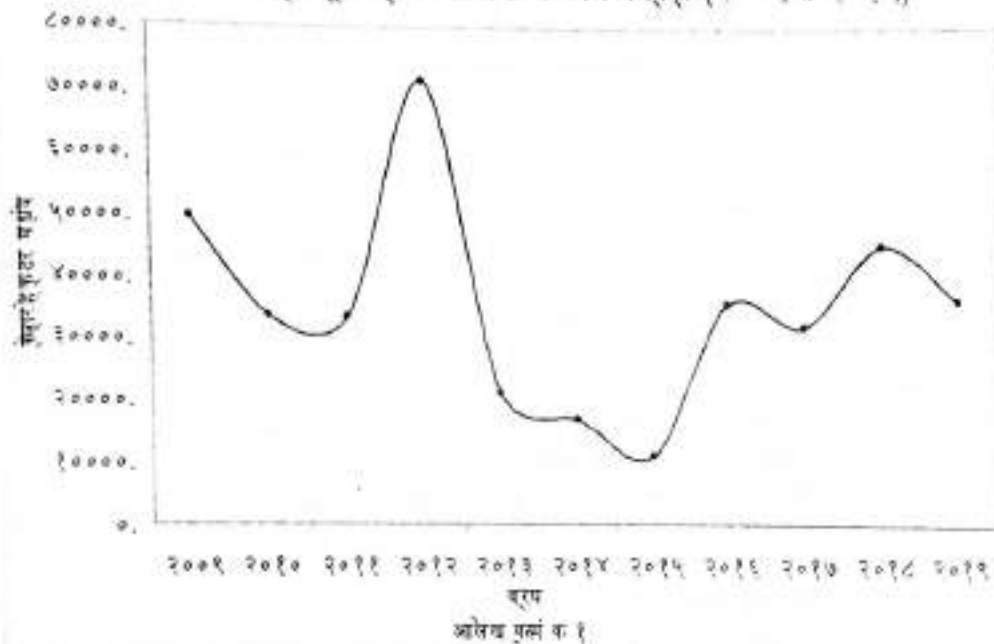
२०१७	५८८९	३२०९३६१	०.५०
२०१८	८४६४	४५२८९.५३	०.७३
२०१९	७६१८	३६५६५.६९	०.६०

खोत - लोकमाना (फेब्रुवारी २९, २०२०)

मागील गेल्या काही वर्षांत तापमानात वेगाने वाढ होत आहे. महाराष्ट्रातील काही जिल्ह्यात हे तापमान ४८ ते ५० अंश सेल्सियस पर्यंत वाढलेले आहे. उच्च तापमान हे जंगलात लागणाऱ्या आगीसाठी प्रमुख आहे. अनापयंत जंगलात वापडणाऱ्या तेंदूपाळा, आणि मोहाच्या संकलनांना आगीसाठी कारणीभूत ठरवले जात होते परंतु तापमानातील वाढही या वनज्यासाठी कारणीभूत आहे. उन्हाळ्यात तापमान अधिक कोरडे होते आणि वेगाने वाढणारे वारे यामुळे वनक्षेत्रात आगी पसरण्याचे प्रमाण वाढत असल्याचे लक्षात येते.

राज्यात २०१९ या एकाच वर्षात एकूण ७६१८ एकरा आगीच्या घटना घडल्याचे दिसून आले. आधीच्या वर्षांपेक्षा म्हणजेच २०१८ पेक्षा २०१९ मध्ये हे प्रमाण १.०% ने कमी जरी झाले असले तरी अहवालानुसार वनज्याचा धोका अजूनही असल्याचे स्पष्ट आहे. मागील एका वर्षात सुमारे ३६ हजार ५६५.६८ हेक्टर वनक्षेत्र जळले असून सुमारे ६६ १५ लाखांचे नुकसान झालेले आहे. आलेख क्रमांक १ मध्ये २००९ ते २०१९ पर्यंत वर्षानुसार आगीमध्ये जळलेल्या वनक्षेत्र दर्शविलेले आहे.

महाराष्ट्रराज्य- आगीत जळलेले वनक्षेत्र (२००९ ते २०१९)



महाराष्ट्र राज्यातील क्षेत्रानुसार २०१४ ते २०१९ पर्यंत जळलेले वनक्षेत्र

राज्यात २०१४ ते २०१९ या काळात गडचिरोली क्षेत्रात सर्वाधिक आगीच्या घटना आणि सर्वाधिक वनक्षेत्राचे नुकसान झालेले आहे. गडचिरोली जिल्ह्यात महाराष्ट्र राज्यातील वनसंपदेचा एकूण वनसंपदेपैकी सुमारे ३०% पेक्षा अधिक वाटा आहे. त्यामुळे राज्याचे सर्वाधिक नुकसान होते.

मागची क्रमांक २ मध्ये राज्यातील प्रदेशानुसार आगीच्या घटना आणि जळीत क्षेत्र दर्शविलेले आहे.





सांख्यिकी क्रमांक २

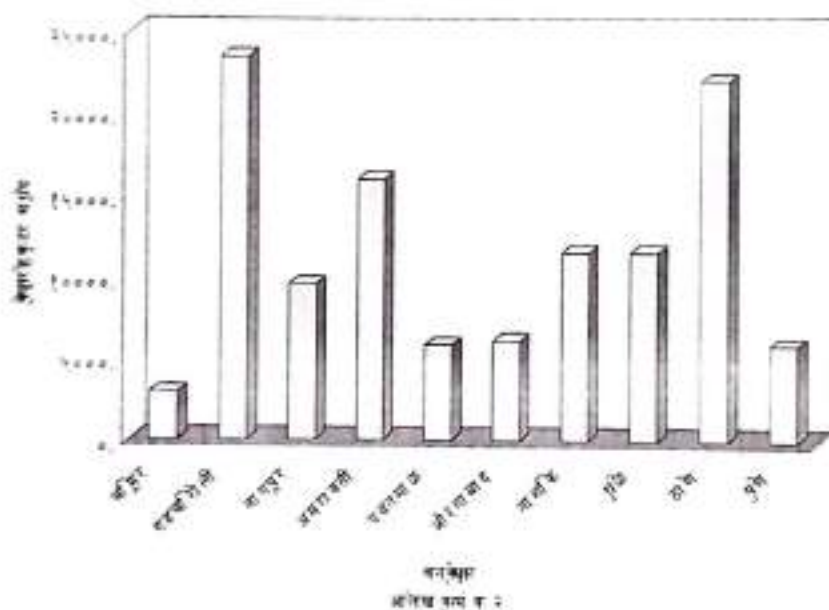
महाराष्ट्र राज्य - क्षेत्रानुसार आगीच्या घटना व जळलेले वनक्षेत्र (२०१४ ते २०१९)

वनक्षेत्र	कालावधी (२०१४ ते २०१९)	
	घटना	जळलेले क्षेत्र (हेक्टर)
विष्णू	१३२०	२९५४.४९
महविर्गोली	५८३९	५३५३३.४८
नागपूर	२६६४	९६५७.६४
अमरावती	२०४४	१६०८७.९३
पंचतमाळ	१३०४	५८७९.०६
औरंगाबाद	९७९	६१५६.९३
नाशिक	१८५०	११६०४.०३
धुळे	२५१३	११६०४.०३
ठाणे	४४४३	२२०५८.१३
पुणे	१६३४	५९०६

स्रोत - लोकमता (फेब्रुवारी २९, २०२०)

आलेख क्रमांक २ मध्ये वनक्षेत्रानुसार २०१४ ते २०१९ काळातील आगीत घटलेले वनक्षेत्र दर्शविलेले आहे.

महाराष्ट्र राज्य - क्षेत्रानुसार आगी मध्ये जळलेले वनक्षेत्र (२०१४ ते २०१९)



निष्कर्ष व उपाययोजना

महाराष्ट्र राज्यातील जंगलांना लागणाऱ्या आगीच्या घटना, त्यानेचे आर्थिक व पर्यावरणीय नुकसान यांच्या तसेच आलेल्या आकडेवारीने महाराष्ट्राला धोक्याचा दशारा दिला आहे. मागील ११ वर्षांत राज्यात तीन लाख ८९ हजार २९,४८० हेक्टर जंगल आगीत भस्मसात झाले आहे.

पर्यावरणाचा समतोल राखणे अत्यंत आवश्यक आहे आणि त्यासाठी वनमंजलीचे प्रमाण मुबलक असणे आवश्यक आहे. सरकारने गेल्या काही वर्षांपासून वृक्षारोपणाचा उपक्रम सुरू केलेला आहे. परंतु केवळ हेच पुरेसे नसून वन संरक्षणासाठी उपाययोजना करणेही आवश्यक आहेत. राज्यात आग लागल्यानंतर ती विसवण्यासाठीची



अत्याधुनिक संज्ञा उपलब्ध नाही. तसेच राज्यात आग लागल्यानंतर ती विजवण्यासाठी त्यावर खर्च केला जातो परंतु आग लागू नये म्हणून घेतल्या जाणाऱ्या उपायांवर पैसा खर्च केल्या जात नाही.

आग लागल्यानंतर ती विजविणे आवश्यक आहेच परंतु जर ती लागूच दिली नाही आणि त्यावर जर शामनाने खर्च केला तर आगीमुळे होणारे नुकसान वाढेल.

महाराष्ट्र राज्यात १९८४ या वर्षापासून वनवणवा प्रतिबंध प्रकल्प सुरू करण्यात आलेला आहे. या प्रकल्पांतर्गत आधुनिक संज्ञान व अवजारांचा उपयोग करून आगीपासून वनांची सुरक्षा केली जाते परंतु ह्या प्रकल्पाची व्याप्ती केवळ सध्या चंद्रपूर विजवण्यापर्यंतच मर्यादित आहे. त्यामुळे सर्वत्र वनक्षेत्रात ह्या प्रकल्पाची अंमलबजावणी होऊन वणव्यापासून वनांचे संरक्षण करणे आवश्यक आहे.

संदर्भ सूची

- 1) "वन संधारण आणि विकास", विकासपेडिया, ([mr.vikaspedia.in](http://mr.vikaspedia.in))
- 2) लोकसत्ता टीम (२०२०), "राज्यात ४ लाख हेक्टरमै जंगल आगीत खाक", प्रकाशित लेख, लोकसत्ता, २९ फेब्रुवारी २०२०,
- 3) "महाराष्ट्रातील वने (२०२१)", महाराष्ट्राचा भूगोल यात प्रकाशित लेख, दिनांक ८ ऑक्टोबर २०२१, ([www.mpsemitra.in](http://www.mpsemitra.in)).
- 4) महाराष्ट्र टाईम्स, (२०१९), "राज्यातील वनक्षेत्रात कमालीची घट", प्रकाशित लेख, महाराष्ट्र टाईम्स, दिनांक २८ एप्रिल २०१९ (<https://maharashtratimes.com/>)
- 5) सचदी ए बि (२०१५), "महाराष्ट्राचा भूगोल", निराली प्रकाशन, पुणे



ISSN-2278-9308

***B. Aadhar***

Peer-Reviewed &amp; Refreed Indexed

---

Multidisciplinary International Research Journal

## February -2022

(CCCXXXVIII) 338



**Chief Editor**  
**Prof. Virag S. Gawande**  
**Director**  
**Aadhar Social**  
**Research & Development**  
**Training Institute Amravati**

**Editor:**  
**Dr.Dinesh W.Nichit**  
**Principal**  
**Sant Gadge Maharaj**  
**Art's Comm,Sci Collage,**  
**Walgaon.Dist. Amravati.**

**Executive Editor:**  
**Dr.Sanjay J. Kothari**  
Head, Deptt. of Economics,  
G.S.Tompe Arts Comm.Sci Collage  
Chandur Bazar Dist. Amravati



**This Journal is indexed in :**

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

Aadhar PUBLICATIONS



21	जागतिकीकरण व नव्वदोत्तरी मराठी ग्रामीण कादंबरी सहा. प्रा. दीपक स. वानखडे	109
22	संत एकनाथांची भारूडे समाज प्रबोधनाचे माध्यम सहा. प्राध्यापक शशिकांत वि. काळे	114
23	आदिवासींचं धार्मिक आणि संस्कृती जीवन डॉ. गोविंद गायकी	119
24	संत कवयित्री योगिनी बहिणाबाई डॉ.ममता दयणे	122



जागतिकीकरण व नव्वदोत्तरी मराठी ग्रामीण कादंबरी  
सहा. प्रा. दीपक स. वानखडे  
महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती.

भारत हा कृषिप्रधान देश आहे आणि भारतीय संस्कृती ही मुख्यतः कृषी संस्कृती असून शेती हा भारतातील प्रमुख व्यवसाय आहे. कृषी संस्कृती धारण करणारे खेडे एकेकाळी स्वयंपूर्ण होती. परंतु आधुनिक काळातील वैज्ञानिक शोध, संशोधनाने खेड्यांचा चेहरा-मोहराच बदलून टाकला आहे. उद्योग प्रधान भांडवलशाही अर्थव्यवस्थेने शेती उद्योगाला तोट्यात आणले आहे. शेतकरी हा राज्यकर्त्यांच्या हिशोबातून किंवा त्यांच्या जाहीरनाम्यातून बाद झाला आहे.

स्वातंत्र्योत्तर काळात शेती आणि ग्रामविषयक विकास योजनांना प्राधान्य देऊन जनहिताचा विचार केला गेला; परंतु उद्योगप्रधान अर्थव्यवस्थेचे धोरणच येथे यशस्वी ठरले आणि भांडवलशाही अर्थव्यवस्था मजबूत होत गेली. त्यामुळे शेतीकडे व शेतीवर अवलंबून असणाऱ्या दुर्बल घटकांकडे दुर्लक्ष झाले. शेतकऱ्यांसह सर्वसामान्यांच्या दुःखाकडे दुर्लक्ष करून जागतिकीकरणा व्दारे ग्रामजीवन मुळासकट उखडून फेकणारे धोरणच स्वीकारल्या गेले.

जागतिकीकरणाचे स्वरूप

जगातील बहुतेक देशांचा मुख्य व्यवसाय शेती आहे. तर काही देशांत कारखानदारीत चालणारे उद्योगधंदे आहेत. या उद्योग व्यवसायावरून जगातील राष्ट्रांमध्ये गरीब, श्रीमंत असा भेद निर्माण झालेला आहे. भांडवलवादी राष्ट्रांनी विज्ञानाच्या बळावर कारखानदारी वाढवून वसाहतिक देशांमध्ये आपला व्यापार वाढविला. त्यातूनच फ्रान्स, ब्रिटन, जपान, जर्मनी आणि अमेरिका यासारख्या प्रगत राष्ट्रांमध्ये जागतिक भांडवलशाहीवर वर्चस्व निर्माण करण्याची स्पर्धा निर्माण झाली. त्यामुळे राजकीय व ओद्योगिक क्षेत्रात बदल घडून आले. आंतरराष्ट्रीय स्तरावर आपल्या मालाला बाजारपेठ उपलब्ध होण्यासाठी त्यांनी नव्या धोरणाची युक्ती शोधून काढली. गरीब, अविकसित राष्ट्रांना कर्जपुरवठा करणाऱ्या जागतिकस्तरावरील वित्तसंस्था स्थापल्या आणि थकबाकीदार गरीब - अविकसित राष्ट्रांना आपल्या प्रभावाखाली घेऊन त्यांच्या देशात मुक्तबाजारपेठा हस्तगत केल्या. अशा परस्परंच्या गरजपूर्तीच्या आणि संबंधांच्या दृष्टिकोनातून संपूर्ण जग हे एक खेडे बनले आणि जागतिकीकरणाची प्रक्रिया घडून आली.

भारतातही १९९० नंतर खुले आर्थिक धोरण स्वीकारले गेले आणि जागतिकीकरणात भारत गोवला गेला त्याचे एकमेव कारण म्हणजे भारताचे कर्जबाजारीपण होय. १९८० साली भारताने नाणेनिधी कडून ५०० कोटी डॉलरचे कर्ज घेतले होते, पण ते फेडता आले नाही, म्हणून नाणेनिधीच्या सांगण्यावरून भारताने आंतरराष्ट्रीय व्यापाराला व खाजगी भांडवलाला वाव दिला. तर १९९० साली भारताने उद्योगाच्या पुनर्रचनेचे धोरण स्वीकारले. कारण 'कर्जासाठी जागतिक बँकेला शरण जाऊन तिच्या सर्व अटी भारताला मान्य कराव्या लागल्या.'<sup>१</sup>

त्याचा परिणाम ग्रामीण समाजातील शेतकरी, शेतमजूर, दलित, आदिवासी आणि दुर्बल घटकांवर झाला. शेतीविषयक अनुदानात कपात झाल्याने खताच्या किंमती वाढल्या. परदेशी मालाच्या आयातीवरील कर कमी केल्याने गरज नसतांना तेल, कापूस, साखर, केळी, गहू आणि इतर मालाची आवक वाढली आणि देशी मालाच्या किंमती कमी झाल्या. शेतकऱ्यांच्या मालास रास्त भाव मिळत नाही म्हणून तो कर्जबाजारी होऊन सावकारी पाशात अडकला. सार्वजनिक उद्योगाचे खाजगीकरण केल्याने आरक्षण आणि नोकरीच्या संधी कमी होऊन बेरोजगारी वाढली. ग्रामीण उद्योगधंदे उभे करता आले नाहीत म्हणून गरीब अधिक गरीब बनले. आपल्या देशात बड्या राष्ट्रांच्या बहुराष्ट्रीय कंपन्यांची अनिर्वध सत्ता असल्याने कर्जबाजारी सरकारनेही जनतेला वाऱ्यावर सोडले आणि बहुजन समाजाकडे





अक्षम्य दुर्लक्ष झाले. त्याचे कारण म्हणजे "सरकारने कराच्या रूपाने पैसा गोळा करून तो अनुदानाच्या रूपाने समाजासाठी उधळणे चूक आहे, हा विचार बळावत चालला कल्याणकारी राज्याची कल्पना लयास गेली. समाजाच्या कल्याणासाठी सरकारने योजना राबविणे कालबाह्य ठरले. याउलट समाजाने, त्यातील विविध घटकांनी व त्यातील व्यक्तींनी स्वतःचा विकास स्वतः साधावा विकास साधण्याची जबाबदारी ज्याची त्याची स्वतःची आहे, सरकारची नव्हे." असे सांगितले जाऊ लागले.

यातून सरकार तर मुक्त झाले, पण ग्रामीण जनतेचे भयंकरहाल होऊ लागले. कारण जागतिकीकरण हे शहरकेंद्री आहे. त्यात ग्रामीणांचे हित नाही. प्रसारमाध्यमेही आहेत त्यांची दखल घेत नाहीत, म्हणून त्यांचे प्रश्न व सुख-दुःख याचे प्रतिबिंब त्यात उमटलेले दिसत नाही. उलट उच्चभुज्या चंगळवादाचे आदर्श त्यांच्यासमोर ठेवले जात आहेत. त्याचबरोबर शेती आणि ग्रामीण रोजगार याची हमी सरकार घेत नाही. हमीभाव आणि संबंधीत यंत्रणा यात शेतकरी नागवला जात आहे. वीज टंचाई, पाणी टंचाई याचा सर्वात जास्त फटका ग्रामीण माणसांना बसतो आहे. औषधाच्या भरमसाठ किंमती वाढल्याने त्यांचे आरोग्य धोक्यात येत आहे. शिक्षणातील अनुदान कपात झाल्याने गरीबांच्या मुलांना उच्चशिक्षण घेता येत नाही. गुणवत्तेच्या नावाखाली चांगल्या शिक्षणक्षेत्रात व व्यावसायिक शिक्षणकमाला प्रवेश मिळत नाही. अर्थात मानवी जीवनाच्या मुलभूत सुविधांवरच जागतिकीकरणाने धाव घातल्याने ग्रामीणांच्या अस्तित्वाचा आणि त्यांच्या जीवनमानाचा प्रश्न निर्माण झाला आहे. या पार्श्वभूमीवर मराठी ग्रामीण कादंबरी कोणत्या दिशेने वाटचाल करीत आहे. आणि तिने आजच्या स्पर्धात्मक अशा जागतिकीकरणात कशाचे भान राखले पाहिजे याचा नेमका विचार होणे आवश्यक आहे.

**जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण कादंबरी**

मराठी ग्रामीण कादंबरीतून गावगाड्याचे अंतःसूत्र आणि बदलते ग्रामीण जीवन याचे चित्रण आले आहे. परंतु १९६० ते १९८० या कालखंडातील मराठी ग्रामीण कादंबरी आधुनिकीकरणाने ग्रामीण जीवनात घडणाऱ्या स्थित्यंतरावर अधिक प्रभाविपणे व्यक्त झाली आहे. धरणामुळे उठणारी गावे, यांत्रिकीकरणाने माणूस व माती यांचे दुरावणारे संबंध, शहरीकरणाने ढासळत जाणारे ग्रामीण व्यावसायिक, हे तिच्या चित्रणाचे विषय झालेले दिसतात. कुठलीही येणारी नवीनता ही जुन्याला गाडून टाकीत, उध्वस्त करीत येते. या संक्रमणामुळे तळपासून हादरलेले ग्रामीण भावविश्व, त्याचे ताण - तनाव आणि त्यामुळे झालेली उलथापालथ यांचे प्रत्येकीरी चित्रण ह्या कालखंडातील ग्रामीण कादंबरीतून अगदी वास्तवपणे आविष्कृत होतांना दिसते. या काळात ग्रामीण कादंबरी भूतकाळातील वर्णनातून मुक्त होऊन वर्तमानातील ग्रामीण वास्तवाकडे वळू लागलेली दिसून येते.

मराठी ग्रामीण कादंबरीच्या वाङ्मयाच्या दृष्टीने १९८० ते १९९० हा कालखंड अतिशय वैशिष्टपूर्ण असा आहे. नटरंग (डॉ. आनंद यादव) साबट, चारापाणी (रा.रं. बोरडे), विषवृक्षाच्या मुळ्या (डॉ. वासुदेव मुलाटे), पांगिरा, झाडाझडती (विश्वास पाटील), भंडारभोग, चौडक (राजन गवस), झुलवा (उत्तम बंडू तुपे), कावड (बापू बिरादर), हाल्या हाल्या दूध दे (बाबाराव मुसळे), मेड इन इंडिया (पुरुषोत्तम बोरकर), कुणाच्या खांद्यावर (बा.ग. केसकर), कागूद आणि सावली (आनंद पाटील), लिगाड आणि खादिपालट (मोहन पाटील), या कादंबऱ्या या कालखंडात प्रकाशित झाल्या. ग्रामीण स्थित्यंतरांशी निगडित असे महत्वाचे विषय या काळातील ग्रामीण कादंबरीकारांनी जसे समर्थपणे हाताळले, तसेच या स्थित्यंतरामुळे बदललेल्या ग्रामीण मनांचाही या काळातील कादंबरीकारांनी समर्थपणे वेध घेतला आहे.

२००२ साली सदानंद देशमुख यांची 'बारोमास' ही कादंबरी प्रकाशित झाली. ग्रामीण वास्तवाच्या थेट तळशी जाऊन कृषीव्यवस्थेचे सखोल चिंतन करायला लावणारी आणि वर्तमान व भविष्याचा वेध घेणारी ही ग्रामीण कादंबरी आहे. जागतिकीकरणामुळे आलेल्या मुक्तअर्थव्यवस्थेला शेतकरी अनाहूतपणे सामोरे जात आहे. आयात आणि निर्यातीच्या असमतोलामुळे भारतीय शेतकऱ्यांच्या उत्पादित मालाला भाव मिळत नाही. त्यामुळे आर्थिक विवंचनेत अडकलेला शेतकरी आत्मसम्मान हरवून आत्महत्येसाठी प्रवृत्त होत आहे.





शेतकऱ्यांच्या आर्थिक परिस्थितीने पुरता मुरगळलेला पण काही तरी करावे या नव्या उमेदीने शिक्षण घेऊन नौकरीसाठी वणवण भटकणारा ग्रामीण तरुण विफल झाला आहे. त्याची मानसिकता जळून खाक झाली आहे. अपेक्षेने कुणाकडे पाहिले तर सगळीकडेच काळाकुट अंधार आहे. आयुष्यभर मातीत कष्ट उपसणाऱ्या सुभानराव आणि सुखी जीवन जगण्याच्या अपेक्षेने एम.ए., बी.एड. शिकूनसुद्धा जागतिकीकरणात स्पर्धा निर्माण झाल्यामुळे निव्वळ डोनेशन अभावी मास्तरकीवी नौकरी न मिळाल्यामुळे मातीत आयुष्य घालवणारा एकनाथ यापात्रांमधून सदानंद देशमुख यांनी अतिशय उत्कटपणे कृषिजीवनाची मांडणी केली आहे.

विज्ञान, तंत्रज्ञान, रासायनिक खते, संकरीत बी-बियाणे यामुळे भविष्यात शेतीची कशी अधोगती होणार याची जाणीव सुभानरावचे वडील नानुआज्याला केव्हाच झाली आहे. तो म्हणतो 'तुमी काई वाई वाटून घेऊ नका, तुमचा तरी काय इलाज ? जमानाच बदलला त्याले तुमी तरी कसं धोपवून धरचान ? तसं आता माहं राहयलंच काय म्हणा.... जगलो आस्तो आजून दहा-बारा सालं. पण मराते आता उपासमारीनं. पण तुमाले सांगतो, हे हाब्रीड तुमचबी हाब्रीड करलं एक दिवस. आरे पिक व्हते म्हन्ता बदबद, पण तो नुस्ता भपका दिसायले देखावा. समंद उत्पन्न खर्चातच आटून जाते न तुमचं. दांडातल पाणी दांडांतच आटून जाते. वाफा कोल्डा फटांग.' शेती व्यवस्थेत होऊ घातलेल्या बदलामुळे होणाऱ्या दुर्गतीची आणि उपासमारीची चाहूल नानुआज्याने अगोदरच अधोरेखित केली आहे.

जागतिकीकरण, मुक्त अर्थव्यवस्था, शिक्षणाचे बाजारीकरण यामुळे निर्माण होणारी बेरोजगारी आणि यात होरपळून निघणारी तरुण पिढी यांचेही संकेत कादंबरीकाराने व्यक्त केले आहेत. ममता वारे या शिक्षिकेपाशी आपली मनोव्यथा व्यक्त करतांना एकनाथ म्हणतो - 'पण हे असं तरी किती दिवस चालायच मॅडम. आता मला का समजत नाही की आपण फसवलं अलकाला म्हणून. वाटलं होत लागेल नौकरी म्हणून पण पन्नास ठिकाणी जाऊन एकच अनुभव अन् आता तर चार लाख रुपये रेट झाले डोनेशनचे.'

नव्या आर्थिक नितीमुळे ग्रामीण भागातील सालमजुरामध्येही कसा चंगळवाद उफाळला आहे, याचे बोलके उदाहरण म्हणजे मुगुटराव. 'आमची माती आमची माणसं' बघत असलो तर हा म्हणतो, पॉपडम शो लावा, त्या उघड्या बाया लय मस्त नाचतात, पहा वाटतात भक्कम भक्कम करमते. हे डोर वासरं त काय ? आपण रोजच पाहयतो.'

'कितीही कष्ट उपसा, शेतीत पिकत नाही पिकले तर विकत नाही', शिकल्या पोरगांच्या नौकरीसाठी काळजाचा तुकडा गहाण घालून बसावा लागतो. भांडवलदारी प्रवृत्तीचे महाकाळ सावज हेरण्यासाठी टपून बसलेलेच असतात. या सर्व जीवितातून निराश झालेली सुभानराव शेवटी जांभूळखोऱ्यातल्या कुंडात स्वतःलाचसंपवितो. अशाप्रकारे 'बारोमास' ही शेतकऱ्यांच्या बारोमास दुर्दैवी अवस्थेचे यथार्थ चित्रण करणारी कादंबरी आहे.

अशोक कोळी यांच्या 'पाडा' या कादंबरीतून शेतकरी जीवनावर जागतिकीकरणाचे परिणाम झाल्याचे स्पष्ट दिसते आहे. या कादंबरीचा नायक चांगदेव तापीकर असून तो केळी उत्पादक शेतकरी आहे. समस्याग्रस्त शेतकऱ्यांचं नेतृत्व करून तो आंदोलन उभं करतो, बागेला पाणी देण्यासाठी वीजच नसते. म्हणून भारनियमनाच्या विरोधात तो शेतकऱ्यांचा मोर्चा काढतो. आणि केळीला भाव मिळत नाही, म्हणून 'केळी फेको' आंदोलनही करतो. खरेतर त्याची केळी चांगली जमून येते. केळी विकून पोरीच लग्न उरकून टाकावं म्हणून तो धडपड करतो. या संदर्भात लेखक लिहितो की, 'पोरच लग्न धरलं... केळीच्या बागाच्या भरोशावर... पाडयाच्या भरोशावर... बागबांगला जमून आला हाये... भाव चांगला भेटला पायझे... तो भेटीन की नि... ?'

केळीच्या भावाच्या संदर्भात साशंकता निर्माण होण्याला जागतिकीकरणचबाबदार आहे. कारण परदेशातून केळी आयात केली जात असल्याने भारतीय केळी उत्पादक शेतकऱ्यांच्या वाटयाला विवंचना येणे स्वाभाविक आहे. शेवटी चांगदेव तापीकरच्या मुलीचे पैशाअभावी लग्न मोडते आणि बहिणीच्या घरी दिली जाते, पण तेथेही पैशाच्या मागणीने ती मुलगी जळून मरते तर त्याची पत्नी औषधपाण्यावाचून मरण पावते. अशी या शेतकऱ्याची शोकांतिका प्रस्तुत कादंबरीत लेखकाने मांडली आहे.





शेतकरी मग तो कोणताही असो विदर्भातील संत्रा, कापूस उत्पादक शेतकरी असो की पश्चिम महाराष्ट्रातील व मराठवाड्यातील ऊस उत्पादक शेतकरी असो—सर्वांच्या दुःखाची जात एकच आहे. ती म्हणजे उत्पादित शेतमालाच्या बाजारपेठेचा अभाव व मालाच्या किंमतीचा प्रश्न. म्हणून आज शेती तोट्यात चालली आहे आणि शेतकरी आत्महत्या करीत आहे. तसेच त्यांचा शेतीवरील विश्वास उडत चालला आहे, त्यामुळे सदानंद देशमुख यांच्या 'तहान' कादंबरीतील बबन नावाचा तरुण शेतकरी शेतीपेक्षा पाणी वाहून विकणे पसंत करतो. शेतीत राहून उभ्या जन्मात पैसे पाहिले नाही, एवढे पाण्याचे पैसे त्याच्या आईला दिसतात. म्हणून तीही बबनच्या बाजूने उभी राहते.

'तहान' कादंबरीत लेखकाने पाण्याचा प्रश्न व बेरोजगारी यावर प्रकाश टाकलेला आहे. त्याचबरोबर आज पैसा हा महत्वाचा मानला जात आहे. महामार्गावर ढाब्यांची संख्या वाढली आहे, सारं काही नव्हेच आलं आहे, पण ग्रामीण मूल्य हरवत चालले असून खेडी भकास बनत चालल्याची जाणीवही लेखकाने करून दिली आहे. सतीश मंगळे आणि प्रमोद नवले हे तरुण शिकलेले आहेत; पण त्यांना नोकऱ्या नाहीत. म्हणून मंगळे हा वेल्डींगचं दुकान टाकतो. तर नवले एक छोटीशी जनरल स्टोअर्सची टपरी टाकतो; पण त्यात ते समाधानी नाहीत म्हणजे 'खेड्यातील 'टॅलेंट' कडे शासनाचे लक्ष नाही.' ही मंगळे यांची खंत फार बोलकी आहे. तो म्हणतो की, "तुले काय सांगू, मपल्याच तोडांन मपलं पण चान्स आला तं मोठारी, जीपकारीबी बनवू शकतो आपून, तू गाडीचं काय सांगून राहयला"

ग्रामीणसमाजातील कुशल बुद्धीमान तरुणांना योग्य ती संधी मिळत नाही, म्हणून ते उपेक्षित आहेत याची प्रचिती यातून येते. अशा तरुणांचे किंवा ग्रामीण समाजातील आजच्या दाहक व कारुण्यपूर्व वास्तवाचे दर्शन घडविण्यात आजच्या दूरदर्शनसारख्या प्रभावी माध्यमालाही जागतिकीकरणामुळे मर्यादा पडल्या आहेत आणि ग्रामीणांच्या मनावर नको त्या जाहिरातींचा मारा केला जात आहे व याचीही नोंद लेखकाने प्रस्तुत कादंबरीत केली आहे. ती अशी, "समोरच्या कुलरजवळ टी.व्ही. चालू होता. तिकडं पाहत राहिला. स्टार टी.व्ही. चं चॅनेल सुरू होत. अर्ध नग्न गोऱ्यापान बायका पाण्यात पोहत होत्या."

या देशातल्या बहुसंख्य गोरगरीबांच्या सुखदुःखाचे दर्शन दूरदर्शन वाहिन्यावरून दाखविले जात नाही. तर जागतिकीकरणातील उच्चभुज्या अभिरुचीचे, आणि बहुराष्ट्रीय कंपन्यांच्या-फुड्स-व पेयाचे सचित्र दर्शन हमखास घडविले जाते, म्हणून कोका-कोला, पेप्सी, दम्सअप्सारखे थंडपेय ग्रामीण समाजातही लोकप्रिय झाले आहेत. याचे साक्षात चित्र या कादंबरीतून स्पष्ट होते. जसे कादंबरीतील पाणी विकणारा बबन ढाब्यावाल्याने विचारल्यानंतर तो म्हणते, "नाई, दम्सअप्च घेतो..."

एकीकडे खेड्यातील जनता पाणी टंचाईने त्रस्त आहे. तर दुसरीकडे पाण्यापेक्षा कोल्डड्रिंक्स अगदी सहज मिळत आहे. अशी विसंगती लेखकाने या कादंबरीत रेखाटली आहे. त्यामुळे आज जागतिकीकरणाचे वारे ग्रामीण समाजात कोणत्या दिशेने वाहत आहेत, याची जाणीवही वाचकांना होते.

विश्वास पाटील यांच्या 'झाडाझडती' कादंबरीत धरणाखाली दबलेल्या माणसाची व्यथा व्यक्त झालेली आहे. शासन — प्रशासन अन् त्याखाली दडपलेल्या शोषित शेतकरी धरणग्रस्तांचे विविध प्रश्न व ते सोडवतांना होणाऱ्या मरणप्राय जीवघेण्या व्यथा यात आहेत. धरणामुळे उद्ध्वस्त होणारे खेड्याचे कृषिजीवन, त्यात जगणारे अठरापगड जातीतले लोक आणि विकासाच्या राक्षसाने मुरगाळलेले त्यांचे जीवन प्रभावीपणे 'झाडाझडती' या कादंबरीमध्ये व्यक्त झाले आहे.

रंगनाथ पठारे यांची 'ताम्रपट' ही दीर्घ कादंबरी १९४२ ते १९७९ या कालखंडातील संपूर्ण महाराष्ट्र जीवनाचे वास्तव चित्रित करते. सत्तास्पर्धा, सहकारी संस्था, शिक्षण संस्था, दलिताने आणि सामान्यांचे प्रश्न, जातीयता, सरळ आणि तिरप्या माणसांची मानसिक आंदोलने अशा अनेक अंगांनी 'ताम्रपट' पुढे येते.

नामदेव कांबळे यांची 'राघववेळ' ही कादंबरी मांग जातीत जन्मलेल्या वालंबी नावाच्या विधवेची कथा आहे. गावात राहून पोटाची भूक भागविण्यासाठी मांग समाजाचा चाललेला संघर्ष, शिक्षणाने आलेले फुले, आंबेडकरी विचारप्रणालीचे भान आणि त्यामुळे निर्माण झालेले विविध प्रश्न वालंबीच्या स्वगतातून व रघुच्या विद्रोहातून 'राघववेळ' या कादंबरीतून प्रगट होतांना दिसतात.





समाजकारण आणि राजकारण यातील दिशाहीनता आणि मूल्यभ्रष्टता याचे विदारक चित्रण राजन गवस यांच्या 'तणकट' या कादंबरीतून आले आहे. विविध जातीतील नवशिक्षित तरुणांना हतबल करून टाकणारे समकालीन यात टिपल्या गेले आहे. ज्वलंत समस्या, आदर्शाचे विलंबन, मूल्यांचा न्हास आणि चळवळीच्या विपरीत फोफावण्यातून जाणवणारी उपक्रमशीलतेची निरर्थकता यांचे सावट मानवी संबंधातील मौलिकता कशी ग्रासून टाकते याचे शोकात्मक प्रत्यंतर या कादंबरीतून येते.

#### निष्कर्ष

१. जागतिकीकरण हे आजच्या काळाचे मूल्य ठरले असून ते संपूर्ण जगाने स्वीकारले आहे.
२. जगातील भांडवलवादी राष्ट्र जागतिकीकरणाच्या नावाखाली अविकसीत व विकसनशील राष्ट्रांचे आर्थिक शोषण करीत आहे.
३. जागतिकीकरण आणि मुक्त अर्थव्यवस्थेमुळे ग्रामीण जीवनाचे वास्तव आता झपाट्याने बदलू लागले आहे.
४. जागतिकीकरणाच्या छायेत वावरणारे नव्वदोत्तरी ग्रामीण वास्तव हे सर्व प्रकारच्या अपेक्षा भंगाचे आहेत.
५. ग्रामखेडयावरील जागतिकीकरणाच्या परिणामाचे सशक्त असे प्रतिबिंब मराठी ग्रामीण कादंबरीत पडलेले दिसून येते.
६. ९० नंतरच्या ग्रामीण कादंबऱ्यांनी या सर्व समस्यांचे यथार्थ आणि उत्कट असे वास्तववादी चित्रण केले आहे.

#### संदर्भ सूची

१. जागतिकीकरण आणि भारत, नलिनी पंडीत, लोकवाङ्मय गृह मुंबई, २००४, पृष्ठ ११
२. जागतिकीकरण आणि शिक्षण, सुधीर पानसे, लोकवाङ्मय गृह मुंबई, पृष्ठ ५४
३. पाडा, अशोक कोळी, शब्दालय प्रकाशन.
४. बारोमास, सदानंद देशमुख, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन.
५. तहान, सदानंद देशमुख, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन.
६. झाडाझडती, विश्वास पाटील, राजहंस प्रकाशन.
७. तान्त्रपट, रंगनाथ पठारे, मॅजेस्टिक प्रकाशन.
८. तणकट, राजन गवस, साकेत प्रकाशन.
९. राघववैळ, नामदेव कांबळे, देशमुख अँड कंपनी पब्लिशर्स प्रा.ली.

Impact Factor-8.575 (SJIF)

ISSN-2278-9308

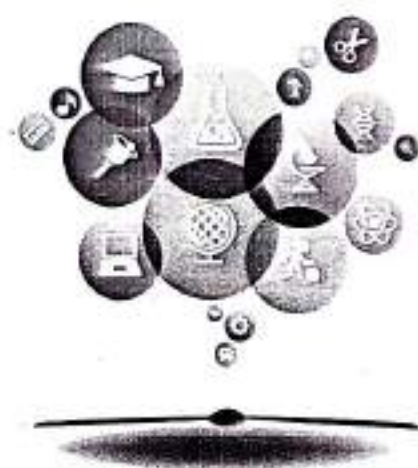
# *B.Aadhar*

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April -2022

( CCCXLVI ) 346



**Chief Editor**

**Prof. Virag S. Gawande**

**Director**

**Aadhar Social**

**Research & Development  
Training Institute Amravati**

**Editor:**

**Dr.Dinesh W.Nichit**

**Principal**

**Sant Gadge Maharaj**

**Art's Comm,Sci Collage,**

**Walgaon.Dist. Amravati.**

**Executive Editor:**

**Dr.Sanjay J. Kothari**

**Head, Deptt. of Economics,  
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage  
Chandur Bazar Dist. Amravati**



**This Journal is indexed in :**

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

**Aadhar PUBLICATIONS**





15	Sound And Acoustic In Multiplex Vaishnavi Gupta , Prof. AR. Palash Agrawal	88
16	The Comparison Between Clay Bricks And Aac Block Shrutli B. Narkhede , Ar. Ankush Khandare	93
17	Critical Analysis Of Press/Media Laws In India Dr. Chaltanya Ajabrao Ghuge	97
18	Systematic Literature Review Of Mayamatam For Architectural Guidelines In Vedic Era Muskan Sahu , Ar. Chinmay Burange	103
19	Vernacular Dwellings Of Kutch Region Of Gujarat Sonam Dipesh Shah , AR. Sarang Holey	113
20	Fusion Of Gurukula And Modern School Suraj Pandey , Ar. Palash Agrawal	118
21	A Study Of Impact Of Covid Pandemic On Women Self Hep Group And Women Entrepreneurs Development Asst. Prof. Swati V. Dhonde	121
22	नागपूर जिल्ह्यातील भाजीवर्गीय शेतीचा भौगोलिक अभ्यास डॉ. अंकुश एन. बारमाटे	126
23	आपत्ती व्यवस्थापन काळाची गरज -एक विश्लेषण डॉ.उषा एन. पाटील	132
24	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे महिला गुलामगिरी मुक्ततेबाबत विचार प्रा. विजय शामराव मालेकर	139
25	महाराष्ट्राच्या विकासात मा.यशवंतराव चव्हाण यांचे शैक्षणिक क्षेत्रातील योगदान डॉ. अजय के. मेश्राम	143
26	सामाजिक समतेचे दिपस्तंभ : महात्मा जोतीराव फुले व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ.विश्वनाथ आत्माराम दरेकार	147
27	आदिवासी साहित्य स्वरूप आणि वाटचाल डॉ. माधव कांडणगिरे	151
28	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता : भूमिका व कार्य सहा. प्रा. दीपक स. वानखडे	154
29	डॉ. भाऊसाहेब उपाख्य पंजाबराव देशमुख यांचे वसंतगृह विषयक कार्य प्रा. डॉ. वैशाली भाकरे	157
30	सामाजिक विज्ञानां मॅ रुपनिदर्शन, प्रतिरूप, सिध्दांत का समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ. प्रमिला हरीदास भुजाडे (गणवीर)	160

**डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता : भूमिका व कार्य****सहा. प्रा. दीपक स. वानखडे**

मराठी विभाग प्रमुख, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय अमरावती.

समाजशास्त्र, राज्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, कायदा, मानववंशशास्त्र इ. ज्ञानशाखांचा व्यासंग असणारे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे एक अष्टपैलू व्यक्तिमत्त्व होते. ते एक थोर समाजसुधारक, सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यकर्ते, विचारवंत, लेखक व पत्रकार देखील होते. त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा एक वेगळा पैलू म्हणजे त्यांची पत्रकारिता डॉ. आंबेडकरांनी विविध वृत्तपत्रांची स्थापना करून बहुजन समाजातील समस्यांना वाचा फोडण्याचे तसेच त्यांच्या समस्यांचे निराकरण करण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. उच्च जातीतील लोकांसमोर बहुजन समाजातील लोक बोलू शकत नव्हते, आपले विचार समाजासमोर मांडण्याचे धाडस करू शकत नव्हते. म्हणून बाबासाहेबांनी अनेक वृत्तपत्रे सुरू करून त्यांच्या माध्यमातून बहुजन समाजातील लोकांना आपले विचार व्यक्त करण्याकरिता एक हक्काचा मंच उपलब्ध करून दिला. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे एक झुंझार पत्रकार होते; परंतु त्यांचे हे कार्य कसे दुलक्षित केल्या गेले हे सांगतांना डॉ. गंगाधर पानतावणे म्हणतात. 'मराठी वृत्तपत्रसृष्टीत कोणत्या एक महान पत्रकाराचे कर्तृत्व दुर्लक्षित राखले गेले असेल तर ते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर या थोर विचारवंताचे, पत्रकाराचे. मराठी वृत्तपत्रसृष्टी ही केवळ एका विशिष्ट वर्गाची आहे, अशी एक प्रकारची भावना होती..... गंमत अशी आहे की, ज्यांना डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा सहवास पडला, ज्यांनी मुलाखती घेतल्या त्यांनीही त्यांचा पत्रकार म्हणून गौरव तर केला नाहीच; पण त्यांच्या पत्रकारितेचीही फारशी दखल घेतली नाही..... बाबासाहेबांचा पत्रकार म्हणून उल्लेख करायला आमच्या वृत्तपत्रसृष्टीचा इतिहास कटू ठरला. त्यांचे वृत्तपत्रीय लेखन उपलब्ध झाल्यानंतर आता कुठे त्याचा अभ्यास व्हायला लागला आहे'.

**डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पत्रकारितेचा उद्देश व भूमिका**

जनतेपर्यंत आपले विचार पोहोचवायचे असतील तर आपल्या हाती एखादे वृत्तपत्र असणे आवश्यक आहे याची बाबासाहेबांना जाणीव होती; म्हणून आपल्या विचारांना मूर्त स्वरूप देण्यासाठी, अस्पृश्य समाजाची सामाजिक गुलामगिरीतून सुटका करण्यासाठी व अस्पृश्य तसेच बहुजन समाजात स्वाभिमानाची जाणीव निर्माण करण्यासाठी बाबासाहेबांनी पत्रकारिता स्वीकारून विविध वृत्तपत्रांची सुरुवात केली.

कोणत्याही चळवळीचे सामर्थ्य हे तिच्या हाती असलेल्या वृत्तपत्रात असते हे बाबासाहेबांना ठाऊक होते. म्हणूनच बाबासाहेबांनी १९२० ते १९५६ हया काळात जे सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक आणि राजकीय बदल झाले, जे लढे, आंदोलने, चळवळी स्थापन झाल्यात, त्या संदर्भात जे प्रश्न उपस्थित झाले त्या प्रश्नावर कधी अग्रलेखातून, कधी संपादकीयमधून, कधी स्वतंत्र लेख लिहून तर कधी मुलाखती व पत्रकांद्यारे आपले विचार व्यक्त केले आहेत.

भारतीय वृत्तपत्र व्यावसायाबद्दल डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, हा प्रथम हीसेने पत्करलेला व्यवसाय आहे. समाज जागृतीचे साधन म्हणून समाजसुधारकांनी व राजकीय पुढाऱ्यांनी त्याचा अवलंब केला होता; पण आज मात्र तो व्यापार झाला आहे" बहुजन समाजाचे आपण एक जबाबदार मार्गदर्शक आहोत याचा पत्रकारांना संपूर्ण विसर पडल्याचे त्यांना वाटते. कोणत्याही राजकीय पक्षाची बाधिलकी न स्वीकारता बातम्या देणे, सामाजिककार्याचे एखादे धोरण असल्यास सातत्याने त्याचा पाठपुरावा करणे, निर्भयपणे सरकारच्या धोरणावर टीका करणे हे वृत्तपत्रकाराचे प्राथमिक कर्तव्य असल्याची जाणीव देखील बाबासाहेबांनी करून दिली आहे.





डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आपल्या 'मूकनायक' या वृत्तपत्राच्या पहिल्या अंकात म्हणतात "आमच्या बहिष्कृत लोकांवर होत असलेल्या व पुढे होणाऱ्या अन्यायावर उपाययोजना सुचविण्यास तसेच त्यांची भावी उन्नती व तिचे मार्ग यांच्या खऱ्या स्वरूपाची चर्चा होण्यास वृत्तपत्रासारखी अन्य भूमीच नाही"<sup>1</sup>

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची ध्येयवादी पत्रकारिता एक दीपस्तंभ वाटावी अशीच आहे. वृत्तपत्राबाबत एका ठिकाणी ते म्हणतात, "जसे पक्षाला उंच भरारी मारण्यासाठी पृष्ठ अशा पंखाची गरज आहे तसेच विचारांची सुंदर आणि उंच भरारी मारण्यासाठी वर्तमानपत्राची गरज आहे आपल्या संपादकीय कारकिर्दीत विविध विषयावर लिहितांना बाबासाहेबांचा झुंजारपणा दिसून येतो. अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितीतून सर्व व्यावहारिक व लौकिक समस्यावर मात करून डॉ. बाबासाहेबांनी लोकपत्रकारिता सिद्ध केली.

"डॉ. बाबासाहेबांच्या आणखी एका राष्ट्रवादी भूमिकेचा विचार करता येईल. आणि ही भूमिका म्हणजे ब्रिटिश राज्यकर्त्यांच्या संदर्भात त्यांनी वेळोवेळी केलेले प्रतिपादन ब्रिटिश शासनाने अनेक सुधारणा केल्या. त्यांच्यामुळे अस्पृश्यांना शिकता आले, त्यांना सैन्यात प्रवेश मिळाला. हे बाबासाहेबांनी मान्य केले असले तरी ब्रिटिशांनीच हिंदुस्थानला गुलाम केले हिंदुस्थानच्या दारिद्र्याला कारण ब्रिटिश धोरण आहे हे त्यांनी परखडपणे मांडले आहे..... इंग्रजी राजवटीत काही चांगल्या गोष्टी घडल्या असल्या तरी इंग्रजांनी येथे कायम राहावे, असा विचार त्यांनी कुठेही मांडला नाही"<sup>2</sup>

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी सुरू केलेली वृत्तपत्रे

सामाजिक विचारांनी प्रेरित होऊन आणि परिवर्तनाची कास धरून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी विविध वृत्तपत्रांची स्थापना केली. अस्पृश्य समाजावर होणारे अन्याय — अत्याचार व त्यांचा होणारा छळ आणि अस्पृश्यांच्या तक्रारीवर प्रकाश टाकण्यासाठी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी वृत्तपत्रे सुरू करण्याचा निर्णय घेतला. कोणत्याही चळवळीचे सामर्थ्य हे त्यांच्या हाती असलेल्या वृत्तपत्रात असते हे बाबासाहेबांना माहीत होते. त्यांनी २० जानेवारी १९२० रोजी मुंबई येथे 'मूकनायक' हे पाक्षिक सुरू केले. 'मूकनायक' म्हणजे मुक्यालोकांचा पुढारी बाबासाहेब हेही मूक असलेल्या समाजाचे नायकच होते 'मूकनायक' या पाक्षिकाचे संपादक पांडुरंग नंदराम भटकर हे महार तरूण होते. ३१ जानेवारी १९२० रोजी शनिवारी 'मूकनायक' वृत्तपत्राचा पहिला अंक प्रकाशित झाला. राजश्री शाहू महाराज यांनी 'मूकनायक' वृत्तपत्रासाठी २५०० रुपयांची मदत केली होती 'मूकनायक' वृत्तपत्राच्या शीर्षभागी संत तुकाराम महाराजांच्या काव्यपंक्ती छापलेल्या होत्या. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर शिक्षणासाठी विलायतेला गेल्यामुळे मूकनायकचा संपादक मंडळाने फारसा रस घेतला नाही. बाबासाहेबांनी नियुक्त केलेल्या संपादकाकडून ज्ञानदेव घोलप यांनी सूत्र हाती घेतली व स्वतः संपादक झाले. घोलप यांनी मूकनायकांना पुनर्जीवन देण्याचा प्रयत्न केला पण त्यांना यश आले नाही व १९२३ साली मूकनायक कायमचे बंद झाले.

२० जुलै १९२४ रोजी बाबासाहेबांनी मुंबई येथे 'बहिष्कृत हितकारिणी' सभेची स्थापना केली व सभेच्या ३ एप्रिल १९२७ रोजी 'बहिष्कृत भारत' हे वृत्तपत्र पाक्षिकाच्या स्वरूपात सुरू करण्यात आले. या पाक्षिकाचे संपादक स्वतः बाबासाहेब होते या पाक्षिकाच्या मुद्रणासाठी त्यांनी नोव्हेंबर १९२७ मध्ये एक प्रिंटिंग प्रेस खरेदी केली व तिचे नाव 'बुधभूषण' प्रिंटिंग प्रेस ठेवले. शिका, संघटित व्हा व संघर्ष करा हे बहिष्कृत हितकारिणी सभेचे उद्दिष्ट प्राप्त करणे हे 'बहिष्कृत भारत' ह्या वृत्तपत्राचे उद्दिष्ट होते. बहिष्कृत भारताच्या पहिल्या पानावर दुसऱ्या अंकापासून ज्ञानेश्वरीतील मजकूर छापण्यात आला होता. दि. १५ नोव्हेंबर १९२९ रोजी २१-२२ कर्माकाचा जोड अंक काढून बहिष्कृत भारत हे पाक्षिक बंद पडले.





८ सप्टेंबर १९२७ रोजी मुंबई येथे बाबासाहेबांनी 'समता संघ' नावाची संस्था स्थापन केली व या संघाचे मुख्य म्हणून २९ जून १९२८ रोजी मुंबई येथे 'समता' हे पाक्षिक सुरू केली. या पाक्षिकाचे संपादक व मुद्रक देवराव नाईक आणि प्रकाशक व व्यवस्थापक भा.वि. प्रधान होते. गंगाधर प्रिंटिंग प्रेस, दादर येथे हे पाक्षिक छापले जात होते. समाज सेवा व लोकजागृतीस या पाक्षिकाने प्राधान्य दिले होते. आर्थिक विवंचने मुळे हे पाक्षिक सन १९२९ साली बंद पडले.

२४ नोव्हेंबर १९३० रोजी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी 'जनता' हे पाक्षिक मुंबई येथे सुरू केले. या वृत्तपत्राचे संपादक देवराव विष्णू नाईक हे होते. ३१ ऑक्टोबर १९३१ रोजी जनता पाक्षिकाचे नामांतर 'जनता साप्ताहिक' असे केले गेले. या साप्ताहिकाचे व्यवस्थापक व प्रकाशक भास्करराव कद्रेकर होते. 'गुलामास तू गुलाम आहेस याची जाणीव करून द्या म्हणजे तो बंड करून उठेल'. हे हया साप्ताहिकाचे ब्रीदवाक्य होते. फेब्रुवारी १९५६ रोजी 'जनता' साप्ताहिकाचे नामांतरण 'प्रबुध्द भारत' असे करण्यात आले. २८ जानेवारी १९५६ पर्यंत हे वृत्तपत्र चालू होते.

अशाप्रकारे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची चळवळीकरिता मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता व प्रबुध्द भारत. ही वृत्तपत्रे चालविले.

निष्कर्ष :-

- वृत्तपत्र हे सामाजिक, धार्मिक, राजकीय आणि आर्थिक चळवळीचे साधन आहे असे बाबासाहेब मानित.
- कोणत्याही वृत्तपत्र अथवा पत्रकाराने कोणत्याही एका जाती-धर्म अथवा राजकीय पक्षाचे प्रतिनिधित्व न करता निरपेक्षपणे कार्य करावे अशी बाबासाहेबांची मान्यता होती.
- बाबासाहेबांनी आपल्या पत्रकारितेद्वारा भारतीय समाजातील वेगवेगळे प्रश्न व समस्या सोडविण्याचा आटोकाट प्रयत्न केला.
- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी चालविलेल्या वृत्तपत्रांनी बहुजन समाजाला अन्याया विरुद्ध लढण्याची हिंमत दिली.
- आपल्या या वृत्तपत्रांमधून बाबासाहेबांनी बहुजनांच्या हिताचे विचार बिनधास्त पणे मांडले व इतरांनाही तशी संधी उपलब्ध करून दिली.
- अस्पृश्य, बंचित, पीडित व बहुजन समाजामध्ये नवचैतन्य निर्माण करण्याचे कार्य बाबासाहेबांनी वृत्तपत्रांद्वारे केले.

- हया वृत्तपत्रांद्वारेच डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी बहुजन समाजामध्ये स्वाभिमान जागृत केला.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ज्या समाजात वाढले होते त्या समाजाचे दुःख व समस्या त्यांनी अगदी जवळून बघितल्या होत्या. त्यामुळे हया अस्पृश्य बंचित व बहुजन समाजाच्या प्रगतीकरिता व त्यांना न्याय मिळवून देण्याकरिता त्यांनी आपले संपूर्ण आयुष्य खर्ची घातले. आपल्या वृत्तपत्रांमधून अन्यायाविरुद्ध लेखन करून त्यांनी समाज परिवर्तनाचे कार्य केले. म्हणून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या संपूर्ण चळवळीचे सार त्यांच्या वृत्तपत्रात असल्याचे दिसून येते.

संदर्भ सूची :-

- १) लोकराज्य - धम्मचक्र प्रवर्तन सुवर्ण महोत्सव विशेषांक -ऑक्टोबर २००६, पृष्ठ क. ८४
- २) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर लेखन आणि भाषणे - खंड - १९, पृष्ठ क. ४
- ३) लोकराज्य -धम्मचक्र प्रवर्तन सुवर्ण महोत्सव विशेषांक - ऑक्टोबर २००६, पृष्ठ क. ४७.



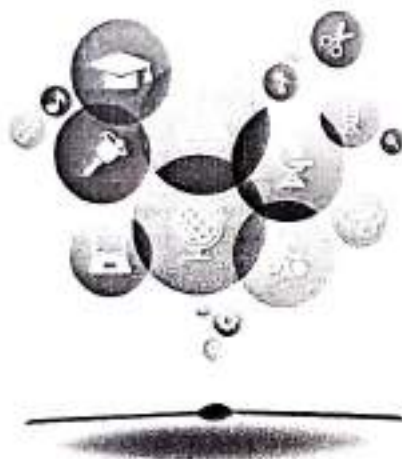
# *B.Aadhar*

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

( CCCXLIX ) 349



**Chief Editor**

**Prof. Virag S. Gawande**

**Director**

**Aadhar Social**

**Research & Development**

**Training Institute Amravati**

**Editor:**

**Dr.Dinesh W.Nichit**

**Principal**

**Sant Gadge Maharaj**

**Art's Comm,Sci Collage,**

**Walgaon.Dist. Amravati.**

**Executive Editor:**

**Dr.Sanjay J. Kothari**

**Head, Deptt. of Economics,**

**G.S.Tompe Arts Comm,Sci Colla**

**Chandur Bazar Dist. Amravati**



**This Journal is indexed in :**

- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**
- **International Impact Factor Services (IIFS)**



20	बाबुराय बागुल यांच्या कथेतील स्त्रीचित्रण	डॉ. सुधाकर भुवार	80
21	पेशवेकालीन हिंदु धर्माची सांस्कृतिक जीवन शैली एक अभ्यास	डॉ. रमाकांत शिवाजीराव शातसवार	83
22	पालि साहित्य में मानवसमाज के कल्याण की संकल्पना	प्रा. डॉ. बी. एस. मानवटकर	86
23	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची स्त्रीविषयक जाणीव	सहा. प्रा. दीपक स. वानखडे	88
24	Firaq Gorakhpuri ki Ghazliyat Per Ek Nazar	Dr Feroz S Khan	92
25	Re-Engineering in Libraries	Dr. Rajabhau V. Bajad	100
26	Parent child relationship: Changing Direction	Dr. Nilima P. Mahore	102
27	Intellectual Property Rights of Celebrity in India - A Critical Study	Dr. Chaitanya Ajabrao Ghuge	107





डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची स्त्रीविषयक जाणीव

सहा. प्रा. दीपक स. वानखडे

महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती.

आपल्या देशाचा इतिहास तपासून पहिला असता आपल्याला असे दिसून येते की, पारंपारिक वैदिक धर्मात स्त्रीवर अनेक प्रकारची बंधने लादून तिला गुलाम केले होते. त्यामुळे तिला कुठल्याही प्रकारचे अधिकार नव्हते. केवळ चूल आणि मूल एवढ्यापुरतेच तिचे क्षेत्र मर्यादित करण्यात आले होते. तत्कालीन समाजामध्ये लोकांवर धर्माचा अत्याधिक पगडा असल्यामुळे धर्माची ही चौकट मोडायला कुणीही धजावत नव्हते. अशावेळी पारंपारिक वैदिक धर्मात अनेक बंधने टाकून गुलाम केलेल्या स्त्रीला सर्वप्रथम मोक्षाचा अधिकार देऊन समानतेच्या पातळीवर आणण्याचे कार्य तत्काळ बुद्धांनी केले; तर आधुनिक काळात हेच कार्य शिक्षणाची व्दारे स्त्रियांकरिता उपडून काढिसुर्य महात्मा जोतीराव फुल्यांनी केले आणि पुढे भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी तत्काळ बुद्ध, महात्मा जोतीराव फुले व समतेचे पुरस्कर्ते संत कविरांना आपले गुरू मानून त्यांचे कार्य पुढे नेले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची स्त्रीविषयक जाणीव

स्त्री - पुरुष समानता

महाड चवदार तळे सत्याग्रहात डॉ. आंबेडकरांच्या भाषणाने अस्मृश्य स्त्रियांमध्ये फांती घडवून आणली. स्त्रियांचे आचारविचार बदलू लागले. मोठ्या संख्येने स्त्रिया सभासंमेलनात भाग घेऊ लागल्या. स्त्री-संघटना तयार होऊ लागल्या. मोर्चे-मिरवणुकांत जाऊ लागल्या, चळवळीत उतरू लागल्या.

अस्मृश्य स्त्रियांमध्ये घडत असलेल्या या परिवर्तनामागे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा स्त्री - पुरुष समानतेचा उदार दृष्टिकोन होता ही गोष्ट विसरता येणार नाही. बाबासाहेब उच्च शिक्षणाने विभूषित होऊन परदेशातून मायदेशी परतले होते म्हणून परदेशातील-स्त्री-पुरुष समानतेचा पगडा त्यांच्या मनावर होता आणि त्यातूनच त्यांचा हा उदार दृष्टिकोन तयार झाला, असे जर कुणी म्हणेल तर ते चूक होईल. विद्यार्थीदशेत असल्यापासूनच सर्व क्षेत्रात पुरुषांच्या बरोबरीने स्त्रियांनी वावरले पाहिजे, असे त्यांचे विचार होते. बाबासाहेबांचे स्वतःचे घराणे सुसंस्कृत होते. त्यांच्या वडिलांनी आपल्या मुलांबरोबर मुलींना व बहिणींना लिहायला-वाचायला शिकविले होते. बाबासाहेबांची आपल्या आध्यात्मिक वृत्तीची होती. लष्करात असणाऱ्या लोकांच्या मुलांबरोबर मुलींनाही शिक्षण दिले जात असे.

स्त्रीशिक्षणाचा आग्रह

सातारा येथे सैन्यातील लोकांच्या वस्तीमध्ये बाबासाहेबांच्या शेजारीच राहणाऱ्या जमादार जाधव (पोईकर) यांना अमेरिकेहून बाबासाहेबांनी विद्यार्थी दशेत असताना एक पत्र पाठवले होते. या पत्रात जमादार, कन्येला शिकवत असल्याबद्दल त्यांचे अभिनंदन करून बाबासाहेबांनी लिहिले होते की, "आईवडील मुलांना जन्म देतात, कर्म देत नाहीत हे म्हणणे चुकीचे आहे. मुलांना घडवले पाहिजे. मुलांबरोबर मुलींनाही शिक्षण दिलं तर आपली प्रगती झपाटून व्हायला हरकत नाही. म्हणून जे जवळचे नातलग आहेत त्यांच्यात तरी हा विचार पसरवा." अशाप्रकारे मुलींच्या शिक्षणाबाबतची पालकांची जबाबदारी बाबासाहेबांनी अचूकपणे सांगितली आहे.

सामाजिक मागासलेल्या आणि सहशिक्षणाचा गंधही नसलेल्या औरंगाबादसारख्या ठिकाणी महाविद्यालय सुरू करून मुलांच्या बरोबरीने त्यांनी मुलींनाही प्रवेश दिला. इतकेच नव्हे तर मुलींनी मोठ्या संख्येने महाविद्यालयात यावे म्हणून शहरापासून महाविद्यालयापर्यंत एक बसही सुरू केली. मुलींचे एक स्वतंत्र व्यक्ती म्हणून समाजात असलेले स्थान बाबासाहेबांनी सर्वांना दाखवून दिले. तसेच शिक्षणाबरोबर शीलही महत्वाचे आहे, हे मुंबई रावळी कॅंपमध्ये महिला मंडळ्यासमोद





दिलेल्या भाषणात स्पष्ट केले, 'लंडनहून बाबासाहेब पत्राळारे रमाबाईंना लिहिण्या-वाचण्यास प्रोत्साहन देत. त्यांच्या अभ्यासाची आस्थेने चौकशी करीत. पतीची आवड लक्षात घेऊन रमाबाई शिक्षू लागल्या. व बाबासाहेबांना विलायतेत पत्रही पाठवू लागल्या... दलित स्त्रीला शिक्षणाकडे अभिमुख करण्याचे सर्व श्रेय बाबासाहेबांनाच आहे, हे निसंशय.'<sup>११</sup>

व्यक्तीस्वातंत्र्याचा पुरस्कार

'पालकांनी आपल्या मुलांची लवकर लग्न करून त्यांच्या आयुष्याचे मातेरे करू नये. तसेच पत्नी कशी असावी याबाबतचे पुरुषांचे मत विचारात घेतले जाते, तसे स्त्रियांचेही नवऱ्याबाबतचे मत लक्षात घेतले पाहिजे. बऱ्याचशा सुंदर स्त्रिया कुरूप पुरुषांच्या स्वाधीन झालेल्या दिसतात. याचा अर्थ असा आहे की, मुलींना हा अधिकार नाकारला गेला आहे. स्त्रीही एक व्यक्ती आहे आणि तिला व्यक्तिस्वातंत्र्य असले पाहिजे.'<sup>१२</sup> असा परखड विचार बाबासाहेबांनी १९३८ साली विद्यार्थ्यांसमोर केलेल्या भाषणात मांडला.

१९४२ च्या महिला परिषदेत त्यांनी काही मुद्यांवर आवर्जून भर दिलेला आहे. 'मुलामुलींची लग्ने लवकर करू नका, निदान त्यांना स्वतःच्या पायावर उभे राहू द्या. जास्त मुले होण्याचे दुष्परिणाम त्यांच्या लक्षात आणून द्या. विवाह हा मुलींच्या विकासातील अडसर आहे, विवाह मुलींवर लादू नका. लग्नानंतर पत्नी ही नवऱ्याची सखी व समान अधिकार असलेली गृहणी असली पाहिजे. नवऱ्याची ती गुलाम होता कामा नये. असे विचार त्यांनी मांडले.

समाजिक कौटुंबिक प्रबोधन

महाडच्या चवदार तळे सत्याग्रहाप्रसंगी बाबासाहेबांनी स्त्रियांसमोर जे भाषण केले ते स्त्रियांमध्ये आमूलाग्र कांती घडविणारे होते. अशातचही भाषणे ते वारंवार करीत. २९ मे १९५३ रोजी चेंबूर येथे बाबासाहेबांनी अवजड व बोजड दागिने वापरणे ठीक नाही; पोषाखावरून कात ओळखता कामा नये, असे सांगितले. १९३२ च्या ऑक्टोबर महिन्यात डॉ. आंबेडकर सावंतवाडी येथे एक खुनाचा खटला चालवण्यासाठी गेले असता, त्यांनी तेथील अस्पृश्य समाजाने आयोजित केलेल्या सभेत स्त्रियांना उद्देशून असेच भाषण केले. सासरी नांदणाऱ्या मुलीला वत्सल माता जो जागरूक उपदेश करते, तसा उपदेश करणारे ते भाषण होते. 'कितीही बिकट परिस्थिती असली तरी तुमच्या मुलामुलींना शाळेत पाठवीत जा. पुरुष मंडळींनी घर मृतमांस आणले तर त्यांना सकल वियोध करा. कपडे फाटके असले तरी शिवून व धुवून वापरा. स्त्रिय व तुमच्यात कोणताही फरक दिसता कामा नये. आपण एवढी जरी जबाबदारी स्वीकारली तरी समाजाच्या उच्चारकार्यात महत्त्वाचा भाग घेतल्याप्रमाणे होईल.' अशाचप्रकारे ठिकठिकाणी स्त्री-समुदायासमोर बाबासाहेब बोलत असत.

२५ डिसेंबर १९५२ रोजी निपाणी येथे दलित समाजाची परिषद भरली होती. या परिषदेत स्त्री-पुरुष प्रचंड संख्येने उपस्थित होते. यावेळी स्त्रियांच्या समुदायाकडे बघून बाबासाहेब म्हणाले, 'मेलेली जनावरे खाऊन तुम्ही दिवस कांठीत आहात, यापेक्षा कोणती अनिष्ट परिस्थिती तुमच्यावर यायची आहे ? याकरिता आपण लढ्यात सामील झाले पाहिजे.'

स्त्रियांविषयीचा कळवळा

गरीब म्हणजे काय ते बाबासाहेबांनी स्वतःअनुभवले होते. अन्नवस्त्राला महाम्ग झालेला अस्पृश्य समाज त्यांच्या अवतीभवती होता. त्या उपेक्षित आया-बहिणींची गरिबीमुळे उघडी पडणारी अबू बाबासाहेबांचे हृदय जाळीत होती म्हणूनच भाऊराव गायकवाड यांना बाबासाहेबांनी पत्र पाठवले त्यात ते म्हणतात, 'बुध्द जयंतीच्या दिवशी व गरजू अशा शेकडो महिलांनी पातळे वाटण्याची माजी मनीषा आहे.'<sup>१३</sup>

आपल्या समाजात गरिबी आणि जास्त मुले याच्या व्यस्त प्रमाणामुळे आपल्या समाजाची उन्नती लवकर होऊ शकणार नाही, याची जाणीवही बाबासाहेब आपल्या लोकांना वारंवार करून देत असत. १९३८ साली विद्यार्थ्यांसमोर केलेल्या भाषणात कुटुंब नियोजनाची जबाबदारी स्त्री-पुरुष दोघांचीही आहे तसेच आपली १४ भावंडे व दारिद्र्य यावर बोलून एका मुलाचेच संगोपन आपण करू शकतो कमी मुले झाल्यामुळे स्त्रियांची जीवधेण्या वाळंतपणातून थोडी सुटका होईल आणि त्यांची शक्ती इतर कामाकडे वळवता येईल, असेच बाबासाहेबांना स्पष्ट करायचे होते.





‘स्वतंत्र मजूर’ पक्षाचे आमदार प्रभाकर रोहम यांनी बाबासाहेबांच्या प्रेरणेने १९३८ साली कुटुंब नियोजन ठराव विधिमंडळात मांडला. त्याचवर्षी स्त्री-कामगारांच्या हिताच्या दृष्टीने विधिमंडळात मांडलेल्या विधेयकाला बाबासाहेबांनी पाठिंबा दिला. तसेच स्त्रियांना प्रसूतीपूर्वीच्या व नंतरच्या काळात विश्रांतीची गरज असल्याने त्यांच्या पगारावर होणारा खर्च मालकांनीच सोसला पाहिजे, असे त्यांनी ठासून सांगितले.

अनाथ मुलांना आधार द्यावा आणि परित्यक्ता, कुमारी मातांना अभय द्यावे, अशी बाबासाहेबांची मनापासून तळमळ होती. त्यासाठी औरंगाबाद येथे अनाथ आश्रम बांधण्याचा बाबासाहेबांचा विचार होता. ते म्हणत. ‘लहान लहान मुले येथे आणून ठेवावी; अनाथ, गरीब आणि परित्यक्ता किंवा कुमारी मातांनी टाकलेली मुले मी सांभाळीन. त्यांचे सर्व काही मी करीन.’ स्त्रियांवरील अन्यायाची चिड

पुरुषांचा स्त्रियांवरील अन्याय बाबासाहेबांना कधीही सहन होत नसे. एखादा पुरुष आपल्या पत्नीच्या बाबतीत जरी असमानतेने वागतो आहे, असे त्यांनी पाहिले तरी ते ताबडतोब त्यांची कानउघडणी करीत. बाबासाहेबांनी या बाबतीत एका कार्यकर्त्याची घेतलेली हजेरी लक्षात ठेवण्यासारखी आहे. सोलापूर जिल्ह्यातील बावी या गावी जीवाप्पा ऐदाळे हे बाबासाहेबांचे दूद परिचित रहात होते. त्यांच्या गावातील कारभारी नावाचा एक कार्यकर्ता आपल्याला मूलबाळ होत नाही म्हणून वयाच्या ५५-५६ व्या वर्षी दुसरे लग्न करणार होता. त्याला बाबासाहेबांनी विचारले, ‘तुम्हाला मूल होत नाही हा जर तुमचा दोष असेल तर मूल होत नाही, या सबबीवर दुसरा नवरा करण्याचा विचार तुमच्या बायकोने मनात आणला तर ते तुम्हाला चालेल का ? तुम्हाला मूल हवे तशी त्यांची गरज तिलाही आहेच. स्त्रियांनाही मुलाबाळांची ओढ असतेच की!’ नीतिमत्तेला महत्व

नीतिमत्तेला बाबासाहेब फार महत्व देत असत. म्हणूनच १९३८ साली वाण्या मुरळ्या, देवदासींच्या समोर केलेल्या भाषणात त्यांनी ‘वेश्या व्यवसाय बंद करा; चांगले जीवन जगा’ गरिबीची आपल्याला भीती नाही; ती तर जन्मापासून आपल्या सोबत आहे; तेव्हा गरिबीला भिऊन हा व्यवसाय करू नका. हे पटवून देताना कौरवांच्या वैभवाकडे पाठ फिरवून पांडवांबरोबर वनवासात जाण्याच्या द्रोपदीचे त्यांनी उदाहरण दिलं आहे. आपल्या स्त्रियांची नैतिक उन्नती झाली पाहिजे हे बाबासाहेबांनी कृतीतूनही स्पष्ट केलेले आहे. ‘पवळाबाईला नाचवून मिळालेला पैसा मला नको. असे ठणकावून सांगून, पट्टे बापूरावाने बाबासाहेबांच्या कार्याला मदत म्हणून देऊ केलेला पैसा बाबासाहेबांनी नाकारला.

**स्त्रियांना संधी**

स्वतःसुरू केलेल्या निरनिराळ्या चळवळीतदेखील त्यांनी शक्य तेथे दलित स्त्रियांचे कर्तृत्व पाहून त्यांना योग्य संधी दिली. जनता पाशाच्या कार्यकारिणीत त्यांनी १९३२/३३ साली सावित्रीबाई बोरडे आणि अंबुबाई गायकवाड या दोन महिलांचा समावेश केला होता. तसेच दलितांच्या सर्व प्रमुख परिषदांतून महिलांकरिता त्यांनी स्वतंत्र विचारमंच मिळवून दिला. म्हणजेच पुरुषांच्या परिषदेसोबत स्त्रियांच्याही परिषदा आयोजित करण्यात येत असत. त्यातूनच पुढे स्त्रियांनी स्वतंत्रपणे आपला विचारमंच निर्माण करायला सुरुवात केली.

**हिंदू कोड बिल**

स्त्रियांचे हक्क, उन्नती आणि विकास हे केवळ उपदेशाने साध्य होणार नाहीत. त्यासाठी प्रत्यक्ष कायद्यातच तरतूद करावी लागेल, हे लक्षात घेऊन बाबासाहेबांनी संसदेत हिंदू कोड बिल तयार करून संसदेत मांडले. या बिलामुळे हिंदू स्त्रीला विवाह, घटस्फोट, याबाबत पुरुषांसारखाच अधिकार दिला होता. १) स्त्रिला घटस्फोटाचा अधिकार होता. २) नवऱ्याने घटस्फोट दिल्यास पोटगी मिळत होती. ३) व्यक्तीचा एकच विवाह कायदेशीर असल्याने दुसऱ्या विवाहास योग्य कारण नसल्यास बंदी करण्यात येऊन स्त्रियांना स्थैर्य मिळत होते. ४) स्त्रियांना दत्तक घेण्याचा अधिकार मिळणार होता. ५) मुलांप्रमाणे मुलीला दत्तक जाण्याचा अधिकार होता. ६) स्त्रियांचा स्वतःच्या मिळकतीवर अधिकार होता. ७) वडिलांच्या मिळकतीवर मुलाइतकाच समान हिस्सा मिळणार होता.



८) मुलीला वारस होण्याचा अधिकार होता. ९) आंतरजातीय विवाहास मान्यता होती. १०) स्त्रीला स्वतःचा वारस निश्चित करण्याचा अधिकार होता.

या बिलाने भारतीय स्त्रीला पुरुषांच्या बरोबरीने स्वातंत्र्य देऊन तिचा गौरव केला होता. पण पुरुषप्रधान संस्कृती असलेल्या देशातील सनातनी विचारांच्या लोकांना हे बिल पसंद पडले नाही. त्यांनी या बिलाला तीव्र विरोध केला. हिंदू कोड बिल पास झाले तर आपण राजीनामा देऊ असे शस्त्र राजेंद्रबाबूंनी उचलले. गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेलही हया बिलाच्या विरोधात होते. त्यांच्यापुढे पंडित नेहरूही हिंदू कोड बिलाबाबत गप्प राहिले. अखेर हे बिल रेंगाळत राहून पुढे २६ सप्टेंबरला ते स्थगित झाले. हे सहन न होऊन बाबासाहेबांनी २७ सप्टेंबर १९५१ ला आपल्या मंत्रीपदाचा राजीनामा दिला.

#### निष्कर्ष

१. हजारो वर्षांपासून भारतीय स्त्रियांवर होत आलेल्या अन्याय - अत्याचारांची बाबासाहेबांना जाणीव होती.
२. स्त्रियांविषयी बाबासाहेबांच्या मनामध्ये अस्सीम तळवळ व करुणेची भावना होती.
३. स्त्रियांच्या कल्याणातच मानवतेचे कल्याण आहे असे बाबासाहेबांचे ठाम मत होते.
४. स्त्री-पुरुष समानतेचे बाबासाहेब हे कट्टर पुरस्कर्ते होते.
५. स्त्रियांचा विकास करायचा असेल तर तिला पुरुषांच्या बरोबरीने शिक्षण दिले पाहिजे अशी त्यांची मान्यता होती.
६. स्त्रीला सर्वदृष्टीने सक्षम बनवून पुरुषांच्या गुलामीतून मुक्त करणे हा बाबासाहेबांच्या कार्याचा उद्देश होता.
७. शील, नीतिमत्ता, स्त्री-पुरुष समानता, व्यक्तिस्वातंत्र्य, स्त्री-पुरुषांना समान संधी यावर आधारित समाजाची निर्मिती हे बाबासाहेबांच्या जीवनाचे ध्येय होते.

#### संदर्भ सूची

१. डॉ. भीमरावजी आंबेडकर, खंड - १, चां.भ.खैरमोडे, सुगावा प्रकाशन, पृष्ठ ६६
२. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे स्त्री मुक्ती चे कार्य, रोहिणी गवाणकर, शोध निबंध १९८९, पृष्ठ ३
३. तत्रैव पृष्ठ ३
४. डॉ. आंबेडकरांचे पत्रे, शंकरराव खरात, इंद्रायणी साहित्य प्रकाशन, पत्र दि. ३ मे १९५२ पृष्ठ ३४९





# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

**November -2021**

ISSUE No- 328 (CCCXXVIII)

नवीन शैक्षणिक धोरणात संगीताची भूमिका

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor :

Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Professor. Kaumudi Dattatry Kshirsagar

Editor

Department of Music

Sitabai Arts , Commerce & Science College Akola

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher



20	ललित कलाओं में संगीत का स्थान	डॉ. नेत्रा श्रीकांत सेव्हारकर	58
21	संगीत चिकित्सा	डॉ. मोनार्ली मरसीह	61
22	संगीत चिकित्सा (Music Therapy)	डॉ. भाग्यश्री धनंजय मोकासदार	64
23	लोककलाओं में लोकसंगीत की महत्वपूर्णता	डॉ. मीनल भोंडे / सोनाली आसकर शिलेदार	66
24	संगीत चिकित्सा	प्रा.डॉ. धादेश्वर संतोषराव मदनकर	68
25	संगीतकला आणि भारताचा सांस्कृतिक विकास	गंधार विश्राम कुलकर्णी	72
26	सांगीतिक चिकित्सा—सिध्दांत व प्रत्यक्ष उपयोगिता	डॉ. प्राजक्ता मोहन हसबनीस	79
27	संगीत और अध्यात्म एक विवेचन	सहा. प्रा. गजानन वी. काळे	81
28	संगीत कला: उपजीविकेचे एक सशक्त साधन	प्रा- किरण प्रकाश सावंत	84
29	आख्यानाचे लोककलेतील स्थान	प्रा. जगनाथ इंगोले	87
30	साहित्य व संगीत	प्रा.डॉ. साधना हरणे (मोहोड)	89
31	scope and limitations of online music theory	प्रा. डॉ. जयश्री विश्राम कुलकर्णी	93
31	सैध्दांतिक शास्त्र आणि संगीत कला	प्रा. डॉ. मुक्ता महल्ले	100
32	संगीत आणि सामाजिकशास्त्र	प्रतिभा शिरसागर	102
33	संगीत रोजगाराचे विविध आयाम - एक अभ्यास	प्रा. वैशाली चौरपगार (मोहोड)	105
34	महाराष्ट्राच्या लोकसंगीतामधील विविध अंतरंग	प्रा. डॉ. सुधीर मोहोड	109
35	ऑनलाईन संगीत शिक्षण पध्दती—मर्यादा आणि व्याप्ती !	प्रा. डॉ. ज्वाला नागले	111
36	Stress management through Music	Ms. Uttara Ratansing Tadavi	117
37	Music-For Mentally Challenged?	Ms. Mitali Katarnikar-Prabhune	119
38	Role of Hindustani Classical Music Therapy	Dr. Ajaykumar G. Solanke	123
39	Role of Music in Academic Stress Management	Dr. Niraj Lande	126
40	Chronicling Classical Music is Dispersion of Culture.	Miss. Amruta Vinayrao Kale	129
41	Role Of Music In Academic Stress Management	Dr Prachi S. Halgaonkar	133



**INDEX**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	मन:शांती आणि स्वस्थ शरीर यासाठी संगीताची भूमिका प्रा. वर्षा आगरकर		1
2	'स्वरांगिनी'—बंदिश रचनेत स्वर—शब्द संयोगाचे संयोजन डॉ. अभय अरविंद गद्रे		3
3	ऑनलाइन संगीत शिक्षा का दायरा और सीमाएं अमोल बासुदेवराव गावंडे		6
4	उच्च शिक्षासंस्थानों में संगीत डॉ. राहुल मल्हारी भोरे		11
5	संगीत—एक ललीत कला सहा.प्रा. ज्ञानेश्वर बांपिलवार		15
6	समाज परिवर्तनात संगीताची भूमिका डॉ. उमेश संतोषराव चापके		18
7	लोकसंगीत समाजकलेतील महत्वप्रधान गायनशैली सहा. प्रा. संतोष मुकिंदा धंदरे		21
8	पं. विष्णू नारायण भातखंडे यांचे संगीत क्षेत्रातील व्यक्तित्व व कर्तृत्व प्रा. विशाल विजय कोरडे		23
9	लोककलेचे महत्व प्रा. विद्या प्र. गावंडे		25
10	बंगाली जनजातीचे लोकसंगीत का सांगितीक सौंदर्य: शास्त्रीय विवेचन वैभव प्रभाकर डंगवार		28
11	संगीत चिकित्सा : एक स्वास्थ्यवर्धक प्रणाली प्रा.डॉ.कु. प्रिती. बी. इंगळे (वाकपांजर)		30
12	शरीर एवं मानसिक संतुलन में संगीत की भूमिका सहा.प्रा. सुशिल अ. वावरकर / डॉ. सौ. अर्चना अंधोरे		34
13	संगीत और अध्यात्मिकता डॉ. श्वेता दीपक वेगड़		37
14	संगीत और अध्यात्मवाद प्रा. अनिता शर्मा		40
15	भारतीय संगीत चिकित्सा पद्धती डॉ. सरिता एस. इंगळे		42
16	संस्कृती जोपासण्याचे एक माध्यम :-संगीत सहा.प्रा. अमोल द. वाडवे		46
17	भारतीय शास्त्रीय संगीत :एक आध्यत्मिक शक्ती Sangeeta Chati		48
18	मराठी साहित्य आणि संगीत डॉ.सौ.सुरेखा रत्नपारखी		51
19	लोककलेचे सांगितीक महत्व डॉ. प्रतिभा चं. पवित्रकार		55

**आख्यानाचे लोककलेतील स्थान****प्रा.जगनाथ इंगोले****सहा. प्राध्यापक (संगीत विभाग प्रमुख) महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती****(मो. न. 9765748598)**

महाराष्ट्रात अनेक लोककला प्रकार प्रसिद्ध आहे. ह्या सर्व लोककला विविध - अंगी असून त्या प्रामुख्यांनी निरूपण प्रधान आहेत. निवेदन, निरूपण व संपादनीच्या अंगाने फुलणाऱ्या या कलांनी आपल स्वतंत्र विश्व निर्माण केले आहे. आपल्या पारंपारिक अंगाला व पेशाव्याला सोबत घेवून, संगीत, नृत्य, नाट्य, गायण, वादनासह लोकगीते, लोकधुन संवाद, प्रबोधन यांचा सुयोग्य मेल साधून ग्रामीण समाजाचे लोकंरंजन करणारी कला म्हणजे लोककला होय. ती लोकांनी स्वयंस्फूर्तीने निर्माण केलेली असल्याने तीला 'लोककला' असे म्हटले जाते. या लोककलेचा अभ्यास करतांना प्रयोगरूप लोककला व इतर लोककला असे दोन प्रकार दिसून येतात.

यामध्ये प्रामुख्याने गोंधळ, जागरण, दशावतार कीर्तन, सोंगी भजन, भारड, दंडार, बहुरूपी, लोकनाट्य, तमाशा, शाहिरी, खडींगमत यासारखे अनेक लोककला प्रकार लोकप्रिय आहेत.

या लोककलेत लोकमनाला जागविण्याचे सामर्थ्य आहे. ती आपल्या सामर्थ्याने फुलून नऊ रंगाची उघडण करीत लोकरूप प्रगत करते. या लोककलेचे खरे रूप खुळते ते 'आख्यानात'. आख्यान म्हणजे कथननाट्य आख्यान कथा हा भाग किर्तन व गोंधळांदाी परंपरेत असून गोंधळांच्या उत्तररंगात सादर केल्या जाते. संगीत, नृत्य, नाट्य यांचा सुंदर मेळ साधून या कलेचे सादरीकरण केल्या जाते. त्यामुळेच सर्वच वृत्तीच्या आणि प्रवृत्तीच्या श्रोत्यांना सारखाच प्रिय असलेला भाग म्हणजे 'आख्यान' होय.

'आख्यान' या कथन नाट्याची उत्पत्ती ही पुराण कथांमध्ये असून भारतीय साहित्यात ही परंपरा प्राचीन काळापासून सुरू असल्याचे दिसते. 'आख्यान' या शब्दाचा अर्थ कथन, निवेदन, कथा किंवा कहाणी, ऐतिहासिक कथा, पौराणिक कथा यांचे यांचे विशेष अर्थ पुरावृत कथन म्हणजे आख्यान होय. ऋग्वेद संहितेत आख्यानाचे प्राचीनत्व आढळते.

प्राचीन काळातील सर्व कथांना अभिजात साहित्यात समाविष्ट करून ग्रंथरूपात आनले व पुढील काळात या कथांना 'आख्यान' असे नाव प्राप्त झाले. हा मूळ प्रवाह वैदिक वाङ्मयातील असून लोककलेच्या किर्तन व गोंधळ परंपरेत दिसून येतो.

गोंधळ परंपरेतील 'आख्यानात' पौराणिक, लौकिक क्वचित सामाजिक व स्वरचीत विषयांवर आधारित असतात. या कथा रामायण, महाभारत व पुराण ग्रंथांच्या आधारांनी विकसित झालेल्या असून काही कथांचे विषय लोककलावंतांच्या स्वप्रतिमेतून अविष्करीत झालेली आहेत. या कथानाट्यात अभिमन्यु वध, जांबुवंत आख्यान, घटोत्कचवध इत्यादी विषयांसह काही लोकपरंपरेनी चालत आलेल्या कथा नाट्यरूपाने सादर केल्या जातात. या लोककलेच्या प्रकारात पौराणिक च्या पोटात लौकिक असेच या आख्यानाचे स्वरूप असते.

हा कलाप्रकार गोंधळांच्या उत्तररंगातसादर होत असल्यानी या कलेचा उत्तररंगहा अतिशय नाट्यपूर्ण असतो. त्यामुळेच या एकूण विधीला विधीनाट्य असे म्हटले जाते. या लोककला प्रकारातील गायक कलावंताला इतर विषयांवरील कवणे गाण्याची तसेच विनोद निर्मितीची मुवाअसते. हे गायण, मुखगायक, सह गायक व समूह गायकांच्या सहकार्यानी गायले जाते.

या लोककला प्रकारात नाट्य, नृत्य, कथन, गायन, संवाद या सर्व कलागुणांचा सुयोग्यमेळ साधल्या जातो. प्रसंगातील पात्रानुसार वेशभूषा धारण करून आहार्य, वाचिक, आंगीक व सात्विक अभिनयाचा उत्तमरीत्या उपयोग करून प्रसंग नाट्य उभे केले जाते. प्रमुख गोंधळी कलावंताने परिधान केलेला डोलदार झगा व त्या झग्याचा अभिनय व नृत्य, साकार करतांनी योग्य प्रकारे उपयोग करून सादर केले जाते. या प्रसंगी गोंधळी, गाण्याचेध्रुपद गावून ताल धरून नाचतो, गोल फिरतो, गीरक्या घेत हातांनी मुद्रा करतो व आपल्या सकस अभिनयानी हे विधीनाट्य साकार करीत असतो.

हा लोककला प्रकार सादर करणाऱ्या गोंधळी कलावंतांनी या विधी नाट्यमातून स्वतःची रंगभूमी विकसित करून या रंगभूमीचा प्रबोधनासाठी प्रभावी उपयोग केला आहे. या रंगभूमीवर सादर होणारा 'आख्यान' हा उत्कृष्ट लोककला प्रकार आहे.





आज या प्राचीन लोककलेनी संपूर्ण समाज घनाचे लक्ष आपल्याकडे आकर्षित करून घेतले आहे. या कलाकृतीतील परंपरागत वेशभूषा, संवाद फेक, अभिनय, कलात्मकता व नाबिन्ध्यपूर्णता मनाला सुखद आनंद देणारी आहे या लोककलेतील प्रयोगशीलता अभिजात कलावंताला अधिक भावली आहे. त्यामुळेच 'इंडियन नॅशनल थिएटर' या प्रसिद्ध संस्थेच्या पुढाकारानी 'गोधळ' या कलेला एक नाट्यप्रकार म्हणून मुंबईच्या रंगभूमीवर सादर करण अनेक प्रयोग झाली असल्याचे दिसून येते.

'जाबुळ आख्यान' या कलाकृतीचे अनेक प्रयोग राजाराम बापू (परभणी) लोकशाहीर चिट्ठल उपम व नंदेश उपम या लोककलावंतांनी सादर करून अधिक लोकप्रीयता प्राप्त केली. महाराष्ट्र शासन व 'इंडियन नॅशनल थिएटर' च्या माध्यमातून या कलेचे अनेक प्रयोग राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय पातळीवर झाले आहे. महाराष्ट्राची ही प्राचीन लोककला कलेच्या अंगाचे सादर होऊन तीला नाट्य प्रयोगाचे स्वरूप प्राप्त झाले आहे.

**लोककलेची महत्वपूर्णता :-**

महाराष्ट्रात गोधळ, जागरण, दशावतार, सोंगी भजन, किर्तन, भारुड, दंडार, बहुरूपी, लोकनाट्य, तमाशा, खडींगमत अशा अनेक लोककला प्रचलित आहेत. या कलात आख्यान हे कथानाट्य अतिशय उत्कृष्ट असून लोककलेत तीचे महत्वपूर्ण स्थान आहे. या कलांनी समाजमनाला घट्ट बांधून समाजाचे रंजन व प्रबोधन सुद्धा केले आहे. या लोककलेत समाजाचे आत्मभान जागविण्याचे सामर्थ्य असून त्यांनी राष्ट्रीय एकात्मता टिकून ठेवली आहे. या सर्व लोककलेत पवित्रता, नाबिन्ध्यता व मनाला शांतता प्रदान करण्याचे क्षमता आहे. या कलांनी समाजाचे आत्मभान जागृत करून आपली संस्कृती मजबूत केली आहे. कष्टाने क्षीण झालेल्या माणसाला परत ताजेतवाने करून नवीन उर्जा प्रदान करणे हे लोककलेचे निद्र आहे. समाजाचे आंतर व बाह्य रूप प्रगट होण्याच्या या लोककलांनी मानवी मनात आनंदनिर्माण करून समाजात देशभक्तीरुजविण्याचे महत्वपूर्ण कार्य केले आहे.

**निष्कर्ष:**

महाराष्ट्राच्या लोककलेत आख्यान हा उत्कृष्ट कलाप्रकार असून महाराष्ट्रातील लोककलावंतांनी लोकप्रिय केला आहे. या सर्व लोककलेत समाजाला आनंद प्राप्त करून देण्याची क्षमता असून अनेक काळापासून प्रबोधनाचे कार्य करित आहे. या लोककलांनी आपली संस्कृती मजबूत केली आहे. समाजाला नवीन उर्जा प्रदान करून राष्ट्रीय एकात्मता व देशभक्ती रुजविण्याचे महत्वपूर्ण कार्य केले आहे.

**संदर्भ:**

- १) लोकरंगभूमी (परंपरा, स्वरूप आणि भवितव्य) - डॉ. प्रभाकर मांडे
- २) लोकसाहित्याचे स्वरूप - डॉ. प्रभाकर मांडे
- ३) लोकसाहित्य - डॉ. राजेश श्रीवास्तव (शंभर)
- ४) लोकगायकांची परंपरा - डॉ. प्रभाकर मांडे



**One Day  
Interdisciplinary International e-Conference  
on**

**Role of Physical Activities,  
Health and Fitness in Today's Crisis**

**16<sup>th</sup> October, 2021**

**Jointly Organized by**

**IQAC and Department of Physical Education & Sports**

**Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya,  
Amravati, Maharashtra, India.**

**Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati, Maharashtra, India.**

**Narayanrao Rana Mahavidyalaya,  
Badnera, Amravati, Maharashtra, India.**



116.	डॉ. मनोज गं. राठोड समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, स्व. पंचफुलाबाई पावडे कला वाणिज्य महिला महाविद्यालय, वरुड, जि. अमरावती	समाजशास्त्र की दृष्टिसे मानसिक स्वास्थ्य	369
117.	पा.जगन्नाथ इंगोले सहा. प्राध्यापक (संगीत विभाग प्रमुख) महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	क्रीडा जगत और संगीत विकित्सा पद्धती	371
118.	सोनाली आसकर शिलेदार सहाय्यक प्राध्यापक, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिये संगीत एक प्रभावी माध्यम	373
119.	प्रा. डॉ. संजय जे. भगत समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती.	आधुनिक समाजात योगाचे महत्व	376
120.	प्रा.डॉ.स्वप्ना एस. देशमुख गृहअर्थशास्त्र विभाग, श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय पुसद जि.यवतमाळ	मानसिक आरोग्य प्राप्ती करिता समुपदेशकाची भूमिका	379
121.	डॉ. रंजना एच जिवने गृहअर्थशास्त्र विभाग प्रमुख श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद	पुसद शहरातील बंजारा समाजातील शेतमजूर स्त्रियांचा आहार आणि आरोग्याचा अभ्यास	382
122.	प्रा. आनंद मनवर समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, युवाशक्ती कला व विज्ञान महाविद्यालय अमरावती	मानवी जीवनातील योगाचे महत्व आणि फायदे	387
123.	प्रा.नितु जिवनराव शेंडे श्रीमती नानकीबाई वाघवाणी कला महाविद्यालय यवतमाळ	फास्टफुड- तटस्थता व आरोग्यावर होणारे दुष्परिणाम	390
124.	डॉ पंकज मा तायडे (सहाय्यक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग) भाऊसाहेब लहाने ज्ञानप्रकाश आर्टस् कॉलेज पिंजर	ताणतणावाचे व्यवस्थापन - योगसाधना	394
125.	डॉ. अनिल खु. ठाकरे भाऊसाहेब लहाने ज्ञानप्रकाश आर्टस् कॉलेज पिंजर जिल्हा. अकोला	आरोग्य आणि मानसिक तंदुरुस्तीत संगीताची भूमिका ; एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	398
126.	डॉ. नेवा श्रीकांत तेलहारकर संगीत विभाग, जे. डी.पा.सा. महाविद्यालय दर्यापूर	योग और संगीत	400
127.	प्रा. डॉ. बबिता येवले स. प्रा. राज्यशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	राजकारणात खेळाचे महत्व	403
128.	सहा. प्रा.अभय शरदराव चांदेकर संचालक, शारीरिक शिक्षण व खेळ, बाबासाहेब देशमुख पारवेकर महाविद्यालय, पारवा जि. यवतमाळ	खेळ व्यायाम आणि शारीरिक सुदृढता	407
129.	निर्घोट अर्चना महादेवराय पीएच- डी- शोधार्थी (हिन्दी), संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती (मानव विज्ञान शाखा)	शारीरिक क्षमता पर सूर्य नमस्कार का प्रभाव	410



2021-22  
S.A. Collection  
Bhawan Prakashan

①  
②  
③

DOI PREFIX 10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN SIF 7.399	RESEARCH NEBULA An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences	ISSN ISSN 2277-8071
---	---	------------------------



<p>प्रा. जगन्नाथ हुंगोले</p> <p>सहा. प्राध्यापक (संगीत विभाग प्रमुख)</p> <p>महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती</p>	<p>One Day International Interdisciplinary E-Conference On <b>ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS</b> On 16<sup>th</sup> October, 2021 @ Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati., Late Dattatraya Pusadkar Arts College, Nandgaon Peth, Amravati. &amp; Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.</p> <p><b>क्रीडा जगत और संगीत चिकित्सा पद्धती</b></p> <p><b>ABSTRACT:</b> संपूर्ण विश्व में खेल (क्रीडा) को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अनेक देश की अपने खेल की वजह से पहचान बन गयी है। हर देश में स्वतंत्रतापूर्वक खेल का वार्षिक नियोजन किया जाता है। ओलम्पिक, विश्व कप, जैसे प्रतियोगिता को देखकर हर देश का खिलाड़ी अपनी तयारी करता है। और अपने आप को स्वस्थ रखता है। खिलाड़ी हर पल देश के लिये खेलने का सपना देखता है। देश के लिये खेलना एक गौरव की बात है। वर्तमान काल में देश के लिये खेलने वाला खिलाड़ी को सरकार द्वारा सभी सुविधा दी जाती है। हर खिलाड़ी खेल के मैदान में व्यस्त है। खिलाड़ी को खेल प्रतियोगिता के लिये चुने जाना एक अहम बात होती है। इसी बात से अधिक तर खिलाड़ी अपनी मानसिकता खो देते हैं। तो कहीं अधिक खिलाड़ी खेल के मैदान में चोट लगना। अपना ध्येय प्राप्त न करने की वजह से नकारात्मक की और अधिक झुकते हैं। व्यक्तिगत और आर्थिक समस्या जैसे विविध समस्या से खेल जगत का खिलाड़ी रस्त, निराश और मानसिक रोगी बन जाता है। इन्हीं सभी समस्याओं को दूर करने संगीत चिकित्सा पद्धती एक उच्चोत्त विकल्प हो सकती है।</p>
--	--

<p><b>संगीत चिकित्सा पद्धती :-</b></p> <p>संगीत मानव जीवन को शांति प्रदान करने में सक्षम माना जाता है। संगीत द्वारा निर्मित ध्वनी मनुष्य प्राणी के लिये प्राणवायु समान होता है। संगीत की यह क्षमता को ध्यान में रखकर विदेशी भूमि में 'संगीत चिकित्सा' पद्धती अधिक प्रचलित हो रही है। शारीरिक और मानसिक समस्या को दूर करने 'संगीत चिकित्सा' पद्धती का प्रयोग सफल माना जाता है। यह पद्धती सर्पटीव 'चिकित्सा पद्धती' होने से, मुख्य चिकित्सा पद्धती के साथ प्रयोग करने से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। सन १९४४ में मिशौगन विश्वविद्यालय में संगीत चिकित्सा संबंधित विविध पाठ्यक्रम (कोर्स) का निर्माण किया गया है। इस पद्धती को विश्व कन्सास विश्वविद्यालय ने सन १९९० में National Association for Music Therapy नाम से संबोधित किया है। मानसिक बिमारी में अदभूत परिणाम प्राप्त करने वाली इस उपचार पद्धती का भारत जैसे विशाल देश में प्रचार हो रहा है। विश्व के तमाम चिकित्सा पद्धती में संगीय चिकित्सा पद्धती भिन्नता पूर्णक काम करती है। इस पद्धती में उपचारक रोगी को ध्वनी लहरी सुनाने का प्रबंध किया जाता है। स्वर का प्रभाव यही इस पद्धती का मुख्य आधार माना जाता है।</p>	<p>वर्तमान समय का मनुष्य भारी भाग टूट भरी जिंदगी जी रहा है। अपने दिनचर्या में खाने और सोने का समय अनिच्छित है। यह वजह से आज का युवा वर्ग मानसिक तणाव जैसे समस्या से ग्रस्त है। विश्व का अधिकतर युवा वर्ग इस पिडा से झुंज रहा है। समाज में 'इन्सोमिया' नामक मनोरोग की समस्या अधिक बढ़ रही है। मनोचिकित्सक के मतानुसार, चिंता परेशानी, असमाधान, व अनिद्रा इस समस्या का कारण है। यह बिमारी मनोरोग की प्रथम सिडी मानी जाती है।</p> <p>इस समस्या को पूर्णरूप से दूर करने में संगीत चिकित्सा पद्धती सर्वोत्तम है। संगीत चिकित्सा द्वारा शरीर में उत्पन्न 'एण्डोर्नेल' को अधिक मात्रा में घटकर, रोगी को आराम प्राप्त होता है। इस चिकित्सा से शरीर के विजातीय द्रव्य और विषिले पदार्थ को दूर करने का कार्य होता है। जिस से शारीरिक और मानसिक पिडा से समाधान मिलता है। संगीत मानसिक समस्या में प्रभावी दवा के रूप में कार्य करता है। शरीर और मन को चुस्त करने संगीत सक्षम है। शरीर में नयी उर्जा का संचार संगीत सुनकर हो सकता है। संगीत सुनना, एक व्यायाम के समान है। जिस से शारीरिक मानसिक, क्षमता के साथ स्मरणशक्ती बढ़ती है। हमारे मन में सकारात्मकता उत्पन्न करके मन को पूर्णता शांति प्रदान करणा संगीत द्वारा</p>
---	---





प्रा. जगन्नाथ इंगोसे

सहा. प्राध्यापक (संगीत  
विभाग प्रमुख)

महात्मा ज्योतिबा फुले  
महाविद्यालय, अमरावती

One Day International Interdisciplinary E-Conference On  
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS  
On 16<sup>th</sup> October, 2021 @

Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati., Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati, & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

क्रीडा जगत और संगीत चिकित्सा पद्धती

#### ABSTRACT:

संपूर्ण विश्व में खेल (क्रीडा) को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अनेक देश की अपने खेल की वजह से पहचान बन गयी है। हर देश में स्वतंत्रतापूर्वक खेल का वार्षिक नियोजन किया जाता है। ऑलम्पिक, विश्व कप, जैसे प्रतियोगिता को देखकर हर देश का खिलाड़ी अपनी तयारी करता है। और अपने आप को स्वस्थ रखता है। खिलाड़ी हर पल देश के लिये खेलने का सपना देखता है। देश के लिये खेलना एक गौरव की बात है। वर्तमान काल में देश के लिये खेलने वाला खिलाड़ी को सरकार द्वारा सभी सुविधा दी जाती है। हर खिलाड़ी खेल के मैदान में व्यस्त है। खिलाड़ी को खेल प्रतियोगिता के लिये पुनर्जन्म एक अहम बात होती है। इसी बात से अधिक तर खिलाड़ी अपनी मानसिकता खो देते हैं। तो कहीं अधिक खिलाड़ी खेल के मैदान में चोट लगना। अपना ध्येय प्राप्त न करने की वजह से नकारात्मक की और अधिक झुकते हैं। व्यक्तिगत और आर्थिक समस्या जैसे विविध समस्या से खेल जगत का खिलाड़ी वस्तु, निराश और मानसिक रोगी बन जाता है। इसी सभी समस्याओं को दूर करने संगीत चिकित्सा पद्धती एक उच्चतम विकल्प हो सकती है।

#### संगीत चिकित्सा पद्धती :-

संगीत मानव जीवन को शांति प्रदान करने में सक्षम माना जाता है। संगीत द्वारा निर्मित ध्वनी मनुष्य प्राणी के लिये प्राणवायु समान होता है। संगीत की यह क्षमता को ध्यान में रखकर विदेशी भूमि में 'संगीत चिकित्सा' पद्धती अधिक प्रचलित हो रही है। शारीरिक और मानसिक समस्या को दूर करने 'संगीत चिकित्सा' पद्धती का प्रयोग सफल माना जाता है। यह पद्धती सर्पटीव 'चिकित्सा पद्धती' होने से, मुख्य चिकित्सा पद्धती के साथ प्रयोग करने से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। सन १९४४ में मिशीगन विश्वविद्यालय में संगीत चिकित्सा संबंधित विविध पाठ्यक्रम (कोर्स) का निर्माण किया गया है। इस पद्धती को विश्व कन्सास विश्वविद्यालय ने सन १९५० में National Association for Music Therapy नाम से संबोधित किया है। मानसिक बिमारी में अदभूत परिणाम प्राप्त करने वाली इस उपचार पद्धती का भारत जैसे विशाल देश में प्रचार हो रहा है। विश्व के तमाम चिकित्सा पद्धती में संगीय चिकित्सा पद्धती भिन्नता पूर्णक काम करती है। इस पद्धती में उपचारक रोगी को ध्वनी लहरी सुनाने का प्रबंध किया जाता है। स्वर का प्रभाव यही इस पद्धती का मुख्य आधार माना जाता है।

वर्तमान समय का मनुष्य भारी भाग ढीठ भरी जिंदगी जी रहा है। अपने दिनचर्या में खाने और सोने का समय अनिच्छित है। यह वजह से आज का युवा वर्ग मानसिक तणाव जैसे समस्या से वस्तु है। विश्व का अधिकतर युवा वर्ग इस पिडा से झुंज रहा है। समाज में 'इन्सोमिया' नामक मनोरोग की समस्या अधिक बढ़ रही है। मनोचिकित्सक के मतानुसार, चिंता परेशानी, असमाधान, व अनिद्रा इस समस्या का कारण है। यह बिमारी मनोरोग की प्रथम सिडी मानी जाती है।

इस समस्या को पूर्णरूप से दूर करने में संगीत चिकित्सा पद्धती सर्वोत्तम है। संगीत चिकित्सा द्वारा शरीर में उत्पन्न 'एड्रीनेल' को अधिक मात्रा में घटकर, रोगी को आराम प्राप्त होता है। इस चिकित्सा से शरीर के विजातिय द्रव्य और विशिष्ट पदार्थ को दूर करने का कार्य होता है। जिस से शारीरिक और मानसिक पिडा से समाधान मिलता है। संगीत मानसिक समस्या में प्रभावी दवा के रूप में कार्य करता है। शरीर और मन को चुस्त करने संगीत सक्षम है। शरीर में नयी ऊर्जा का संचार संगीत सुनकर हो सकता है। संगीत सुनना, एक व्यायाम के समान है। जिस से शारीरिक मानसिक, क्षमता के साथ स्मरणशक्ति बढ़ती है। हमारे मन में सकारात्मकता उत्पन्न करके मन को पूर्णता शांति प्रदान करणा संगीत द्वारा





डा. जगन्नाथ हुंगोले

सहा. प्राध्यापक (संगीत  
विभाग पमुख)  
महात्मा ज्योतिबा फुले  
महाविद्यालय, अमरावती

One Day International Interdisciplinary E-Conference On  
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS  
On 16<sup>th</sup> October, 2021 @

Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati, Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

क्रीडा जगत और संगीत चिकित्सा पद्धती

#### ABSTRACT:

संपूर्ण विश्व में खेल (क्रीडा) को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अनेक देश की अपने खेल की वजह से पहचान बन गयी है। हर देश में स्वतंत्रतापूर्वक खेल का वार्षिक नियोजन किया जाता है। ओलम्पिक, विश्व कप, जैसे प्रतियोगिता को देखकर हर देश का खिलाड़ी अपनी तयारी करता है। और अपने आप को स्वस्थ रखता है। खिलाड़ी हर पल देश के लिये खेलने का सपना देखता है। देश के लिये खेलना एक गौरव की बात है। वर्तमान काल में देश के लिये खेलने वाला खिलाड़ी को सरकार द्वारा सभी सुविधा दी जाती है। हर खिलाड़ी खेल के मैदान में व्यस्त है। खिलाड़ी को खेल प्रतियोगिता के लिये चुने जाना एक अहम बात होती है। इसी बात से अधिक तर खिलाड़ी अपनी मानसिकता खो देते हैं। तो कही अधिक खिलाड़ी खेल के मैदान में घोट लगना। अपना ध्येय प्राप्त न करने की वजह से नकारात्मक की और अधिक झुकते हैं। व्यक्तिगत और आर्थिक समस्या जैसे विविध समस्या से खेल जगत का खिलाड़ी वस्तु, निराश और मानसिक रोगी बन जाता है। इसी सभी समस्याको दूर करने संगीत चिकित्सा पद्धती एक उच्चत विकल्प हो सकती है।

संगीत चिकित्सा पद्धती :-

संगीत मानव जीवन को शांति प्रदान करने में सक्षम माना जाता है। संगीत द्वारा निर्मित ध्वनी मनुष्य प्राणी के लिये प्राणवायु समान होता है। संगीत की यह क्षमता को ध्यान में रखकर विदेशी भूमि में 'संगीत चिकित्सा' पद्धती अधिक प्रचलित हो रही है। शारीरिक और मानसिक समस्या को दूर करने 'संगीत चिकित्सा' पद्धती का प्रयोग सफल माना जाता है। यह पद्धती सर्पटीव 'चिकित्सा पद्धती' होने से, मुख्य चिकित्सा पद्धती के साथ प्रयोग करने से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। सन १९४४ में मिशौगन विश्वविद्यालय में संगीत चिकित्सा संबंधित विविध पाठ्यक्रम (कोर्स) का निर्माण किया गया है। इस पद्धती को विश्व कन्सास विश्वविद्यालय ने सन १९५० में National Association for Music Therapy नाम से संबोधित किया है। मानसिक बिमारी में अदभुत परीणाम प्राप्त करने वाली इस उपचार पद्धती का भारत जैसे विशाल देश में प्रचार हो रहा है। विश्व के तमाम चिकित्सा पद्धती में संगीय चिकित्सा पद्धती भिन्नता पूर्णक काम करती है। इस पद्धती में उपचारक रोगी को ध्वनी लहरी सुनाने का प्रबंध किया जाता है। स्वर का प्रभाव यही इस पद्धती का मुख्य आधार माना जाता है।

वर्तमान समय का मनुष्य भारी भाग दौड़ भरी जिंदगी जी रहा है। अपने दिनचर्या में खाने और सोने का समय अनिच्छित है। यह वजह से आज का युवा वर्ग मानसिक तणाव जैसे समस्या से जस्त है। विश्व का अधिकतर युवा वर्ग इस पिडा से झुंज रहा है। समाज में 'इन्सोमिया' नामक मनोरोग की समस्या अधिक बढ़ रही है। मनोचिकित्सक के मतानुसार, चिंता परेशानी, असमाधान, व अनिद्रा इस समस्या का कारण है। यह बिमारी मनोरोग की प्रथम सिडी मानी जाती है।

इस समस्या को पूर्णरूप से दूर करने में संगीत चिकित्सा पद्धती सर्वोत्तम है। संगीत चिकित्सा द्वारा शरीर में उत्पन्न 'एड्रीनेल' को अधिक मात्रा में घटकर, रोगी को आराम प्राप्त होता है। इस चिकित्सा से शरीर के विजातिय द्रव्य और विशिष्ट पदार्थ को दूर करने का कार्य होता है। जीस से शारीरिक और मानसिक पिडा से समाधान मिलता है। संगीत मानसिक समस्या में प्रभावी दवा के रूप में कार्य करता है। शरीर और मन को घुस्त करने संगीत सक्षम है। शरीर में नयी उर्जा का संचार संगीत सुनकर हो सकता है। संगीत सुनना, एक व्यायाम के समान है। जीस से शारीरिक मानसिक, क्षमता के साथ स्मरणशक्ती बढ़ती है। हमारे मन में सकारात्मकता उत्पन्न करके मन को पूर्णता शांति प्रदान करना संगीत द्वारा



अनुकूल है। इसलिये विश्व के खेल जगत में 'संगीत चिकित्सा' का अवलंबन उचित हो सकता है।

खेल के मैदान में खेल भावना और खिलाड़ी वृत्ति को बढ़ावा देने के लिये संगीत महत्वपूर्ण है। खिलाड़ी के मन में निर्माण, नकारात्मक, डिप्रेशन, राग, व्देश को दूर करने संगीत कारागार साबित हो सकता है।

खिलाड़ी की मानसिक समस्या दूर करण 'संगीत चिकित्सा' का उपयोग होना चाहिये। इस पद्धती में विविध रोग को दूर करने के लिये राग संगीत, ताल संगीत को सुनना अनिवार्य है। इस पद्धती में हर रोग नुसार रागों का चयन चिकित्सक द्वारा किया जाता है। इस 'चिकित्सा पद्धती' में मानसिक रोग, ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक, शुगर, अनिद्रा, नकारात्मक जैसे समस्या को दूर करने की क्षमता है।

निष्कर्ष:-

संगीत चिकित्सा पद्धती का आज विश्व में प्रसार हो रहा है। यह पद्धती सपोर्टीव 'चिकित्सा पद्धती' होने से मुख्य 'चिकित्सा पद्धती' के साथ उपयोग होता है। मानसिक और शारीरिक बिमारीयों में अधिक लाभदायक होने से, विश्व के खेल जगत में खिलाड़ी की समस्या दूर करने हेतु इस चिकित्सा पद्धती का प्रयोग महत्वपूर्ण हो सकता है।

1. संगीत मनी - २ डॉ. महारानी शर्मा, श्री भूवनेश्वर प्रकाशन, अन्हाबाद
2. संगीत विशारद - वसंत - हाथरस प्रकाशन
3. संगीत शिक्षणाच्या विविध पद्धती - प. ना. द. कशाळकर, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे

International Research Fellows Association's

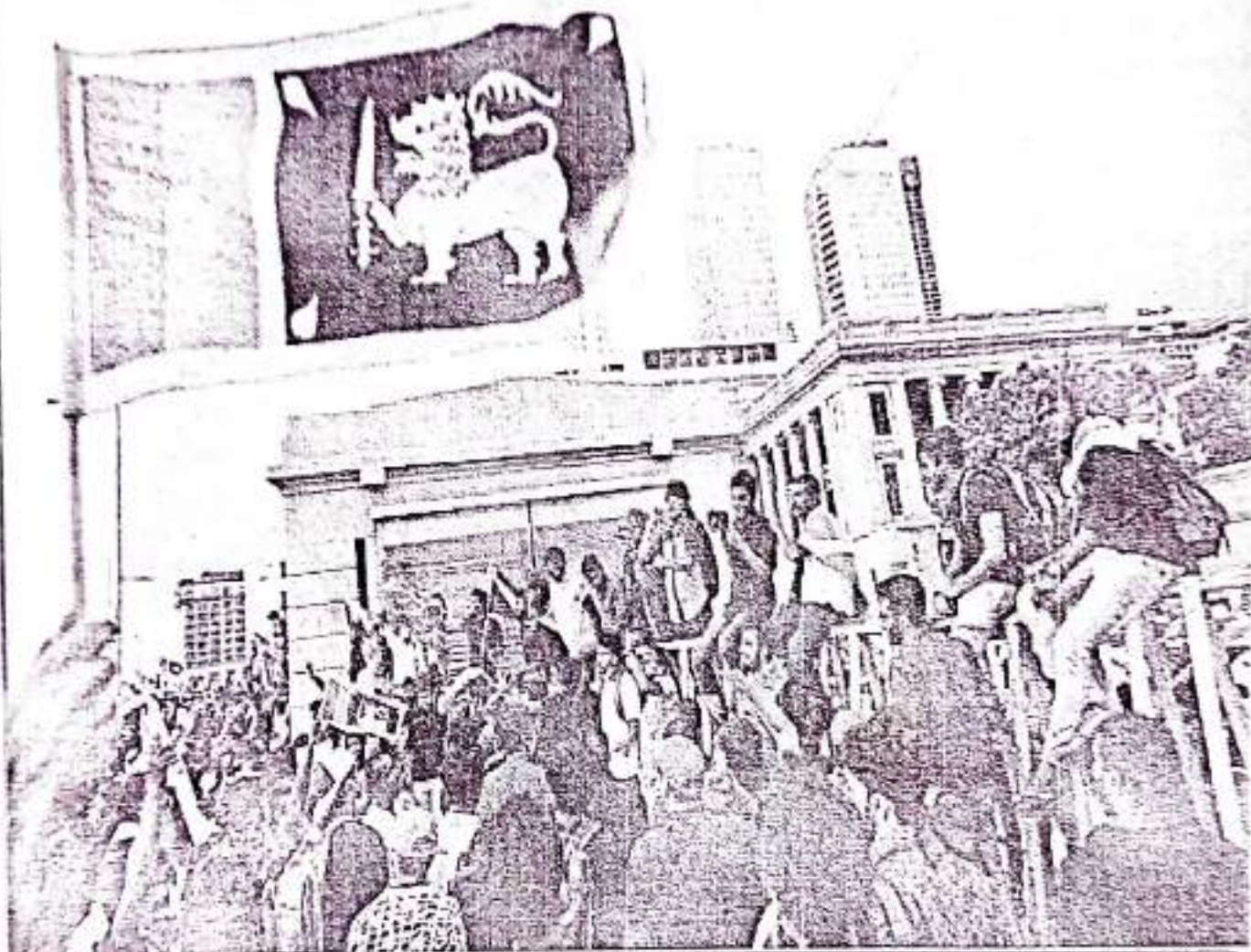
# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue 293

Multidisciplinary Issue



Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,  
Assist. Prof. (Marathi)  
MGV's Arts & Commerce College,  
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)  
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)  
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)  
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)





## INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
<b>English Section</b>			
01	The Roles of Mahatma Gandhi and Iqbal Nath Sarshar in The Novel Untouchable By Mulkraj Ananad	Dr. Rajendra Sarode	05
02	An Angry Young Woman in Meena Kandasamy's Select Poems	Mrs. Rohini Waghmare	09
03	Ecological Concern in Aravind Adiga's 'The White Tiger'	Mr. Ramdas Barve	13
04	A Critical Study of William Gibson's Novel Neuromancer As Cyberunk Text	Dr. Umaji Patil	17
05	Chinua Achebe : A Quest of Identity through Literature	Dr. Dnyaneshwar Satbhai	21
06	Mulk Raj Anand : A Voice of Suppressed Class	Miss Iti Tiwari & Dr. Abhay Mudgal	26
07	Pandit Nehru's Panchsheel for Peaceful 21 <sup>st</sup> Century World	Dr. Pramod Sardar	29
08	Future of Academic Libraries' Sustainability in Changing Information World	Dr. Neha M. Joshi	31
09	Information and Communication Technology (Ict): Apportunity and Challengs for Library Science Professionals	Dr. Atul Wankhade	38
10	A Scientometrics Analysis of the Journals of Indian Library Association (JILA) : 2017-2021	Mr. Gautam Wani & Dr. Sudhir Astunkar	44
11	An Evaluation of Internet Use among Mahila Mahavidyalaya Science Students in Malegaon	Prof. Jayant Dixit	56
12	User Satisfaction Perspective with Model	Sachin Sakarkar	63
13	Semiotics of Emojis in the Digital Era : A Reflection	Dr. Prasannata Ramtirth & Dr. Sadashiv Pawar	71
14	Misconceptions of Covid-19: The Role of Social Media in its Spread	S. D. Wakode & Dr. G. R. Ratnaparkhi	74
15	Mobile and Internet Addiction among Youths	Dr. Vinod Gajghate	81
16	A Study of Need for Achievement among Male and Female Adults	Dr. Kalpana Vitore	86
17	Impact of Covid-19 Pandemic on Mental Health Wellbeing	Dr. Sudhir Sahare	89
18	The Relationship Between Emotional Intelligence and Happiness Among Senior College Students in Nashik District	Dr. Ramesh Nikam & Mr. Rajendra Kadale	93
19	Role of Meditation for Stress Management of Traffic Police Personnel	Dr. B. U. Pawar	98
20	Rural-Urban Population Growth in Kolhapur District (1991 To2011)	Dr. Rajkumar Moharkar	101
21	Preservation of Myxomycetous Biodiversity from Navegaon Bandh Dist. Gondia, Maharashtra (India)	N. V. Chimankar	104
22	Cardiovascular Endurance Status and Norms for Under 14 Boys of Pune District	Dr. Manoj Reddy & Dr. Vishal Gaikawd	110
<b>हिंदी विभाग</b>			
23	दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के विद्यार्थियों की हिंदी शिक्षण संबंधी आवश्यकताएँ और समस्याएँ	प्रो. मोहन	115
24	प्रसाद के 'ममता' कहानी में भारतीय मूल्य 'कर्तव्य' की रक्षा	डॉ. सुनील जाधव	120



25	मानव मूल्य और कविता	डॉ. नुज़हत फ़ातिमा	123
26	हिंदी की व्यंग्य प्रधान गज़ले	डॉ. जियाउर रहमान जाफरी	129
27	राष्ट्रसंत तुकडोजी के काव्य में विविध विमर्श	डॉ. दिलीप कसबे	134
28	हिंदी उपन्यासों में नारी समस्याएँ एवं समाधान	डॉ. सुनिता राठोड	138
29	'बौद्धो न नाव इस ठाँव, बन्धु' में लौकिक एवं अलौकिक प्रेम	डॉ. सुनील जाधव	142
30	स्वस्थ आचरण में शिक्षा की महत्ता : एक चिंतन	डॉ. सुभाष दोंदे	145
31	आंबेडकरवाद : एक विद्रोही दर्शन (हिंदी)	डॉ. मंगल ससाणे	152
<b>मराठी विभाग</b>			
32	संत साहित्यातील : अंतरबाह्य स्वच्छता	डॉ. निलिमा कापसे	156
33	मादळ : एक विधिनाट्य	प्रा. डॉ. शत्रुघ्न फड	160
34	माणदेशी माणसं : बलुतेदारीचे वास्तव दर्शन	प्रा. विपिन बैराट	168
35	रवींद्र शोभणे यांच्या कादंबऱ्यातील स्त्री व्यक्तिरेखा	डॉ. छोटू डी. पुरी	173
36	ग्रामगीतेच्या 'ग्रामनिर्माण पंचका'तील विचारमूल्यांची प्रासंगिकता	प्रदीप चापले	180
37	'अंधारातून उजळ्याकडे' या कादंबरीतून येणारे तडवी बोली व समाज जीवन	डॉ. धनराज धनगर	186
38	श्रीनिवास विनायक कुलकर्णी यांच्या ललित लेखनातील व्यक्तिचित्ररेखाटन	डॉ. राजाभाऊ धायगुडे	193
39	क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुलेंचा काळ व कार्यकर्तृत्व : एक चिकित्सा 'मी सावित्री जोतीराव' या कादंबरीच्या अनुषंगाने	डॉ. सुरेश वर्धे	194
40	साहित्य : दलित की आंबेडकरी?	प्रा. चंद्रशेखर एंगडे	203
41	बहु आयामी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : व्यक्तित्व आणि कर्तृत्व	डॉ. एस.जी. बाबिस्कर	207
42	पेशवेकालीन नशिरावाद परगण्यातील मनोरंजनाची साधने	श्री दीपक किनवे	212
43	राजर्षी शाहू महाराज यांचा बहुजनवादी विचार	प्रा. डॉ. राहुल गोंगे	215
44	दहशतवाद : धर्मनिरपेक्ष लोकशाहीपुढील आव्हान	डॉ. दत्ताहरी होनराव	222
45	आरोग्य सेवा सुविधांचा हक्क	डॉ. अंजली मस्करेन्हस	226
46	पूर्व विदर्भातील 'आलेसूर' गावातील अनुसूचित जातीचा चीत्सक अभ्यास	डॉ. अमित गायधनी	232
47	अमरावती, यवतमाळ व अकोला येथील तृतीयपंथीयांच्या पुर्वीचे कुटुंबासंबंधीत अभ्यास	डॉ. पूर्णिमा संधानी	236
48	वित्तीय समावेशकता - सर्वसमावेशक विकासाची गरज	देवानंद मंडवधरे	248
49	भारतातील हरित क्रांतीची वास्तविकता आणि दुसऱ्या हरित क्रांतीची गरज	प्रा. एल. एस. सिताफुले	252
50	कोरोना काळाच्या परिस्थितीत शाळा सुरु झाल्यानंतर शिक्षकांना अध्यापन करताना येणाऱ्या समस्यांचा अभ्यास	डॉ. दादासाहेब पवार	258



most common misconceptions about COVID-19 pandemic in southwestern Nigeria. The most common misconceptions were "it is white people disease"; "it is an imported disease"; "it is the disease of the wealthy people"; "incessant heat in Nigerian environment will destroy the disease (i.e. hot weather)"; "poor people cannot contract it"; "maintaining physical distancing practice is unnecessary"; "taking local herbs will destroy it"; "taking hot drinks (*local gins*) will destroy it"; "wearing of face masks is not necessary"; etc. The author concluded that daily increase in the cases and fatalities of the virus in the country has been suggested as a result of persistently holding of these belief-systems among people.

Okunlola, Lampety, Senkyire, and Serwaa (2020) investigated and highlighted some of the most common misconceptions of Covid-19 pandemic. The common misconceptions were Coronavirus affect only the elderly (95%), the virus can spread by mosquito bites (87.5%), antibiotics are effective for treatment (60%) and homemade remedies can cure the corona virus (54. 2%). The authors concluded that factors such as employment status and nature of occupation were the major contributors of these misconceptions.

The aim of the study carried out by Radwan, E., Radwan, A and Radwan, W. (2020) was to determine how social media affects the spread of panic about COVID-19. The sample comprised of 1067 school students, aged between 6 and 18 years in the Gaza Strip, Palestine. The authors found significant impact of social media on spreading panic about COVID-19, especially, negative impact on mental health and psychological well-being of the students. Facebook was the most common social media platform among students (81.8%) and female students had a higher tendency to get news about COVID-19. During the pandemic health news was the most commonly topic seen, read, or heard (56.2%). The authors found significant positive correlation between social media and spreading panic about COVID-19 ( $R = 0.891$ ).

**Method:** The study aimed to reveal the answer of following research questions.

Does the study stream associate with Covid related misconceptions?

Does the economic status associate with Covid related misconceptions?

Does the gender associate with Covid related misconceptions?

Does Social Media plays significant role in spreading rumours and misconceptions of Covid-19?

In order to fetch the answer of above questions, online survey was conducted between 16-29, September, 2021. The questionnaire was comprised of fourteen questions. Some of the general items were incorporated from the previous study carried out by Aminu (2020). Two items were related to the role of social media in spreading rumours and misconceptions of Covid-19. The respondents were Undergraduate and Post Graduate students from various study streams including Science, Technology, Business Administration and Humanities. Nine hundred eighty nine students have responded the questionnaire. The responses were categorized on the basis of study stream, income category and gender.

#### **Results and discussion:**

The study aimed to investigate the Covid related misconceptions and the role of social media in spreading the misconceptions of Covid-19. Item and sample category wise percentage of the respondents and Chi square values are depicted in the following table.





## Misconceptions of Covid-19: The Role of Social Media in its Spread

**S. D. Wakode (1)**

Head, Department of Psychology  
Vidya Bharati Mahavidyalaya, Camp, Amravati  
Mo- 9421829222  
E- Mail : [shankarwakode04@gmail.com](mailto:shankarwakode04@gmail.com)

**Dr. G. R. Ratnaparkhi (2)**

Head, Department of Psychology  
Mahatma Fule Mahavidyalaya, Amravati  
Mo - 9850158676  
E- Mail: [gratnaparkhi@gmail.com](mailto:gratnaparkhi@gmail.com)

### Abstract:

*The study aimed to reveal Covid-19 related misconceptions and role of social media in spreading rumours and misconceptions. Online survey was conducted. Nine hundred eighty nine respondents replied the questionnaire. The study revealed study stream was a partial factor in Covid-19 related misconceptions. The factors of income and gender was found non significant. It is also evident that social media plays a partial role in spreading Covid related misconceptions.*

### Introduction:

In modern era, social media is one of the most used sources of information around the World. It is considered as a two edge sword. However, studies related to the role of social media in spread of rumors and correct information are equivocal. In the Covid -19 crisis, González-Padilla and Tortolero-Blanco (2020) reported that social media has become an important tool for individuals to communicate with friends and family during quarantine periods. It functioned as a tool to minimize the negative effect of isolation that turned into to anxiety, stress, and fear. On the other hand, Torales, O'Higgins, Castaldelli-Maia and Ventriglio (2020) found that during the pandemic, social media platforms spread misleading rumours, misinformation, life-endangering consequences of supposed cure of the disease, aetiology, preventions, vaccinations, and conspiracy theories about the origin of the virus. Moreover, the dangerous issue is that misinformation and rumours spread on social media are faster than reliable information, damaging the authenticity, balance of the news system, in particular health systems (Tasnim, Hossain and Mazumde, 2020).

### Literature Review:

In the Cross-sectional online survey of Saudi population Mukhtiar Baig, et al. (2020) explored the predictors of misconceptions, knowledge, attitudes, and practices related to the COVID-19 pandemic. The sample comprised of 2006 participants; (47.5%) females and (52.5%) males. A majority of respondents (43.9%) have reported that social media platform was the leading source of information. The authors concluded that about one-third of participants (31.7%) had self-reported disturbed social, mental, and psychological wellbeing due to the pandemic and many participants became more religious during the pandemic.

Recently, Md. Sayeed Al-Zaman (2021) has reported that India has emerged as the biggest source of Covid information, with 1 in 6 pieces of fake information is coming out of the country. The author analyzed 9,657 pieces of misinformation that originated in 138 countries. Of all countries, India (18.07%) produced the highest amount of social media misinformation. The author concluded that social media (84.94%) produces the highest amount of misinformation, internet 90.5%) and Facebook alone produces 66.87% misinformation among all social media platforms.

Continuous holding of some misconceptions about the reality of the virus may create further problems for humankind. In this context Aminu (2020) has documented some of the



Item No.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
	COVID-19 is a punishment from God	Viruses causing COVID-19 is dangerous	COVID-19 is a part of virus war	Females are more vulnerable to develop COVID-19 infection	Are you become more religious during COVID-19 pandemic?	Are you become more health conscious during the COVID-19 pandemic	COVID-19 is an important disease	COVID-19 is the disease of the wealthy people	Maintaining physical distancing practice is unnecessary	Local herbs will protect you from COVID-19	We are going to mask is not necessary	Vaccination is the main source to protect from COVID-19	COVID-19 is not that much dangerous as it is pictured by social media	Rumors and misconceptions about COVID-19 are mostly spread by social media
Sample Category (Study Stream) % of 'Yes' response with adjusted decimal														
Humanities & Social Science (N=115)	13	92	66	37	30	92	94	8	34	49	22	79	40	85

Commerce (N = 122)	52	96	73	14	48	91	63	34	13	53	6	84	42	78
B. Tech. (N= 79)	41	86	70	11	33	80	65	22	24	40	11	82	38	75
B.C.A. (N= 125)	39	93	72	19	36	83	69	27	23	53	16	76	45	89
B. Sc. (N= 185)	39	94	65	16	46	84	71	19	25	53	76	83	38	73
M.C.A. (N= 54)	41	93	76	19	39	89	59	26	20	50	11	94	56	65
M.Com (N = 28)	39	89	75	29	39	89	57	21	21	57	14	75	21	86
M.Sc. (N= 110)	41	86	68	17	40	85	66	24	24	39	11	85	45	76
Chi Square	22.4*	1.06	1.65	25.70**	6.59	1.46	13.62	17.10*	10.40	6.00	173**	3.07	16.51**	5.65
Sample Category (Income in Lakhs) % of 'Yes' response with adjusted decimal														
0 - 1 (N= 602)	39	91	71	20	39	85	69	23	26	47	13	84	40	77
1 - 2 (N= 113)	42	96	74	21	40	84	70	23	20	49	8	81	41	69
2 - 3 (N= 73)	40	89	58	16	44	82	81	27	25	49	18	75	45	74
< 3 (N= 112)	37	92	65	12	37	87	72	22	20	54	9	77	45	85
Chi Square	0.35	0.28	2.23	3.00	0.65	0.13	1.23	0.86	1.35	0.54	5.17	0.62	0.48	1.78



Sample Category (Gender) % of 'Yes' response with adjusted decimal														
Female N= 602	40	94	74	12	39	87	69	21	23	48	10	85	41	77
Male N= 297	37	85	61	20	39	80	72	27	27	47	17	76	42	76
Chi Square	0.1 2	0.46	0.6 2	2.00	0.00	0.3	0.10	0.22	0.32	0.10	1.9 2	0. 51	0. 10	0.10

In the above table item no. 1-12 are associates with various misconceptions of Covid-19. And item no. 13-14 are related to role of social media in Covid related misconceptions. The first research question was 'Does the study stream associate with Covid related misconceptions?' For item no.1, 'COVID-19 is a punishment from God', the response range is 13% (Humanities) to 52% (Commerce) and obtained Chi Square value is significant ( $p < .05$ ). A significant number of students (86% to 96%) have reported that virus causing Covid-19 is dangerous. 76% to 86% assume that Covid-19 is a part of virus war. In case of 'Females are more vulnerable to develop COVID-19 infection' the highest and lowest numbers of students are from humanities (37%) and B.Tech. (11%) streams, respectively ( $p < .01$ ). A significant number of students have reported that they became more health conscious during the pandemic (80% to 92%) and 57% to 94% students considered that COVID-19 is an imported disease. A very few number of students treat COVID-19 as the disease of the wealthy people (8% to 34% but  $p < .05$ ). Item no. 9 and 11 represents Covid related practices. The data reveals that students from all study streams are quite aware about misconception of 'maintaining physical distancing practice is unnecessary' (13% to 34%) and 'wearing a mask is not necessary; except B.Sc. students (76% and  $p < .01$ ). A moderate number of respondents reported the faith in local herbs in treating Covid-19 (39% to 57%). A considerable number of students are aware of Covid vaccination (75% to 94%). Considering the responses and Chi Square values it is concluded that study stream reveals as a partial factor in Covid related misconceptions.

The second research question was, 'Does the economic status associate with Covid related misconceptions?' The responses to all items (1 to 12) are equivocal even Chi Square values are non significant ( $p > .05$ ). However, in spite of non significant difference in income groups, the data indicates that a sensible number of students consider that Covid-19 is a dangerous disease (89% to 96%), COVID-19 is a part of virus war (58% to 74%) and COVID-19 is an imported disease (69% to 81%), Vaccination is the main source to protect from COVID-19 (75% to 84%). A least number of students accepted the taboo items like 'Females are more vulnerable to develop COVID-19 infection' and 'COVID-19 is the disease of the wealthy people' (12% to 21% and 22% to 27 %, respectively). The students from all economic groups are quite aware of Covid related practices (Item no. 9, 11 and 12). Considering the above responses it is concluded that economic status is not an important factor in Covid related misconceptions.

The third research question was, 'Does the gender associate with Covid related misconceptions?'. The obtained Chi square values for all items are non significant ( $p > .05$ ); indicating that male and female respondents possesses more or less similar misconceptions of Covid-19. Distribution of percentage shows lower amount of misconceptions of Covid-19 and related practices. (Considering the positive and negative nature of items). Therefore, it is concluded that gender is not associative factor in Covid related misconceptions.



The fourth question was, Does Social Media plays significant role in spreading rumours and misconceptions of Covid-19? Item no. 13 and 14 revealed the answer of this question. In case item no. 13 only study stream was found significant factor in 'COVID-19 is not much dangerous as it is pictured by social media' otherwise remaining two factors i.e. economic status and gender, were non significant ( $p > .05$ ). Moreover, in terms of 'Rumors and misconceptions about COVID-19 are mostly spread by social media', all three factors were found non significant ( $p > .05$ ). Hence, it is concluded that social media plays a partial role in spreading Covid related misconceptions.

Researchers have identified that education, economic status, living alone, gender are some of the predictors of Covid related misconceptions (Mekonnen, Azagew and Alemavéhu, 2020); (Mistry, Ali and Yadav et al. 2021). The rapid outbreak of the COVID-19 pandemic has opened up various issues on social media platforms including, misinformation, fake news, and rumours. Studies revealed that the speed of fake news is faster than reliable information, and also faster than the virus itself, damaging the health systems and affecting the mental health of social media users (Radwan, E., Radwan, A and Radwan, W., 2020). Due to insecurity, scarcity of resources and tension respondents with low socioeconomic status become more sensitive to rumours and misconceptions (Bhuiya, 2021). In this context Difonzo and Bordia (2006) hypothesized that misinformation has a positive correlation with tension, damages, and information scarcity. Considering this background this study has obtained low to moderate level of percentage of misconception about the COVID-19 among college students having varied socio-economic and educational background.

**Conclusions:** Considering the item wise and category wise percentage and Chi Square values, it is concluded that...

Study stream is a partial factor in Covid related misconceptions.

Economic status is not an important factor in Covid related misconceptions.

Gender is not associative factor in Covid related misconceptions.

Social media plays a partial role in spreading Covid related misconceptions.

#### References:

- Aminu, J. A. (2020). The Implications of Misconceptions about Coronavirus Disease (Covid-19) Pandemic in Relation to its Daily Increases from Nigerian Perspective. *Journal of Infectious Diseases and Epidemiology* 6:156. Doi.org/10.23937/2474-3658/1510156
- Bhuiya, Tanzim, et al. (2021). Predictors of misperceptions, risk perceptions, and personal risk perceptions about COVID-19 by country, education and income. *Journal of Investigative Medicine*. <http://dx.doi.org/10.1136/jim-2021-001835>
- Difonzo N, Bordia P. *Rumor Psychology: Social and Organizational Approaches*. Washington, DC: Amer Psychological Assn; 2006. 392 p.
- González-Padilla, D. A., and Tortolero-Blanco, L. (2020). Social Media Influence in the COVID-19 Pandemic, *Int. Braz J. Urol.*, 46, pp. 120-124  
<https://doi.org/10.1371/journal.pone.0243526>
- Md. Sayeed Al-Zaman (2021). Prevalence and source analysis of COVID-19 misinformation of 138 countries *IFLA Journal* doi: [10.1177/03400352211041135](https://doi.org/10.1177/03400352211041135)





- Mekonnen, Azagew and Alemavehu (2020). Community's misconception about COVID-19 and its associated factors among Gondar town residents, Northwest Ethiopia. *Tropical Medicine and Health*, volume 48, Article number: 99
- Mukhtiar Baig, et al. (2020). Predictors of Misconceptions, Knowledge, Attitudes and Practices of Covid-19 Pandemic among a Sample of Saudi Population.
- Okunlola, M. A., Lampety, E., Senkyire, E. K. and Serwaa, D. (2020). Perceived Myths and Misconceptions about the Novel COVID-19 Outbreak. *Science Medicine Journal* 2(3): 108-117 DOI: 10.28991/SciMedJ-2020-0203-1
- Radwan, E., Radwan, A and Radwan, W. (2020). The role of social media in spreading panic among primary and secondary school students during the COVID-19 pandemic: An online questionnaire study from the Gaza Strip, Palestine *Volume 6, Issue 12, December 2020*, e05807.
- Tasnim, S., Hossain, M., and Mazumdar, H. (2020). Impact of Rumors and Misinformation on Covid-19 in Social Media. *Journal of Preventive Medicine*, 53(3), pp. 171-174.
- Torales, J., O'Higgins, M., J.M. Castaldelli-Maia, J. M., and Ventriglio, A. (2020). The Outbreak of COVID-19 Coronavirus and its impact on Global Mental Health, *Int. J. Soc. Psychiatr.*, 66 (4), pp. 317-320.





**One Day  
Interdisciplinary International e-Conference  
on**

**Role of Physical Activities,  
Health and Fitness in Today's Crisis**

**16<sup>th</sup> October, 2021**

**Jointly Organized by**

**IQAC and Department of Physical Education & Sports**

**Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya,  
Amravati, Maharashtra, India.**

**Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati, Maharashtra, India.**

**Narayanrao Rana Mahavidyalaya,  
Badnera, Amravati, Maharashtra, India.**



104.	PROF. DR. NARENDRA UTTAMRAO PATIL Director of Physical Education and Sports, Dadasaheb Bidkar Arts Science and Commerce College, Peth, Tal. Peth, Dist. Nashik	THE IMPACT OF MOTIVATIONAL APPROACHES ON THE SKILL ACQUISITION OF VOLLEYBALL BEGINNERS	331
105.	PROF. PRADEEP ATMARAM WAGHMARE Director of Physical education and sports, M.G.V. Art's, Science and Commerce College, Surgana, Tal. Surgana, Dist. Nashik	ASANA & PRANAYAMA TO DEVELOP POSITIVE THINKING SPECIALLY IN PERIOD OF CRISIS	333
106.	PROF. NANASAHEB B. SAPKAL Director of Physical Education B L D Arts College Pinjar Dist- Akola, Maharashtra	DIETARY FAT INTAKE FOR ATHLETES	336
107.	DR. PRASHANT B. SHINGWEKAR University Department of Chemical Technology, S.G.B. Amravati University, Amravati, Maharashtra	APPLICATION OF PSYCHOLOGY IN THE FIELD OF PHYSICAL EDUCATION	339
108.	DR. NITIN W. DEULKAR Director of Physical Education, Sudhakararao Naik Arts & U K Commerce College, Akola (MS)	कोरोना महामारी काळातील ताळेबंदिमुळे वाढत्या बालकांमधील लठ्ठा पनाच्या समस्या.	342
109.	डॉ. रुपाली अ. इंगोले संचालक शारीरिक शिक्षण व खेळ, श्री शिवाजी विज्ञान महाविद्यालय अमरावती	शास्त्रीय संगीत में योग प्राणायाम का महत्व	347
110.	सहा. प्रा. गजानन बाळासाहेब काळे संगीत विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	ग्रंथपालनामध्ये तणावाचे व्यवस्थापन	350
111.	डॉ. कविता मुरलीधर इंगळे ग्रंथपाल, स्व. पंचफुलाबाई पावडे कला व वाणिज्य महिला महाविद्यालय, वरुड	लठ्ठपणा आणि वजन नियंत्रण	354
112.	डॉ. मोनाली इंगळे गृह अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, श्रीराम कला महिला महाविद्यालय धामणगाव रेल्वे जि. अमरावती	ग्रामीण आणि शहरी विभागातील विद्यार्थ्यांच्या आहाराविषयक समस्या व उपाय	358
113.	प्रा. डॉ. पी. आर. जाधव स्व. दत्तात्रेय पुसदकर कला महाविद्यालय, नांदगाव पेठ, ता. जि. अमरावती	योगाभ्यासाचा महिलांच्या उच्च रक्तदाबावर होणारा परिणाम	362
114.	चंद्रशेखर बाबासाहेब कट्ट शारीरिक शिक्षक संचालक, शंकरलाल खंडेलवाल कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अकोला.	संतुलीत आहार व नियमित व्यायाम "उत्तम आरोग्याची गुरुकील्ली	365
115.	प्रा. कविता आर. किर्दक शि.प्र.मं.विज्ञान व गिलाणी कला वाणिज्य महाविद्यालय, घाटंजी जि.यवतमाळ.	मन एवं शरीर स्वास्थ्य के लिये संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका	367





सहा. प्रा. मजानन  
बाळाराम काळे

(संगीत विभाग)  
महात्मा ज्योतिबा फुले  
महाविद्यालय, अमरावती

One Day International Interdisciplinary E-Conference On  
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS

On 16<sup>th</sup> October, 2021 @

Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati., Late Dattatraya Pusadkar Arts  
College, Nandgaon Peth, Amravati. & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera,  
Amravati.

शास्त्रीय संगीत में योग प्राणायाम का महत्व

#### ABSTRACT:

संगीत में प्राणायाम, योगशास्त्र में श्वसन क्रिया मानवी मन को शिस्त सगानेवाला शास्त्र है। उसे प्राणायाम कहा जाता है। प्राणायाम अनुशासित श्वसन क्रिया प्रादुर्भाव होता है। उसीसे ही प्राणायाम श्वसन क्रिया संतुलित रहती है। संगीत का मूलभूत पैनु प्राणायाम, योग से सुयोग्य श्वसन होता है। जिस प्रकार रोगशास्त्र को ध्यान में रखते हुए शास्त्र का निर्माण हुआ। इसीप्रकार मानव की शरीर रचना का अध्ययन करने के पश्चात कंठ से स्वर कैसा निकाला जाए, इसका विचार कंठ शास्त्र में अभिप्रेत रहता है। आवाज निर्माण के दृष्टी से कौनसे अवयव स्नायुओं का, उपयोग होने से अध्ययन के दृष्टीसे कंठ साधना शास्त्र बना है। संगीत और आवाज के लिए निरंतर रियाज प्राणायाम और योग करना जरूरी माना जाता है।  
शासौष्ठवास, आंदोलन एवं अनुवाद इन सब के लिए उत्तरदायी अवयवों के लिए लायक सुबद्ध कार्य कंठ साधना द्वारा सिखाया जाता है।

#### प्रस्तावना :

मानव भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ती का साकार रूप हि कला है। मानव जब अपनी किसी कला या गुण की अभिव्यक्ती सुन्दर और आकर्षक ढंग से करता है तो उसके गुण की अभिव्यक्ती कला का रूप लेती है। मानव अनादिकाल से ही आनंद की खोज में रहा है। और खोज करता आया है। विकास के साथ मानव की कल्पना, और सृष्टी के साथ तादात्म्य स्थापित करती रही मानव का इस प्रकार प्रवास अधिक तर रहा है। अधिकाधिक दिव्य और सौंदर्यपूर्ण बनाने हेतु सलित कलाओं का जन्म हुआ। सौंदर्य कला की सौंदर्ययुक्त विद्या हि सलित कला है। भारतीय संगीत यह भारतीय संस्कृती का एक अविभाज्य अंग रहा है। गायन, वादन एवं नृत्य यह भारतीय परंपरा के तीनों अंग माने गये हैं। इन तीनों कला को एकत्रित कर संगीत की उत्पत्ती हुई है। अमूर्त भावनाओं को दृश्य या श्राव्य रूप प्राप्त करके नवनिर्मित का आनंद सलित कलाओं द्वारा हि संभव है। आध्यात्मिक दृष्टीकोनसे संगीतकला सभी सलित कलाओंसे आगे मानी जाती है।

प्राणायाम दो प्रकार के होते हैं।

- 1) अंतरंग व्यायाम परक प्राणायाम
- 2) त्वयच्छद उपासना परक प्राणायाम
- 3) अंतरंग व्यायाम परक प्राणायाम :-

अ - पुरक - नियमित पूर्ण श्वास लेना छोड़ना

ब - कुम्भक - सहजतासे उच्छ्वास रोकना प्राणवायु बाहररोकना

क - रेषक - नियमित पूर्ण श्वास लेना बाहर छोड़ना इसप्रकार, क्रम से इडा, पिंगला और सुषुम्न नाडीयों का शोधन.

2) त्वयच्छद उपासना परक प्राणायाम :-

आसनपर सीधा बैठकर तालयुक्त श्वास लेना और श्वास छोड़ना इसका अभ्यास करे तो तालयुक्त प्राणायाम कहलाता है।

शरीर के विभिन्न अंगों की स्वतंत्र घेष्टाओं पर नियंत्रण रखते हुए विशिष्ट स्थिती बनाये रखने को आसन कहा जाता है।

प्राणायाम के विविध प्रकार का शास्त्रीय दृष्टीकोन से अवलोकन किया गया है। प्राणायाम प्रकार में उदा. अनुलोम, विलोम, उज्जाई, धामरी, छाती के श्वसन को बलवान और संतुलित होने के लिए. प्राणायाम साधना की जाती है। ध्वनीयुक्त प्राणायाम की आवाज, और संगीत निर्माण हेतु के दृष्टीसे उपयोग होता है। शरीर की बनावट की दृष्टी से आवाज निर्माण में कौनसे अवयव स्नायुओं का उपयोग होने से अध्ययन के दृष्टीसे कंठ साधना शास्त्र बना है। शरीर शास्त्र को ध्यान में रखते हुये इस शास्त्र का निर्माण हुआ है। योग से उज्जाई, ध्वनिका, शारीरिक लाभ अधिकाधिक बताया गया है। आनंदकरी एकचित करनेवाला नाद धमरी नाद को कहा जाता



है। दमसास बढ़ाने के लिये स्वर को दीर्घ, तंबा करने के लिये स्नायुयो का उपयोग होता है।

प्राणायाम, योगसाधना से ध्वनी की अवस्था स्थिर हो सकती है। संगीत और आवाज के लिये निरंतर रियाज, प्राणायाम करना जरूरी माना जाता है। प्राणायाम योग को विभिन्न प्रकारसे शास्त्रीय दृष्टिकोण से अवलोकन करने से ऐसा प्रतीत होता है की बहुतेक प्राणायाम प्रकार में विलोम, अनुलोम, भ्रामरी, उज्जाई इत्यादी प्रकार में छाती श्वसन के बारे में बताया गया है। श्वसन को बलवान बनाने के लिए और संतुलीन बनाने के लिए प्राणायाम साधना को जरूरी माना गया है तथा नियमित साधना की जानी चाहिये संगीत क मुत्तभूत पैनु प्राणायाम, योग, से सुयोग्य श्वसन होता है। प्राणायाम और संगीत आपसमें पूरक हो या नहीं प्राणायाम साधना शास्त्र शुद्ध पद्धती में आवाज निर्मिती संगीत के लिए उपकारक है।

योग की दृष्टीसे नादके वर्गीकरण योगीयोंने चार प्रकार बताए हैं।

- 1) वैश्वरी - बाह्य कर्णद्वारा गोचर नाद
- 2) मध्यमा - वैश्वरी से सूक्ष्म स्वरूप
- 3) पंचरती - मध्यमा नाद से सूक्ष्मतर नाद पंचरती
- 4) परा - अतिसूक्ष्म नाद पर होता है

योग और संगीत सुसंवाद सहेजतासे ध्यान में आता है। कंपन का संगीतसे संबंध नाद से और नाद के प्राणवहनसे होता है। प्राणायाम से जैसे चितवृत्ति निरोध होता है। वैसेही संगीत से होता है। योग और साधना से जीवात्मा और परमात्मा का मिलन साध्य होना होता है। हरमार्ग की साधना प्राणायाम, योग है। आत्मोन्नति का मार्ग स्थूल से सूक्ष्म, तत्सम से सत्व, वैश्वरी से परा, आहत से अनाहत दिशासे होता है। सांगीतिक चक्र गतिशील होने से असांगीतिक तरंग तथा लहरी सांगीतिक होती है,

कहा जाता है की मोहोर्जोदो में एक स्थान मग्न योगी की मूर्ति उपलब्ध है। जिसमें योगी की दृष्टी नासाय पर केंद्रित है। नृत्यकला में मर्मज्ञ मृति को नटराज शिव का रूप मानते हैं। मृत्तिका के एक मुद्रा में एक देवता की मूर्ति योगासन करती हुई है। ऐसी मूर्तिया का निर्माण संगीतप्रिय सभ्यता के अंतर्गत हि हो सकता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायक प्रणवाकार ओम का गायन केवल ओ के रूप में करते हैं। जो की समोधीन हि नहीं। प्रणव का गान ओम के संपूर्ण उच्चारण के साथ किया जाना चाहिये जोससे ओम का वर्ण तथा ध्वनी होते हि रूप स्पष्ट हो सके सामसंगीत में प्राणभूत तत्व स्थिर है। सामगान से

आद्योपान्त स्वर का महत्व होता है। साम का आरंभ ओम स्वर से किया जाता है।

**\*ओमती सामति गायन्ती\***

योग तथा आगम ग्रंथों में नाद तथा दोनो का सर्वाधिक महत्व है। योगशास्त्र में त्रययोग का वही स्थान है। नादानुसंधान त्रयसिद्धी के लिये परम साधक माना गया है।

अप्रशांत महातुर्या गीत नृत्योपर्षा मितः

बभूक सागरक्रिया वैमायामतिनेजसाम।

जलक्रीडा के अवसर पर किये जानेवाले संगीतायोजन क उत्प्रेक्ष हरिवंश में पाया जाता है। ऐसे अवसर पर गीत वाद्य तथा नृत्य में पारंगत स्त्रिया संगीत का आयोजन किया जाता था। जलक्रीडा करते हुए जल पृष्ठपर उनके द्वारा आघात किया जाता था। मृदंग के विविध करणों अथवा बोलों का आभास होता था। इस क्रीडा गीत तथा नृत्य के साथ वृद्धाकार तुर्योंकी ध्वनी गुंजायमान होती थी।

संगीत का प्राणायाम से संबंध :

प्राणायाम बिना संगीत हो हि नहीं सकता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत वैदिक काल से जबसे इतिहास लिखा गया तभी से प्राणायाम और संगीत का गहरा संबंध रहा है। गायन, वादन, नृत्य इन तीनों का मिलन करने से संगीत की व्याख्या पूर्ण होती है। गायन करते समय अपने कंठ से स्वर निकलता है और गले का व्यायाम होता है। जब वादन वादन करता है। तो वादन करने से हाथ चलते हैं और उनका व्यायाम होता है। और नृत्य करने से सभी शरीर का व्यायाम होता है। इसप्रकार संगीत और प्राणायाम का कैसा अतूट संबंध है यह दिखाई देता है और प्राणायाम और संगीत कभी भी अलग नहीं हो सकता।

औकार का क्या महत्व है :

प्राणायाम योग करते समय एक लंबी सांस अपने शरीर में लेते हैं। धीरे - धीरे सांस छोड़ते समय अ - उ - य (ओम) सांस छोड़ते हुये योगक्रीडा की जाती है। जब हम प्रातःकाल में उठकर प्राणायाम की शुरुवात करते हैं। तो ओम से शुरुवात करते हैं। औकार ध्वनी निकालते समय शुरुवात में अ स्वर उच्चारते हैं उसके बाद उ स्वर का उच्चारण होता है। और फिर म अक्षर का उच्चार करते तब यह तिन अक्षर को मिलाके ओम हो जाता है। यह तीनों अक्षर का जब उच्चार होता है। तब योग करते समय तीनों अक्षर का मेल होता है।

प्राणायाम संगीत में कितना लाभदायक है :

योग और योग क्रिया करने से नाक, कान गले के विकार नष्ट होकर सभी अवयव योग और प्राणायाम सुदृढ और स्वस्थ हो जाते हैं। जब योगक्रीडा और प्राणायाम नियम नुसार किया जाए तो नादनिर्मिती योग्य क्रिया होती है। और

प्राणायाम को भी नाद साधना कहा जाता है, शरीर तणाव मुक्त हो जाता है। श्वास पर योग्य नियंत्रण रहता है। दमसास नहीं भरता है। शब्दोच्चारण में स्पष्टता दिखाई देती है। अपना केफडा जो है वह स्वसन क्रिया में महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु मदत करता है। प्राणायाम और योगक्रीडा के कारण आवाज को घुमादार बनाकर गोलाई युक्त आवाज पैदा होती है। चित को शांती देता है। मन:शांती मिलने से मन और चित को संतुलीत करता है और मानव के मन की एकाग्रता बढ़ती जाती है। प्राणायाम से मानव का शरीर स्वस्थ बनाकर सभी बिमारीयों से छुटकारा मिलता है। प्राणायाम और योग नियमित रूप से किया जाए तो आवाज दमदार बनती है।

**निष्कर्ष :**

प्राणायाम, योग, तथा संगीत भारतीय जीवशैली का भारतीय संस्कृति का प्रमुख अंगमाना गया है। ओम का उच्चारण करने से ओंकार साधना से मानव को समाधी लग जाती है। योगाभ्यास और संगीतअभ्यास में ओंकार साधना का अधिकाधिक महत्व है। प्राणायाम योगसाधना से श्वास पर अधिक बल दिया जाता है और ध्यान दिया जाता है। प्राणायाम साधना से ध्वनी की अवस्था स्थिर हो जाती है। मन एकाग्र करने से केवल स्वरो में आनंद लिया जाता है। जीससे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। संगीत व्दारा उपासना अथवा उपचार व्दारा, इन्हे सभी पर उपचारक स्वास्थ्य पर प्रभाव दिखाई पड़ता है। योगशास्त्र के अनुसार मंत्रयोग, स्वरयोग, त्रययोग, मुद्रायोग और नादानुसंधान यह सभी मिलकर संगीत से नाद योग की उत्पत्ती होती है। आवाज के लिये प्राणायाम योग, रियाज जरूरी माना गया है। जीससे मानव को एकाग्रता प्राप्त कर मन:शांती मिलती है और आनंद से जीवन में सुख मिलता है।

- 1) भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान - श्रीमती कान्ता कुलकर्णी
- 2) संगीत दर्शन - श्रीमती विजयलक्ष्मी कैन
- 3) संगीत विज्ञान - लक्ष्मीनारायण गर्ग
- 4) प्राणायाम तथा योगिक व्यायाम - चारु शर्मा
- 5) संगीत के अन्तर्गत - योगी मनोहर झाकरी
- 6) संगीत कलाविज्ञान सन् २००० - अ. पा. पा. मंडल



(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

# ***B.Aadhar***

**Peer-Reviewed & Refereed Indexed**

**Multidisciplinary International Research Journal**

**November -2021**

**ISSUE No- 328 (CCCXXVIII)**

**नवीन शैक्षणिक घोरणात संगीताची भूमिका**



**Prof. Virag S. Gawande**

**Chief Editor & Director  
Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati**

**Dr. Kaumudi Dattatry Kshirsagar**  
**Editor**

**Department of Music  
Sitabai Arts , Commerce  
& Science College Akola  
Dist.Akola.**

**The Journal is indexed in:**

**Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**

**Cosmos Impact Factor (CIF)**

**International Impact Factor Services (IIFS)**

**Aadhar International Publication**



20	नवित कलाओं में संगीत का स्थान	डॉ. नैना बीकांत तेन्हारकर	58
21	संगीत चिकित्सा	डॉ. मोनाली मसीह	61
22	संगीत चिकित्सा (Music Therapy)	डॉ. भाग्यश्री धनंजय मोकागदार	64
23	लोककलाओं में लोकसंगीत की महत्वपूर्णता	डॉ. मीनल भोंडे / सोनाली बासरकर शिलेदार	66
24	संगीत चिकित्सा	प्रा.डॉ. बाहेश्वर संतोषराव मदनकर	68
25	संगीतकला आणि भारताचा सांस्कृतिक विकास	गंधार विश्राम कुलकर्णी	72
26	सांगीतिक चिकित्सा—सिध्दांत व प्रत्यक्ष उपयोगिता	डॉ. प्राजक्ता मोहन हसननीस	79
27	संगीत और अध्यात्म एक विवेचन	सहा. प्रा. गजानन बी. काळे	81
28	संगीत कला: उपजीविकेचे एक सशक्त साधन	प्रा- किरण प्रकाश सावंत	84
29	आख्यानाचे लोककलेतील स्थान	प्रा. जयनाथ इंगोले	87
30	साहित्य व संगीत	प्रा.डॉ. साधना हरणे (मोहोड)	89
31	scope and limitations of online music theory	प्रा. डॉ. जयश्री विश्राम कुलकर्णी	93
31	सैध्दांतिक शास्त्र आणि संगीत कला	प्रा. डॉ. मुक्ता महल्ले	100
32	संगीत आणि सामाजिकशास्त्र	प्रतिभा शिरसागर	102
33	संगीत रोजगाराचे विविध आयाम - एक अभ्यास	प्रा. वैशाली चौरपगार (मोहोड)	105
34	महाराष्ट्राच्या लोकसंगीतामधील विविध अंतरंग	प्रा. डॉ. सुधीर मोहोड	109
35	ऑनलाईन संगीत शिक्षण पध्दती—मर्यादा आणि व्याप्ती ।	प्रा. डॉ. ज्वाला नागले	111
36	Stress management through Music	Ms. Uttara Ratansing Tadavi	117
37	Music-For Mentally Challenged?	Ms. Mitali Katarnikar-Prabhune	119
38	Role of Hindustani Classical Music Therapy	Dr. Ajaykumar G. Solanke	123
39	Role of Music in Academic Stress Management	Dr. Niraj Lande	126
40	Chronicling Classical Music is Dispersion of Culture.	Miss. Amruta Vinayrao Kale	129
41	Role Of Music In Academic Stress Management	Dr Prachi S. Halgaonkar	133





## संगीत और अध्यात्म एक विवेचन सहा. प्रा. गजानन बी. काळे महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती

**प्रस्तावना :**

भारत देश को बहुत लंबे समय तक एक संभावना के रूप में देखा जा रहा है। पूरे देश की संस्कृति को एक अध्यात्मिक प्रक्रिया में बदलाव लाने हेतु भारत में महानतम प्रयोग किए गये हैं। संस्कृति की ऐसी रचना की गयी थी कि एक बार जन्म पाने के बाद, आप कई तरह के कार्य कर सकते हैं। आप अपने करियर को योग्य दिशा में बहुत आगे बढ़ा सकते हैं। अपने परिवार के साथ, अपने काम के साथ अपने जीवन का मतलब मुक्ती है। मुल रूप से जीवन में विविध पक्षों पर विचार करने से अपने पक्ष को भरपूर बना सकते हैं। यही जीवन का एक मात्र लक्ष्य है। इसीलिए

संस्कृति की रचना की गयी है। आपके चेतना को उंचा उठाया जा सके यही आपके द्वारा किये जाने वाला हर कार्य का उद्देश्य यही था।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में संस्कृति का नृत्य, संगीत और अन्य कोई भी कार्य मनोरंजन के श्रेणी में नहीं आता था, यह एक अध्यात्मिक प्रक्रिया थी। भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्वनियों, रागों और धुनों की इस तरह रचना की गयी है कि, अगर आप उनमें पूरी तरह में तल्लीन होकर सीख ले तो ध्यानावस्था को पा सकते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में अगर आप गहराई से जुड़ जाए किसी व्यक्ती को देखो तो आपको वह किसी संत के जैसा दिखेगा। संगीत कोई ऐसी ध्वनिया मात्र नहीं थी, जिसका किमीने अविष्कार किया हो। मनोरंजन जीवन की प्रवृत्ति नहीं थी। सबकुछ चेतना के उच्चतम स्तर तक जाने का साधन मात्र था।

**अध्यात्म संगीत की उत्पत्ती**

ओम श्री ब्रम्ह जी को संगीत की उत्पत्ती का आधार एवं निर्माता माना गया है। ब्रम्हाजी ने यह कला अध्यात्मिक शक्तीद्वारा शिव को दी। तथा शिवजी ने सरस्वती को दी, सरस्वती जी को साहित्य की अधिष्ठात्री और विद्या पुस्तक धारिणी माना जाता है। सरस्वती जी ने नारद जी को शिक्षा प्रदान की, नारद जी ने स्वर्ग के गंधर्व किन्नर तथा अप्सराओंको संगीत शिक्षा दी, यही से ही भरत, नारद, हनुमान आदि ऋषीयो ने संगीत कला का प्रचार और प्रसार मृत्युनोक तथा भूतलोक तक स्थापित किया। ऐसा भी कहा जाता है कि, अध्यात्मिक आधार पर नारद ने अनेक वर्षोंतक योग-साधना की तब शिवजी ने प्रसन्न होकर नारद जी को संगीत शिक्षा प्रदान की है।

शिवजीने अध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा पार्वती जी को शयन मुद्रा को देखकर अंग-प्रत्यांगों के आधार पर रुद्रविणावनाई। और तो और अपने पांच मुखोंद्वारा पांच रागों की उत्पत्ती की। और छटा राग पार्वतीजी के मुखद्वारा उत्पन्न हुआ। हिंदोल, पेरव, दीपक, मेघ और श्री राग उत्पन्न हुए और कौशिक राग पार्वतीद्वारा प्रकट हुआ। शिवस्वोन्न में लिखा है कि, गौरी को स्वर्ण सिंहासन पर बिठाकर प्रदोष के समय भूलपाणि शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इसी अवसर पर सभी देव-देवता खड़े होकर स्तुती बान करने लगे। सरस्वती, विष्णु, इंद्र तथा ब्रम्हाजी ने सुरताल, मध्मी जी बाने लगी, विष्णुजी मृदुंग बजाने लगे। गंधर्व किन्नर, देवता, अप्सराएं इत्यादी सभी उपस्थित थे। इस प्रकार यह मिश्र होता है कि, ईश्वर शक्ती अध्यात्म ज्ञान द्वारा संगीत का निर्माण हुआ। और इसे अध्यात्मिक शक्ती को संगीत के साथ जोड़ा गया।

**संगीत और धर्म से अटूट संबंध**

धर्म और संगीत के उस संबंध सूत्र को शोध से जोड़ते हैं जो मानव सन्नियता के मुल प्रेरकों ने शाब्द सबसे पुराने सांस्कृतिक तत्व को प्रकट कर देता है। जाहीर है कि, धर्म ही राज्य का पूर्व संस्थान माना जाता था। धर्म के अविष्कार में अर्थात सामुदायिक एकात्मता, संहती, संगती, संयुक्ती, संशयनियता, उद्भावना के विकास में संगीत की उपस्थिती ने अवश्य योगदान किया है। तभी ब्रम्हजी को गुंजायमान "ओंकार" और "शक्ती" को शब्दात्मिका मानकर मन्दब्रम्ह की अवधारणा धार्मिक साहित्य वर्णन पर आ गयी। संगीत की मीमांसा धार्मिक ग्रंथों में भी दिखती है। पाणिनीकृत, आथयध्यायी, शिक्षा एवं ये भी संगीत की पश्चात प्रकट होती हैं।

कार्य-मार्कम से सदियों पहले रचित मनु की "मनुस्मृती" भी संगीत की धार्मिक पक्ष को उजागर करती है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में संगीत की व्यावहारिक उपयोगिता, राजनीतिक वातावरण में सहज और असहज हेतु अध्यात्म जासुती और भेद निती के लिए आवश्यक और स्विफुत है।

गीतन के लिए, कला सेवा के लिए, तथा कला विवेचन के लिए, आदी उद्देश रख सकते हैं। संगीत द्वारा इन पूर्ती हो सकती है। साथ ही ईश्वरोपासना चाहे किसी भी धर्म में हो - हिंदू मुसलमान, इसाई, निर्गुण - सगुण में पंच हो, उस एक शक्ति की उपासना का तरीका संगीतमय ही है।

आरती, भजन, कव्वाली, प्रार्थना, गुरुवाणी इत्यादी सुनने को मिलते हैं। इस भक्ती से छान, काट, मुट, र, मोध, बोध आदी दुर्गुणों से छुटकारा मिलता है। उसकी बागवाओं का पुर्विचारों का अंत हो जाता है।

**र संगीत**

प्राचीनकाल से ही संपूर्ण संसार के साहित्य भारतीय है। 'वेद' यों हमारे भारत के ही हैं। सबसे पहले का अधिकाधिक भाग स्तुती मानो से भरा है। वेदों में उच्चार करनेवाले को 'उच्चारता' माना गया है। भक्तीमान, संगीत अनादीकाल से सिद्ध होती है। और संगीतशास्त्र 'सामवेद' में अंतर्भूत है। भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं ब्रम्ह का ही निराकार स्वरूप है।

**र संगीत**

कहा गया है की, देव-देवीगण संगीत के विशिष्ट मार्ग के प्रवर्तक हैं। ब्रम्हपुत्री सरस्वती तो संगीत की तबी है। शंकरजी और पार्वती माता तांदव तथा मास्य, प्रेम और कैलाश निवास संगीत समारोह में प्रमुख देव-तांदव सक्तीय भाग लेना प्रसिद्ध था। श्रीकृष्ण, श्री कृष्ण, श्री हनुमान और देवर्षी नारद भिन्न-भिन्न संगीत शैली के आचार्य तथा प्रवर्तक माने गये हैं।

हमारे भारत देश में इस विषय पर अनेक उदाहरण हैं। विष्णु के साथ भगवान का गुणगान करते फिरनेवाले, मुरदास, संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत मीराबाई, संत तुलसीदास, संत कबीर, संत नामदेव, गुरुनानक, जय, चैतन्य महाप्रभू आदी भक्तों ने आराधना एवं पुकार की सफलता के लिए भक्तिसंगीत अपना श्रेष्ठ साधन है। और भक्ती प्राप्त की है। भक्तीभाव भरे स्तुतीगान द्वारा भगवान को प्रसन्न किया और सुखशांति के लिए सब संगीत की साधना और उसी के सहारे भगवान की आराधना परम कल्याणमय मार्ग है।

**संगीत का स्थान**

मार्गीसंगीत में रागों का हल सिमीत समय होता है। गृहीमार्गीय संप्रदाय तथा उसका अनुसरण करनेवाले में छोड़कर कही भी दिखाई नहीं देता है। नित्यसीता के चंद समय के अनुसार राग में नियुक्त है। प्रसंगानुसार तथा ऋतु-संबंधी गीतों, जैसे की भटा, शीतकाल, उष्णकाल, वर्षाकाल या बसंत में समय संबंधी विशेष पामन जाता है।

**र संगीत - देसी संगीत**

हवेली संगीत में राग गाए जाते थे वे प्राचीन राग थे। रागों का स्वरूप काल के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं-१७ वीं शताब्दी में हवेली संगीत में रागजो जीम स्वरूप थे वे सभी सुरक्षित पाए जाते थे। हवेली संगीत देसी का भी कोई स्थान है। देसी संगीत में ध्रुवगीत या छोल को बहुत उच्च स्थान दिया जाता है। 'वैष्णवजन तो त्रिहृ' यह प्रख्यात गान भी तय प्रकार का ध्रुवगीत है। गुजरात के वैष्णव मंदिरों में देसीसंगीत के एक प्रकार का गीत का गुजरात के संगीत पर प्रभाव है। लोकगीतों के धुनों पर वैष्णव संगीत का गहरा प्रभाव है। यह हवेली की ही देन है। दुमरी बगैरे मार्गी संगीत के प्रकारों तथा कथक नृत्य पर वैष्णव गीत एवं रास का व्यापक प्रभाव [टीनार्स के संगीत ग्रंथों में बीषा, स्वरमंडल, बेणू, डफ, मंजिरा, कर्ताल, पखावज, जलतरंग, सारंगी बाघों का ब मिलता है। रबाब तथा सरोद का भी नाम पाया जाता है। वैष्णव मार्गीय, कीर्तन, ध्रुवपद, धमार, प्रबंध और मिलते हैं। राग गाने की समयपरंपरा आग्रहपूर्वक रखी गयी है। भीमझासवत के पंचगीत, रास, रसिया, ध्रुव-देसी कीर्तन के अंतर्गत माने गये हैं।

**र :**

भारतीय संगीत में धार्मिक और अध्यात्मिक की परम शक्ति है। शास्त्रीय परिसंकल्पना इसका परिमाण है, 5 ही यह गोपान है। मानवीय चेतना को आत्मानंद से नादमय ब्रम्हानंद तक ले जाता है। अध्यात्म साधयोग से इन होने से आनंदाभूती, तथा तन-मन को संगीतमय कर देती है। जैसे की संतो की जो सिद्धी हुई वह भक्तीमयी गजों को प्राप्त हुई थी। अध्यात्म और संगीत को साधना करने से धार्मिक, सहिष्णुता, शांती-सद्भाव, विचार, ज्ञय, सर्वमत समन्वय और आदान प्रदान का द्वार खुला रखती है। संगीत के बाघों के बोध से नृत्य निकायो तक ज्ञान धारणा को परंपरा संगीत को अध्यात्म गृहीते विकसित अवस्था की पोषक शक्ति बनी है। यह संपूर्णतः र संबंध अध्यात्म और संगीत तथा अन्य कलाओं में सदैव सक्रीय रहा है।





**संदर्भ ग्रंथ :**

- १) भक्तीसंगीत - लक्ष्मीनारायण वर्मा
- २) मीरा पदावली - सं. जिल्पीलाल- प्रभात प्रकाशन
- ३) भारतीय संगीत का समानशास्त्रीय संदर्भ - राजेंद्रप्रसाद सिंह
- ४) संगीत दर्शन - श्रीमती विजयालक्ष्मी जैन

## Conference Proceedings – Part 2



### International Multidisciplinary E- Conference On Contribution of Various Aspects In Nation Building

**(CYAINB-2021)**

11<sup>th</sup> to 13<sup>th</sup> October 2021

**Organised by**

Department of [ English, Marathi, Sociology, History, Commerce, Home  
Economics, Chemistry, Botany and Mathematics ]  
Shetkari Shikshan Sanstha's  
Arts, Commerce & Science College, Maregaon Dist. Yavatmal, Maharashtra,  
India

**In Association With**  
International Journal of Scientific Research In Science and Technology

Print ISSN: 2395-6011 Online ISSN : 2395-602X

Volume 9, Issue 5, September-October-2021  
International Peer Reviewed, Open Access Journal

**Published By**

 **TECHNO SCIENCE  
ACADEMY**  
[ www.technoscienceacademy.com ]



PRINT ISSN : 2395-6011  
ONLINE ISSN : 2395-602X



CONFERENCE PROCEEDINGS



**International Multidisciplinary  
E-Conference On Contribution of  
Various Aspects In Nation Building**

**Date : 11th to 13 th October 2021**

**Organised by**

**Department of [ English, Marathi, Sociology, History, Commerce,  
Home Economics, Chemistry, Botany and Mathematics ]  
Shetkari Shikshan Sansha's  
Arts, Commerce & Science College, Maregaon Dist.  
Yavatmal, Maharashtra, India**

**INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC  
RESEARCH IN  
SCIENCE & TECHNOLOGY**

**VOLUME 9 - ISSUE 5 , SEPTEMBER-OCTOBER-2021**

Email : [editor@ijsrst.com](mailto:editor@ijsrst.com) Website : <http://ijsrst.com>





### सावित्रीबाई फुले यांचे सामाजिक योगदान

प्रा. डॉ. संजय भगत

समाजशास्त्र विभाग प्रमुख

महात्मा ज्योतीबाफुले महाविद्यालय,

अमरावती

#### प्रस्तावना :

एकोणिसाव्या शतकातील महाराष्ट्रात व भारत देशात नाव घेण्यासारख्या ज्या समकालीन स्त्रीया आडळतात त्यामध्ये सावित्रीबाई फुले यांचे कार्य तुलनेने कितीतरी पटीने मोलाचे व क्रांतीकारक असे आहे. म्हणून त्या भारताच्या समाजक्रांती कार्यातील आद्य क्रांतीकारक ठरतात.

सावित्रीबाई फुले यांचा जन्म ३ जाने १८३१ साली सातारा जिल्ह्यातील नायगाव येथे झाला. सावित्रीबाई फुले यांच्या वडीलांचे नाव खंडोजी नेवासे पाटील होते. ते शेती करत, त्यांच्या आईचे नाव लक्ष्मीबाई होते. खंडोजी व लक्ष्मीबाई यांना चार अपत्ये होते. सावित्रीबाई या सर्वात मोठ्या होत्या. त्यांचे आई वडील त्यांना लहानपणी सारू असे म्हणत होते. सावित्रीबाई फुले यांचे लग्न ज्योतीबा फुले यांच्याशी १८४० साली झाले. ज्योतीबा फुले यांनी सावित्रीबाई फुले यांना लिहायला व वाचायला शिकविले. १५ मे १८४४ साली पुणे येथे पहिली मुलीची शाळी काढली. त्या काळात मुलींना शिक्षण घेण्यास मज्जाव होता. स्त्रीयांचा आवाक्य फक्त घुल आणि मुल एवढाच होता. अशा परिस्थितीत मुलीची शाळी काढणे, त्यांना शिकवीणे हे सोपे काम नव्हते. सावित्रीबाई व ज्योतीबा फुले यांनी या कार्यासाठी खूप कष्ट केले. शेण, दगड यांचा मार सहन केला. सावित्रीबाई फुले यांच्या सोबतीला सगुणाबाई व त्यांची मैत्रिण फातिमा शेख होत्या. फातिमाने शिक्षण घेतले, ती शिक्षिका झाली. पडद्यामागून बाहेर आली. परंपरेची चौकट तीने तोडली. सावित्रीबाईंनी मुलीची शाळी सुरू केली, त्या शाळेमध्ये फातिमा ही पहिली प्रशिक्षित शिक्षिका झाली.

पुणे परिसरातील शाळेचे व्यवस्थापन सावित्रीबाई पाहत होत्या. शिक्षिका, मुख्याध्यापिका आणि संचालिका म्हणून त्यांची जबाबदारीने कार्य केले. स्त्री शिक्षणाचे एक नवे युग त्यामुळे सुरू झाले. शाळेत येणाऱ्या मुलींना सावित्रीबाई मनापासून शिकवीत असत. सतत अभ्यासाचे आझे पडू नये म्हणून त्यांना कथा कथांच्या आणि इतर शौर्याच्या गोष्टी सांगत असत. मुलींना त्या खेळ शिकवीत असत. त्यांना खावू देत असत आणि मुलींनी आनंदाने राहावे, त्यांना शाळेत पायला आवडणे म्हणून त्या सतत प्रयत्न करीत असत. मुलींनाही आपल्या आईवडिलां प्रेम व आपुलकी वाटत असे. मुलींचा सर्वांगीण विकास कावा, म्हणून त्या घडपड करीत असत. एखादी मुलगी सतत तिन चार दिवस शाळेत आली नाही, तर तीच्या घरी जाऊन तिची चौकशी करीत असत. आणि आजारी असल्यास तीच्या औषधपाण्याची सोय करीत असत. तिच्या पालकांना धर देत असत. त्यांना थोडीपार आर्थिक मदतही करीत होत्या. त्यामुळे गोरगरिबांच्या वस्तीत सावित्रीबाईंचे प्रेमाने स्वागत होत असे. त्यांनी एक प्रेमळ शिक्षिका असा नावलौकीक मिळविला होता. त्याचा परिणाम म्हणजे, लोक स्वतःहून आपल्या मुलींना शाळेत पाठवू लागले.

#### शैक्षणिक कार्य :

सावित्रीबाई फुले केवळ शाळीकाच नव्हत्या तर, शिक्षणतज्ञही होत्या, त्यांनी शिक्षणाचे काही प्रयोग केले. शुद्धातिशुद्ध मुलींच्या शाळेत त्या स्वतः आणि फातिमा शेख या मुस्लिम शिक्षिका शिकवीत असत. तर ब्राम्हण मुलींच्या शाळेत ब्राम्हण शिक्षिका शिकवीत असत. वर्षाच्या शेवटी मुलींची चाचणी घेतली तेव्हा शुद्ध मुलींचे ब्राम्हण मुली सरस ठरल्या. तेव्हा सावित्रीबाई फुले यांनी असा मुलभूत विचार मांडला की, शुद्ध आणि अतिशुद्ध मुलींचा विकास कायला हवा असेल, तर त्याच समाजातील शिक्षिकांची नियुक्ती करावी. म्हणजे खऱ्या अर्थाने शिक्षणाचे कार्य होवू शकेल. दीन दलीतांच्या मुलांना केवळ लिहीणे आणि वाचणे शिकविण्यापेक्षा त्यांच्या कपडा लत्याचे, पोटा पाण्याचे आणि आरोग्याचे प्रश्न सोडविणेही तितकेच महत्वाचे आहे. हा विचार त्यांनी मांडला. " प्रौढ शिक्षण " रात्रीची शाळी त्यांचा हा प्रयासही उल्लेखनीय होता. शाळेत येणाऱ्या मुलींची धमता, त्यांच्या कुटुंबाचा शैक्षणिक इतिहास, त्यांचे पर्यावरण यांचा अभ्यास करून त्यांनी त्या मुलींनासाठी वेगळ्या अभ्यासक्रम तयार केला. शिक्षक हा प्रशिक्षित असावा यावर त्यांचा व ज्योतीबा फुले यांचा कटाक्ष होता. सावित्रीबाई फुले यांनी त्यादृष्टीने एक अध्यापक विद्यालय सुरू केले. शिक्षण हे त्यांना समाज जागृतीचे व समाजक्रांतीचे महत्वाचे साधन वाटत होते. विद्या संपादन करण्यासाठी परंपरेच्या विरोधात उभे राहायला हवे, असा विचार त्यांनी मांडला.





### अस्पृश्यांसाठी कार्य :

पेशाव्यांनी पुण्यामध्ये पेठा - पेठ्यांमध्ये पाण्याचे होद बांधले होते. या होदावर गेहू भरत असे. कोणी पाणी भरत असे, कोणी आंबोळ करीत असे, तर कुणी धुणी घुत असे, एखादी जवळच राहणारी बाई पांढी सुष्पा गासत असे, पण तेथे महार, मांगांना पाणी भरू दिल्या जात नव्हते. अस्पृश्यांच्या स्पर्शाने पाणी बाटते अश्या समजुती होत्या. नगर पालिका अस्पृश्यांनी कधीच सोय करीत नव्हती. त्यामुळे महार, मांगांची बायका, पोरं हातात मडकी घेवून 'पाणी पाझ हो पाझ' 'पाणी द्या हो माई' अश्या विनविण्या करीत असत, पर दुसरी पाय चटचटा भाजत असतांना छोटी मुले पाण्यासाठी व्याकुळ होत अंगावरचा पाय पुसत पाण्यासाठी गवावया करीत पण कोणालाही त्यांना पाण्या द्यायला फुरसद होत नसे. ज्योतीबा आणि सावित्रीबाई यांना त्यांची हि परबड पाहून नसे, म्हणून त्या दोघांनीही ठाविले की आपल्या बाह्यातील आपल्या मालकलीचा होद अस्पृश्यांसाठी खुला करायचा. गंगपेठेतील सार्वजनिक होदाजवळ जावून त्यांनी तेथे पाण्यासाठी तळमळणाऱ्या अस्पृश्यांना आपल्या बाह्यात नेले. आणि त्यांनी पाणी भरण्यास परवानगी दिली. आणि अस्पृश्यांना रांगीतले आजपासुन गाद्याप्रमाणे छद्म टुंगवाही आहे. दिवसभरात केव्हाही या आणि लागेल तेवढे पाणी खुशाल घेवून जा, स्वच्छता राखा म्हणजे झालं. तेव्हापासुन तो होद अस्पृश्यांसाठी खुला झाला. सावित्रीबाईंमध्ये दया, क्षमा, करुणा हे गुण असाल्यामुळे भुकेलेल्यांना अन्न व तहाणलेल्यांना पाणी देणे हे त्यांनी ब्रिद मानले. आणि ममतेने त्यांनी दलिततांच्या मुलांवर माया केली.

### बालहत्याप्रतिबंधक गृह व अनाथ बालबालिकाग्रमातील कार्य :

१८९८ मध्ये पेशवाईचा अस्त झाल्यानंतर पुण्यातील उच्च वर्गीय ब्राह्मणांचे विधवा विवाह शास्त्र संमत नाही असा प्रचार चालूचला होता. त्यामुळे बालहत्या व भूणहत्या याबरोबर लागली होती. बालहत्या आणि विधवा विवाह धर्माने त्याज्य मानला आहे. यातून शास्त्राचार नाही असे ज्योतीबांचे विचार होते. म्हणून त्यांनी १८५३ साली बालहत्याप्रतिबंधक गृहाची स्थापना केली. फेब्रुवारी १८७९ ज्ञानप्रकाश मध्ये असे प्रकाशित करण्यात आले की, एका बरोपकारी रादगृहस्थाने गरोदर विधवा आणि मुले यांचा आश्रय देण्यासाठी एक स्वतंत्र घर बांधले आहे. हि संस्था कळवून त्या गृहस्थाने समाजातील अनेक स्त्रियांना छळापासून वाचविले आहे. सावित्रीबाई फुले यांनी काशिबाई नावाच्या ब्राम्हण विधवेला आपल्या घरी आश्रय देवून तिच्यावर वर्तणीप्रमाणे प्रेम केले. व तिच्या मुलाला दत्तक घेतले व आपल्या मुलाप्रमाणे मानले. सावित्रीबाईला स्मृतने अपत्य नव्हते तथापी त्या माउलीने आपल्या दयालु उदार स्वभावाला अनुसरून त्या सर्व अर्भकांचे अत्यंत प्रेमाने व वात्सल्याने संगोपण केले. हे तिचे कार्य म्हणजे भारतातील स्त्रियांच्या जिवणातील एक युग प्रवर्तक अशीच घटना होती.

### दुष्काळनिवारणार्थ कार्य :

१८७६ साली महाराष्ट्रात भिषण दुष्काळ पडला होता. पाणसाअभावी नदया, नाले आटले होते. झाडांच्या फाटल्या उरल्या गुं - होरे घात पाणी न मिळाल्याने व्याकुळ होवून प्राण सोडत होती. मानसे जगावरचा कोडा खावून जिव जगवत होती. गोर जगावात म्हणून गोर गरिब शेत्याच्या मोवदल्यात मुले मिळू लागली. हि परिस्थिती पाहून ज्योतीबा फुले आणि सावित्रीबाई फुले यांनी आपल्या मित्रांच्या मदतीने अन्नछत्र उघडले. सत्यशोधक समाजाचे कार्यकर्ते बर्गोनी गोजळ करीत होते. अन्नछत्राचे नियोजन करण्यात व प्रत्यक्ष अन्न शिजवून त्यांचे गोर गरियांना वाटप करण्यास दोंर माता सावित्रीबाई पुढे आली व तिने अत्यंत प्रेमाने अनेक लहान मुलांना आईसारखे भरविले. त्यांना जिवनदान दिले. या दुष्काळात सावित्रीबाईंनी ज्योतीबांच्या बरोबरीने मोलाचे कार्य केले.

### प्लेगच्या साधीत केलेले कार्य :

१८९७ मध्ये पुण्यामध्ये प्लेग नावाच्या राधीच्या रोगाने धुगाकुळ घातला होता. लोक पुणे सोडून जात होते. लोकांनी सावित्रीबाईंना पुणे सोडण्याची विनंती केली परंतु त्या तयार झाल्या नाही. यातुन उद्भवतारे झाल ओळखून सावित्रीबाईंनी प्लेगपिडीतांसाठी पुण्याजवळ भारांलस सराणे याच्या गाळावर दवाखाना सुरू केला. एक दिवस एक प्लेग प्रसूत मुलाला आणता आणण्याची कोणतीही ख्याख्या होणू शकली नाही त्यामुळे त्या स्मृत: त्या मुलाला आपल्या छादयांगर घेवून आतमात आणले आल्या स्वतःची प्रकृतीची पर्वा न करता प्लेगची लागण झालेल्यासाठी काग केले. दुदैवाने त्या रवतःच प्लेगच्या भिषण रोगाच्या बळी पडल्या आणि १० मार्च १८९७ रोजी पुण्यात त्यांचे निधन झाले. सावित्रीबाई आज आपल्यात नसल्यातरी त्यांचे कार्य आपल्याला सदैव प्रेरणा देत राहील.





IMPACT FACTOR 15 JUL 2021 = 7.380 ISSN 2319-4750

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL

# SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL-JUNE, 2022, VOL - 10, ISSUE - 53

मुंबई विद्यापीठ संलग्नित  
रत्नागिरी एज्युकेशन सोसायटीचे  
आर. पी. गोगटे कला व विज्ञान आणि आर. व्ही. जोगळेकर  
वाणिज्य महाविद्यालय, रत्नागिरी

आणि

मराठी समाजशास्त्र परिषद

यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित

मराठी समाजशास्त्र परिषदेचे 31 वे राष्ट्रीय अधिवेशन  
**भारतीय समाज आणि विकास प्रक्रिया**

संयोजक

समाजशास्त्र विभाग

गोगटे जोगळेकर महाविद्यालय, रत्नागिरी

मुख्य संपादक

डॉ. पी. पी. कुलकर्णी

प्राचार्य, गोगटे - जोगळेकर महाविद्यालय, रत्नागिरी

संपादक

प्रा. शिवाजी अशोक उकरडे

सहाय्यक प्राध्यापक

समाजशास्त्र विभाग गोगटे-जोगळेकर महाविद्यालय, रत्नागिरी





IMPACT FACTOR SJIF 2021 = 7.380

ISSN 2319-4766

AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFERRED & QUARTERLY  
**SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR  
INTERDISCIPLINARY STUDIES**

APRIL-JUNE, 2022, VOL-10, ISSUE-53

**मुंबई विद्यापीठ संलग्नित**

रत्नागिरी एज्युकेशन सोसायटीचे

**आर.पी. गोगटे व विज्ञान आणि आर.व्ही. जोगळेकर वाणिज्य**

**महाविद्यालय रत्नागिरी**

आणि

**मराठी समाजशास्त्र परिषद**

यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित

**मराठी समाजशास्त्र परिषदेच्या ३१ व्या राष्ट्रीय अधिवेशन**

**भारतीय समाज विकास प्रकिया**

दिनांक 11 - 12 एप्रिल 2022

**मुख्य संपादक**

डॉ. पी. पी. कुलकर्णी

प्राचार्य . गोगटे - जोगळेकर महाविद्यालय , रत्नागिरी

**संपादक**

प्रा. शिवाजी अशोक उकारडे

सहाय्यक प्राध्यापक , समाजशास्त्र विभाग गोगटे-जोगळेकर महाविद्यालय, रत्नागिरी

**संयोजक**

डॉ. दया पांडे

डॉ. राजकुमार भगत

डॉ. श्री. निवास पिलगुलवार

डॉ. संपद काळे

डॉ. ज्योती पोटे



## शेतकऱ्यांच्या समस्यांची कारणे आणि उपाय

डॉ. संजय जे. भगत

समाजशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतीबा फुले महाविद्यालय, पार्वती नगर नं.२ अमरावती

E-mail: sanjaybhagat76@gmail.com

भारत हा खेड्याचा देश आहे. शेती हा ग्रामीण समुदायाचा प्रमुख व्यवसाय आहे. शेतीशी संबंधित असणारे दुग्धव्यवसाय शेळीपालन, कुक्कुटपालन इ. व्यवसाय ग्रामीण समुदायात आढळून येतात. शेती हा व्यवसाय निसर्गावर अवलंबून असतो. बऱ्याच ठिकाणी निसर्गाची अवकृपा होताना दिसून येते. त्यामुळे शेती व्यवसाय हा किंमतीतून भरवण्याचा झाला आहे. तरी देखील ग्रामीण लोकांच्या सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक जीवनावर शेती व्यवसायाचा प्रभाव दिसून येतो. शेती हा भारताचा मुलभूत व प्रमुख भारतातील उद्योग असल्यामुळे भारतीय लोक आपल्या उपजिविकेसाठी शेती व शेतीशी निगडित अशा धंद्यावर अवलंबून असून शेतीवरील हा भार दिवसेंदिवस वाढत आहे. शेती हा भारताचा प्रमुख धंदा आहे, परंतु तो तत्वाप्रमाणे चालविण्यात आलेला दिसून येत नाही. बहुतांश शेतकरी अर्धपोटी राहत असून अल्पतः दारिद्र्याच्या स्थितीत जीवन जगत आहे. पुरेशे उत्पन्न शेतीतून मिळत नाही. भारतीय शेतीची उत्पादनक्षमता कमी असण्याचे कारण भारताच्या जमिनीची परिस्थिती हे तर आहेत. परंतु त्याचबरोबर शेतमालाच्या विक्रीबाबत व इतर बाह्य अडचणीही कारणीभूत आहेत.

स्वातंत्र्यापूर्वी कुळांना पुरेशे संरक्षण नव्हते त्यामुळे त्यांना शेतीतून जास्तीत जास्त पीक काढण्यासाठी उत्तेजन मिळत नसे. दरवर्षी कुळे बदलविण्याच्या पध्तीमुळे शेतकसणारा जमिनीची कायम स्वरूपाची कोणतीही सुधारणा करण्याचा प्रयत्न करीत नसे. स्वातंत्र्यानंतर कुळांना संरक्षण व स्वैर्य देण्यासाठी विविध कायदे करण्यात आले असून कुळांना उत्पादन वाढविण्यासाठी उत्साह वाटेल अशी परिस्थिती निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला जात आहे.

भारतातील शेतीची सरासरी आकार साधारणतः 7.5 एकर असला तरीही काही भागात अर्धा एकरापेक्षाही लहान शेत आढळून येतात. जमिनीचे विभाजन व अपखंडन मोठ्या प्रमाणात झालेल्या असल्यामुळे शेतीचा आकार लहान झाला आहे. त्यामुळे शेतीचा खर्च वाढून उत्पादकता कमी झाली आहे.

अलिकडच्या काळात शेती व्यवसाय उत्पन्नाच्या दृष्टीने परवडणारा नाही. कारण शेतीच्या उत्पादनाला हमी भाव नाही. शेतीची लागवडीचा खर्च सुध्दा शेतकऱ्यांना शेतीच्या उत्पादनातून निघत नाही. ग्रामीण भागातील शेतकरी हा दिवसेंदिवस शेती व्यवसायामध्ये तोट्यात येत आहे. शेतीसाठी लागवडीसाठी खर्च सुध्दा त्याच्याकडून होत नाही. त्यामुळे तो कर्ज वाढून शेती करीत आहे. कधीकधी सावकारांचे कर्ज काढून शेतीची पेरणी शेतकरी करतो. परंतु पुरेशे उत्पन्न मिळत नसल्यामुळे कर्जबाजारी होवून शेती विकण्याशिवाय त्याच्यापुढे दुसरा पर्याय नसतो. अपुऱ्या उत्पन्नामुळे शेतकऱ्यासमोर अनेक समस्या निर्माण होतात. शेतकऱ्यांचे समस्या निर्माण होण्याची अनेक कारणे आहेत ती पुढीलप्रमाणे -

१) शेतकऱ्यांचे दारिद्र्य :- शेतकऱ्यांच्या समोर अनेक समस्या आहेत. त्यापैकी दारिद्र्य ही प्रमुख समस्या आहे. शेतीमधून मिळणारे उत्पन्न खूपच अपुरे असते. कधी कधी तर त्यात गुंतलेले भांडवल देखील उत्पन्नाद्वारे मिळत नाही. कोरडवाहू शेती निसर्गावर अवलंबून असल्यामुळे कधी कधी होतातोंडाशी आलेला उत्पन्नाचा घास हिसकावून घेतल्यासारखा होतो. अवकाळी पाऊस आल्यामुळे ही स्थिती शेतकऱ्यांवर निर्माण होते. शेतकरी दिवसेंदिवस अधिक गरीब होताना दिसतो त्याची आर्थिक स्थिती अधिक कमजोर होते.

२) सिंचनाच्या अपुऱ्या सोयी :- कोरडवाहू शेतीमध्ये कमी पावसामध्ये येणारे पिक घ्यावे लागते. सिंचनाची सोय शेतकऱ्यांना नसल्यामुळे पाण्याअभावी अपुरे उत्पन्न मिळते. पाऊस नियमित येत नसल्यामुळे हाताशी आलेले पिक अपुरे होते. सिंचनाची सोय नसल्यामुळे शेतकरी निसर्गाच्या पाण्यावर अवलंबून राहावे लागते.



३) शेणखत मिळणे कठीण झाले :- पूर्वीच्या काळाी प्रत्येक व्यक्तीकडे गाई, म्हशी, गुरेदोरे भरपूर प्रमाणात असत. त्यामुळे या जनावरांपासून भरपूर प्रमाणात शेणखत मिळत असे व त्याचा फायदा शेतीकरीता होत असे. परंतु शेतीची नांगरणी पूर्वी बैलाच्या साहाय्याने होत असे. आज शेतीची नांगरणी ट्रॅक्टरच्या साहाय्याने होत आहे. त्यामुळे शेतकऱ्यांकडे आता बैलजोडी खूप कमी प्रमाणात दिसून येत आहे. ज्या शेतकऱ्यांकडे भरपूर शेती आहे त्यांच्याकडे पूर्वी दहा-बारा बैलांच्या जोड्या असायच्या आता ते चित्र दिसत नाही. त्यामुळे शेणखत सुद्धा बाहेरून विकत घ्यावे लागते. शेणखतामुळे शेतीचे उत्पन्न कमी प्रमाणात होताना दिसते.

४) सामाजिक आणि धार्मिक रितीरिवाज व अनुत्पादन खर्च :- भारतीय शेतकरी सामाजिक, रुढी, प्रथा, परंपरा तसेच धार्मिक बंधनांमध्ये अडकलेला दिसून येतो. इच्छा नसून सुद्धा त्याला अनुत्पादक स्वरूपाचा अनावश्यक खर्च करावा लागतो. उदा. लग्नविवाह, मृत्यू इत्यादी प्रसंगी करण्यात येणारे खर्च. या खर्चांमुळे त्याचे उत्पन्न कमी होऊन कर्जबाजारीपणा येतो. कारण शेतीमधून जास्त उत्पन्न मिळून बचत होत नाही. परखर्च आणि शेतीसाठी त्याचा कर्ज घ्यावे लागते.

५) शेतीचा मागासलेपण :- आपल्या देशात शेतीची सुपिकता कनिष्ठ प्रतीची आहे त्यामुळे तो निर्धन राहतो. चतु उत्पादन खर्चासाठी किंवा शेतीची मशागत करण्यासाठी त्याला भांडवलाची व्यवस्था करता येत नाही. तो भांडवली खर्च भागविण्यासाठी म्हणजे ट्रॅक्टर, शेतीची अवजारे बी-बियाणे खरेदी करण्यासाठी कर्ज घेत राहतो. पावसाच्या अनिश्चिततेमुळे अशा प्रकारचे घेतलेले कर्ज तो पूर्णतः परत करू शकत नाही.

६) परंपरागत शेती साधने :- आजच्या आधुनिक युगात शेतीची मशागत करण्यासाठी लागणारे नविन यांत्रिक साधने विकत घेण्यासाठी शेतकऱ्यांजवळ पुरेशे भांडवल उपलब्ध नाही. त्यामुळे शेतकरी आज सुद्धा परंपरागत शेती करतो. तसेच जुन्या परंपरागत साधनांचा उपयोग करून शेती करतो. ही जुनी शेतीची अवजारे आहेत. त्यांच्या साहाय्याने शेती करतो. जी जुनी अवजारे आहेत ती अवजारे निटनिटके नाहीत. त्यांना दुरुस्त करून त्यांचा उपयोग करून शेती करावी लागते.

७) अपुरे भांडवल :- शेतीमध्ये पेरणी करण्याकरीता मशागत करण्यापासून लागणारा खर्च बी-बियाणे, पेरणी आंतरमशागत, रासायनिक खतांचा खर्च, फवारणी, मळणी चा खर्च करावा लागतो म्हणजे पिक शेतातून घरात घरातून बाजारात नेण्यापर्यंत येणारा खर्च व त्या पिकातून उभा राहिलेला पैसा यामध्ये खूप तफावत पडते. या पिकात नक्का आला तर ठिक, पण जर यामध्ये तोटा आला तर त्या शेतकऱ्याजवळील भांडवल पूर्णपणे त्या पिकाला लागलेले असते. जवळचा सर्व पैसा निघून गेल्याने त्यात कुटुंबाच्या उदरनिर्वाहाच्या खर्चाची भर पडल्याने शेतकरी आर्थिकदृष्ट्या हतबल होऊन जातो. अपुरे भांडवल असल्यामुळे शेतीकरीता जमेत त्या स्थितीत पेरणी करतो.

८) महाग बी-बियाणे, खते, किटकनाशके :- शेतातील पेरणी करीता पूर्वीच्या काळात जवळपास घरच्याच कामसाची सरकी, तसेच ज्वारी, बाजारी, मूग, उडीद, तीळ, तुर इत्यादी बियाण्यांचा वापर शेतामध्ये करण्यात येत होता. त्याचप्रमाणे शेतामध्ये घरच्या शेणखताचा वापर होत होता. परंतु आज पूर्वपिछा बी-बियाण्यावर रासायनिक खतांवर, किटकनाशकांवर शेतकऱ्यांचा जास्त खर्च होत असून त्या तुलनेत उत्पन्न कमी होत आहे. त्यामुळे उर्वरित खर्च भागविण्यासाठी त्याला सावकाराजवळ कर्ज मागण्याकरीता जावे लागते. कधी कधी तर सावकाराचे कर्ज सुद्धा फेडणे कठीण होऊन जाते. त्यामुळे नविन समस्या निर्माण होतात.

**शेतकऱ्यांच्या समस्यांवरील उपाययोजना :-**

शेतकऱ्यांचा सर्वांगीण विकास करायचा असेल तर सर्वच क्षेत्रातून प्रयत्न करायला पाहिजे. कारण शेतीची वाईट स्थिती कोणत्या ही एका कारणाने झाली नाही. शेतकऱ्यांच्या समस्या सोडविण्यासाठी खालील उपाययोजना करता येतील.

१) सिंचनाची सोय करून देणे :- शेतकऱ्यांचे उत्पन्न वाढविण्यासाठी मोठ्या, मध्यम व लहान स्वरूपाच्या पाटबंधारे योजना राबविण्यात याव्यात. त्यामुळे जलसिंचनाच्या सोपीत वाढ होईल. जलसिंचनामुळे बहुविध उत्पादन पद्धतीचा वापर करून शेतीमध्ये दुहेरी पीक (वर्षातून दोन वेळा पीक) घेता येईल. त्यामुळे प्रती हेक्टरी उत्पादकता करावीत नविन प्रकल्प सुरू करावेत या दृष्टीने सरकारने प्रयत्न करणे गरजेचे आहेत.



२) शेतमालाला उत्पादन खर्चाप्रमाणे भाव देणे :- शेतकऱ्याला उत्पादन करण्यासाठी ज्या प्रमाणात खर्च शेतकऱ्याच्या प्रमाणात त्याच्या उत्पन्नाला भाव देण्यात यावा, कारण परिस्थिती अशी आहे की, शेतकऱ्यांना आपल्या पिकांसाठी हमीभाव मिळण्यासाठी नेहमीच संघर्ष करावा लागतो, उत्पादनाशी संबंधित सर्व साधनांमध्ये वाढ झालेली आहे. महागाई वाढली आहे परंतु शेतकऱ्यांचा मालाचे भाव त्या तुलनेत वाढलेले नाही असे खेदाने म्हणावे लागते म्हणून उत्पादन खर्चावर आधारित शेतमालाला हमी भाव देणे आवश्यक आहे.

३) अल्प व्याजदराने कर्जपुरवठा करणे :- सहकारी बँकेची अतिरिक्त व्याजदर आणि खाजगी सावकारांचे मनमानी यामुळे शेतकऱ्यांच्या उत्पन्नातील बहुतांश व्याजापोटी बँकांच्या व सावकारांच्या घशात जातो तेव्हा सरकारने सहकारी बँकांमार्फत शेतकऱ्यांना अधिकतम दर साल दर शेकडा २% दराने मोठ्या प्रमाणात कर्ज पुरवठा केल्यास शेतकऱ्यांची खाजगी सावकारांच्या पाशातून मुक्तता होईल.

४) संपूर्ण कर्जमाफी :- शेतकऱ्यांची परिस्थिती सुधारण्याची असेल तर त्याला ज्यावेळी ज्यावर्षी अतिवृष्टी, कोरडे दुष्काळ असेल त्या वर्षी शेतकऱ्यांचे कर्ज माफ करायला पाहिजे. कारण या कर्जामुळे शेतकरी आत्महत्या सारख्या टोकाचा निर्णय घेण्यास मारगे पुढे पाहत नाही. शासनाने त्यांना सवलतीच्या दराने दिर्घकाळसाठी कर्ज दिले पाहिजे. शेतकऱ्यांना पॅकेज देणे म्हणजे त्यांना अर्धपोटी ठेवणे होय. शेतकऱ्यांची परिस्थितीत बदल करायचा असेल तर संपूर्ण कर्जमाफी हा एकमेव उत्तम उपाय होय.

५) सेंद्रीय शेतीला प्राधान्य :- शेतकऱ्याने सेंद्रीय शेतीला प्राधान्य देवून आधुनिक बी-बियाणे, रासायनिक खते व किटकनाशकांवर होणारा अतिरिक्त खर्चाचे प्रमाण कमी करून उत्पादन खर्च मर्यादित करावा.

६) सामुहिक विवाह समारंभाचे आयोजन :- शेतकरी समाजातील अनेक वाईट प्रथामुळे कर्जबाजारी झाला आहे. त्यामुळे प्रामुख्याने विवाह समारंभाचा विचार करता येईल. समाजातील कोणताही व्यक्ती मग तो श्रीमंत असो वा गरीब असो, तो आपल्या मुलामुलीचे लग्न मोठ्या पाटामाटात, धुमधडाक्यात करण्याचे स्वप्न पाहतो. तसेच हुंडाप्रथेबाबतही त्याचा अनुकूल दृष्टीकोन आहे. यासाठी त्याला आपले शेत गहाण ठेवावे लागते तर कधी कधी शेत विकावे सुद्धा लागते. इतरांकडून कर्ज घ्यावे लागते. त्यामुळे त्याची परिस्थिती अधिकच विकट होत जाते. या समस्येवरील उपाय म्हणजे सामुहिक विवाह समारंभाचे आयोजन करणे, हुंडा प्रथेला आळा घालणे व लग्नाचे स्वरूप साधे व कमी खर्चाचे ठेवणे हा उपाय अंमलात आणावा.

वरील उपाययोजना अंमलात आणल्यास शेतकऱ्यांच्या समस्या सोडविण्यास मदत होईल व शेतकरी राज्यानुसार आपला देश सुजलम सुफलम होण्यास मदत होईल.

#### संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. कविमंडळ विजय, आर्थिक विकास व नियोजन  
दास्ताने संतोष महाराष्ट्र २००६ दास्ताने रामचंद्र आणि कंपनी पुणे.  
डॉ. गुप्ता, चर्मा, समाजशास्त्र साहित्य भवन, पब्लिकेशन दिल्ली  
डॉ. माकुके आर.एस., महाराष्ट्राची अर्थव्यवस्था  
देशपांडे श्रीधर, देशपांडे विनायक, भारतीय अर्थव्यवस्था





**International Multidisciplinary E- Conference On  
Contribution of Various Aspects In Nation Building  
CVAINB-2021**

11th to 13 th October 2021

**Organised by**

Department of [ English, Marathi, Sociology, History, Commerce,  
Home Economics, Chemistry, Botany and Mathematics ]

Shetkari Shikshan Sanstha's

Arts, Commerce & Science College, Maregaon Dist.

Yavatmal, Maharastra, India

**Certificate of Participation**

This is to certify that

सावीत्रीबाई फुले यांचे सामाजिक योगदान  
डॉ. संजय भगत

has presented a research paper in the CVAINB-2021 held during  
11th to 13th October 2021, Organized By Department of [ English, Marathi,  
Sociology, History, Commerce, Home Economics, Chemistry, Botany and  
Mathematics ] Shetkari Shikshan Sanstha's Arts, Commerce &  
Science College, Maregaon Dist. Yavatmal, Maharastra, India

Convener  
Dr. D. A. Gundawar  
CVAINB-2021

Chairman  
Dr. A. N. Gharde  
Chairman  
CVAINB-2021

Organizing Secretary,  
Prof. Dr. S. K. Khade  
CVAINB-2021



International Multidisciplinary E- Conference On Contribution of Various Aspects in Nation Building  
In Association with International Journal of Scientific Research in Science and Technology  
Volume 9 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijrst.com)

सदस्य :

१) डॉ. गिरीश खारकर -

२) डॉ. सारनाथ सौदळकर -

३) डॉ. सरोज आगलमवे -

४) डॉ. यशवंत मनोहर -

महान्या फुले यांचे अखंड - एक पिकीत्वा

सुगण प्रकाशन, खोलापूरी गेटजवळ, अमरावती

सावित्रीबाई फुले - एक समग्र वाढमय

सारनाथ प्रकाशन, धार रोड, परभणी

ज्योतीराव फुले - सामाजिक तत्वज्ञान

सुभाष प्रकाशन, पुणे

मी सावित्री

योगसाक्षी प्रकाशन, नागपूर



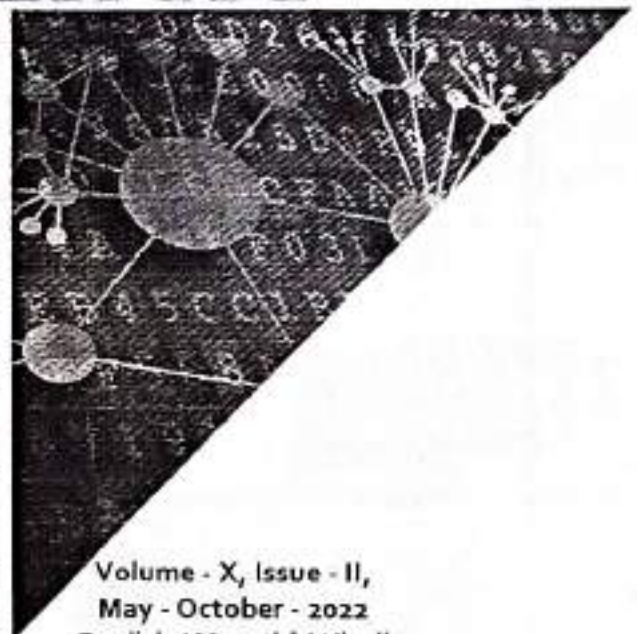


Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed Journal  
(Journal No. 47023)



ISSN 2319 - 8508  
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY  
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

# GALAXY LINK



Volume - X, Issue - II,  
May - October - 2022  
English / Marathi / Hindi

Impact Factor / Indexing  
2020 - 6.495  
[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)



**Ajanta Prakashan**

ISSN 2319 - 8508  
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY  
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

# **GALAXY LINK**

Volume - X

Issue - II

May - October - 2022

ENGLISH / MARATHI / HINDI

**Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed Journal  
Journal No. 47023**



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

**IMPACT FACTOR / INDEXING  
2020 - 6.495  
[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)**

❖ EDITOR ❖

**Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole**

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),  
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



**Ajanta Prakashan**

Aurangabad. (M.S.)





## CONTENTS OF MARATHI



अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	आधुनिक तन्त्रज्ञानाच्या क्षेत्रात संस्कृत चलचित्रपटांचा प्रवास एक दृष्टिक्षेप प्रा. दर्शना सायम	१-४
२	नक्षत्रवादी चळवळ प्रा. गणेश ब. माघाडे	५-७
३	चंद्रपूर जिल्ह्यातील आदिवासी शेतकऱ्यांच्या उत्पन्नाचे आर्थिक अध्ययन हरिष एम. बावनगडे	८-११
४	राज्यशाखाच्या प्रभावी अध्यापनासाठी उपयुक्त : चर्चा पद्धती प्रा. डॉ. योगेश दा. उगले	१२-१५
५	प्रज्ञाचक्षु श्रीसंतगुलाबराव महाराज यांच्या योगदर्शनातील भक्ती प्रकार एक अभिनव विचार सहा. प्रा. प्रज्ञा विश्वासराव इंगळे	१६-२२
६	ख्यालगायकीत बदललेली वर्तमान स्थिती प्रा. दत्तात्रय जोशी	२३-२८
७	भारतीय डिजिटल लायब्ररी नितेश गुलाब चामाटे	२९-३४
८	मानवी जीवनात संगीताचे स्थान आणि आवश्यकता डॉ. स्नेहल सुनील इहाळे	३५-३८
९	अटल पेंशन योजनेचे आर्थिक दृष्टीकोनातून अध्ययन स्वाती र. चौधरी प्रो. डॉ. सुनील श्री. केदार	३९-४३
१०	चिमूर तालुक्यातील आंबेडकरी चळवळीतील शिलेदार प्रा. प्रफुल्ल एम. राजुरवाडे डॉ. बी. आर. मस्के	४४-४७

## ५. प्रज्ञाचक्षु श्रीसंतगुलाबराव महाराज यांच्या योगदर्शनातील भक्ती प्रकार एक अभिनव विचार

सहा. प्रा. प्रज्ञा विश्वासराव इंगळे

महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, पार्वती नगर नं. २, अक्कोली रोड, अमरावती.

सारांश

प्रज्ञाचक्षु श्री. संत गुलाबराव महाराज यांचे एकूण १३४ साहित्य प्रसिद्ध आहे. यात हि साहित्य संस्कृत, हिंदी, मराठी, ब्रजभाषेतील आहे. त्यातील ३१ ग्रंथ हे संस्कृतमध्ये उपलब्ध आहे. महाराजांची प्रज्ञा, प्रतिभा स्मरणशक्ती, ज्ञानलालसा, चिकित्सक बुद्धी, खंडन मंडण युक्ती व त्यातून तयार झालेली ग्रंथसंपदा जणु एक नवीन अधिष्कारच होय. महाराज यांनी भक्तीवर बरेच अभिनव विचार मांडले आहे. कारण साधक जेव्हा ईश्वर भक्ती करतो व त्या ईश्वराला प्राप्त करण्याची इच्छा करतो. तेव्हा भक्ताने ईश्वराची उपासना भक्तीच्या १६ प्रकारचे कशी करावी व ब्रह्मानंद तथा ईश्वरप्राप्ती कशी करावी या विषयी नऊ भक्तीच्या पलीकडील आणखी नवीन ७ भक्ती प्रकार आपल्या ग्रंथात मांडला आहे. तोच नाविन्यपूर्ण भक्ती प्रकार अर्थात १६ प्रकारची भक्ती हा शोधनिबंधाचा प्रमुख विषय मांडण्याचा प्रयत्न यात केला आहे.

प्रस्तावना

विदर्भाची माती अतिशय सकस या मातीत एक विलक्षण परंपरा लाभली आहे. या मातीत अनेक थोर संत महात्मे जन्माला आले असून त्यापैकी श्री संत ज्ञानियाचे राजे ज्ञानेश्वर महाराज यांच्या सारख्या श्रेष्ठ अश्या सुप्रसिद्ध माऊलीची ठिकाणी आपली श्रद्धा भक्ती एकवटून एकरूप झालेली आहे. श्री संत गुलाबराव महाराज प्रज्ञाचक्षु प्राप्त झालेले महापुरुष आहेत. केवळ अमरावती जिल्ह्यातच नव्हे तर विश्वाला आपल्या आध्यात्मिक वेदांत शास्त्राच्या त्रिकालज्ञानाचा सिद्धांत बोधरूपी अमृत प्रदान करणारा असा महान दैवी पुरुष म्हणजे संत गुलाबराव महाराज होय.

गुलाबराव महाराजांचे साहित्य हे एक काळाची गरज आहे. गुलाबराव महाराजांचा काळ हा विसाव्या शतकातील मानला जातो. बालांध असलेल्या या संताची वास्तव्य इहलोकात फक्त ३४ वर्षांचे होते. एवढ्या अल्पवयीनतली त्यांची ग्रंथसंपदा अपार आहे. महाराजांचा जन्म माधान या गावाच्या मोहाड या कुळात जन्मलेले हे बालक समन्वयमहर्षी, मधुराद्वैताचार्य, ज्ञानेश्वर कन्या, आंधळी गौळण या विविध नावाने जगप्रसिद्ध आहे. महाराजांच्या अमर ग्रंथसंपदेतील एक लेणे म्हणजे 'योगप्रभाव' हा ग्रंथ होय. भगवान पंतजलींनी योगशास्त्राचे संपूर्ण विवेचन सूत्ररूपाने केलेले आहे. यात एकूण १९५ सूत्र असून ४ पादात विभागले आहे.



योग प्रभाव या अलौकिक ग्रंथामध्ये महाराजांनी शिष्यांचे तोंडी प्रश्न घातले आहेत व स्वतः त्याची उत्तरे दिली आहे. वास्तविक प्रश्नकर्ता व उत्तर दाता हे दोन्हीही महाराजच आहे. परंतु सर्व सामान्य भक्तास योगमार्गात आणि भक्तीमार्गात साधारणपणे कोणत्या समस्या येऊ शकतात हे धरून प्रश्न रूपाने शिष्यांचे निमित्त करून हे प्रश्न विचारले आहे व अत्यंत विचारपूर्वक ज्ञान पूर्वक परंतु सोप्या भाषेत उत्तरे दिली आहे. या ग्रंथात योगाचे महत्त्व विशद केले आहे. परंतु जिज्ञासू दृष्टीने योग प्रभावाचे वाचन, मनन व चिंतन केले असता "योगप्रभाव" हा भक्तीमार्गाची शास्त्रीय ग्रंथ होय असे मनोमन वाटते.

सगुण व निर्गुण हे दोन्ही एकरूप परमात्म्याची रूपे आहेत. तथापि सगुण भक्ती, भक्तांना सहज सुलभ आहे असे महाराज म्हणतात.

योगमार्गात पदोपदी अनेक विघ्ने उत्पन्न होतात व योगसिद्धी दुरावते म्हणूनच गुलाबराव महाराजांनी [ईश्वर प्राप्तिनाम्ना] या सूत्राचा अर्थ स्पष्ट करतांना भक्ती मार्गाची नितांत आवश्यकता वर्णिलेली आहे. केवळ आसने, प्राणायामादी करून अनेक सिद्धी प्राप्त करून घेणे हे योगाचे खरे ऐश्वर्य नसून भगवदप्राप्ती हे सर्व योगाचे आसीम साध्य आहे. आणि म्हणूनच भगवतप्राप्ती भक्तीमार्गाने किती सुलभ व सहज साध्य आहे. हे महाराजांनी योगप्रभाव या ग्रंथामध्ये रहस्यमय व तुलनात्मक शास्त्रीयपद्धतीने सिद्ध करून दाखविले आहे. प्रस्तुत योगप्रभाव ग्रंथात श्री महाराजांनी ज्ञानोत्तर भक्तीची गूढ तत्वे अलंकारिक पद्धतीने सांगितली असल्यामुळे हा ग्रंथ प्रसादपूर्ण वारसमय झाला आहे.

#### संशोधन पद्धत

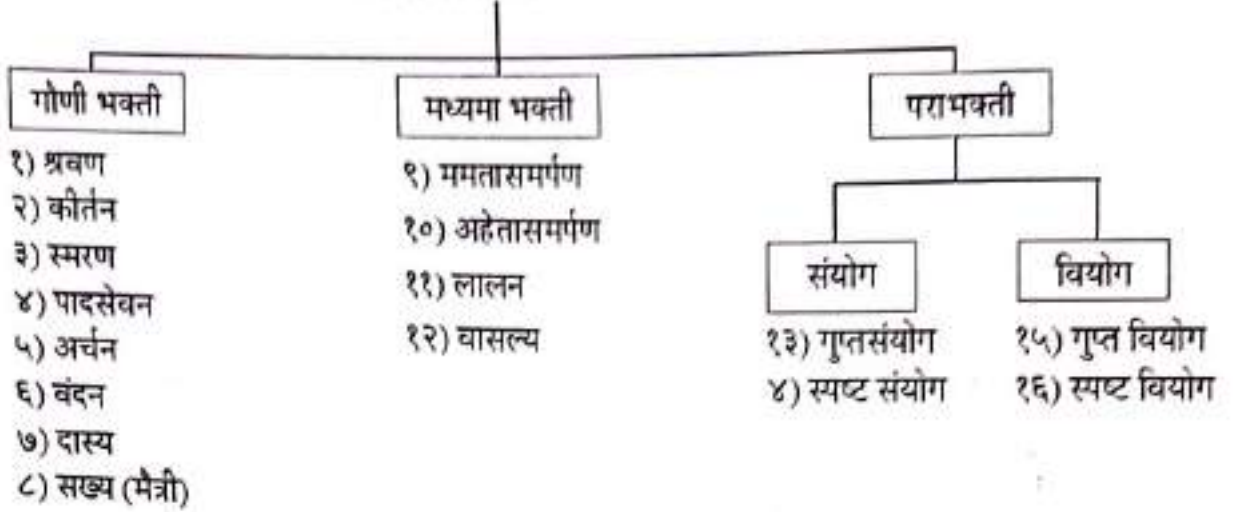
प्रस्तुत शोधनिबंधात वर्णनात्मक पद्धतीचा वापर केले आहे तसेच ग्रंथलीयन पद्धतीचा वापर करून हा शोधनिबंध प्रस्तुत केला आहे.

प्रमुख विषय :- भक्तीचे १६ प्रकार

भक्ती वाङ्मयामध्ये दोन तीन पद्धतींनी भक्तीचे निरूपण केलेले आढळते. गीतेमध्ये आर्त, जिज्ञासू, अर्थार्थी व ज्ञानी असेभक्ताचे प्रकार आहेत. कुठे नवविधा भक्ती सांगितली ती पुढीलप्रमाणे कुठे लालन, वात्सल्य, माधुर्य, तर कुठे गौणी व परा वगैरे पद्धतींनी भक्तीचे स्वरूप सांगितले जाते. या सर्व प्रकारांना एकत्र करून, त्यांची उत्तरोत्तर संगती लावून भक्तीची व्यवस्था समजावून घ्यावयाची असेल तर श्री. गुलाबराव महाराजांनी गोविंदानंदसुधा, प्रीतीनर्तन आदी भगवदसौरभ या ग्रंथातून केलेले विवेचन समजून घ्यावे लागेल.

महाराजांनी भक्तीचे गौणी, मध्यमा आणि परा असे मुख्य तीन प्रकार करून त्यांचेही एकूण सोळा प्रकारात विभाजन केले आहे. ते पुढील प्रमाणे -

## भक्तीचे १६ प्रकार



१. श्रवण :- इतिहास पुराणादिकांत वर्णन केलेल्या भगवतकथा किंवा भक्तांच्या कथा गुरु मुखाने श्रवण कराव्यातदनुसार ध्यान करावे म्हणजे सर्वगुण आणि अवतार लीला आपल्या उपास्थ विग्रहांच्या आहेत अशी भावना दृढ करावी ह्यालाच श्रवणभक्ती म्हणावी याच श्रवण भक्तीने फक्त सात दिवसात उद्धरून जाणारा महाभागवत राजा परीक्षित होऊन गेला. श्री शुक्राचार्यांनी त्याला भगवत ऐकविले त्यात ज्ञान, वैराग्य आणि प्रेम यांनी परिपूर्ण असलेल्या श्रीकृष्णाच्या लीला वर्णन केल्या आणि एका सप्ताहात परमगती प्राप्त करून घेतले.

२. कीर्तन :- सज्जनांच्या मुख्यातून जे भगवंताचे षड्गुण ऐश्वर्य श्रवण केले, ज्या लीला गुरुमुखाने ऐकिल्या त्याच स्वमुखाने पुनःपुनः वर्णन करावया तेच कीर्तन होय. या कीर्तन भक्तीचे आदर्श देवर्षि श्री. नारदाचार्य आहेत. कीर्तनाची परंपरा त्यांच्या पासूनच सुरु झाली. ते कीर्तन परंपरेचे आचार्य आहेत. भगवान नारद म्हणतात की वीणेचे तार छेडले की भगवान बोलावल्या प्रमाणे माझ्या हृदयात अविर्भूत होतात.

३. स्मरण :- जेव्हा आपण संतमुखाने भगवतलीलांचे श्रवण करीत नाही किंवा स्वमुखाने कीर्तन करीत नाही त्यावेळी त्या लीलांचे अन्तः करण्यात स्मरण करीत असावे, या एकांतातील स्मरणामुळे कीर्तनाचा आनंद अन्तः करणा कायम मिळू लागतो.

उदा : भक्त प्रल्हादाने अगदी बालपणापासून 'नारायण' या नामाचे सतत स्मरण केले. अशा प्रकारे भक्त प्रल्हादाने जाग्रतीत, स्वप्नात व सृष्टीत अखंड स्मरण केल्यामुळे नरसिंह अवतार घेऊन भगवंताने त्याचे संरक्षण केले. असा प्रल्हाद महान भक्त म्हणू आजही सवीना वंदनीय असा आदर्श आहे. या नाम स्मरणानेच योगाची अष्टांगे साधून भक्त पूर्ण कसा होतो याचे वर्णन महाराजांनी एका अभंगात केले आहे.



“योगाचे अष्टांग नामीच | मिळती नामते वेदांती मिश्रित की” ||

४. पादसेवन :- संत हे ईश्वर आहेत असे समजून त्यांची, तशीच श्री. गुरुंची, किंवा आपल्या आवडीच्या मूर्तीची प्रक्षालनादी उपचारांनी पादपूजा करणे म्हणजे पादसेवन होय. या पादसेवन भक्तीत श्रीलक्ष्मी हीच सर्वश्रेष्ठ आहे. शेषनागावर विश्रंती घेत असलेल्या भगवान विष्णूच्या चरणांचे संवाहन ती अखंड करीत असते.

५. अर्चन :- अर्चन म्हणजे षोडशोपचारांनी भगवदविग्रहाचे सयौंगपूजन करणे. आपल्याला जे जे पदार्थ प्रिय वाटतात ते ते सर्व भगवंताला समर्पण करणे. दही दुधाने स्नान घालणे, वैदिक मंत्रांनी अभिषेक करणे, सुवासिक फुल वाहणे, धूपादिप, नैवेद्य, आस्ती वगैरेचा, समावेश होतो. भावना दृढ होण्यासाठी प्रत्यक्षपूजेपेक्षा मानसपूजा श्रेष्ठ आहे.

६. वंदन :- अर्चन भक्तीमध्ये पूजाकरीत असताना मी पूजा करणार आहे. असा अभिमान उत्पन्न होतो. तो पूज्यभिमान नष्ट करण्यास सर्व प्रकारची लोकलाज सोडून भगवंताला नमन करावयास हवे अश्या नमन आपोआप दिनता आणि लाघव साधकांकडे येते. नमन केल्याने अत्यंत लहानपणा स्वतःकडे येतो त्या लहान पणाच्या बळावरच साधक पूर्ण अशा गुरुपदावर आरुढ होतो. हि वंदन भक्ती साधकाला जशी उपयोगी आहे तशी भक्तीलाहि परिपोषक आहे.

७. दास्य :- वंदन भक्तीने दिनता अन्तः करणात रुजली की मग सेवक जशी स्वामीची सेवा करतो त्याप्रमाणे भक्त भगवंताची सर्व प्रकारची सेवा आनंदाने करू लागतो पूजा करूनही पूजकत्वाचा अभिमान त्याला शिवत नाही मंदिराच्या झाडलोटी पासून तो चरण संवाहमापर्यंत सर्व प्रकारचे दास्य करतो. उदा: भगवान रामचंद्राचे दास्य करण्यास हनुमानाला तोंड नाही असे रामायणावरून आढळते.

८. सख्य (मैत्री) :- दास्यभक्तीने दिनता आणि लघुता अंगी बाणली की भक्त स्वतःला निस्साधन समजू लागतो त्याला वाटते की आपण श्रीगुरुंची किंवा भगवंताची पूर्णपणे सेवा करू शकत नाही. आपल्यात किती तरी उणीवा आहेत. अशी दिन भावना तीव्र होऊ लागली की त्याचा ज्ञाता भगवंता शिवाय कोणी राहत नाही. त्यांच्या आर्त पुकारला भगवान 'ओ' देतो आणि त्याचा मित्र होऊन राहतो अश्या रीतीने भगवानच त्याचा सखा झाला की मित्रतत्वाच्या नात्याने तोच त्याला परमार्थाच्या उच्चासनावर नेऊन बसवितो. उदा : कृष्णार्जुनाचे आहे. मित्र मित्राशी मनात येईल तसे वागतो. अर्जुन कृष्णाशी भांडला, कृष्णाला आपल्या रथाचे सारथी केले. पण भगवंताने आपला मोठेपणा पाहिला नाही. उलट पापण्या जशा नेत्रांचे रक्षण करतात तसे अर्जुनाने मित्ररूपाने रक्षण केले आणि युद्धासारख्या प्रसंगी त्याचा मोह दूर करण्यासाठी गीतादेखील सांगितली तीत उपदेश केला. विश्वरूप दाखविले आणि आत्मज्ञानसंपन्न केले.

आत्मनिवेदनाने जीव ब्रह्माचे एक्य होते असल्यामुळे ज्ञान प्राप्ती असल्याने, आत्मनिवेद पत्नरूप नवव्या भक्तीला महाराजांनी मध्यमा प्रकारात समाविष्ट केले आहे. वरील अष्टविधा भक्तीतील 'मी उपासना करणारा आहे' हि अहंता नाहीशी करण्यासाठी भगवंताच्या चरणी आत्म निवेदन केले जाते. या अहेतेचे

दोन प्रकार आहेत. ममता आणि अहेता हे दोन्ही प्रकार समर्पण झाले की, जीवब्रह्माचे ऐवय होते आत्मज्ञान होते म्हणून हि भक्ती गौणी नसून ज्ञानोत्तर मध्यमा भक्ती आहे.

९. ममता समर्पण :- इंदं - प्रत्ययाने निर्दिष्ट असलेले 'सर्व मम' मध्ये अंतर्भूत होते. 'मला पाहिजे असलेले' आणि 'माझे असलेले' सर्व भगवंतास अर्पण केले की ममतासमर्पण झाले.

१०. अहेता समर्पण :- आपण अन्तमय देहला 'मी' समजतो, म्हणून अहेता समर्पण करायची असल्यास प्रथम आपला देह भगवदर्पण करायला हवा. देह आणि श्रोत्रादी सर्व इंद्रिये भगवंताचीच आहेत असे समजून त्यांचा उपयोग भगवंतासाठीच केला पाहिजे नंतर प्राण, मन, बुद्धी आणि शेवटी अहंकार देखील अर्पण झाला पाहिजे देहापासून बुद्धी - अहंकारापर्यंत सर्व अहेतास्पद पदार्थ अर्पण झाले की शेवटी मी नसून भगवानच आहे असा अनुभव येतो. हेच पूर्ण अहेतेचे पूर्ण समर्पण होय.

आत्मनिवेदनाने ममता व अहेता समर्पण झाली की भक्त समाधीत आत्मैवर्य करून अद्वैत - ज्ञानाने पूर्ण होतो. यासमाधीत तो परब्रह्मांशी संपूर्णतः एकरूप झालेला असतो.

११. लालन भक्ती :- आत्मनिवेदन पूर्ण झाले की भक्त - भगवंताचे ऐक्य होते. या ऐक्या समाधीतून भक्ती व्युत्पन्न पावला की अहंवृत्ती उत्पन्न होते हा अहंवृत्तीवर आरुढ असलेला कोण ? मी भगवंताचा आहे असे म्हणण्यात स्वतःकडे लहानपणा येते - व मोठे पण भगवंताकडे जाते भगवान व श्रीगुरु एकच असल्याने श्रीहरीची किंवा गुरुची भक्तीतो करतो 'मी त्याचा आहे' असे म्हणतांना माता - पिता समजून भगवंतावर प्रेम करतो. भक्त स्वतःला ज्ञानहंता येईल म्हणून या ज्ञानहंतरूप संकटातून वाचविण्यासाठी भगवंताला 'पिता' म्हणून हाक मारतो. आणि आवडीने आळवायचे असेल तर लाडियाळपणे 'आई' म्हणून हाक मारतो किंवा गुरुलच मातापिता समजून हि लालन भक्ती केली जाते.

१२. वात्सल्यभक्ती :- 'मम एव असीं' म्हणजे माझा भगवान आहे भावना. म्हणजेच वात्सल्यभक्ती यामध्ये स्वतःकडे मोठेपणा घेतला जातो आलापर्यंत लालनादी भक्तीत भगवंताने भक्तासाठीजे कष्ट घेतले त्या आढवणीमुळे भक्ताचे अंतःकरण पिळवटून निघते यापुढे मात्र भगवंताला कष्ट होऊ नये म्हणून भक्त भगवंताला आपले लहान बाल समजतो आणि स्वतः कडे आईपणा होतो त्याच्या मनात येते की मी रडून रडून माझ्या श्रीहरीला फार कष्ट दिले आणि स्वतः मात्र त्याची काहीच सेवा केली नाही.

त्याला भक्तांचे इतिहास आठवताना की लालन भक्तीत पंढरीनाथ दामाजी साठी महार झाला. जनावारंकरता दळू लागला, एकनाथांच्या घरी घंदन उगाळीत असे प्रल्हादासाठी नृसिंघवतार घेतला आशा प्रकारे लालनभक्तीत भगवान भक्ताकर्ता सर्व प्रकारचे कष्ट घेतो पण भक्ताला दुःख होऊ देत नाही हे सारे आठवून भक्ताचे अंतःकरण व्याकुळ होते म्हणून तो भगवंताला आपले बाळ करतो आणि स्वतःआई होऊन सर्व प्रकारे सेवा करतो.

अशा प्रकारे महाराजांनी माधुर्यभक्तीची, समन्वयपूर्वक उत्पत्ती दाखविली आहे. हिलाच पराभक्ती म्हटले आहे. या माधुर्य भक्तीचे संयोग व वियोग हे दोन प्रकार करून पुनः त्यांचेही प्रत्येक गुण आणि



स्पष्ट असे दोन भेद दाखविले आहेत. असे हे पारामर्शिकेचे ४ प्रकार प्रितीनर्तन या ग्याल सविस्तर पणे महाराजांनी मांडले आहे.

१३. गुप्त संयोगरूप माधुर्यभक्ती :- भक्त आपल्या इय संपुष्टात भगवंताचा साक्षात्कार करून घेतो पण बाहेर मात्र सार्या संसारात त्याला दुःख देणारे वैरी दिसतात. कामक्रोधापी सर्व विकार, मन, बुद्धी, अहंकार वैगैरे सर्वच त्याच्या भागवतसाक्षात्कारात आड येत असतात. म्हणून या सर्व वैर्यापासुन दूर आशा आपल्या हृदयातच तो भगवंताला लपवून ठेवतो. कधी कधी भक्त अहंकार व कामक्रोधापी विकारांना कुटुंब कल्पितो आणि स्वतः परस्वीत्य होऊन जारबुद्धीने भगवंताशी हृदयमंचकावर प्रेमकिडा करतो.

१४. स्पष्ट संयोगरूपी माधुर्य भक्ती :- सदुरु गुलाबराव महाराज विश्वास वृत्तीच्या साक्षाने आणि कात्यायनी व्रताच्या पूर्तीमुळे भगवान श्रीकृष्ण साक्षात पती म्हणून लाभतात. म्हणजे हृदयातील भगवंतसाक्षात्कार बाहेर देखील अनुभवाला जातो. हाच अन्वयानुभव होय. गुप्त संयोग शृंगारात असलेला मनाचा संवेग तीव्रतम झाला की डोळे मिटले तर हृदयात आणि डोळे उघडले की बाहेर, अशी अन्तर्बाह्य सर्वत्र एक भगवंताची सावली सुकुमार मूर्तीच अनुभवाला येते असा हा नित्य संयोग प्राप्त झाला की तोच स्पष्ट संयोग शृंगार होय.

१५. गुप्त विप्रलंभरूपी माधुर्य भक्ती :- गुप्त विप्रलंभ म्हणजे हृदयातील भगवंतमूर्तीचा वियोग होणे. रासकीडेमध्ये गोपीना किंचित अभिमान झाला. आम्हाला भगवान प्राप्त झाले. आम्ही धन्य झालो अशी धन्यता वाटली म्हणजे भक्तीत रसास्वाद विघ्न आले. असा गोपीचा सौभाग्यपद नाहीसा करण्यासाठी आणि त्यांच्यावर प्रसाद करण्यासाठी भगवान त्यांच्या हृदयातून अन्तर्धान पावले गोपीना बाहेरही भगवान दिसेना आणि हृदयातच दिसेना.

१६. स्पष्ट विप्रलंभ भक्ती :- अन्तर्बाह्य सर्वत्र भगवंताचा वियोग अनुभवायला येणे म्हणजे स्पष्ट विप्रलंभरूपा भक्ती होय. अन्तरी बाहेर उमटे शोक । शोका पाठीपोटी वज्रनायका यात जेव्हा भगवान लपला तेव्हा गोपी घायरी होऊन बाहेर पाहू लागली परंतु बाहेरही भगवान दिसेना तेव्हा मात्र विरहानलाने तिची अवस्था बेभान झाली आत आणि बाहेर वियोगाने शोकाकुल होऊन व्याकुळ झाली या शोका पूर्वी भगवंताचा संयोग होता व नंतर देखील संयोगच होणार म्हणजे शोकाच्या पाठीपोटी वज्रनायक असल्यामुळे तिच्या अनुभवाला आतबाहेर सर्वत्र चेतन ब्रह्मच भासू लागले सर्व जडभाव नाहीसा झाला सर्व विश्वात तिला प्रियसरवीच दिसू लागल्या.

अन्तर्बाह्य भगवंताचा संयोग असूनही गोपीच्या प्रेमाचे समाधान होत नाही अहंबुद्धी होत नाही किंवा प्रेमस्थितीची जाणीव म्हणजे जातता देखील येऊ देत नाही. तिच्या प्रेमाचा प्रवाह, खंडित न होता, सतत सगुण अनध्यस्त विवर्त भगवंताकडे वाहत राहतो.

**निष्कर्ष**


संत गुलाबराव महाराजांनी भक्तीचे १६ प्रकार स्वतःच्या अनुभवातून सिद्ध करून दाखविले आहे. परंतु हे भक्ती प्रकार सर्व सामान्य जण ते पर्यंत पोहचणे व त्यांना सुद्धा भगवंत प्राप्ती व्हावी अशी इच्छा असेल तर कोणत्याही भक्तासाठी गुलाबराव महाराजांनी सांगितलेल्या १६ भक्ती मार्गांचा अवलंब केला तर त्याला भगवंत प्राप्ती झाल्या शिवाय राहणार नाही आणि म्हणूनच गुलाबराव महाराजांचे भक्ती विषयक अभिनव विचार सहजापर्यंत पोहचले पाहिजे हे शोधनिबंधाचे फलित होईल.

संदर्भ ग्रंथसूची

**-प्रकाशन-**

१. योगप्रभाव - श्री. गुलाबराव महाराज सर्वोदय ट्रस्ट आळंदी
२. योगदर्शन (भगवान बुद्धकर्णी) - नंदिनी संतोष हांबोळी, सिंहगड रोड, पुणे
३. भक्तिशास्त्र (डॉ. कृष्ण माधव घराटे) - श्री. गुलाबराव महाराज सर्वोदय ट्रस्ट आळंदी, पुणे.
४. भक्तीपुरुष(स्मरणिका)- श्री. संत गुलाबराव महाराज भक्तीधाम, श्री. क्षेत्र चांदूर बाजार.





**One Day  
Interdisciplinary International e-Conference  
on**

**Role of Physical Activities,  
Health and Fitness in Today's Crisis**

**16<sup>th</sup> October, 2021**

**Jointly Organized by**

**IQAC and Department of Physical Education & Sports**

**Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya,  
Amravati, Maharashtra, India.**

**Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati, Maharashtra, India.**

**Narayanrao Rana Mahavidyalaya,  
Badnera, Amravati, Maharashtra, India.**



116.	डॉ. सनीज शं. राठोड समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, स्व. पंचफुलाबाई पावडे कला वाणिज्य महिला महाविद्यालय, वरुड, जि. अमरावती	समाजशास्त्र की दृष्टिसे मानसिक स्वास्थ्य	369
117.	पा. जगन्नाथ हुंगोले सहा. प्राध्यापक (संगीत विभाग प्रमुख) महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	क्रीडा जगत और संगीत चिकित्सा पद्धती	371
118.	सोनाली आसकर शिलेदार सहायक प्राध्यापक, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिये संगीत एक प्रभावी माध्यम	373
119.	पा. डॉ. संजय जे. भगत समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	आधुनिक समाजात योगाचे महत्व	376
120.	पा. डॉ. स्वप्ना एस. देशमुख गृहअर्थशास्त्र विभाग, श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय पुसद जि. यवतमाळ	मानसिक आरोग्य प्राप्ती करिता समुपदेशकाची भूमिका	379
121.	डॉ. रजना एच. जिवने गृहअर्थशास्त्र विभाग प्रमुख श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद	पुसद शहरातील बजारा समाजातील शेतमजूर स्त्रियांचा आहार आणि आरोग्याचा अभ्यास	382
122.	प्रा. आनंद मनवर समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, युवाशक्ती कला व विज्ञान महाविद्यालय अमरावती	मानवी जीवनातील योगाचे महत्व आणि फायदे	387
123.	प्रा. नि. तु. जिवनराव शेंडे श्रीमती नानकीबाई वाघवाणी कला महाविद्यालय यवतमाळ	फास्टफुड: लठ्ठपणा व आरोग्यावर होणारे दुष्परिणाम	390
124.	डॉ. पंकज मा. तावडे (सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग) भाऊसाहेब लहाने ज्ञानप्रकाश आर्ट्स कॉलेज पिंजर	ताणतणावाचे व्यवस्थापन - योगसाधना	394
125.	डॉ. अनिल खु. ठाकरे भाऊसाहेब लहाने ज्ञानप्रकाश आर्ट्स कॉलेज पिंजर जिल्हा. अकोला	आरोग्य आणि मानसिक तंदुरुस्तीत संगीताची भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	398
126.	डॉ. नेत्रा श्रीकांत तेन्हारकर संगीत विभाग, जे. डी. पा. सा. महाविद्यालय दर्यापुर	योग और संगीत	400
127.	प्रा. डॉ. बबिता येवले स. प्रा. राज्यशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती	राजकारणात खेळाचे महत्व	403
128.	सहा. प्रा. अभय शरदराव चांदेकर संचालक, शारीरिक शिक्षण व खेळ, बाबासाहेब देशमुख पारवेकर महाविद्यालय, पारवा जि. यवतमाळ	खेळ व्यायाम आणि शारीरिक सुदृढता	407
129.	निघोंट अर्चना महादेवराय पीएच- डी- शोधार्थी (हिन्दी), संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती (मानव विज्ञान शाखा)	शारीरिक क्षमता पर सूर्य नमस्कार का प्रभाव	410





सोनाली आरवरा  
शिलेदार

सहायक प्राध्यापक  
महात्मा ज्योतिबा फुले  
महाविद्यालय,  
अमरावती

One Day International Interdisciplinary E-Conference On  
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS  
On 16<sup>th</sup> October, 2021 @

Mahatma Jyotiiba Fule Mahavidyalaya, Amravati, Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati, & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिये संगीत एक प्रभावी माध्यम

#### ABSTRACT:

'Sound Mind Dwells in a Sound Body' स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। ऐसा भी कहा जा सकता है की मस्तिष्क स्वस्थ हो तो शरीर स्वस्थ रहता है। और यह संगीत के माध्यम से सहज संभव होता है। मनुष्य के स्वास्थ्य संबंधी विचार किया जाता है तब शारीरिक तथा मानसिक अंगों का समावेश किया जाता है। शरीर स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य का संबंध प्रमुखता रखता है और मानवी जीवन सफल एवं विकसित बनाने की दृष्टि से मनुष्य को शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रखना आवश्यक है। संगीत में कई ऐसे तत्व हैं जो व्यक्तियों के शरीर एवं मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा में प्रभावी सिद्ध हुए हैं।

#### प्रस्तावना :

संगीत का मानवी जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन से जुड़े अनेक घटनाक्रमों द्वारा मानव में विभिन्न भावों की उत्पत्ति होती है। इन भावों से व्यक्तियों के वर्तन तथा व्यवहार में परिवर्तन होते हुए शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर उसका परिणाम दिखाई देता है। और इससे उत्पन्न समस्याओं के तणाव से मानव को मुक्त कर आनंद प्रदान करने की शक्ति केवल संगीत में है। वैसे मनुष्य अपनी भावनाओं को विभिन्न कलाओं द्वारा अभिव्यंजित करता है जैसे शिल्पकला, मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला इ. परंतु संगीत कला बाह्य घटकों पर आधारित न होने के कारण व्यक्तियों के अत्यंत निकट है। अतः आत्मा के निकट है। संगीत में आनंद की अधिकतम अनुभूति होती है इसलिए संगीत को सर्वोच्च कला के रूप में माना जाता है।

आज हर व्यक्तियों संघर्ष पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है। तनाव रहित रहने के कारण अनेक शारीरिक तथा मानसिक व्याधी से घिरी रहता है। इन व्याधी से मुक्तता पाते हुए स्वास्थ्य की रक्षा करने का प्रभावी माध्यम एकमात्र संगीत है। किसी भी विपरीत परिस्थिति में संगीत के माध्यम से व्यक्तियों चिंताओं से मुक्त होकर मानसिक शांति प्राप्त कर सकता है। शास्त्रीय संगीत तथा किसी मधुर स्वरों के रसास्वादन से स्फुर्ती एवं नवीन शक्ति से सक्रिय हो जाता है। आधुनिक युग में चिकित्सक तथा मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए संगीत के तत्वों का निरंतर अभ्यास करने में प्रयत्नशील है। तथा संगीत

चिकित्सा का प्रयोग शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिये हो रहा है।

#### शारीरिक स्वास्थ्य एवं संगीत :

शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य के तनावग्रस्त जीवन में मानसिक विकारों से अनेक शारीरिक व्याधी उत्पन्न होती है। जैसे हृदय रोग, रक्तचाप, मधुमेह इ. संगीत का गहरा प्रभाव मनुष्य के मन तथा मस्तिष्क पर पड़ता है। संपूर्ण शरीर को नियंत्रित रखने का कार्य मस्तिष्क करता है। अतः मस्तिष्क तथा मन के स्वास्थ्य का शारीरिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान है। संगीत के स्वरों में एक अदभूत शक्ति है। शरीर में स्वर तरंगों के रूप में एक प्रकार का कंपन उत्पन्न होता है। जिसमें सूक्ष्म स्नायुतांत्रियों, नाडीयों का कार्य सुव्यवस्थित होकर चैतन्य निर्माण होता है तथा शरीर को स्वस्थ रखने में सहयोग प्राप्त होता है।

आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य के शरीर में वात, पित्त तथा कफ इन विकारों से कई रोगों की उत्पत्ति मानी गई है। संगीत के सात स्वरों का इन विकारों पर सहज प्रभाव पड़ता है। स्वरों को गाते समय शरीर के विभिन्न स्थानों से स्वरों की उत्पत्ति होती है जिसके प्रभावसे कफ, पित्त, तथा वात इन विकारों से उत्पन्न व्याधी का शमन होने में सहयोग मिलता है।

बहुज - शरीर के छः स्थानों से बहुज की उत्पत्ति होती है। जैसे नासिका, कंठ, उर, तालू, जिह्वा और दांत। वह पित्त रोगों के लिए लाभदायी है।



**रिषभ** - यह स्वर कफ और पित्त रोगों का शमन करता है।

**गांधार** - गांधार स्वर पित्त रोगों के लिये परिणामकारक माना गया है।

**मध्यम** - मध्यम स्वर को वात तथा कफ से उत्पन्न रोगों का शमन करता माना गया है।

**पंचम** - पंचम स्वर कफ प्रधान रोगों का शमन करने में परिणामदायी है।

**धैवत** - यह स्वर पित्त रोगों का शमन करता माना जाता है।

**निषाद** - निषाद स्वर वात रोगों का शमन करके माना गया है।

इन स्वरों का मनुष्य में स्थित रोग और दोषों के अनुसार विशेष प्रयोग करते हुए संगीत उपचार द्वारा कई रोगों की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य की रक्षा की जा सकती है।

इन सभी स्वरों के विविध रूपों में विशिष्ट स्वरचना निर्माण होने पर राग कहलाती है। जो मन को प्रसन्न तथा प्रफुल्लित करती है। किसी भी राग की स्वरलहरी जब मनुष्य के मस्तिष्क तक पहुँचती है तब उसका प्रभाव शरीर के विभिन्न स्थानों पर होता है जिससे कफ, वात और पित्त से उत्पन्न विकारों का शमन होता है तथा शरीर स्वस्थ रहने में सहयोग प्राप्त होता है। जैसे बिहागड़ा, बिहाग, खमाज, यमन, कल्याण आदी पित्त प्रकृति पर परिणामकारक होता है। भैरव, कालिंगड़ा, जोगिया, परज विभास आदी कफ प्रधान रागों पर परिणामदायी है।

शास्त्रीय संगीत में राग गायन के लिए स्वर साधना का महत्वपूर्ण स्थान है जो प्राणायाम की ही प्रक्रिया है तथा अष्टांगयोग का अंग है। शरीर को सुदृढ़ रखने के लिए तथा सभी अवयवों का संचलन व्यवस्थित रूप से होने के लिये श्वास का दृढ़ होना अत्यावश्यक है जो संगीत के माध्यम से सहज प्राप्त होता है। इससे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा निर्माण होकर शरीर सुदृढ़ होने में सहाय्यभूत होता है। संगीत में गायन वादन के साथ नृत्य कला भी समाविष्ट है। नृत्य शरीर संचालन तथा शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायी है।

**मानसिक स्वास्थ्य एवं संगीत :**

संगीत में केवल स्फूर्ति प्रदान करने की शक्ति ही नहीं वरन् अनेक मानसिक रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषा करते हुए 'हरविज' और 'स्कीड' कहते हैं की मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ आत्म सम्मान, आंतरिक शक्तों की अनुभूति, उत्तम परस्पर संबंध स्थापित करने की मनोविज्ञानिक श्रेष्ठता है। 'काल मेनिंगर' के मत अनुसार मानसिक स्वास्थ्य याने खुशी तथा प्रभावशाली

वातावरण और व्यक्ती व्यक्ती में सामंजस्य पूर्ण परिस्थिति का अवलंब करना है। इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है की व्यक्ती की सकारात्मक कृती मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रखने में सहाय्यक होती है।

मानवी मन में दुःख, चिंता क्रोध, प्रसन्न इ. भावनाओं का उद्गम मंदुस्थित विशिष्ट रसायनों के कारण होता है। तथा मनुष्य की अतार्किक, अशास्त्रीय विचारशक्ती इन भावनाओं के उद्गम में सहाय्यभूत होती है। इन भावनाओं को औषधोपचार पद्धती से वशीभूत किया जा सकता है परंतु दीर्घकालीन तथा सकारात्मक परिणाम के लिए संगीत श्रवण अथवा गायन वादन की सहायता से भावनोद्रेक न होने में एवं सकारात्मक कृती बढ़ने में वृद्धि होती है, जिसका परिणाम मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रखने में सहाय्यक होता है।

कंठ संगीत तथा वाद्यसंगीत इन दोनों का प्रभाव विशेष रूप से मानवी मन पर दिखाई देता है। डॉ. अरुण मिश्रा का कहना है की मानवी मन और शरीर की स्वस्थता अपने स्वस्थ स्नायुमंडल के स्वस्थ कार्यक्षमता पर अवलंबित है। संगीत के श्रवण से मस्तिष्क में स्थित 'बैलामस' प्रभावित होता है जिससे चिंता, क्रोध इन विकारों का शमन होकर स्वरों के माध्यम से व्यक्ती का मस्तिष्क स्वस्थ अवस्था को प्राप्त होता है।

डॉ. हिमालयपंत वैद्य के मत अनुसार मानवी मंदुस्थित अव्यक्त स्त्राव कार्यरत होकर शरीरांतर्गत पैथीयों में लक्षणीय परिणामकारकता दिखाई देती है। संगीत के स्वरों के माध्यम से इन स्त्रावों की निर्मिती से विशिष्ट अवयवों को आराम मिलता है तथा मनुष्य में सकारात्मक कृती बढ़ जाती है जिससे मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहने में मदद मिलती है।

संगीत में विशेष महत्व सुरों का है। व्यक्ती की रुचि के अनुसार संगीत सुनने से उसका प्रभाव अच्छी तरह दिखाई देता है। अभिजात शास्त्रीय संगीत का संबंध विभिन्न रागों से है। प्रत्येक राग में विशिष्ट स्वरसंयोजन होता है जिससे विशिष्ट भावों की निर्मिती होती है। तथा उसका प्रभाव समस्त प्राणीमात्र पर पड़ता है। रागों में रस स्थित होने के कारण दुःखी मन स्वरो से सुख पाता है तो करुणा से पूर्ण हृदय इन स्वरों से सहानुभूती एवं शक्तियों का अनुभव भी कराता है। उदा. भैरव - वैराग्य, दरबारी कानड़ा - गंभीर, अड़ाणा - चंचल तथा मालकौंस शांत रस निर्माण कराता है। जिससे विशेष रसों का संचरण मानव को में स्थित भावों में होने से मुक्ति पाने की शक्ती प्रदान करने में सफल होता है तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहने में प्रभावी सिद्ध होता है। तभी संगीत मानव का उपचार करने में भी सक्षम होता है। मानसिक व्याधी से ग्रस्त मानव



के हृदय तथा मस्तिष्क पर सुमधुर संगीत के प्रभाव से दीर्घ और वेदनामय आघातों को दूर किया जाता है। इसी कारण आज भी कई मनोवैज्ञानिक तथा संशोधक संगीत में स्थित स्वास्थ्य एवं शक्तीदायक तत्वों की खोज में सतत प्रयत्नशील हैं।

**निष्कर्ष :**

व्यक्ती के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य का विचार करने पर यह प्रतीत होता है की संगीत के स्वरों में एक ऐसी शक्ती है जिसके श्रवण या गायन से व्यक्ती के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक परिणाम दिखाई देता है। संगीत में अंतर्भूत महत्वपूर्ण तत्वों का निरंतर अभ्यास करने से स्वास्थ्य उत्तम रहने में सहायता मिलती है। आधुनिक युग में व्यक्ती के संघर्षपूर्ण तथा तनावग्रस्त जीवन से उत्पन्न सभी व्याधी को दशीभूत करने में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है चाहे वो शास्त्रीय, सुगम या लोकसंगीत हो। परंतु अभिजात शास्त्रीय संगीत में राग संकल्पना एवं स्वरसाधना विशेष रूप से होने के कारण व्यक्ती के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए वह वरदान है।

**संदर्भ :**

1. संगीत चिंतन - डॉ. सुरेखा सिन्हा
2. संगीतापे मान:शास्त्र - शामला बनारस
3. भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान - श्रीमती वसुधा कुलकर्णी
4. कालाविहार अंक

(SJIF) Impact Factor-7.675

2021-22  
ISSN-2278-9308

# *B.Aadhar*

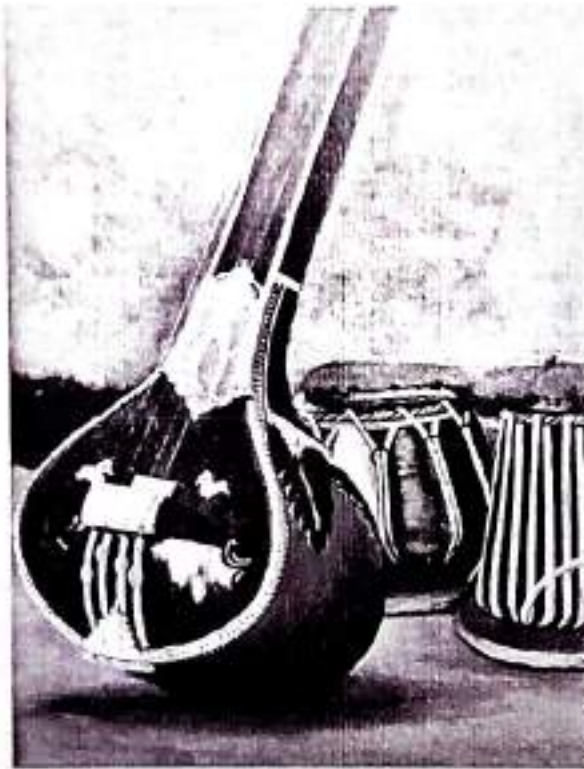
Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

**November -2021**

SPECIAL ISSUE 328 (CCCXXVIII)

**नवीन शैक्षणिक धोरणात संगीताची भूमिका**



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande  
Director  
Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati

Editor

Prof. Kaumudi Dattatry Kshirsagar  
Department of Music  
Sitabai Arts, Commerce &  
Science College Akola  
Dist.Akola.



**लोककलाओं में लोकसंगीत की महत्वपूर्णता****डॉ. मीनल भोंडे**प्राचार्य, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय,  
अमरावती**सोनाली आसरकर शिलेदार**सहाय्यक प्राध्यापक  
महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय,  
अमरावती**सारांश :**

'लोककला' इस शब्द में 'लोक' का अर्थ जन साधारण से है। लोककलाओं में लोकसंस्कृति लोक परंपरा द्वारा जन साधारण का जीवन प्रतिबिंबित होता है। भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन होने का सहज मार्ग लोककलाओं में है। लोकसंगीत में भी भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब सहजरूपसे दिखाई देता है। जन साधारण का संगीत यह लोकसंगीत है जो लोक मानस की सहज भावनाओं की अभिव्यक्ति है। लोकसंगीत की विशेषताओं से उसकी महत्वपूर्णता सिद्ध होती है। जो नई पिढी को ज्ञात होना आवश्यक है।

**प्रस्तावना -**

कला मानवी जीवन के अत्यंत निकट है। कला और मानवी जीवन एक दुसरे के पुरक है ऐसा भी कहा जा सकता है। विशेष रूप से लोककलाओं का जन सामान्य से गहरा संबंध है। जन सामान्य की जीवन शैली लोककलाओं में प्रतिबिंबित होती है, तथा व्यक्ती के सहज भावों की अभिव्यक्ती की क्षमता लोककलाओं में है। भारत जैसे विशाल देश की सभ्यता एवं संस्कृति बहुत प्राचीन है, तथा विशेषताओंसे परिपूर्ण है। इन विशेषताओं में आदर्शों, मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है, एवं साथ ही भाषा, वेशभूषा में भी विविधता दिखाई देती है। इसी विविधता तथा संस्कृति का दर्शन लोककलाओं में होता है। भारत में लोककलाओं में भी विभिन्नता होते हुए अनेक लोककलाएँ विद्यमान हैं। प्रयोगसिद्ध लोककला में लोकनाट्य, लोककला, विधीनाट्य के साथ लोक संगीत और नृत्य समाविष्ट होते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से लोकनृत्य का बहुत महत्व है जिससे समाज के विभिन्न संस्कारों, पूजापद्धतियों, धार्मिक विश्वास तथा व्यवहार आदी का परिचय मिलता है किसी भी प्रांत की विशेषता का दर्शन लोकनृत्य से बंधुनी होता है यह सामुहिक सौंदर्य का प्रतिक होते हुए इस से विविधता में एकता दिखाई देती है। इन सबके गीत नृत्य के साथ प्रयुक्त वाद्यों में भी प्रांतानुसार विविधता दिखाई देती है। लोकसंगीत में सौंदर्य के साथ सहजता तथा भिन्न प्रसंगों में भाव प्रकटीकरण का अवसर प्राप्त होता है।

लोकसंगीत की कई विशेषताएँ हैं और इन विशेषताओं के साथ ही लोकसंगीत नई पिढी को ज्ञात होने से लोकसंस्कृति तथा परंपरा का संवर्धन होने में सहायता होती है और यह आवश्यक है।

**लोकसंगीत की महत्वपूर्णता**

लोकसंगीत एक ऐसा संगीत है जो प्रकृति एवं सृष्टि से प्रभावित होते हुए किसी भी नियमों तथा सिद्धांतों के बंधन में न रहकर अपने भावों को प्रकट करने के लिए सहज रूप से गाया जाता है तथा सरल भाषा एवं धुनों से जन सामान्य को आकर्षित करता है, वह लोकसंगीत कहा जाता है। संस्कृति में सन्निहित कला परंपरा, प्रथा, संस्कार का दर्शन लोकसंगीत में होता है। इससे संस्कृति का मूल स्वरूप सामने आता है। रवीन्द्र नाथ टागोर के अनुसार संस्कृति का सुखद संदेश देजाने वाली कला को लोकसंगीत कहते हैं।

लोकसंगीत जन - जीवन की उल्लासमय अभिव्यक्ती है अतः लोकमानसका जीवन सदैव संगीतमय रहा है। जनसाधारण द्वारा गायन, वादन और नृत्य के माध्यम से मनोभावों को स्वाभाविक रूपसे अभिव्यंजीत करना यह लोकसंगीत की विशेषता है, जिससे भारतीय संगीत का सच्चा रूप उभरकर सामने आता है। लोकसंगीत की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

**मौखिक परंपरा -** लोकसंगीत स्वयंस्फुर्त है। विशेष रूप से किसी प्रकारकी शिक्षा की आवश्यकता न होते हुए प्रसंगानुरूप आंतरिक भावनाओं को संगीत के माध्यम से स्वाभाविकतः स्वयं प्रस्फुटीत होता है। पिढी दर पिढी यह सुपूर्द होता है तथा पिढी दर पिढी गाये जाने वाले गीतों के गीत प्रकार या संगीतकारोंका उल्लेख भीकहीप्राप्त नहीं होता। यहकिसी व्यक्ती विशेष का न रहते हुए जनसाधारण का लोकसंगीत हो जाता है।

**लोकभाषा -** लोकसंगीत, विविध प्रांत की भाषा अनुसार होते हैं। सहज एवं सरल लोकभाषा में गीत व्यक्ती सहज समझकर गाता है। लोकभाषा का लालित्य, मिठास, लहेजा इनका प्रतिबिंब लोकगीतों में दिखाई देता है। किसी भी प्रकारका शास्त्र, सिद्धांत तथा व्याकरण न होने से स्वच्छंद संगीत है। तांत्रिक युग में वह आज भी कृत्रिमता से दूर है।





लोकसंगीत का काव्य अत्यंत सरल एवं प्रसंगानुरूप होता है। काव्य भाव अनुसार वाद्य का प्रयोग होता है मूल गीत किसी व्यक्ती की शब्द एवं स्वर रचना होते हुए भी वह गाते गाते लोकगीत हो जाती है।

**स्वरतत्व** – लोकसंगीत में लोकधुन तीन या चार स्वरों पर ही आधारित होती है। या कभी पांच स्वरों पर। इन्ही स्वरों पर सरल भाषा में सामुहिक गीतों के पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन के भावों को व्यक्त किया जाना यह एक विशेषता है। स्वररचना प्रसंग के अनुरूप होती है। कई लोकधुनों में शास्त्रीय संगीत के अनेक रागों की छाया दिखाई देती है तथा कई राग इससे निर्माण हुए हैं। इसीलिए कहा जाता है की भारतीय शास्त्रीय संगीत या रागसंगीत का मूल स्रोत लोकधुने है। अनेक लोकगीतों में सारंग, खमाज, काफी, तिलककामोद इन रागों की छाया मिलती है। देस, पिलू, पहाड़ी, गारा यह परंपरागत धून उगम राग है जो सभी गाते हैं। कुछ राग स्वतंत्र रूप से गाये जाते हैं या कुछ राग उपशास्त्रीय प्रकार में प्रयुक्त होते हैं। लोकसंगीत से धून उगम रागों की निर्मिती में पं. कुमार गंधर्वजी का महत्वपूर्ण योगदान है उन्होंने अनेक धून उगम रागों की निर्मिती की है अहीमोहिनी, वीहड भैरव, मधमुरजा, सहेलीतोडी, लगनगंधार, मालवती, सजारी यह पं. कुमार गंधर्वजी द्वारा निर्मित कुछ धून उगम राग है अनुपरागविलास इस पुस्तक में इन रागों की बंदिशे है जो पं. कुमार गंधर्वजी का ही है।

**ताल एवं लय तत्व** – लय लोकसंगीत का एक अविभाज्य अंग है। इसीलिए उसका संरक्षण तथा संवर्धन लोकसंगीत की सभी धाराओं में आदिकाल से विद्यमान है। लोकगीत गाने, बाजाने या नृत्य के लिए विशिष्ट लय होती है। साधारणतः मध्य तथा द्रुत लय का प्रयोग अधिकतर होता हुआ दिखाई देता है। विलंबित लय का प्रयोग अल्प स्वरूप में होता है या केवल अनिवार्य रचना में होता है। विभिन्न अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग लोकसंगीत के प्रकार अनुसार होता है तथा लोकगीत एवं नृत्य की लय का निश्चित स्वरूप जानते हुए विविधता का प्रयोग होता है। अतः अन्य देशों के लोक संगीत की तुलना भारतीय लोक संगीत में लयात्मकता का महत्व अधिक रहा है। शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त ताल लोकसंगीत की लयात्मकता से ही निर्माण हुए हैं। दादरा तथा केहरवा जैसे तालों का उपयोग लय प्रकार नुसार होता है। गीत या नृत्य के आरंभ में जो लय होती है वह सामुहिक तौर पर कायम रखना यह भी लोकसंगीत का वैशिष्ट्य है।

**निष्कर्ष –**

लोक संगीत शैली की विशेषताओं पर ध्यान देते हुए यह प्रतीत होता है कि लोक संगीत यह आदिम संगीत है, जो जन साधारण की सहज प्रवृत्ति है तथा लोक जीवन से प्रभावित होकर निकला है। लोकसंगीत व्यक्ती की जीवन शैली से जुड़े प्रत्येक प्रसंग के अत्यंत निकट है। अतः लोक संगीत की उत्पत्ति सहज, स्वाभाविक रूप से भावों की अभिव्यक्ती से है। लोक संगीत किसी व्यक्ती विशेष का न होते हुए जन सामान्य का है। मौखिक परंपरा, लोकभाषा, स्वरतत्व ताल एवं लयात्मकता इन लोकसंगीत की विशेषताओं पर ध्यान देते हुए यह ज्ञात होता है की संगीत की दृष्टि से तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि से लोकसंगीत का महत्वपूर्ण स्थान है जो संगीत की सभी विधाओं की जननी है। लोकसंगीत स्वाभाविक होने से सभी कालों में विद्यमान है तथा चिरकाल रहनेवाला है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची –**

- |                    |   |                     |
|--------------------|---|---------------------|
| १) निबंध संगीत     | - | लक्ष्मी नारायण गर्ग |
| २) भारतीय लोकसंगीत | - | विणा श्रीवास्तव     |
| ३) संगीत विशारद    | - | वसंत                |





20	ललित कलाओं में संगीत का स्थान	डॉ. नेत्रा श्रीकांत तेल्हारकर	58
21	संगीत चिकित्सा	डॉ. मोनाली मसीह	61
22	संगीत चिकित्सा (Music Therapy)	डॉ. भाग्यश्री धनंजय मोकासदार	64
23	लोककलाओं में लोकसंगीत की महत्वपूर्णता	डॉ. मीनल भोंडे / सोनाली आसकर शिलेदार	66
24	संगीत चिकित्सा	प्रा.डॉ. धाडेश्वर संतोषराव मदनकर	68
25	संगीतकला आणि भारताचा सांस्कृतिक विकास	गंधार विश्राम कुलकर्णी	72
26	सांगीतिक चिकित्सा—सिद्धांत व प्रत्यक्ष उपयोगिता	डॉ. प्राजक्ता मोहन हसबनीस	79
27	संगीत और अध्यात्म एक विवेचन	सहा. प्रा. गजानन बी. काळे	81
28	संगीत कला: उपजीविकेचे एक सशक्त साधन	प्रा- किरण प्रकाश सावंत	84
29	आख्यानाचे लोककलेतील स्थान	प्रा. जगनाथ इंगोले	87
30	साहित्य व संगीत	प्रा.डॉ. साधना हरणे (मोहोड)	89
31	scope and limitations of online music theory	प्रा. डॉ. जयश्री विश्राम कुलकर्णी	93
31	सैद्धांतिक शास्त्र आणि संगीत कला	प्रा. डॉ. मुक्ता महल्ले	100
32	संगीत आणि सामाजिकशास्त्र	प्रतिभा क्षिरसागर	102
33	संगीत रोजगाराचे विविध आयाम - एक अभ्यास	प्रा. वैशाली चौरपगार (मोहोड)	105
34	महाराष्ट्राच्या लोकसंगीतामधील विविध अंतरंग	प्रा. डॉ. सुधीर मोहोड	109
35	ऑनलाईन संगीत शिक्षण पद्धती—मर्यादा आणि व्याप्ती !	प्रा. डॉ. ज्वाला नागले	111
36	Stress management through Music	Ms. Uttara Ratansing Tadavi	117
37	Music-For Mentally Challenged?	Ms. Mitali Katarnikar-Prabhune	119
38	Role of Hindustani Classical Music Therapy	Dr. Ajaykumar G. Solanke	123
39	Role of Music in Academic Stress Management	Dr. Niraj Lande	125
40	Chronicling Classical Music is Dispersion of Culture.	Miss. Amruta Vinayrao Kale	128
41	Role Of Music In Academic Stress Management	Dr Prachi S. Halgaonkar	131



42	संगीत और मनुष्य जीवन	प्रा. डॉ. शिरीष कडू	134
43	संगीत चिकित्सा अमूल उपहार	प्रा. संतोष किसनराव खंडारे	137
44	मध्यकालीन भक्तकवि सूरदास के काव्य में शास्त्रीय संगीत	प्रो. डॉ. सुरेशकुमार केसवानी	143
45	समाज कल्याण के लिए संगीत की भूमिका	प्रा. नविन आ. खांडेकर	147
46	लोकसंगीताचे महत्व	प्रा. डॉ. सुनील पारीसे	150
47	संगीत चिकित्सा : एक स्वास्थ्यवर्धक प्रणाली	प्रा. डॉ. कु. प्रिती. बी. इंगळे (वाकपांजर)	152
48	संगीत और चिकित्सा	प्रा. नेत्रा गं. मानकर (सोलब)	157
49	संगीत चिकित्सा	प्रा. डॉ. बनिता तुकारामजी भोपत (केतकर)	159
50	दुरस्थ संगीत शिक्षा प्रणाली : दायरा एवं सीमाएँ	डॉ. सारिका विवेक श्रावणे,	161
51	संगीताद्वारे रोगनिवारण आणि मनशांती	प्रा. सतिश जमधाडे	166
52	लोकसंगीत- एक सांस्कृतिक ठेवा	प्रा गजानन मारोतराव लोहटे	168
53	The Significance of Gharana System in Preserving A Raga	Dr. Swati Sharma	170
54	Stress And Hypertension	Prof Dr. Archana M. Ambhore	172
55	Scope and limitations of online music teaching	Anu Saxena	174
56	Importance of Music Therapy for Human Wellbeing	Dr. Yogini Bhaskarrao Sontakke	180



*Pratiksha*



**Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed  
Journal No. 47026**

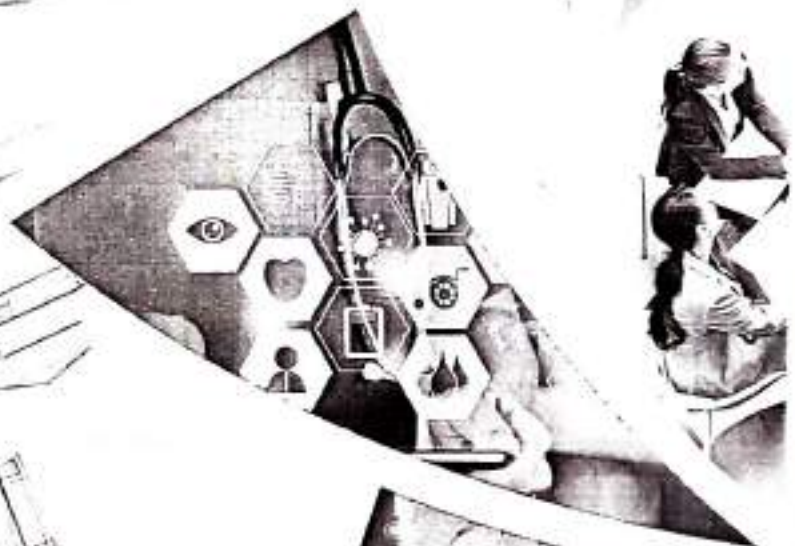
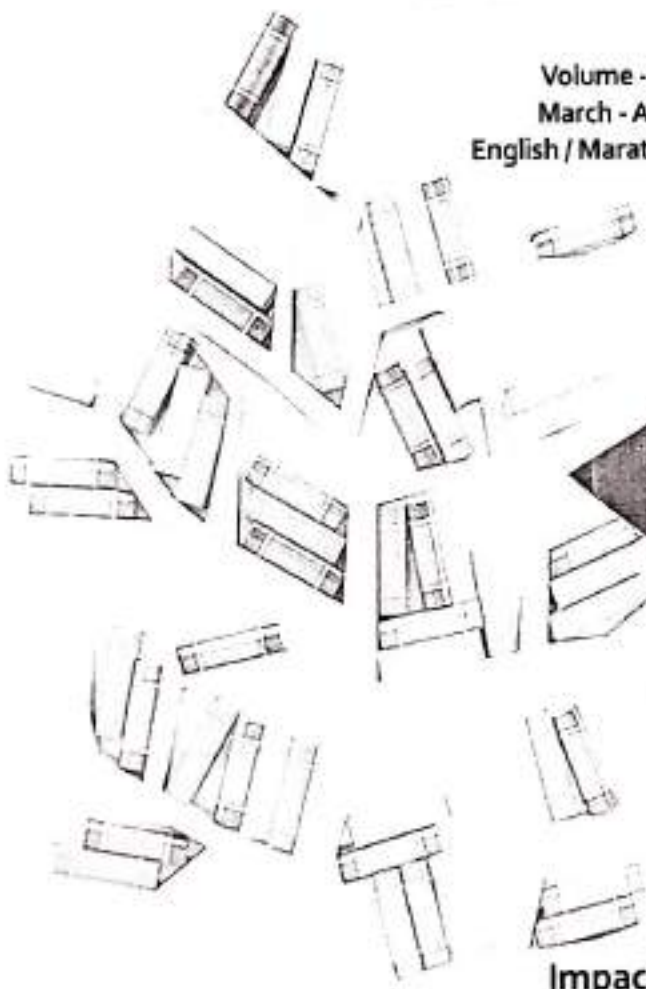


**ISSN 2319 - 359X**

**AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY  
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL**

# IDEAL

Volume - X, Issue - II,  
March - August - 2022  
English / Marathi & Hindi Part - II



**Impact Factor /  
Indexing  
2020 - 6.008  
[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)**

**Ajanta  
Prakashan**



## CONTENTS OF HINDI PART - II



अ. क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	पूर्व शिक्षा नीतियों के परिणाम स्वरूप देश के प्रसन्नता, अपराध और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के आंकड़े व 'संगीत' विषय में रोजगार की समस्याएं और समाधान तथा नई शिक्षा नीति २०२१ में संगीत विषय बारे संशोधन की अनुशंसा डॉ. विनोद कुमार	१-७
२	शास्त्रीय संगीत में सुषिर वाद्यों का स्थान सोनाली आसरकर शिलेदार	८-११
३	शास्त्रीय कंठसंगीत में ताल का महत्व डॉ. सारिका विवेक श्रावणे	१२-१५
४	संस्थागत शिक्षण प्रणाली में ध्रुवपद की वर्तमान स्थिति वैभव डगवार	१६-२०
५	वैदिक काल में संगीत डॉ. सुमेध बाबुराव सगणे	२१-२५
६	चित्रपट संगीत पर शास्त्रीय संगीत का प्रभाव डॉ. योगिनी भा. सोनटक्के	२६-३०
७	शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत डॉ. वृषाली देशमुख	३१-३९
८	रागभिव्यक्ति में आवश्यक तत्व डॉ. नेत्रा तेलहारकर	४०-४४



## २. शास्त्रीय संगीत में सुषिर वाद्यों का स्थान

सोनाली आसकर शिलेदार

सहायक प्राध्यापक, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती.

सारांश

हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत वाद्यो से अभिप्राय भारतीय वाद्यो के उस वर्ग से है, जो 'हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत' में प्रयुक्त कीए जाते हैं। वाद्य की बनावट तथा वादन क्रिया के आधार पर इन वाद्यो को भरत तथा दातील के काल से ही विभाजित किया गया है।

चार वर्गों में वर्गीकृत इन वाद्य प्रकारों में सुषिर वाद्यो का अभ्यास, जानकारी करते समय विविध पैलू का चयन किया गया है। सुषिर वाद्यो के बारे में सोचे तो वे ऐसे वाद्य होते हैं जिन्हें मुँह द्वारा फुंक मारकर या अन्य किसी साधन द्वारा वायू के प्रवेश से बजाया जाता है। वायू का दबाव कम या अधिक करके स्वर को उंचा निचा किया जाता है। इनके अंतर्गत बांसुरी, शहनाई, शंख, और विदेशी वाद्य हार्मोनियम की बनावट तथा शास्त्रीय संगीत में उपयुक्तता का अध्ययन किया गया है। तथा इनके शास्त्रीय संगीत में योगदान की महानता को जाना है। प्राचीन काल से आज तक स्वरों के विश्लेषण एवं स्वर – सिद्धी के लिए प्रत्येक संगीतज्ञ शास्त्रकार को वाद्यो की सहायता लेनी पड़ी। अर्थात् किसी उत्सव, राजकीय, शोभा यात्रा, मंगल अवसर, विवाह तथा पुत्रोत्सव के समय या युद्ध के समय, इस तरह आवश्यकता नुसार सुषिर वाद्यो का प्रयोग किया जाता था। वर्तमान समय में शंख का धार्मिक प्रयोग ही होना देखा जाता है। महाभारत ग्रंथ से स्पष्ट होता है की युद्ध के समय आरंभ एवं समाप्त करने के लिए उसका प्रयोग किया जाता था। इसकी रचना के कारण सिवाय एक फुंक के इसे अधिक समय बजा नहीं सकते इसीलिए शास्त्रीय संगीत में ज्यादातर प्रयोग नहीं हो सकता।

हार्मोनियम यह वाद्य वैसे तो विदेशी वाद्य है परंतु हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक यूनानी शब्द हारमोनी से लिया गया है, हारमोनी यह पश्चात्य संगीत का आधार है। मानो पियानो से इसकी उत्पत्ती हुई है। इसका आविष्कार फ्रांस के 'अलेग्जेंडर डेविन' ने किया था (१८४०) इसकी बनावट संपूर्ण तीन या साडेतीन सप्तक की होती है उसके रिड पितल धातु के बनाये होते हैं। बीचमें पतली धातु की पत्ती लगाई जाती है, तथा वायू के टकराने से कंपन पैदा करके इसकी ध्वनी निकलती है। इस वाद्य के स्वर हमारे स्वर के निकटवर्ती हैं परंतु भारतीय स्वरों की सुक्ष्मताओं के कारण रागो की संगती के उद्देश्य से इसका प्रयोग उचित नहीं है। स्वर साधना एवं रागो के प्रदर्शन के लिये तानपुरा वाद्य योग्य है। इसके उपरांत भी भारतीय शास्त्रीय संगीत में तथा उपशास्त्रीय संगीत में साथ संगती तथा एकल वादन में भी यह अत्यंत प्रचलित वाद्य है।

## प्रस्तावना

गायन, वादन तथा नर्तन इन तीनों कलाओंके समन्वय को संगीत कहा जाता है। मन के सुक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है संगीत। स्वर, ताल, लय, एवं राग आदि के शास्त्रीय नियमों के आधार पर गाया बजाया जाता है। चाहे गायन हो या वादन अभ्यास एवं गुरु परंपरा से मिली शिक्षा का प्रदर्शन करना इस पक्ष का मुख्य उद्देश्य है। याने सैधान्तिक पक्ष का मुख्य उद्देश्य है। वाद्य के बारेमें सोचते हुए वाद्य का शाब्दिक अर्थ है 'वादनीय' अर्थात् बाजाने योग्य यंत्र या उपकरण। भरत ने अपने नाट्यशास्त्र ग्रंथ में वाद्यों के कुल चार प्रकार बताए हैं जैसे तत् अवनध, घन और सुषिर। संगीतात्मक ध्वनी या गति को प्रकट करने वाला उपकरण वाद्य कहलाता है। सर्वप्रथम वाद्यों की उत्पत्ती के बारे में सोचे तो तन्त्री याने तत् वाद्यों की उत्पत्ती देवताओं से बताई गई है। अवनघा वाद्यों की असुरों से, सुषिर वाद्यों की गंधर्व रागों के द्वारा तथा घन वाद्यों को किन्नरों द्वारा उत्पन्न किया जाता है। इस प्रकार संगीत के इन चारों प्रकारों के वाद्यों का अविष्कार किसी न किसी प्राकृतिक स्रोत से हुआ है। जैसे मानव की अपनी प्रगती होती गई हि संगीत भी विकसित होता गया तथा की वाद्यों में परिवर्तन होते गए। अतः इस दिशा में अनेक संशोधन एवं अविष्कार हुए और आवश्यकतानुसार – अनेक नवीन वाद्यों की उत्पत्ती संगीत में हुई। इस प्रकार भारतीय संगीत में वाद्यों को उच्चस्थान प्राप्त हुआ और उनकी अधिकतम संख्या के कारण उन्हें अंकी विशेषताओं एवं लक्षणों के आधार पर अलग अलग वर्गों में विभक्त किया गया। अनेक अभ्यासकताओं ने तथा विद्वानों ने अपनी अपनी दृष्टि से वाद्यवर्गीकरण किया परंतु सभीने वाद्यवर्गीकरण करते समय आधार भूत वर्गीकरण या सर्वोत्तम वर्गीकरण भरत तथा दत्तिल आदि मुनीयोंका हि माना गया।

## उद्देश्य

वाद्य वर्गीकरण चार विभागों में किया गया। इनमें तत्, अनध, सुषिर, घन सर्वविविधित हैं। प्राचीन वाद्यों के आधार तथा उनमें उपयुक्त तत्त्वों के आधार पर हि आज आधुनिक वाद्यों की परंपरा चलती आई है। इन चारही प्रकारों में सुषिर वाद्यों में शंख, वंश वेणू एवं श्रुंग आदि अति प्राचीन वाद्य का निर्माण हुआ। इनमें से सुषिर वाद्यों का अभ्यासकरना, इस लेखन का प्रमुख उद्देश्य है।

## वर्णन

सुषिर वाद्य, वह वाद्य होते हैं जिन्हें फुँक द्वारा या अन्य किसी साधन द्वारा वायु के प्रवेश से बजाया जाता है। सुषिर वाद्यों को भी स्वर वाद्यों के वर्ग में रखा गया है। इनमें वायु का दबाव कम या अधिक करके स्वर को उँचा नीचा किया जाता है।

इनका वादन स्वतंत्र, एकल तथा सामूहिक इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ती हेतु किया जाता है। देखने में यह छिद्र युक्त नली की आकृति के समान होते हैं। इनमें वंश बासुरी, शहनाई, अलगाँजा, शंख, श्रुंग, नागस्वरम, पुंगी, बीन आदी भारतीय वाद्य तथा हार्मोनियम, स्वर – पेटी, कॅलेंड्रेट एवं सेकमोफोन आदि पाश्चात्य वाद्य आते हैं। वादन क्रिया के आधार पर तथा इनके बनावट के आधार पर इन वाद्यों को वर्गीकृत किया गया है।



आज हिंदुस्थान शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त वर्तमान सुषिर – वाद्यों की श्रेणी में बाँसुरी, शहनाई, शंख, एवं हार्मोनियम आदि के नामोल्लेख मिलते हैं। तथा कैलेंडर नेट सेक्सोफोन, पियानो इ. वाद्यों का भी वर्णन प्राप्त है। आज वर्तमान हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत में बाँसुरी या वंशी इस वाद्य का काफी महत्त्व है तथा यह एक प्राचीन सुषिर वाद्य है। इसके उत्पत्ती स्रोत के बारे में विद्वानों ने उल्लेख किया है जैसे भौरों द्वारा छिद्रित वंश – नालिका में तेज वायु के प्रवेश के कारण उससे उत्पन्न ध्वनी को जब किन्नरों ने सुना तो वे इतने प्रभावित हुए की उन्होंने उस वृक्ष से वंश नालिका को काटकर अपने मुख से स्वसं वायु द्वारा वादन करने लगे बाद में यह एक वाद्य रूप में प्रचलित हुआ। इस तरह वंशी के उत्पत्ती का स्रोत बांस वृक्ष को माना जाता है। इस तरह इस वाद्य का नाम बाँसुरी या वंशी पड़ा। वंशी का सर्वाधिक वर्णन संगीत रत्नाकर तथा 'संगीतसार' इन ग्रंथों में मिलता है। प्राचीन काल में गांठ – रहित बाँस का प्रयोग वंशी बनाने के लिये किया जाता था। इस के अलावा खैर की लाकड़ी हाथी दाँत, चंदन एवं लोहा, काँसा, चांदी, सोना आदि विभिन्न धातुओं का प्रयोग वंशी बनाने में किया जाता उस समय की बाँसुरी गोलाकार, सिधी तथा चिकनी होती थी। वर्तमान, समय में बाँसुरी के दो प्रकार प्रचलित हैं, सिधी बाँसुरी एवं आड़ी बाँसुरी इन दोनों में फरक केवल मुख स्थान का है सिधी बाँसुरी में फुँक मारने का स्थान जीभ के अनुरूप आगे से काटा जाता है तथा आड़ी बाँसुरी में ऊपर के तरफ एक बड़ा मुख छिद्र रखा जाता है जिसके द्वारा वायु का प्रवेश किया जाता है। आजकल बाँसुरी में छः छिद्रों का प्रचलन है।

इसी तरह शहनाई यह सुषिर वाद्य है इसे मांगलिक वाद्य भी मना गया है। इसका वास्तविक नाम 'शाहनेय' है। नय याने फुँक से बजने वाला तथा शाह याने बादशाह। याने फुँक से बजने वाला सभी वाद्यों का बादशाह। संगीत पारिजात में इससे मिलते जुलते वाद्य का नाम सुनादी है तथा संगीत रत्नाकर में बावाध्याय में माधुकरी नाम प्राप्त होता, तो कोई इसे विदेशी वाद्य मानते हैं। इसकी आवाज इसकी रचना के कारण है यह लाकड़ी का बना १५, १६ इंच का, उपरी भाग में शीर्ष या पती लगी होती है और सात छिद्र होते हैं बाँसुरी के समान जिसके खोलने और बंध करने से स्वरोत्पत्ती होती है। इसका अलग भाग सीधा तथा निचले भाग में पितल धातु का घ्याला समान आकार लगा रहता है जिससे आवाज फैलती है मंगलमय ध्वनी की उत्पत्ती होती है।

इसी तरह शंख यह समुद्र में रहनेवाले जिन का शरीर होता है। यह दो प्रकार के होते हैं दक्षिणार्ध तथा वामार्ध अर्थात् दायाँ एवं बायाँ। शंख भारत यह अती प्राचीन प्रकार का सुषिर वाद्य माना जाता है। जिससे सांगीतिक वातावरण तैयार हो जाता है, तथा कलाकार एवं श्रोताओं के दिलों-दिमाग पर संगीत की आकर्षक एवं मधुर ध्वनीओं का साम्राज्य छा जाता है। इस तरह एकल शास्त्रीय संगीत वादन में सुषिर वाद्यों ने अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। शास्त्रीय गायन तथा उपशास्त्रीय गायन में साथसंगत हेतु रस भाव निर्मिती में एवं सौंदर्यात्मक चमत्कृती प्राप्त करने में यह वाद्य प्रभावी सिद्ध होते हैं। श्रोताओं एवं दर्शकों को आनंद की अनुभूति प्राप्त होती है।

निष्कर्ष

वाद्यो के चार वर्ग में सुषिर वाद्यो का अध्ययन करते समय एक बात ध्यान देने योग्य है, वह ये की वायू इसका मुख्य स्रोत है। वाद्यो की बनावट विभिन्न प्रकार की होते हुये भी वायू की सहाय्यता से उत्पन्न सांगीतिक ध्वनी इन वाद्यो की अपनी पहचान बनाये हुए है। तथा वर्तमान हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य को प्रभावशाली बनाने एवं रस भाव से परिपूर्ण करने में अत्याधिक योगदान रहा है। इन वाद्यो से एक विशेष अलग अलग वादन किया जाता है। इस तरह सुषिर वाद्यो में अगर शहनाई वाद्य का प्रस्तुतीकरण देखे तो इससे हम करुण, शृंगार, भक्ती आदि कई रस उत्पन्न कर सकते हैं, वैसा गमक का प्रयोग हार्मोनियम में कम किया जाता है; तो उपशास्त्रीय संगीत में हार्मोनियमका एक महत्वपूर्ण स्थान आज है।

इस तरह वायू स्रोत मुख्य अंग होते हुए भी बनावट तथा स्वर प्रयोगो के कारण सांगीतिक ध्वनी की उत्पत्ती इन सुषिर वाद्यो में भावामिव्यक्ती उत्पन्न करने में सहाय्यक होती है।

ग्रंथ सूची

१. भारतीय संगीत के नए आयाम - पं. विजयशंकर मिश्र
२. हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत में वाद्यात्मक रस - भावामिव्यक्ती - डॉ. ललित कुमार कौशल
३. अंतर्नाद सूर और साज - पं. विजयशंकर मिश्र





**VIDHYA T. AMBHORE**  
Asst. Professor,  
Psychology  
Department  
Mahatma Jyoti Bha Fule  
Mahavidyalaya,  
Amravati.  
Mob. No. -  
9503876186  
vidhyakhadsc.123@gmail.com

One Day International Interdisciplinary E-Conference On  
**ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS**

On 16<sup>th</sup> October, 2021 @

Mahatma Jyoti Bha Fule Mahavidyalaya, Amravati, Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati, & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

**A STUDY OF THE STRESS AND MENTAL HEALTH OF ADULTS WHO PRACTICED  
YOGA AND DID NOT PRACTICE YOGA DURING THE CORONA PERIOD**

**ABSTRACT**

The present study was aim to analyzed the Stress and mental health of adults who practiced yoga and did not practice yoga during the Corona period. For this study 100 (50 Yoga practicing adults and 50 Yoga non-practicing adults), in the age range of 30 to 50 years are selected from various yoga center in Amravati. The present investigation has been discussed to assess the mental stress and mental health of adults in corona period.

**KEYWORDS:** - Stress, Mental Health, Yoga, Corona Period

**Introduction**

Corona virus (Covid-19) is the biggest crisis of the year 2020 which affected not only the body but also the mind. As a result of which the person seems to be physically and mentally exhausted. It has also been called the time of the global epidemic. The origin of the corona can be traced back to Wuhan, China, as the first corona patient was found in December 2019 in Wuhan, China. The corona virus is said to be a pathogen in birds and mammals. Coronavirus R. N. A. (Ribonate acid) is said to be the genetic material of a virus. The corona virus contains spherical particles with flowers. Whose outer shell project is covered with glycol protein. And its nucleus is made up of the genetic material of the nucleoprotein-related virus. (RNA Mr. 6x106) Corona virus appears to have different effects on different individuals. Most infected people have mild to moderate symptoms.

1. More common symptoms- Fever, dry cough, fatigue
2. Less common symptoms are fatigue and pain, sore throat, diarrhea, red eyes, headache, loss of taste or smell, skin rash or swelling on the fingers and toes.

(SARSCOV2) and corona viruses have been developed by scientists around the world to develop vaccines. On the other hand, the people who save you, such as doctors, police, cleaners, etc., are giving you a helping hand day and night. Even in times of lockdown where you were staying at your home and enjoying the holidays, these staff were serving patients working hard for your safety. I had to stay away from home. And the study of the

change in their mindset while working with full responsibility is equally important.

Man is exposed to different situations in life. He perceives some situations as good and some as bad. It is the desire of man to achieve happiness in life. It is but natural that different steps are taken to achieve the state of happiness. The quest to improve the quality of life has led to search for healthy life styles and better ways to cope with stress, we all experienced a lot of stress in this Corona Period. The deep effect of stress was visible on our mental health, then we used many ways to relieve stress, one of them is yoga meditation.

**Important of Yoga:**

Yoga is an ancient Indian indigenous system, involving use of body to mind and mind to body communication channels, bringing close interrelationship between the two and a perfect homeostasis. Its regular practice creates and maintains normalcy in psycho physiological functions.

Yoga has been found to be having a positive effect on physical and mental well-being Yoga as per Patanjali's Sutras involves Eight steps,

- 1). Yam: Our attitudes towards our environment. Truthfulness, Non-Violence, Continence or control. Non covetousness i.e., not stealing or craving what is not ours.
- 2) Niyam: Cleanliness, Contentment, Concentration, Joy and Worship of God, i.e. Rules for a fulfilling life.
- 3) Asanas: The physical postures that make the body steady and comfortable. That finally leads to steadiness of mind.



- 4) Pranayama: Regular practice and regulation of inhalation and exhalation which is conducive to calmness of mind and body.
- 5) Pratyahar: Gathering up of the sense organs from external objects and turning them inwards.
- 6) Dharna: The first step towards meditation, fixing the mind to the object of meditation.
- 7) Dhyana: Regular practice of Dharna leads one to meditate on the desired object.
- 8) Samadhi: Ultimate end of Yoga. State of enlightenment, joy and being one with God.

Yoga positively influences on the social, interpersonal, mental and spiritual health of the people. Stress is an important issue and growing rapidly in every facet of life. Stress is something which makes one feel uncomfortable. It creates imbalance and the individual makes an effort to restore the state of balance. According to Mechanic (1962) stress is discomforting response of person in particular situation. Lazarus (1966) opines that stress exists when demands on a person are perceived as taxing or exceeding one's capacity of adjustment. Selye (1974) defines stress as a 'nonspecific' response of the body to any demand. A state of stress is composed of the threat called 'stressor' and a 'response' which consists of measurable alteration of physiology and or the behaviour of the individual. Stressors can have significant negative impacts on psychological and physical well-being (Baum, Krantz and Gatchel 1997). Empirical studies by Holmes and Rahe (1967) generated a hierarchical list of events/changes likely to require significant alteration in the ongoing patterns of the individual.

#### **Stress: -**

Stress manifests itself in different ways including fatigue, chronic headache, irritability, swings in appetite or mood, low self-esteem and diminished sex drive. Such adverse reactions are seen to contribute to mental and physical illness. The word for health in Sanskrit is 'Swasthya'. This means to be in your true nature (Swa- true nature, stha- to be in.) It can be defined as a quality of mind that does not distort or obscure reality but reflects it as it is (Pattabhiraman, 2004). Swasthya is a subjective dynamic state of well being of being physically and mentally fit. For number of years mental health professionals believed seeking reality as accurately as possible was the best path to mental health.

#### **Mental health: -**

Mental health is the balanced development of individual's personality and emotions which enable him to live harmoniously

with his fellow men. It is not only his relations with fellow men but his relations towards the community in which he lives, towards the society of which the community is a part and which guides his life and determines his way of living, working, leisure, earning and spending of money, the way he sees happiness, stability and security. The medical criteria of being mentally healthy implied proper functioning of the brain, being sound, having reasoning ability being logical and able to communicate with others without any incoherence.

Antonovsky (1979) opines that health is a highly relative process rather than a state or static condition influenced by the availability of genetic and major psychological resistance resources. Numerous studies evidence the close association between stress and health (Pestonjee 1999, Lazarus and Folkman 1984, Friedman and Rosenman 1974, Selye 1956). The adverse consequences of work stress on health of employees have been identified by researchers (Srivastava 1999, Becher and Newman 1978). Several classical representative studies on stress illness relationship have proved that stressful events lead to several health problems (Mishra and Sinha 1999, Selye 1956). Recent studies reveal that moderate level of stress will lead to adaptive responses, but stress above a threshold point will have adverse consequences on health and outcomes (Taylor 1991). Ramlingaswami (1990) points out contemporary societies, stress of one or other kind has that in become a common source of threat to mental and physical health and well-being of the people, which in turn diminishes the level of commitment in employees.

Stress is an important component in human life. There is relation between stress and mental health. Yoga is an important therapeutic technique for better physical and mental health. Hence the investigator has selected the topic "Study of stress and mental health in Yoga practicing adults and Non yoga practicing adults."

**Aim of the study: -** To find the Stress and mental health of adults who practiced yoga and did not practice yoga during the Corona period

#### **Objective of the Study: -**

- 1) To Study the Stress of adults who practiced yoga and did not practice yoga during the Corona period
- 2) To Study the Mental Health of adults who practiced yoga and did not practice yoga during the Corona period

#### **Hypothesis: -**



The following hypothesis were formulated on the basis of the previous literature.

- 1) Adults practicing Yoga have lower stress level than Non yoga practicing adults.
- 2) Yoga practicing adults have better mental health than Non yoga practicing adults.

**Scope of the Study: -**

- 1) This study is useful for the identifying Stress and mental health in adults
- 2) On the basis of this study, we get some suggestion for developing the mental health and removing stress in adults.

**Method: -**

**Sample**

50 Yoga practicing adults were selected for study from yoga training classes organized at Hanuman Vyayam Prasarak Mandal, Amravati and Yoga class at Deeparchan, Amravati. For the present study adults having minimum 2 years of Yoga practice were selected. The age range was from 30-50 yrs. and 1:1 male female ratio was considered. Taking into consideration the age range and sex ratio 50 adults without Yoga practice were selected. Both the groups were administered the Stress Scale and Mental Health Scale, one after another in a group situation.

Practice Type Sex	Yoga practicing adults	Non-Yoga practicing adults	Total
Male	25	25	50
Female	25	25	50
Total	50	50	100

**Tools to be used: -**

1) Stress Scale developed by Dr. M. Singh. It consists of 40 statements. The reliability of the test was 0.82 and the validity of the test was 0.61 correlated with Bisht stress scale.

2) Mental Health Scale developed by Dr. Kamlesh Sharma. It consists of 60 statements. The reliability of the test ranged from 0.86 to 0.88 and the validity of the test was 0.79.

**Scoring: -**

Scoring of tests was done as per the manuals. Total score of Stress scale gives the level of stress. Total score of mental health scale gives the level of mental health. In this way, score of stress and mental health of 50 yoga practicing and 50 non yoga practicing i.e., scores of 100 adults were considered for the present study.

**Results & Discussion: -**

The mean scores and standard deviation of stress and mental health scores were calculated for the two groups. 't' test was applied to test the

significance of difference between the means of each factor. The results are as follows. Comparison of Mean scores of Stresses of Yoga practicing and

**Table 1**

**Comparison of Mean scores of Stress of Yoga practicing and non-Yoga practicing adults**

Group	Variable	N	Mean	M. D.	S. D.	t-ratio	P Value
yoga practicing	Stress	50	12.50	6.30	8.18	4.62	Significant at 0.01 level
Non yoga practicing		50	18.80		3.98		

Table 1 shows that mean score of stress of yoga practicing group is 12.50 and S.D. is 8.18. The mean score of stress of Non yoga practicing group is 18.80 and S.D. is 3.98. The difference of means is 6.30 and 't' value is 4.62 which is significant at 0.01 level. Hypothesis No.1 is accepted.

It indicates that Yoga practicing group differs significantly on stress level when compared to Non yoga practicing group. The stress level of Yoga practicing group is lower than stress Non yoga practicing adults. The stress level of Yoga practicing adults is significantly low. This may be due to the fact that regular exercise, pranayama, disciplined life in general due to practice of Yoga makes the situations in life less stress giving to the individual. It can be definitely said that Yoga has a positive effect in decreasing stress in life.

**Table 2**

**Comparison of means scores of Mental Health of Yoga practicing and Non yoga practicing Adults**

Group	Variable	N	Mean	M. D.	S. D.	t-ratio	P Value
yoga practicing	Mental Health	50	20.37	1.52	3.30	3.90	Significant at 0.01 level
Non yoga practicing		50	18.85		2.81		

Table 2 shows that mean of mental health score is 20.37 and S.D. is 3.30 for Yoga practicing group. The mean of mental health score is 18.85 and S.D. is 2.81 for Non yoga practicing group. The 't'



value is 3.90 which is not significant at 0.01 level. Hypothesis no. 2 is accepted.

It indicates that Yoga practicing group differs significantly on Mental Health level when compared to Non yoga practicing group. The Mental Health level of Yoga practicing group is lower than Mental Health of Non yoga practicing adults. The Mental Health level of Yoga practicing adults is significantly high. This may be due to the fact that regular exercise, pranayama, disciplined life in general due to practice of Yoga makes the situations in life high Mental Health giving to the individual. It can be definitely said that Yoga has a positive effect in increasing Mental Health in life.

#### Conclusion: -

- 1) There is significant difference in the mean scores of stress in Yoga practicing and Non yoga practicing adults.
  - 2) There is significant difference in the mean scores of mental health in Yoga practicing and Non yoga practicing adults.
- . By practicing yoga, our adults got more benefit in removing their stress and strengthening their mental health during this Corona period.

#### References: -

##### Books: -

- 1) Ahuja R. (2001), *Research Methods*, Jaipur, Prem Rawat Publication.
- 2) Antonovsky. (1979). *Health, Stress and Coping*. San Francisco, Jossey-Bass.
- 3) Barve B. N., (2007) *Shaishnik Manasshastriya Sankhya, Shastra*, Vidyaparakashan Publication.
- 4) Baum A., Krantz D.S. and Gatchel R.J. (1997). *An introduction to health psychology*. 3rd edition. Boston. Mc Graw Hill.
- 5) Deb, Chakraborty, Chatterjee and Srivastava (2008). *Job related stress, causal factors and coping strategies of traffic constables*. Journal of the Indian Academy of Applied Psychology. Vol. 34. No. 1. 19-28
- 6) Deshmukh N.H. (2017), *Researches in Psychology*, Aadhar Publication Amravati.
- 7) Desikachar, T.K.V. (1987), *Patanjali's yogasutras: An introduction*. New Delhi. Affiliated East West Press Pvt Ltd.
- 8) Dunbar H.F. (1997). *Mind and Body*, New York. John Wiley and Sons.
- 9) Holmes, T.H. & Rahe, R.H. (1967). *Life changes - Do people really remember?* Archives of general psychiatry, 36, 376-384.
- 10) Lazarus, R.S. & Folkman, S. (1984). *Coping and adaptation in W.D. Gentry (Ed.) The hand book of behavioural medicine*. New York.

- 11) Mechanic, D. (1962). *Student's stress: A study in the social psychology of adaptation*. New York: Free Press.
- 12) Menninger, K. (1995). *The Human mind*. 3rd edition. New York. Knopf.
- 13) Sharma, K. (1996). *Mental Health Scale*. Jabalpur. Arohi Manovigyan Kendra.
- 14) Singh, M. (2002). *Stress Scale*. Mumbai. Institution of Research and Test development.
- 15) Singh R. (2003) *Yoga and peace of mind*. Indian Journal of clinical psychology. 30 No. 1 & 2. 24-28.
- 16) Taylor S. (1991). *Health Psychology*. New York. Random House.

#### Journal Articles

1. A.J. Veal (2006). *The concept of lifestyle: a review*, Online Journal Leisure Studies, Volume 12, 1993 - Issue 4 Pages 233-252 | published online: 22 Aug 2006, <https://doi.org/10.1080/02614369300390231>
2. Chaney E. H., Chaney J.D., Wang M.Q. and Eddy J.M. (2007). *Lifestyle behaviours and Mental Health of American adults*, Psychological Reports, 100(1). Pp. (294-302)
3. Dariush D. FARHUD *Impact of Lifestyle on Health*, Iranian Journal of Public Health, Iran J Public Health, 2015 Nov; 44(11): 1442-1444.

##### Web Pages: -

1. C3 collaborating for health (2011). *The benefits of physical activity for health and wellbeing*. Available at: [www.c3health.org/www-content/uploads/2009/09/C3-review-of-physical-activity-and-health-v-1-20110603.pdf](http://www.c3health.org/www-content/uploads/2009/09/C3-review-of-physical-activity-and-health-v-1-20110603.pdf). Accessed: 1 Oct 2014.
2. Dunn AL, Anderson RE, Jakicic JM. (1998). *Lifestyle physical activity interventions: history, short and long term effects and recommendations*. Am J Preven Med, 15 (4): 398- 412. [PubMed] [Google Scholar]
3. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC2777660/>
4. Gorjiposhti, Marzieh (2008). *A study of change in the lifestyle of urban women in Tonekabon city in Iran*, [https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/3779/9/09\\_chapter%201.pdf](https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/3779/9/09_chapter%201.pdf)
5. <http://hdl.handle.net/10603/3779>
6. Kaniyala Melthotas, Baniks, Chakraborty I., Pallen S, Gopal D, Chakraborty S, Mazumdar N. (2020). *Elucidating the microscopic and computational techniques to study the structure and pathology of SARS-CoVs*. <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/32770582/>



7. Karimi M, Heidarnia A, Ghofranipur F. (2010). *Effective factors on using medication in aging by using healthy believe.* Arak Med Uni, 14 (5): 70-78. [Google Scholar]
8. Khan A,----- (2020) *Phylogenetic Analysis and Structural Perspectives of RNA-Dependent RNA-Polymerase Inhibition from SARs-CoV-2 with Natural Products*
9. <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/32617855/>
10. Maslow, A. (1968). *Towards a psychology of being*. New York: Van Nostrand.
11. Mikael Jensen (2008), *Defining lifestyle*, Online Journal Leisure Studies, Volume 12, 1993 - Issue 4, Pages 63-73 | Published online: 25 Jun 2008, <https://doi.org/10.1080/15693430701472747>
12. Myint S, Johnstone S, Sanderson G, Simpson H. *An evaluation of 'nested' RT-PCR methods for the detection of human coronaviruses 229E and OC43 in clinical specimens.* Mol Cell Probes. 1994;8:357-364. [PMC free article] [PubMed] <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/7877631/>
13. Psychology dictionary professional reference, <https://psychologydictionary.org/lifestyle/>
14. Sanchez CM, Jimenez G, Laviada MD, et al. (1990) *Antigenic homology among coronaviruses related to transmissible gastroenteritis virus.* Virology. 1990;174:410. [PMC free article] [PubMed] <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/1689525/>
15. Spaan W, Cavanagh D, Horzinek MC. (1988) *Coronaviruses: structure and genome expression.* Gen Virol. 1988;69:2939. [PubMed] <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/3058868/>
16. Yadav Arjita (2017), *Lifestyle and temporal behavior in human*, <http://hdl.handle.net/10603/196325>

Ambhae Mada

LJ

# Loknayak

Interdisciplinary Peer Reviewed Journal  
For Innovative Research And Evaluation

ISSN (L) 2278 - 4284

Issue :  
January  
2022  
Vol. : IX



# - I N D E X -

Sr. No.	Title / Name of the Author	Page No.
1	इतिहास लेखनात हिंगोली जिल्ह्यातील नाणे संग्रहाकांचे योगदान डॉ. राजाराम रा. पिंपळपळे	1
2	A Comparative Study on Food Intake Pattern of Home Science and Arts Faculty Girl Students Dr. G. A. Bhalerao	13
3	Gender Differences in Mental Stress and Mental Health of Employees Vidhya T. Ambhore	17
4	Human Relationships Present in Jaishree Misra's Novel 'Afterwards' Ajay Madhukarrao Kalmegh	21
5	Hardy's 'Tess of the d'Urbervilles' as a Pessimistic Novel. Dr. G.B.Mane	26
6	Stress And Women's Health Dr Sarita Deshmukh	28
7	नवइतिहासवाद : संकल्पना, व्याप्ती व मर्यादा डॉ. धनंजय देवळालकर	33
8	डॉ. जयंत नारळीकर : मराठी साहित्याला समृद्ध करणारा विज्ञान लेखक डॉ.आबासाहेब उतप सरवदे	36
9	भारतीय शास्त्रीय संगीतात पूर्णवादाचे स्थान प्रा.संगीता चाटी	40
10	सम्राट अशोकाच्या स्थापत्य कलेतून प्रतिबिंबित होणारे नैतिक विचार प्रा. डॉ. विलास विठ्ठलराव गुजर	44
11	चित्रपट सृष्टीतील अलौकीक चानोचकार पं. रवीन्द्र जैन प्रा. डॉ. ज्वाला नागले	48
12	सतगुरुवाचे अभिनव तंत्र - वैयक्तिक सतगुरु डॉ.स्मिता जाधव	54
13	नाथजोगी समाजाचे पारंपारिक लोकसंगीत - भारुड चिराग रामभाऊ चोरवार	59

## Gender Differences in Mental Stress and Mental Health of Employees

Vidhya T. Ambhore

Asst. Professor

Dept. of Psychology

Mahatma Jyotiba Fule,

Mahavidyalaya Amravati.

### Abstract :

The present study was aim to analyzed the Gender Differences in Mental Stress and Mental Health of Employees. For this study 100 (50 male and 50 female) employees in the age range of 30 to 40 years are selected from various workplaces in Amravati. The present investigation has been discussed to assess the gender difference in mental stress and mental health of employees.

**Key Words :** Mental Stress, Mental Health, Gender Differences, Employees

### Introduction

In India, with urbanization, industrialization and changing demands of the society, women are leaving their place in the traditional household & kitchen and taking participation in the workforce especially in the past few decades. The gender differences occur due to cultural norms and behaviour. Psychologists are increasingly interested in the study of gender differences in various organizational behaviour topics such as stress, social motives, emotions, career achievements, role conflicts and satisfaction. Stress is a common feature of organizational life across all occupational domains (Cooper 1998, Hancock and Desmond 2001). Some research has been conducted in the area of gender differences in occupational stress (Baruch and Barner 1987, Martocchio and O'Leary 1989, Mc Donald and Korabik 1991). Stress is an internal state which can be caused by physical demands on the body or by environmental and

social situations which are evaluated as potentially harmful, uncontrollable or exceed our resources for coping (Lazarus and Folkman 1984). All people feel stress sometime or other but people react to stress in different ways. According to Steptoe (1997) stress responses are said to arise when demands exceed the personal and social resources that the individual is able to mobilize.

Martocchio and O'Leary (1989) found no significant difference in occupational stress between men and women. On the other hand, Mc Donald and Korabik (1991) found that women reported being subjected to different types of stress than did men. Females have significantly higher stress than males (Kumari & Prakash 1986, Miller 1990, and Singh 2004). Stress related conditions are among the most important health problems of 1990's for people at work and outside of work (Miller 1990). Different responses to stress depend upon the personality dimensions of different individuals.

Coping with stress in men and women can be explained through socialization and two competing hypotheses i.e., role constraint. Positive coping consequently results in satisfaction and pleasant emotions which denotes his/her subjective well-being. Folkman and Lazarus (1980) studied gender differences in coping strategies and reported that when individuals encounter situations, men tended to engage in problem focused coping more often than women. Several classical representative studies on stress illness relationship have proved that stressful events lead to several health problems (Mishra & Sinha 1999, Selye 1956).



Mental health is the ability of human beings to adjust to the world and to each other with maximum effectiveness and happiness. (Menninger 1945). Mental health refers to the development, preservation, prevention, treatment and enhancement of total personality in all its varied aspects. It deals with individuals, groups and social institutions as interdependent systems. According to the dual factor theory of mental health, both negative and positive aspects need to be considered together and not separately. Positive mental health is an attitude, a way of life, nurturing of competencies to deal with the exigencies of everyday life. This competence prepares an individual to learn the skills of "how" and "when" to do things. Sorensen and Verbrugge (1987) in their study of women, work and health have highlighted the importance of multiple roles, responsibilities and role conflicts to have a negative impact on mental health of women in addition to their biological and physiological problems. Very few studies have been done in context of gender differences and mental health.

Gender plays an important role in human development and adjustment. We observe gender differences in behaviour through socialization and cultural norms. Cultural norms and role behaviour do affect the personalities of males and females. The upbringing of boys and girls in childhood and even later is different in Indian society. This may lead to different personality characteristics based on gender, social constraints and socialization effects. Stress is unavoidable characteristic of the work environment which threatens the individual's psychological and physiological homeostasis (Mc Donald and Korabik, 1991) Extensive research related to occupational stress and coping strategies among managers, administrators, teachers and police professionals has been done. But very little research is focused on gender differences on stress and mental health of employees, particularly in India. It is important for employees and work organization to understand how male and female

employees differ in their stress and mental health. Hence the purpose of the present study is to determine the gender differences on stress and mental health.

**Aim of the study :** To find the Gender Differences in Mental Stress and Mental Health of Employees.

**Objective of the Study :**

- 1) To Study the mental stress of male and female employees.
- 2) To Study the mental health of male and female employees.

**Hypothesis :**

Following hypotheses are formulated.

- 1) There is a significant difference in the level of mental stress of male and female employees.
- 2) There is a significant difference in the level of mental health of male and female employees.

**Scope of the Study :**

- 1) This study is useful for the identifying mental stress and mental health in employees.
- 2) On the basis of this study, we get some suggestions for developing the mental health and removing stress in employees.

**Method :**

**Sample :**

Hundred (50 male and 50 female) employees in the age range of thirty to forty years are selected without any bias, through random sampling technique from various workplaces of Amravati. Male and Female employees are selected in order to cover all levels of socioeconomic status of the society.

**Tools :**

- 1) Mental Stress Scale of Dr. Singh (2002). The scale consists of 40 statements, each to be related to the three-point scale. Reliability coefficient of the scale was estimated by split half method and test-retest method. The correlation is and to be 0.82 and 0.79 respectively. Validity coefficient was



computed with Bisht Battery of Stress Scale and correlation is found to be 0.61.

2. Employees Mental Health Inventory by Dr. Jagdish (1985). The scale is used to assess the mental health of employees working in different organizations. There are 45 statements, responded with two alternatives "Yes" and "No". The index of reliability through the split half method is 0.89. The inventory possesses content validity and construct validity with a coefficient of correlation of 0.57.

#### Procedure :

Every employee was seated comfortably and an informed consent was taken regarding participation in the study. Participants were assured that their responses, scores, results and the information obtained would be kept confidential and used for research purpose only. The tests were administered to the employees in small groups or individually. Responses to the stress scale and mental health inventory were noted down. The tests were administered strictly according to their prescribed manual of instructions. In this manner, 100 completed cases consisting of 50 male and 50 female employees were collected. Scoring of the tests was done as per the manuals and these scores were used for statistical analysis.

#### Results and Discussion :

The present investigation has been undertaken to assess the gender difference in mental stress and mental health of employees. The data was collected from 100 (50 each) male and female employees. The data has been organized and described to yield the statistics namely mean, standard deviation to study the general nature of the data for the variables of mental stress and mental health. To find out the significance of difference between the means of the two groups, the t ratios for various variables of the study were worked out for the male and female employees. The results and

Sl. No.	Group	Variable	N	Mean	Diff. between Mean	S.D.	t value
1	Male	Mental Stress	50	18.00	3.67	9.83	1.06**
	Female	Stress	50	21.67		1.97	
2	Male	Mental Health	50	20.87	1.52	2.27	1.01*
	Female	Health	50	19.85		3.25	

\* Significant at 0.05 level

\*\* Significant at 0.01 level

Table 1 shows that the mean score of stress in case of male employees' group is less (18) than the mean score of female employees' group (21.67). The difference between the two mean scores is 3.67 and significant at 0.05 level. It indicates that male and female employees significantly differ on stress. Hypothesis No. 1 is accepted.

Table 1 shows that the mean score of mental health in case of male employees' group is higher (20.87) than the mean score of female employees' group (19.85). The difference between the two mean scores is 1.52 and significant at 0.01 level. It clearly indicates that male and female employees' groups differ significantly on mental health. Hypothesis No. 2 is accepted.

Male employees have significantly better mental health. The explanation may be that males understand and acknowledge the feelings of self and others. It improves their interpersonal relations. They deal with the source of negative feelings confidently. Through cognitive behaviour type, they regulate their daily life so as to reduce stress which may contribute to better mental health.

#### Conclusion :

1. There is significant difference in stress among male and female employees.
2. There is significant difference in the level of mental health of male and female employees. Male employees have better mental health than female employees.

It is crucial that work organization should recognize that both men and women are important resources. Such steps should be taken to assist employees, especially female employees for increment of emotional intelligence and better mental health in their professional development and career achievement.



Female employees make a sizeable portion of work force of many organizations. It is essential for any organization to have a stress free, emotionally intelligent and mentally healthy work force for optimum benefits. Therefore, steps should be taken specially to assist the female employees to increase emotional intelligence and have better mental health. Strategies like exposure, freedom, unconditioned love and social support may contribute for the increment of the emotional intelligence and better mental health of female employees.

#### References :

- 1) Bar-on, R. and Steven, J. S. (1997). Speech at the 50th Anniversary Celebration of Toronto's Jewish Vocational Services.
- 2) Baruch, G. K., Biener L. and Barnerr R. C. (1987). Women and gender in research on work and family stress. *American Psychologists*, 42, 131
- 3) Bhatpahari, G. and Ajwani, J. C. (2006). Role of emotional intelligence and sex in altruism. *Doctors Research, Unpublished*.
- 4) Cooper, C. L. (Ed.) (1998). *Theories of organizational stress*, New York. Oxford University Press.
- 5) Folkman, S. and Lazarus, R. S. (1980). An analysis of coping with stress. In C. L. Cooper and R. Payn (Eds.) *Causes, coping and consequences of stress at work*. Toronto. Wiley. 223-263.
- 6) Garrett, H. E. (1981). *Statistics in psychology and Education*. Bombay. V.F.S. Godzella, B. M. et al (1992). Differences between men and women on stress producers and coping strategies. *Psychological Reports*, 69, 561-562.
- 7) Goleman, D. (1995). *Emotional intelligence*. New York. Bantam Books.

\*\*\*



Peer Reviewed Refereed and UGC  
Listed Journal (Journal No. 47100)



ISSN 2279 - 0489  
AN INTERNATIONAL  
MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY  
RESEARCH JOURNAL

# GENIUS



Volume - X, Issue - I  
August - January - 2021-22  
English Part - I / II

Impact Factor / Indexing  
2019 - 6.631  
[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

**Ajanta Prakashan**



## 15. Geographical Study of Hydroelectric Power in India

**Dr. Swati D. Girase**

Assi. Prof. of Geography, Mahatma Jyotiba Phuley, Mahavidyalaya, Amravati.

---

### Abstract

Our earth is water planet. An as average 71% part of the earth surface is covered by water. So the earth is known also blue planet. Water is most important element for the environment. Hydrological cycle generate water in different forms in the earth environment. Velocity for the water is made by geomorphic condition of the earth crust. Velocity of the water is a kinetic energy. This kinetic energy is converts into the mechanical energy and generate the electrical energy is known as hydel energy. In India hydel energy is prime sources for the electricity. It has the past history from the human civilization. Now a day total generation of hydel energy in India is 148,700 MW. India is 5<sup>th</sup> largest nation for hydroelectricity in world. Hydel electricity is eco-friendly. Indian major dam are made production of hydel electricity with the agricultural irrigation system. Now a day government of India is trying to gain the more efficiency from the hydel electrical project. These projects are working in the hilly remote region that's why these are useful in the tribal and backward region.

### Introduction

Man was aware about the hydel energy from the past period. Evidences suggests that the fundamentals of hydropower by the ancient Greek Civilization. (Hernandez) He was using this water energy for the domestic activity also. Hydropower is a method of sustainable energy production. (Milewki, 2002) At the global level 17% electricity is generated from the hydroelectricity. (electricity, 2021) At the world level more than 150 countries are generating the hydroelectricity. This is clean source of the electricity so it is known as the white coal of energy. (knowledge, 1945) When water is coming from high land toward the low land, it develops the kinetic energy. Man is using this kinetic energy in his different activity is known as the hydel energy. India is one of largest producer of hydroelectricity after the China, Brazil, Canada, USA, and Russia. India made 4% of the world hydroelectricity. First hydroelectric plant was began at Niagara water fall in 1881. There is different kinds of technology to construct the hydroelectricity

plant by conventional dam are most suitable. Most of the hydroelectric power plant had made potential dammed water driving a water turbine and generate the electricity. (Maganine) In India hydroelectric power plant was stated in 1889 at Darjeeling. Most of Indian hydroelectric power stations are public sector. Indian company has constructed some hydropower project in Bhutan and Nepal (India, 2016). In India there are 197 are major hydroelectric plant. These power plants are constructed by NHPC, SJVN, NTPC and NEEPCO. Most of the hydroelectricity is generate in the Uttarakhand, Maharashtra, Andhra Pradesh, Himachal Pradesh and Gujarat. In India maximum electricity is generated by coal. Hydroelectricity production is 15%. Hydroelectric power is generate mostly flow of water. Running water generate the kinetic energy. It converts into the electrical energy. India is third largest producer and third largest consumer of electricity of the world it had installed capacity of 383 Gw. (power, 2020) It has installed hydroelectricity power plant. India had also achieved close to 100% electrification of the rural area. (Energy, National Electricity Plan, 2018) Hydroelectricity is the biggest hydropower application. It generates lot of world electricity. Today more than the 50% of total electricity supply for more than 35 countries of the world. (Kaygusuz, 2016)

**1. Tehri Hydropower Project:** This is one of the tallest dam of the world. Maximum capacity of this plant is 2,400 Mw. This is multi-purpose dam in which water irrigation facility is supply to the Uttar Pradesh and Haryana state.

**2. Koyna Hydroelectric project:** This hydroelectric project began in 1954. It is constructed on Koyna River. It has 2000 Mw. Power capacity. This dam is located in the western Ghat. It generates the electricity and supply for Satara and surrounding district. Though it is one of old plant but it has good efficiency even today. This plant is operated by Maharashtra State Power Generation Company.

**3. Srisaillam Hydropower project:** This hydropower project is owned by Andhra Pradesh Government. It has 1670 Mw power capacity. This project is located on Krishna River. This electricity is useful for the Kurnool and Mahabubnagar district. Some electricity is applicable for the Telangana state also.

**4. Nathpa Jhkri Hydropower project:** This power project is located in Himachal Pradesh. It has 1520 Mw. Power capacity. This is gravity dam project. It is operated by Sutlej Jal Vidyut Nigam.



location. There is habitat fragmentation of surrounding region of hydroelectric plant. (Paul, 2007) Such a case is happen in China; three Gorges dam in china has made the migration of local people (Bosshard)

### Conclusion

Hydro-electricity is renewable source of electricity. At the global level it has large scope. In India, most of hydroelectricity plants are established on the multipurpose dam. So there is double benefit as electricity and irrigation. India is monsoon climatic nation. So in the rainy and winter session, it generates maximum electricity. In Ahmednagar district there is need of electricity is 1300 Mw. Hydroelectricity is generating 250 Mw. Both of these two hydroelectric plants are located in the tribal and hilly region. That's it take part in the regional development. India had also achieved close to 100% electrification of the rural area.

### References

- Bosshard, P. (n.d.). Three Gorges Dam. International Rivers.
- Electricity, i. (2021). Electricity Genration by source indicator.
- Energy, D. o. (2018). National Electricity Plan.
- Energy, D. o. (n.d.). National electricity plan.
- Hernandez, M. (n.d.). Pratical studies the hydroelectric power plant. Springer.
- India, G. o. (2016). Hydro Electric potential in India.
- Kaygusuz, K. (2016). Hydropower as clean and renewable energy. Journal of Engineering Research.
- Knowledge, B. o. (1945). Hydropower.
- Maganine, E. T. (n.d.).
- Milewki, J. C. (2002). Energy Policy. ELSEVIER.
- Paul, R. (2007). Hydropower. Encyclopedia of Environment and society.
- Power, M. o. (2020). Growth of Electricity Sector in India. Govenment Repost.

**5. Sardar Sarovar Hydropower Project:** The capacity of this power project is 1,450 Mw. capacities. It is constructed on river Narmada near Navagam in the Gujarat state. Due to the environmental issues it is stated late in 2017. The height of this dam is 138 meter. Electricity of this dam is useful for Gujarat, Maharashtra, Rajasthan and Madhya Pradesh.

**Hydro Electric Project in Maharashtra:** Maharashtra state is one of the leading state for hydroelectricity in India. Most of these power projects are located in the western site of Western Ghat. These hydroelectric plant are- Bandardhara, Bhira, Bhivpuri, Dimbe, Jayakwadi, Khadkawasala, Koyana, Pawana, Radhanagari and Yeldari. In the mountain ranges of the western ghat has the lot of sites for generation of the hydro-electricity.

**Hydroelectric Power Station in Ahmednagar District:** This district has Harichandta and Balaght ranges. Average height of district is 540 meter form the sea level. It has monsoon rain fall. In this district, it had two sites for the hydro electrical power as Bhandardara Hydroelectrical power projects it is located on the river Pravara. It was began from the 1986. Total capacity of this project is 25 Mw. It has two turbines. This project is under the Government of Maharashtra. This dam provides the water for the irrigation network of Akole, Sangamner. Shrirampur taluka. Electricity is connected with the Bableshware electrical board.

Nilwande Dam is a gravity dam built using the roller compacted concrete. This is a first dam of this technology in India. This dam is located near the Ghatghar village in Ahmednagar district. This project has the capacity of 250 Mw. This hydroelectric power project is started in 2008. It is under the irrigation department of the Maharashtra Government.

**Advantages of Hydroelectric Project:** Energy is most necessary for the national development. This is green source of the energy. This is renewable energy. After the generation of the electricity, Water is useful for the irrigation purpose another benefit is to control the flood and supply the water for agriculture and drinking purpose. Hydro electricity is useful for the rural and tribal development. These hydroelectric projects are multipurpose. There will be develops the plant of fishing, swimming and boating also. This is a domestic source of electricity for the each of the state. Hydro power takes zero power but it has the maximum output of the electricity.

**Disadvantes of Hydroelectricity:** hydroelectricity project are badly effecting on the forest environment. It also effecting on the migration of tribal people in that area. In have flood risk in the rainy period. Another effect on the water ecosystem. As the economic view it is expensive than other power plant. As the Geographical view, it has need of ideal geomorphic



# An International Multidisciplinary Half Yearly Research Journal

## Genius

ISSN - 2279 - 0489

Volume - X, Issue - I, August - January - 2021-22

Impact Factor 2019 - 6.631 ([www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com))

Is Hereby Awarding This Certificate To

Dr. Swati D. Girase

In Recognition of the Publication of the Paper Titled

Geographical Study of Hydroelectric Power in India

**Ajanta Prakashan,**

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004  
Mob. No. 9579260877, 9822620877 Tel. No.: (0240) 2400877,  
[ajanta6060@gmail.com](mailto:ajanta6060@gmail.com), [www.ajantaprakashan.com](http://www.ajantaprakashan.com)

Editor : Vinay S. Harole



Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed Journal



ISO 9001:2008 QMS  
ISBN / ISSN



Dr. S. D. Girase



Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed Journal  
Journal No. 40776

ISSN 2277 - 5730  
AN INTERNATIONAL  
MULTIDISCIPLINARY  
QUARTERLY  
RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Impact Factor /  
Indexing

2019 - 6.399

[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

Volume - X, Issue - III  
July - September - 2021  
English Part - II

**Ajanta Prakashan**



## 24. Geographical Study of Solar Energy Resources in India

Dr. Swati D. Girase

Assi. Prof. of Geography, Mahatma Jyotiba Phuley, Mahavidyalaya, Amravati.

### Abstract

Sun is prime source of energy for the earth planet. On the sun surface, there is nuclear fusion in which hydrogen is converting into helium. It creates the solar radiation. When this radiation waves are coming on the earth surface it convert into the long wave radiation. It starts to generate the heat. Heat is energy; it has ability to do the work. Number of weather and atmospheric phenomena is form due to the solar radiation. In human activity solar energy is useful for the to run the different kinds of small equipment, water heater, in settlement building, as a domestic cooking, water purification, in agriculture, horticulture and in transportation vehicle. Now a day it is more useful for the generation of electricity. Solar energy is clean energy. Today 13% of the world electricity is generated with the help of the solar radiation. In the coming next period, solar energy has more scope in the electricity field. These electricity is applied for local and global level.

### Introduction

Sun is star; because of it has ability to generate the heat and light. Sun is located in center of the solar family. As average view, age of the sun is consider as 5.5 billion year old. It is more elder than the earth planet. There is continuous process of nuclear fusion is going on the surface of the sun. Solar constant of the earth surface is approximately 1.941 calories per minute per square centimeter. (Kopp, 2011) This energy has capacity to generate the heat energy. On the equatorial region has more heat than the polar region. This is effect of the angle of the solar rays. These solar rays has right angle on the equatorial region. There are number of Geographical factors are affecting on this solar energy distribution as the coastal area, height of the region, distance from the equatorial region. As we go equatorial region to the polar region, temperature become low as latitude values become high. This phenomenon is effecting of the weather element. Wind is product of different in solar radiation. (Huang Junling; McElroy, 2015) Man has apply

this solar energy in the following activity as- Thermal energy, Water heating, for human settlement, cooking activity, domestic heating, water purification, for formation of salt, agriculture and urban planning, transportation and generation of electricity. Solar energy has develops special kinds of ecosystem in the earth biosphere.

**Thermal Energy:** Earth surface convert short wave radiation in to the long wave radiation and generate the heat energy.(Huang, 2015) This kind of process made the heating process on the earth surface, which is useful for the formation of wind energy. Solar radiation are effecting on the atmospheric pressure location on the geographical region. It also effecting on the rate of evaporation. Man has used this thermal energy in the number of domestic and other agriculture activity. The another minor uses of heat energy is water heating. According to the Frank Shuman, this solar energy has more capacity to generate the energy. It is unlimited power from the solar radiation. This energy is useful for commercial profit and upliftment of all kinds of humansociety and culture.(Shuman, 1916) On the basis of this thermal energy, earths climatic division and classified as Equatorial region, tropical region, temperate and polar region.

**Water Heating Activity:** With the help of special kinds of the heating equipment, there are water heaters. It converts the solar radiation into the heat. This technology is useful in the industrial activity for cleaning and processing purpose, It save lots of electrical energy and the fuel in settlement, hospital and the hostel. Israel, Cyprus and Greece nation are using more solar water heater. This system is supporting for most of 40% the houses. (Chiaro, 2007)

**Human Habitation Activity:** Shelter in one of basic need of human being. Building has a need of light and energy. Solar light save lot of electricity. Today by application of different types of technology and geometrical arrangement of houses, lot of solar energy is applying. Now a day modern construction of the house made the energy audit as the maximum utilization of solar energy in regular day today activity.

**Domestic Cooking Activity:** Intensive sunlight can be generating lots of heat power. This heat energy is applicable for the cooking activity. There are three kinds of solar cookers as box cooker, panel cookers and reflector cooker. In this equipment parabolic dishes are most effective to collect the solar heat energy. The cooking equipment has made by solar energy collection mechanism. This kind of technology is most applied for the tropical nation.

**Water Treatment Plant Activity:** Pure water is need for human health. With the help of solar light, Water can be made more pure. Man was very familiar for this treatment from the



medieval period. The first reference, 16<sup>th</sup> century Arabian people was using solar light for the water treatment. Temperature of the water is most helping for the water from the micro- organism. In the developed nation, millions of people use this method for their daily drinking water. (USAID, 2008) Pure water is prime need of human health.

**Solar Energy in Electricity Production:** Solar energy can be use for generation of electricity. There are two mode of the solar electricity as photovoltaic and lenses or mirror method. Generation of solar energy plant is started form the 1980. Solar electricity has contributed 15% total global electricity. It has the 1.3 % growth rate. (Agency, 2014) Solar energy is new need of the world. It is eco-friendly sources of the electricity.

**Solar Energy and Urban Planning:** Solar radiation is effecting on the human settlement. Solar energy can be gives the light and temperature for the houses. It can be save lot of the electricity. That's why urban planner is applying the utilization model in his urban planning.

**Agriculture and Horticulture:** Vegetation made the food with the help of photosynthesis. The modern greenhouses convert the solar energy into to the domestic activity and the other uses are as food processing and conservation activity. Solar dryer is useful for food grain conservation.

**In the Transportation Network:** Now a day there is shortage of the fuel. With the help of modern technology, solar energy is useful for transportation network. Burning of the coal and petroleum made the issues of global warming. Solar and wind energy is a source of green energy. This is a source of renewable energy. In the modern technology, motor vehicle, boat, airplane is working with the help of solarenergy.

**Solar Energy and Fuel Production:** In the process of the solar chemical process, solar radiation is useful for derive the chemical reactions. By this process it made the artificial photosynthesis. (Wasielowski, 1992) Solar energy lot of scope in the tropical climatic zone

**Solar Energy and Energy Storage Method:** Thermal mass system can store solar energy. This is type of renewable themal energy. This electricity can be store by the battery and use as the need. In the tribal region this function is useful for the tribal zone upliftment. India is applying this technology for the rural and remote area development.

**Solar Energy and Economic Development:** Solar energy is useful for the deployment and fuel. Industrial revolution was possible due to the coal element. Developed nation USA

made commercial solar water heaters in began appearing in the 1890(Perlin, 1981)after, 2000 worldhad to use of maximum solar energy than the petroleum and coal energy sources.

### Conclusion

Hence, Sun is prime source of heat and light on the earth surface. This solar radiation is spread all over the earth surface. China and USA is generating lot of electricity for the solar radiation. With the help of solar energy developing nation can be made progress as economic and social activity. In coming period, maximum instrument is run by solar energy. India is tropical climatic nation it has more scope in wind energy sector, carbon energy sources had made the issues of global warming. Now a day it a need to use the green energy sources. As a population growth and global demand of electricity, solar and wind energy has more scope in regional and rural development.

### References

- Agency, I. E. (2014). Technology Roadmap : Solar Photovoltaic Energy. IEA.
- Chiaro, B. D. (2007). Solar Water Heating. Los Angeles: Environment California.
- Huang Junling; McElroy, M. B. (2015). A 32 Year Perspective on the origin of Wind energy in a Warming Climate. Renewable Energy, 482-92.
- Huang, J. (2015). A- 32 year Perspetive on the origin of wind energy in a warming climate. Renewable Energy, 482-92.
- Kopp, G. (2011). A new lower value of total solar irradiances : Evidence and climate significance. Geophysical Research letters.
- Perlin, B. a. (1981). 117.
- Shuman, F. (1916). American Inventor Uses Egypts Sun for Power. New York: The New York Times.
- USAID. (2008). Household Water Treatment Options in Developing Countries. CDC.
- Wasielewski. (1992). Photoinduced electron transfer in superamoleculaare systems for artificial photosynthesis. Chemical Rev., 92.:435-61.





Peer Reviewed Refereed  
and UGC Listed Journal

# An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal

# AJANTA

ISSN - 2277 - 5730

Volume - X, Issue - III, July - September - 2021

Impact Factor 2019 - 6.399 ([www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com))

ISO 9001:2008 QMS  
ISBN / ISSN



Is Hereby Awarding This Certificate To

**Dr. Swati D. Girase**

In Recognition of the Publication of the Paper Titled

**Geographical Study of Solar Energy  
Resources in India**

**Ajanta Prakashan,**

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004  
Mob. No. 9579260877, 9822620877 Tel. No.: (0240) 2400877,  
[ajanta6060@gmail.com](mailto:ajanta6060@gmail.com), [www.ajantaprakashan.com](http://www.ajantaprakashan.com)

Handwritten signature of the editor, Vinay S. Hatole.

Editor : Vinay S. Hatole

(SJIF) Impact Factor-8.575  
ISSUE No- (CCCXXXIX) 339

ISSN-2278-9308

# ***B.Aadhar***

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2022

**Sustainability Management: Concept,  
Applications and Research Opportunities**



**Prof. Virag.S.Gawande**  
Chief Editor  
Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

**Dr.Vijay Tompe**  
Editor

G. S. Tompe Arts Comm & Sci. College Chandur Bazar Dist. Amravati

**Dr. Sachin Bhombe**  
**Dr. Shashikant Dupare**  
Co-Editors

G. S. Tompe Arts Comm & Sci. College Chandur Bazar Dist. Amravati

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher



## महाराष्ट्रातील पाणी संकट समस्या आणि उपाययोजना

डॉ. स्वाती डी. गिरासे

सहाय्यक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले महविद्यालय, अमरावती.

सारांश:-

भूतालावरील मानव हा अत्यंत बुद्धिमान प्राणी असून त्याने आपले जीवन सुखकर बनवण्यासाठी नैसर्गिक साधनांचा वापर केला. निसर्गात सहजतेने उपलब्ध होणारा घटक म्हणून जल खोलांमध्ये आजवर पाहिले गेले. परंतु हवामान बदल आणि मानवाने केलेला जलाचा अतरेकी वापर यातून पाणी संकट अथवा जल दुर्भिक्ष हे नवीन आव्हान जगापुढे उभे आहे. भारतातील एकूण जलसंपत्तीच्या तुलनेत महाराष्ट्रात १४.५९% पाणी साठा उपलब्ध असूनही महाराष्ट्रातमागील काही दशकापासून ब-याच जिल्ह्यांत उन्हाळ्यात पाण्याची टंचाई निर्माण झालेली दिसते. त्यातल्यात्यात विदर्भ आणि मराठवाडा मधील अधिकांश जिल्ह्यांमध्ये उन्हाळ्यात पाण्याचे दुर्भिक्ष कायम जाणवते. महाराष्ट्रात येत्या काही दशकात दुष्काळापेक्षाही गंभीर परिस्थिती निर्माण होण्याची शक्यता आहे, या समस्येला वेळीच आवर घालणे काळाची गरज आहे. म्हणूनच प्रस्तुत शोध निबंधात महाराष्ट्रातील पाणी संकट समस्येचे अवलोकन करण्यात आलेले असून या समस्येच्या सोडवणुकीकरिता उपायही सुचविलेले आहेत.

बीजसंज्ञा :- अपुरे पर्जन्य, जल दुर्भिक्ष, पाणी टंचाई.

प्रस्तावना :-

बहुराजा वसुंधरा असे आपल्या पृथ्वीला संबोधण्यात येत असून पृथ्वीवरील अमूल्य असे नैसर्गिक संसाधन म्हणून पाण्याकडे पहिले जाते. मानवाच्या विकासाच्या पार्श्वभूमीचे अध्ययन केले असता असे दिसते की, हव्प्पा, इजिप्त, मेसोपोटेमिया या प्राचीन संस्कृतींचा विकास हा जय ठिकाणी जलाची पर्याप्त उपलब्धता आहे त्याच ठिकाणी झाला म्हणजेच सर्व सजिवांना पाण्याची नितांत आवश्यकता असून सजिवांच्या जीवनाचा आधार पाणी आहे. भारताचा तसेच महाराष्ट्रात पावसाचे प्रमाण योग्य व धरणाची संख्या अधिक असूनही उन्हाळ्यात अनेक जिल्ह्यांमध्ये पाणी टंचाईची समस्या निर्माण होताना दिसते. तसेच भारतातील एकूण जलसंपत्तीच्या तुलनेत महाराष्ट्रात १४.५९% पाणी साठा उपलब्ध असूनही विदर्भ आणि मराठवाड्यामधील अधिकांश जिल्ह्यांमध्ये उन्हाळ्यात पाण्याचे दुर्भिक्ष कायम जाणवते. बदलत्या हवामानाचा प्रभाव मागील काही वर्षांपासून महाराष्ट्रावर होत असल्यामुळे उन्हाळ्यात दुष्काळाची स्थिती निर्माण होत आहे. त्यामुळे उपलब्ध असलेल्या पाण्याचा अपूर्ण वापर करणे व त्याचे योग्य पद्धतीने संवर्धन करणे तसेच ते प्रदूषित होण्यापासून वाचविणे हे आपल्या सर्वांचे कर्तव्य आहे. अन्यथा महाराष्ट्रात येत्या काही दशकात दुष्काळापेक्षाही गंभीर परिस्थिती निर्माण होण्याची शक्यता आहे, म्हणूनच महाराष्ट्रातील पाणी संकट समस्येचे अवलोकन या शोध निबंधात करण्यात आलेले असून पाणी संकट या समस्येच्या सोडवणुकीकरिता उपायही या शोध निबंधाच्या माध्यमातून सुचविण्यात आलेले आहेत.

संशोधनाचे उद्दिष्ट्ये :-

१. महाराष्ट्रातील पाणी संकट समस्येची पार्श्वभूमी जाणून घेणे.
२. अभ्यास प्रदेशातील पाणी संकट समस्येचा आढावा घेवून या समस्येचे विश्लेषण करणे.
३. महाराष्ट्रातील पाणी संकट समस्येच्या निर्मूलनार्थ उपाय सुचविणे.

अभ्यासाची गृहितके

महाराष्ट्रातील पाणी संकट समस्येच्या अभ्यासाकरिताचे गृहितक पुढील प्रमाणे :-

बदलत्या हवामानाच्या प्रभावामुळे तसेच भूजल साठ्यांच्या अतरेकी उपश्रयामुळे व अनियोजित पाणी वापरामुळे महाराष्ट्रात पाणी संकट समस्या निर्माण झालेली असून ती दिवसेंदिवस बिकट होत आहे.

माहिती स्रोत व अभ्यासाची कार्यपद्धती :-

प्रस्तुत शोध निबंधाकरिता गोळा करण्यात आलेली सामग्री ही मुख्यत्वे द्वितीयक स्वरूपाची असून ही माहिती वृत्तपत्रे, दैनिके, मासिके, शोध पत्रिका यातील प्रकाशित साहित्य/लेखामधून तसेच पुस्तके आणि इंटरनेट यांच्या सहाय्याने प्राप्त करण्यात आलेली आहे. व या शोध निबंधाच्या लेखनाकरिता स्पष्टीकरण पद्धतीचा वापर करण्यात आलेला आहे.



अभ्यास क्षेत्र :-

महाराष्ट्र राज्य हे भारताच्या सर्वात विकसनशिल राज्यांपैकी एक असून लोकसंख्येच्या बाबतीत दुसरे मोठे राज्य आहे. भारताच्या पश्चिम भागात महाराष्ट्राचे स्थान असून त्याचा अक्षावृत्तीय विस्तार हा  $15^{\circ}34'46''$  उत्तर अक्षांश (मुख्य भूभाग) ते  $22^{\circ}02'13''$  उत्तर अक्षांश तर रेखावृत्तीय विस्तार हा  $72^{\circ}36'44''$  पूर्व ते  $80^{\circ}43'13''$  पूर्व रेखांश दरम्यान आहे. महाराष्ट्र राज्य 36 जिल्ह्यांत विभागलेले असून या जिल्ह्यांचे सुमारे 66 म्हणजेच पुणे, नाशिक, औरंगाबाद, कोकण, नागपूर व अमरावती हे महसुली विभाग आहेत (नकाशा क्र. 1)



महाराष्ट्र राज्याचे एकूण भौगोलिक क्षेत्र हे सुमारे 3,06,00,000 हेक्टर असून क्षेत्रफळाच्या दृष्टीने महाराष्ट्र भारतातील तिसरे राज्य आहे. देशाच्या एकूण क्षेत्रफळाच्या तुलनेत राज्याचे एकूण भौगोलिक क्षेत्र हे 9.36% इतके आहे. महाराष्ट्राची लोकसंख्या ही 2011 च्या जनगणनेनुसार 11,23,72,972 इतकी असून येथील लोकसंख्येपैकी 4.63 कोटी पुरुष व 4.40 कोटी स्त्रिया आहेत. तसेच येथील लोकसंख्येची घनता 330 कि.मी.<sup>2</sup> (चौ.कि.मी.) इतकी आहे.

महाराष्ट्रातील पाणी संकट पार्श्वभूमी:-

महाराष्ट्रातील जलसंपत्तीचा मान्सूनद्वारे होणारे पर्जन्य हा एकमेव स्रोत आहे परंतु राज्याच्या पश्चिमेस असणाऱ्या सह्याद्री पर्वत रांगांमुळे अरबी समुद्रातून येणारे नैऋत्य मान्सून वारे अडविले जातात. त्यामुळे कोकण किनारपट्टीवर 2000 ते 3500 मि.मी पाऊस पडतो. तर सह्याद्री पर्वताच्या पूर्वेस असणाऱ्या पश्चिम महाराष्ट्र 500 ते 750 मि.मी इतका अत्यल्प पाऊस पडतो. म्हणजेच महाराष्ट्रात पर्जन्याचे असमान वितरण होते व त्यामुळे काही ठिकाणी दुष्काळी परिस्थिती निर्माण झाल्याचे दिसते.

अभ्यास प्रदेशातील वाढती लोकसंख्या व या लोकसंख्येचे उच्च राहणीमान, शिक्षण, रोजगार व पाण्याचे दुर्भिक्ष या कारणांमुळे ग्रामीण लोकसंख्येचे शहरी भागात होणारे स्थलांतर यामुळे शहरी भागात पिण्याच्या, औद्योगिक वापर तसेच घरगुती वापरासाठीच्या पाण्याच्या मागणीत मोठी वाढ निर्माण झाल्याचे दिसते. शहरातील





लोकसंख्यावाढ व पाण्याच्या बेसुमार वापरामुळे जलस्रोतांमधील शहरांसाठीच्या पाणी वापराचे आरक्षण वाढत असून ग्रामीण भागातील शेती तसेच पिण्याच्या पाण्याचा प्रश्न गंभीर होत आहे. म्हणजेच अतिरिक्त लोकसंख्या तसेच अनियमित व अनिश्चित मान्सून पर्जन्य आणि उपलब्ध पाण्याच्या सुयोग्य व्यवस्थापनाचा अभाव यामुळे देशात तसेच महाराष्ट्रात जलसमस्या गंभीर रूप धारण करीत आहे.

महाराष्ट्रातील लोकसंख्येत मागील काही दशकात बहुसंख्येने वाढ झाली असून राज्यात पायाभूत सुविधांचा विकास, औद्योगिक प्रगती झाली तसेच येथील शेती क्षेत्रातही हरितक्रांती झाली व त्यामुळे पाण्याची मागणीत मोठ्या प्रमाणात झाली परंतु त्या प्रमाणात जलसंपत्तीचे नियोजन व व्यवस्थापन होऊ न शकल्याने अद्यापही महाराष्ट्रात १५८६ गावे व ४३०५ वाड्यांना पिण्याच्या पाण्याचे दुर्भिक्ष असून या गावांना पिण्याच्या पाण्याकरीता टँकरने पिण्याचे पाणी पुरविले जात असल्याचे दिसून येते, तर ८०% शेती ही कोरडवाहू स्वरूपाची असल्याचे दिसते, महाराष्ट्रातील पाणी समस्यांचा आढावा:-

महाराष्ट्रात बाराचार पाणी संकट निर्माण होत असून मागील ०५ वर्षात राज्यात दुष्काळाची स्थिती निर्माण झालेली आहे. व त्याचा आढावा पुढील प्रमाणे :-

१. १९७२च्या दुष्काळापेक्षाही गंभीर परिस्थिती राज्यात २०१३ साली निर्माण झाली व या काळात राज्यातील सुमारे ११८०१ इतके गावे शासनाच्या वतीने दुष्काळग्रस्त घोषित करण्यात आलीतसेच महाराष्ट्रात २०१४मध्येही दुष्काळाची तीव्रता कमी होण्याऐवजी पुनःच वाढली, या काळात दुष्काळग्रस्त गावांची संख्या १९०५९ एवढी असून त्यात मराठवाड्यातील ८००० हून अधिक गावांचा समावेश असल्याचे निदर्शनास येते, या पाणी टंचाईचा सर्वाधिक परिणाम मराठवाड्यातील सुमारे १ कोटी ३० लाख लोकांवर झाल्याचे अभ्यासवारून स्पष्ट होते.

२. राज्यात पुनःच एकदा २०१५ मध्ये दुष्काळाची भीषणता निर्माण होतांना दिसून आली व यावर्षीही राज्य सरकारने १४७०८ हून अधिक गावांचा समावेश दुष्काळग्रस्त गावांच्या यादीत करण्यात आला, या दुष्काळाची ही भीषणता एवढ्यावरच थांबली नाही तर त्याच्या पुढील वर्षी म्हणजे २०१६ मध्ये परत उच्च न्यायालयाच्या आदेशानंतर २९६०० गावांमध्ये सरकारला दुष्काळ जाहीर करावा लागला.

३. महाराष्ट्रात २०१७-१८ मध्ये अपु-या पर्जन्यामुळे या वर्षातही दुष्काळाची परिस्थिती ओढावली, या वर्षी राज्यातील २६ जिल्ह्यांमधिल १५१ तालुक्यांमध्ये उन्हाळ्याच्या चार ते पाच महिने आधी ऑक्टोबरमध्येच दुष्काळ जाहीर करावा लागला, तसेच ऑक्टोबर २०१८ नंतर हे संकट आणखीच वाढले जानेवारी २०१९ मध्ये दुष्काळग्रस्त गावांच्या यादीत आणखी ९०० गावांची संख्या वाढली, ती जून पर्यंत वाढत राहिली, फेब्रुवारी २०१९ मध्ये राज्यातील उर्वरित ४५०० पेक्षा जास्त गावांना दुष्काळाच्या सवलती जाहीर करण्यात आल्या.

४. राज्यातील बरेचशा जिल्ह्यांतील विविध तालुक्यांमध्ये उन्हाळ्यात २०१९-२० आणि २०२०-२०२१ मध्येही दुष्काळाचे सावट निर्माण झाले व पाणी समस्या ओढावली.

एकंदरीत, महाराष्ट्रात सातत्याने दुष्काळी परिस्थिती निर्माण होत असून येथील शेतक-यांच्या हाती पाण्याअभावी बरील काळात पिके लागली नाहीत, त्यामुळे बेरोजगारी, उपासमार, आदी प्रश्न निर्माण झाले या शिवाय जनावरांची देखील हानी मोठ्या प्रमाणात झाली. मागील ०८ वर्षात राज्यात दुष्काळाची म्हणजेच पाणी टंचाईची समस्या वाढतच असल्याचे दिसून येते. २०२१ यावर्षी पाऊस जास्त झाल्याने महाराष्ट्राला दिलासा मिळाला असला तरीही दरवर्षी प्रमाणे भर उन्हाळ्यात येथे दुष्काळाचा प्रश्न निर्माण होईल यात शंका नाही.

निष्कर्ष :-

१. महाराष्ट्रातील लोकांना मागील ८ वर्षांपासून सातत्याने ओल्या किंवा कोरड्या दुष्काळास तसेच उन्हाळ्यात पाणी टंचाई ला सामोरे जावे लागते.

२. महाराष्ट्रात होणा-या एकूण पावसाच्या तुलनेत निम्माहून अधिक पाऊस एकट्या कोकणात पडतो तर कायम स्वरूपी दुष्काळी असणारे महाराष्ट्रात सुमारे ७४ तालुके आहेत.

३. महाराष्ट्रातील अनेक शहरांमध्ये पाणी टंचाईची समस्या दरवर्षी निर्माण होत असून शहरांची संख्या दिवसेंदिवस वाढत आहे.

४. नैसर्गिकरित्या मुबलक प्रमाणात जलसंपत्ती महाराष्ट्रात उपलब्ध असूनही त्यांच्या सुयोग्य नियोजनाचा व व्यवस्थापनाचा अभाव आहे परिणामी पाणी टंचाईची समस्या उत्तरूप धारण करत आहे.

५. राज्यातील पर्जन्याचे वितरण असमान असून भूजल उपस्थितीचे प्रमाण अधिक असल्याने उन्हाळ्यात येथील अधिकांश जलस्रोत आटतात.



महाराष्ट्रातील पाणी संकट समस्येवरील उपाय :-

१. महाराष्ट्रातील जल दुर्भिक्ष रोखवारीता येथील सर्व जल साठ्यांचे स्वास्थ्य सुधारणे आवश्यक आहे.
२. महाराष्ट्र राज्यातील जलसंकट दूर करण्याकरीता गिकांसाठी टिबक, तुषार व गूक्षम सिंचनपध्दतींचा अवलंब, सिंचन क्षमतेच्या पूर्ण वापर तसेच जललेखा परिक्षण इत्यादी उपाययोजना करण्यात याव्यात.
३. महाराष्ट्र राज्यातील जलसंकट दूर करण्याकरीता जलसंधारण, भूजल पुनःभरण, प्रदूषित पाण्यावर प्रक्रिया आदि कार्यात स्थानिक लोकसहभाग वाढविणे गरजेचे आहे.
४. महाराष्ट्र राज्यातील जलसाक्षरतेकरीता व्यापक स्वरूपात जगजागृती होणे आवश्यक आहे.

संदर्भ सूची

१. <https://mr.wikipedia.org/wiki/महाराष्ट्र>
२. [https://newschecker.in/mr/marathi/महाराष्ट्रातील\\_पाणी\\_संकट](https://newschecker.in/mr/marathi/महाराष्ट्रातील_पाणी_संकट)
३. <https://hindi.indiawaterportal.org/content/maharashtra-antaila-jalasamasayaa-sadayasathaitai-samasayaa-va-apaayayajanaa/content-type-page/50767>
४. श. काळे, भगवान (२३ जानेवारी १९८८), "सन्तुक्त महाराष्ट्र काल आणि आज", सन्केत प्रकाशन, जालना. पान २९९.
५. "महाराष्ट्र", भारत सरकार, गृह खाते, नॅशनल इन्फॉर्मेटिक्स सेंटर (एनआयसी) (PDF).
६. महाराष्ट्र शासनाचे अधिवृत्त संकेतस्थळ.



# *B. Aadhar*

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2022

(CCCXXXVII) 337

The Contribution Of The Great Thinkers  
And Saints In The Making Of India



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social

Research & Development  
Training Institute Amravati

Editor

Dr. Maya S. Watane

Head, Dept. of Political Science  
Smt. Kesharbai Lahoti  
College, Amravati

Executive Editor

Dr. V. L. Bhangdia

Principal  
Smt. Kesharbai Lahoti  
College, Amravati



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Dept. of Political Science

Smt. Kesharbai Lahoti College, Amravati

For Details Visit To: [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com) Aadhar International Publication





20	राष्ट्रनिर्मितीत लोकमान्य टिळकांच्या राष्ट्रवादाचे योगदान	डॉ. बबिता येवले	85
21	महात्मा गांधी यांचे स्वातंत्र्य लढ्यातील योगदान	प्रा.डॉ. तिर्थनंद बन्नगरे	88
22	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व्यक्तीदर्शन : राष्ट्रसंतांचा जीवनप्रवास	डॉ. साहेबलाल एच. भैरम	93
23	भारतीय विचारवंतांचे व संतांचे भारताच्या जडणघडणीत योगदान	प्रा. डि. बि. भुईभार	95
24	संत तुकडोजी महाराज यांचे शैक्षणिक कार्य	डॉ. चैनलाल एस. राणे	99
25	भागवत धर्माची पताका —संत ज्ञानेश्वर	डॉ. चैनलाल एस. राणे	99
26	वंदनिय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे राजकीय व सामाजिक योगदान	प्रा. मनोज के. सरोदे	103
27	स्वतंत्र प्रज्ञेचे विचारवंत : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज	प्रा. डॉ. वैशाली बाबुराव कोटबे	108
28	राष्ट्रीय चळवळ: महात्मा गांधी	डॉ. शर्मिला अशोक साबळे	111
29	छत्रपती शाहू महाराज यांचे विविध क्षेत्रात मोलाचे योगदान	प्रा.डॉ. लखपती वा. गायकवाड	118
30	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व कार्य	डॉ.जयवंत पिराजी जुकरे	120
31	स्वामी विवेकानंदांचे शिक्षण विषयक विचार	सहा. प्रा. राजाराम नामदेव निगडे/डॉ. महेश नारायणराव मोटे	125
32	कर्मयोगी संत गाडगे महाराज : एक अदभूत रसायन	प्रा. निकेश दिगांबरराव काळे	128
33	संत कवयित्री जनाबाईंच्या अभंगातील सामाजिक	प्रा. डॉ. नरेंद्र पाखरे	132
34	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या शैक्षणिक दृष्टिकोनाचे अध्ययन.	प्रा.डॉ.रमेश इंगोले	135
35	राष्ट्रसंतांची ग्रामोद्धारक चळवळ	प्रा.डॉ. दिनेशचंद्र की. राऊत	138
36	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे बौद्ध धम्म विषयक कार्य	प्रा. सतोष मारोतराव रामटेके	142
37	गांधी प्रतिबिंबित महिलाओं कि सहभागिता : एक चिंतन	सतीश माधवराव वाटाणे	148
38	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के काव्य में सामाजिक चेतना	प्रा. डॉ. सुशांत एस. ठोके	152
39	भारतीय जडणघडणीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची सामाजिक कार्ये	प्रा. सुजाता पाटील	155
40	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे शिक्षण विषयक विचार	प्रा.सौ.सुषमा सु.जाजू	161
41	आधुनिक भारताच्या जडण घडणीत छत्रपती शाहू महाराजांचे योगदान	प्रा. प्रमोद रामकृष्ण तायडे	165
42	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे वैश्विक क्षेत्रातील योगदान	डॉ.विजय रामदास तिरपुडे	168





**राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के काव्य में सामाजिक चेतना**  
**प्रा. डॉ. सुशान्त एस. ठोके**  
**हिंदी विभाग प्रमुख महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती**  
**Email :sushantsthoke@gmail.com**

विश्व में प्रायः देखा गया है की जब समाज अपना नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अस्तित्व खो देता है तब समाज में अराजकता, हिंसा बढ़ती है जिससे समाज अधोगति की ओर जाता है और तब समाज की जरूरतें ही महापुरुषों को जन्म देती है। महापुरुष समाज की तत्कालीन परिस्थिती का गहन अध्ययन करते हैं तदोपरांत समाज की सोयी हुई चेतना को जगाने का प्रयास करते हैं। इन महापुरुषों की यह विशेषता रही है कि उनकी बाणी में एक अजीब सी शक्ति होती है। समाज में 'व्यक्ति' की चेतना को वह पहले जगाते हैं और व्यक्ति से शुरू हुई यह चेतना की ज्योति अजब सामूहिकता का रूप लेती है। जिससे समाज अपना अपना आत्मपरीक्षण कर अपनी गलती को कुछ हद तक स्वीकार करता है। और धीरे-धीरे तत्कालीन परिस्थितीयाँ बदलने लगती हैं तथा समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

भारतीय मध्ययुगीन काव्य परंपरा में संत साहित्य का विशिष्ट योगदान है। इस संत काव्य परंपरा का प्रवर्तन दक्षिण भारत से हुआ। आलवार संतों तथा महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब और हिन्दी प्रदेश के संत कवियों ने लगभग एक साथ जनमानस को अपने साहित्य से उन्नेलित किया और जन-जागृती का कार्य किया। उन संतों की आध्यात्मिक साधना तो उल्लूकोटी की थी ही, सामाजिक और साहित्यिक चेतना भी प्रखर थी। भारतीय संस्कृति के संरक्षण में उन संतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इसीतरह महाराष्ट्र में जन्में संत तुकडोजी महाराज का योगदान संपूर्ण महाराष्ट्र में उनकी ओजस्वी वाणी द्वारा भजन के माध्यम से सामाजिक चेतना को उजागर किया है। तुकडोजी महाराज कवि - हृदयी थे। संत कवि देश और समाज किसी भी प्रकार की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक असमानता को देश की प्रगती में बाधा मानते हैं। संत तुकडोजी महाराज ने अपने काव्यों द्वारा युगीन समाज में फैली तमस्त रुढ़ियों एवं मान्यताओं के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई है। यह लोकधर्मी प्रवृत्ति मुकुंदराज - मोरचनाथ - नामदेव - कबीर से लेकर राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज तक में दृष्टीगत होती है राष्ट्र संत तुकडोजी महाराज भारतीयों को झकझोर कर जागृत करना चाहते हैं, उसके लिये वे जनजागृती करते हुए सुधार और विद्रोह दोनों को अपनाते हैं। सामाजिक दृष्टि से वे सुधारक नजर आते हैं, तो राष्ट्रीय दृष्टि से विद्रोही। वैसे भी संत विद्रोही एवं क्रांतिकारी ही होते हैं।

तुकडोजी महाराज के काव्य का केंद्रबिंदू 'समाज' है। उन्हें पूर्ण विश्वास था की जब समाज चेतन्यपूर्ण होकर कर्तव्याभिमुख होगा उसी समय भारत का कल्याण होगा। विश्व का कल्याण होगा। इसी कारण 'समाज' की सोई 'चेतना' जगाने के लिये महाराज ने जीवन के अंतिम क्षण तक प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा तथा उसका प्रचार प्रसार कर समाज को जाग्रत करने का प्रयास किया है।

तुकडोजी महाराज के काल में समाज अंधश्रद्धा, बाह्यांडबर, कर्मकांड, जाति - पंथ - धर्म भेद की संकुचित भावना से ग्रस्त था। भारत में स्वतंत्रता की चर्चा चल रही थी किंतु देहात का मनुष्य रुढ़ी परंपरावादी था उसे जागृत करने का कार्य राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज में अपने प्रवचन, भजन, भाषण, साहित्य तथा सेवा से किया।

#### १) जाति-पाँति का विरोध :

संतों ने प्राचीन काल से ही इस जाति-पाँति, धर्म वर्ण भेद का तीव्र विरोध किया है राष्ट्र संत तुकडोजी महाराज भी इसी सुधारक संत परंपरा में आते हैं।

"जात-पात का ब्येध हटाकर, मानव राज्य बनाएँ हम।

आतिशबाजी कौन उड़ाया, खुशी के बाजे बजाएँ हम ॥"

तुकडोजी महाराज यह जानते थे कि जबतक जातिभेद नष्ट नहीं होता तब तक देश में शांति स्थापित नहीं हो सकती। अंतः वे लोगो से आग्रह करते हैं कि जाति-पाँति का भेद मिटाकर हम मानवता की स्थापना करें। लोगो का विश्वास बढे और जाति-पाँति कि संकिर्ण विचारधारा का त्याग करें।

**२) अंधश्रद्धा का विरोध :**

मदनापुर के पास ही उसेगाव नामक गाँव के हनुमान मंदिर में महाराज का भजन आयोजित था। वहाँ उसने देखा कि मंदिर के सामने एक देवी रखी हुई है, जिससे पुरा गाँव डरता है। अतः उसे बकरे, मुर्गियों की बलि देते हैं। यह देख तुकडोजी महाराज ने लोगों को समझाया कि ईश्वर ने ही मनुष्य और प्राणी निर्माण किये हैं। जिनके सामने उसके पुत्र की बलि देने से वे खुश होंगे? अतः देवी भी खुश नहीं होती पर जब कुछ लोग देवी का डर दिखाने लगे तो स्वयं तुकडोजी महाराज ने उस देवी को वहाँ से हटाकर दूसरी जगह रखा। जिससे देवी का भय लोगों के दिमाग से भागा और उन्होंने मुर्गी, बकरा काटना बंद किया।

“ढूँढ़ते साधू हिमाचल बन - बनों में जायके।

पास का हिरा मुला और पुजते जा के पत्थर ॥”

इस तरह की अनेक अंधश्रद्धाओं को तुकडोजी महाराज ने मिटाकर लोगों में सामाजिक चेतना जागृत की और उन्हें समझाया कि ईश्वर प्राप्ति कर्मकांड से नहीं अपितु जनसेवा से प्राप्त होती है।

**३) स्वावलंबन :**

भारतीय संतो में यह परंपरा रही है कि वे सदैव आत्मनिर्भर रहें हैं दूसरो पर अवलंबित रहना उनके स्वभाव में ही नहीं था। इसलिए स्वावलंबी जीवन जीने का उपदेश उन्होंने लोगों को दिया है महाराष्ट्र में राष्ट्र संत तुकडोजी महाराज ने समाज में बेरोजगार, बेकारों को देखा था जिन्हें पारतंत्रता में अभिवचन मिले थे कि उन्हें काम मिलेगा, रोटी मिलेगी, कपड़ा मिलेगा, घर मिलेगा पर स्वतंत्रता के चक्काचौद ने सत्ताधारियों की औखो में गरिबी नहीं देखी, बेकारी नहीं देखी तब तुकडोजी महाराज ने ‘बदल गयी शासन की नीति’ कहकर समाज को स्वावलंबन का पाठ पढ़ाया तथा स्वयं रोजगार के लिये लोगों को उकसाया -

“दिक्रत न पड़े जीवन में

स्वावलंबी गर हो जन में,

अपनी कमाई खाना है।

दुसरो पर नहीं जीना है।”

**४) रुढ़ी - परंपराओं का विरोध :**

समाज में अंधश्रद्धा बढ़ने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण रुढ़ी - परंपराएँ हैं। अतः संतो ने इस रुढ़ी - परंपराओं का भी तीव्रता से विरोध किया है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज भी इस बात को जानते थे अतः उन्होंने भी इन अंधश्रद्धाओं को बढ़ाने वाली रुढ़ी - परंपरा पर करार प्रहार किया है। उनकी मान्यता थी थी की इन्हीं रुढ़ी - परंपरा के कारण प्रेम की बातें बिपडती हैं।

“बंधन है, बँदन - तिलक का, कहाँ लगाना किसने।

रुढ़ी की डोर जकड़ने लगी, प्रेम की बातें बिपडने लगी ॥”

भारतीय संतो की यह विशेषता रही है कि यह संत जिस समाज में रहते हैं, उसका अत्यंत सूक्ष्मता से अध्ययन करते हैं, इस अध्ययन के दरम्यान उन्हें समाज जाति - पॉलि, धर्म भेदा - भेद की भावना दिखती है। जिसे देखकर उनकी आत्मा करुणा से भरती है, इसी करुणावश समाज की सोई चेतना को जगाने के लिए अपनी व्यक्तिगत चेतना को सामाजिक चेतना में परिवर्तित कर समाज का भजन, कीर्तन, प्रवचन एवं भाषणों द्वारा मार्गदर्शन करते हैं तथा मानवतावादी दृष्टि देते हैं।

संत साहित्य के इस गहण अध्ययन के बाद स्पष्ट हो गया है कि संत कबीरदास से राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज तक सभी संतो ने निर्गुण ईश्वर में विश्वास राखकर ताकालीन समाज में पल रही समस्त गलत धाराणाओं का विरोध कर समाज को नई मानवतावादी दृष्टि दी। इसी कारण आज भी संतो के विचारों की उपयोगिता सिद्ध होती है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज आधुनिक कालीन संत होने के कारण आधुनिक काल की अन्य अनेक अडचनों से भी वे समाज को निकालना चाहते हैं।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज की दृष्टि पुराने अज्ञान में पड़े समाज को मानवतावादी समाज में परिवर्तित देखना चाहती है। उसके लिए उन्होंने जीवनपर्यंत सफल प्रयास किया। अतः उन्होंने अपने जीवन से अंतिम क्षणों में लिखा -

“इस विश्व की यात्रा हमारी

सफलता से पूर्ण हुई ॥

इच्छा - अनिच्छा कुछ नहीं ।





गुरुदेव की मर्जी रही।'

संदर्भ ग्रंथ :

1. लेखक : डॉ. पंडरीनाथ शिवदास पाटील 'राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के काव्य में सामाजिक चेतना : प्रकाशन ३ ए/१२७ आवास विकास, हंसपुरम कानपुर, प्रथम संस्करण २०१५
2. लेखक : वेद कुमार वेदलांकर : 'मराठी संत काव्य' : विकास प्रकाशन : ३११ सी बिश्व बैंक , कानपुर : प्रथम संस्करण २०००
3. लेखक : डॉ. पंडरीनाथ शिवदास पाटील 'राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज: जीवन और संघर्ष' : बान्या पब्लिकेशनस 3 A/127 आवास विकास, हंसपुरम नौबस्ता कानपुर, प्रथम संस्करण प्रथम २०१९

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

# ***B.Aadhar***

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

November -2021

ISSUE No- 328 (CCCXXVIII)

नवीन शैक्षणिक घोरणात संगीताची भूमिका



Prof. Virag S. Gawande

Chief Editor & Director  
Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati

Dr. Kaumudi Dattatry Kshirsagar  
Editor

Department of Music  
Sitabai Arts, Commerce  
& Science College Akola  
Dist. Akola.

**The Journal is indexed in:**

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

**Aadhar International Publication**





# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

**November -2021**

ISSUE No- 328 (CCCXXVIII)

नवीन शैक्षणिक धोरणात संगीताची भूमिका

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor :

Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Professor. Kaumudi Dattatry Kshirsagar

Editor

Department of Music

Sitabai Arts , Commerce & Science College Akola

**Aadhar International Publication**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the authors & publisher

**INDEX**

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	मन:शांती आणि स्वस्थ शरीर यासाठी संगीताची भूमिका	प्रा. वर्षा आगरकर	1
2	'स्वरांगिनी'—बंदिश रचनेत स्वर—शब्द संयोगाचे संयोजन	डॉ. अभय अरविंद गद्रे	3
3	ऑनलाइन संगीत शिक्षा का दायरा और सीमाएं	अमोल वासुदेवराव गावंडे	6
4	उच्च शिक्षासंस्थानों में संगीत	डॉ. राहुल मल्हारी भोरे	11
5	संगीत—एक ललित कला	सहा.प्रा. ज्ञानेश्वर बांपिलवार	15
6	समाज परिवर्तनात संगीताची भूमिका	डॉ. उमेश संतोषराव चापके	18
7	लोकसंगीत समाजकलेतील महत्वप्रधान गायनशैली	सहा. प्रा. संतोष मुकिंदा घंदरे	21
8	पं. विष्णू नारायण भातखंडे यांचे संगीत क्षेत्रातील व्यक्तीत्व व कर्तृत्व	प्रा. विशाल विजय कोरडे	23
9	लोककलेचे महत्व	प्रा. विद्या प्र. गावंडे	25
10	बंगाल जनजातीचे लोकसंगीत का सांगितीक सौंदर्य: शास्त्रीय विवेचन	वैभव प्रभाकर डंगवार	28
11	संगीत चिकित्सा : एक स्वास्थ्यवर्धक प्रणाली	प्रा.डॉ.कु. प्रिती. बी. इंगळे (वाकरांजर)	30
12	शरीर एवं मानसिक संतुलन में संगीत की भूमिका	सहा.प्रा. सुशिल अ. बाबरकर / डॉ. सौ. अर्चना अंभोरे	34
13	संगीत और अध्यात्मिकता	डॉ. श्वेता दीपक वेगड	37
14	संगीत और अध्यात्मवाद	प्रा. अनिता शर्मा	40
15	भारतीय संगीत चिकित्सा पद्धती	डॉ. सरिता एस. इंगळे	42
16	संस्कृती जोपासण्याचे एक माध्यम :-संगीत	सहा.प्रा. अमोल द. वाडवे	46
17	भारतीय शास्त्रीय संगीत :एक आध्यात्मिक शक्ती	Sangeeta Chati	48
18	मराठी साहित्य आणि संगीत	डॉ.सौ.सुरेखा रत्नपारखी	51
19	लोककलेचे सांगितीक महत्व	डॉ. प्रतिभा चं. पवित्रकार	55





20	ललित कलाओं में संगीत का स्थान	डॉ. नेत्रा श्रीकांत तेलहारकर	58
21	संगीत चिकित्सा	डॉ. मोनाली मसीह	61
22	संगीत चिकित्सा (Music Therapy)	डॉ. भाग्यश्री धनंजय मोकासदार	64
23	लोककलाओं में लोकसंगीत की महत्वपूर्णता	डॉ. मीनल भोंडे / सोनाली आसकर शिलेदार	66
24	संगीत चिकित्सा	प्रा.डॉ. खाडेश्वर संतोषराव मदनकर	68
25	संगीतकला आणि भारताचा सांस्कृतिक विकास	गंधार विश्राम कुलकर्णी	72
26	सांगीतिक चिकित्सा—सिध्दांत व प्रत्यक्ष उपयोगिता	डॉ. प्राजक्ता मोहन हसबनीस	79
27	संगीत और अध्यात्म एक विवेचन	सहा. प्रा. गजानन बी. काळे	81
28	संगीत कला: उपजीविकेचे एक सशक्त साधन	प्रा- किरण प्रकाश सावंत	84
29	आख्यानाचे लोककलेतील स्थान	प्रा. जगनाथ इंगोले	87
30	साहित्य व संगीत	प्रा.डॉ. साधना हरणे (मोहोड)	89
31	scope and limitations of online music theory	प्रा. डॉ. जयश्री विश्राम कुलकर्णी	93
31	सिध्दांतिक शास्त्र आणि संगीत कला	प्रा. डॉ. मुक्ता महल्ले	100
32	संगीत आणि सामाजिकशास्त्र	प्रतिभा क्षिरसागर	102
33	संगीत रोजगाराचे विविध आवाम - एक अभ्यास	प्रा. वैशाली चौरपगार (मोहोड)	105
34	महाराष्ट्राच्या लोकसंगीतामधील विविध अंतरंग	प्रा. डॉ. सुधीर मोहोड	109
35	ऑनलाईन संगीत शिक्षण पध्दती—मर्यादा आणि व्याप्ती !	प्रा. डॉ. ज्वाला नागले	111
36	Stress management through Music	Ms. Uttara Ratansing Tadavi	117
37	Music-For Mentally Challenged?	Ms. Mitali Katarnikar-Prabhune	119
38	Role of Hindustani Classical Music Therapy	Dr. Ajaykumar G. Solanke	123
39	Role of Music in Academic Stress Management	Dr. Niraj Lande	126
40	Chronicleing Classical Music is Dispersion of Culture.	Miss. Amruta Vinayrao Kale	129
41	Role Of Music In Academic Stress Management	Dr Prachi S. Halgaonkar	133

**संस्कृती जोपासण्याचे एक माध्यम :- संगीत****सहा.प्रा. अमोल द. वाडवे**(संगीत विभाग) महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, अमरावती  
amolwadve1978@gmail.com, Mob No.: 9326112707

**सारांश :-** भारतीय संस्कृतीत अनेक जाती धर्माने वास्तव्य आपणास पहावयास मिळते. भाषा, रंग, वेशभूषा, चालीरीती अशा अनेक विविध परंपरेचा भारत देशात अवलोकन केले जाते. त्या त्या प्रांतात ज्या रितीरिवाजा नुसार धार्मिक मंगल प्रसंग असतात त्यांना साजरा करण्याकरीता वेगवेगळी ताल, धुन, नृत्य, वादय, लोकगीत इत्यादी प्रकार उपयोगात आणतात. त्यामुळेच संगीत हा मानवतेला दिलेला एक प्रकारचे वरदानच म्हणावे लागेल. संस्कृती जोपासत असतांना संगीत, हे प्रभावी माध्यम दिसून पडते. त्याचे अनुकरण आजही केले जाते. म्हणूनच संगीत कला ही संस्कृतीचा अंग मानल्या गेली आहे.

**प्रस्तावना :-** भारतीय कला ही भारतातील विचार, धर्म, तत्वज्ञान संस्कृती यांचे प्रतिबिंब आहे. संस्कृती ही समाजातील मानव कल्याणासाठी सदैव प्रयत्नशील असते. त्यामुळेच समाज प्रबळ व समृद्ध होऊ शकतो. भारतीय संस्कृती आणि सभ्यता समाजाच्या विकासा करिता कलेचे खूप मोठे योगदान आपणास पहावयास मिळते. भारतीय संस्कृतीत मंगल कार्य असो, अथवा दुःखद कार्य असो संगीताचे स्थान असतेच, भारत देशामध्ये घरोघरी वेगवेगळ्या ऋतू व सणांमध्ये संगीत गाणे वाजविणे हे संस्कृतीचे द्योतक आहे. भारतीय संस्कृतीचा विचार केल्यास मानव जीवनात कला, सभ्यता व लोकनिर्मात अविष्कार यामुळेच कलेचे महत्व टिकून राहण्यास मदत झाली आहे. पुजा, अर्चना, संगीत उपासना या सर्व बाबी पुरातन काळापासून चालत आलेल्या आहेत. आज ही याचा संस्कृतीचा भाग म्हणून मनुष्य अवलोकन करतो. प्राचिन काळातील मंदीरे त्यावरील नक्षी, चित्रे, वास्तू, शिल्प यामध्ये नृत्य व संगीत असलेली बरीच मुद्रा आपणास पहावयास मिळतात. यावरून हे लक्षात येते की संगीत कला ही मानवाला दिलेले वरदानच आहे. यामुळे पुढे संस्कृतीची जोपासना करताना कलेची जोड ही मिळतच असते. संगीत संस्कृतीचा उगम मनुष्याचा आस्थेचा व विश्वासाचा एक भाग मानावा लागेल, कारण मनुष्याने पुजा विचार याद्वारे आपले मन, स्वास्थ्य, सुदृढ, घाडसी ठेवण्याकरीता संगीत माध्यम अवलंबिले व त्याची जोपासना करत गेल्याने लोक जागरण होत गेले संस्कृतीचे अंग मानले गेले.

आध्यात्मिक जीवन उच्चकोटी कडे नेणारा वैदिक काळ समजल्या जातो. या काळात संगीत व शिक्षण यांना नव्या दिशा मिळायला सुरुवात झाली. गुरुकुल पध्दती, अनुष्ठान, यज्ञ, पुजा, संगीत गान इत्यादी या काळात अस्तित्वात होते. या काळात संगीत तशांच्या कला गुणांना विशेष मान दिला जात होता. वैदिक काळातील धार्मिक विधी, अवकाश, स्वर्ग यामुळे देवदेवतांचे वर्गीकरण झाले व त्या प्रमाणे पुजा, अर्चना साठी वेगवेगळे नियम, संगीत विभाजित झाले तरीही संगीत कला मात्र संस्कृतीचा अविभाज्य घटक म्हणूनच अस्तित्वात होती. आज ही वर्तमान काळात संगीत विषयक नवनविन प्रयोग कार्यक्रम होतात व कलेची जोपासना होते.

संस्कृती ही व्यापक संकल्पना आहे ज्या मध्ये सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, क्रीडा इ. बाबी समवेत विविध भाषा, पंथ, प्रथा, परंपरा विचारात घेतली जातात. त्याच प्रमाणे विविध वंश, कला हेही संस्कृतीचे विविध अंग मानल्या गेले आहे. कोणत्याही संस्कृतीचे जतन हे तिच्या सांस्कृतिक मूल्यावर अवलंबून असते आणि सांस्कृतिक मूल्य हे मानवाच्या आदिभौतिक व आध्यात्मिक उन्नतीवर अवलंबून असते. भारतीय संस्कृतीचे आध्यात्मिक स्वरूप आपल्याला परंपरेने प्राप्त झालेले आहे.

संगीत कलेचा विकास परंपरा यामध्ये घडून आलेले अमुलाग्र परिवर्तन यांचा विचार करायचा झाल्यास संगीताचा मूल स्रोत असणाऱ्या सामवेदापासून आजपर्यंत विकसित होणाऱ्या





संगीत कलेची विविध दालने आपणास गहावयास मिळतात. भारतीय संगीताची विशेषता म्हणजे नुसते गायन, वादन प्रयोगात्मक पद्धतीच नव्हती तर त्याचे ग्रंथकार, शास्त्रकार, संगीतज्ञ सुध्दा होते. त्यांनी संगीत शास्त्राला मानाचे स्थान मिळवून दिले त्यांनी आपल्या कृतीद्वारे व ज्ञानाद्वारे जन सामान्यात संगीत कलेची परंपरा कायम ठेवून संस्कृतीची खरी जोपासना करण्यात योगदान दिले आहे. मनुष्याच्या हृदयाला मंत्रमुग्ध करणारी व सर्व सृष्टीला रिझवणारी अशी ही संगीत कला व तीची परंपरा भारतीय संस्कृतीला लाभलेली आहे. कला सर्व मानव जातीला ऐक्य, बंधूभाव या सारख्या भावना निर्माण करतात. यामुळे समाजात संबंध सुदृढ होतात यामध्ये भावनिक व आध्यात्मिक ऐकता दिसून येते हे सुध्दा संस्कृतीचा एक भाग म्हणून आपण जोपासत असतो. संगीत परंपरेचे जतन त्याचे संवर्धन व त्याची जोपासना ही काळाची गरज आहे. या मुळेच आपली भारतीय संस्कृती टिकून ठेवण्यात कला सर्वोत्तरी माध्यम ठरते.

**निष्कर्ष :-** भारतीय संस्कृती टिकवून ठेवण्या करिता संगीत कला हे मुख्य अंग ठरते. मानव जातीला ऐक्य, बंधूभाव या सारख्या भावना निर्माण करतात. त्यामुळे समाजात संबंध सशक्त होतात. भारतीय कला ही भारतातील विचार, धर्म, तत्वज्ञान संस्कृती यांचे प्रतिबिंब आहे. संस्कृती ही समाजातील मानव कल्याणासाठी सदैव प्रयत्नशील असते, त्यामुळेच समाज प्रबळ व समृद्ध होऊ शकतो म्हणून संस्कृतीचे जतन करणे त्यातील कलेचे संवर्धन करणे, जोपासना करणे आज काळाची गरज आहे.

**संदर्भ :-**

१. भारतीय सभ्यता संस्कृती एवं संगीत — अंजली मित्तल २००३
२. भारतीय संगीताचा इतिहास श्री उमेश जोशी प्रकाशन, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोजबाद, आगरा
३. संगीत विशारद डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग (२००८) हाथरस



सहा प्रा. अमोल द.  
वाडवे

(संगीत विभाग)  
महात्मा ज्योतिबा फुले  
महाविद्यालय  
अमरावती

One Day International Interdisciplinary E-Conference On  
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS  
On 16<sup>th</sup> October, 2021 @

Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati., Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati. & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

मन एवं शरीर स्वास्थ्य के लिये संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका

#### ABSTRACT

संपूर्ण विश्व में ही मनुष्य को मन एवं शरीर स्वास्थ्य हेतु सदा जागृत रहना प्रथम कर्तव्य बन गया है। आज की व्यस्त जीवन प्रणाली में मनुष्य के शरीर पर हो रहे विपरीत परिणाम से मुक्ति पाने हेतु हमें मन एवं शरीर दोनों को तंदुरुस्त बनाना बहुत आवश्यक है। मानव में संगीत माध्यम से सजकता से हम आत्मकेंद्रित, भावनिक अंगों का विचार करते हुए मानसिक स्वास्थ्य एवं शरीर स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में सहाय्यता मिलती है। मनुष्य के आचरण में सुख प्राप्ति उच्चतरभावों को प्रेरित करना यही संगीत का मुख्य उद्देश्य है। भावनात्मक, क्रियात्मक, ज्ञानात्मक विविध पैनु होते हैं मुख्यताः। भावनात्मक पैनु को संतुलित बनाने में कला महत्वपूर्ण साधन है। इस भावनात्मक पैनु में मनुष्य के शरीर स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य का संबंध प्रमुखता रखता है।

प्रस्तावना :- आज की एस यंत्र युग और भागदौड़ के जगत में मानव के शरीर पर उनके तौरतीके, दिनचर्या, व्यस्तता इनका मिलाप होना बहुत ही मुश्किल हो गया है। फिर भी इस व्यस्त जीवन में मानव को अपने शरीर मन के स्वास्थ्य को हासिल करना बहुत आवश्यक हो गया है। यंत्र सामग्री के कारण वायुमंडल के बढ़ते प्रदूषण के कारण मानव को अनेक बीमारियों का शिकार होना पड़ता है। हमारे मन और शरीर को स्वाभाविक स्थिति में रखना ही स्वस्थ होता है। इसलिए हमें स्वस्थ को बनाये रखने के लिये मन, वचन, कर्म से निरंतर रूपसे प्रयास करना यही एक काम है। जीवन का आनंद उठाने के लिये यदी मन प्रसन्न हो तो, तन स्वस्थ होता है। तन, मन प्रसन्न व स्वस्थ रहे तो जीवन सुखमय होता है। इसलिए स्वास्थ्य हेतु सचेत रहना बहुत आवश्यक है।

समाज के व्यस्त जीवन चर्या में बच्चों पर काफी तनाव दिखाई पड़ता है, वह मानसिक तनाव एक तो पढ़ाई या घर, या समाज में विपरीत हो रहे अनुशासन से भी हो सकता है। बच्चे, जवान और बुजुर्ग इनपर भी कई प्रकार के तनाव वश अपना शरीर, मन स्वास्थ्य को जाने के उदाहरण मिलते हैं। इसविधिवासे मुक्ति पाने के लिए शरीर और मन को स्वस्थ करके अपना जीवन स्वस्थ एवं सुखमय बनाया जा सकता है। शरीर, मन स्वास्थ्य के लिए संगीत :-

मन के स्वास्थ्य हेतु हम योगविद्या का अभ्यास करते हैं। तब ही ध्यान धारणा में 'ओम' का उच्चारण करना पड़ता है। यह वही ओम है जो ब्रम्हांड में स्थित वायुमंडल में सदा

अविरत रहता है। सृष्टि की चरधर में नादरूपी ओम बसा हुआ है, विज्ञान ने भी यह माना है की, प्रकृति में नाद स्थित है। अनाहत नाद से संगीत का निर्माण हुआ है। प्राचीन काल से ही अपने दैनिक परिश्रम के बाद जब नर नारी शांत चित एवं प्रसन्न वदन से सामूहिक गायन, वादन, नर्तन करते थे उनमें दिन के परिश्रम का फलित उत्साह के रूप में मिलता था। आज संगीत में भी वही शक्ति समाहित है, जो मनुष्य के तन, मन स्वास्थ्य को निरोग तंदुरुस्त बनाने में सहायता प्रदान करता है।

मनुष्य जन्म से ही अपनी कानों से विविध प्रकार के संगीत का अनेक सुरों का श्रवण करता है। उसमें कंठसंगीत और वाद्यसंगीत दोनों का प्रभाव विशेष रूप से दिखाई देता है। नाद, लय, स्वर इससे प्रेरित होकर जन्म से ही मनुष्य अपने अंग प्रत्यांग को एक लय में नाचने, गाने की चेष्टा करता है। इस प्रकार वह अपने शरीर और मन को आत्मकेंद्रित करता है, जो संभवतः संगीत प्रभाव से ही होता है।

मनुष्य अपने जीवन में नये नये आयामों से संगीत का लुप्त उठाता है, कोई गाकर, कोई बजाकर या कोई नाचकर आनंद लेता है। किसी मंगल उत्सव, शादी जलसों में हमें अनेक युवा, बच्चे नृत्य (डान्स) करते दिखाई पड़ते हैं, जो संगीत की ध्वनि से उनकी तरंगों से घंटों घंटों नाचते हैं, कभी थकान महसूस नहीं करते और आनंद लेते रहते हैं। इस संगीत में वह इतने लीन हो जाते हैं, जो अपने अंग प्रत्यांग को काफी देर तक थिरकने को मजबूर हो जाते हैं, परंतु थकते नहीं हैं।



यह इनका थिरकना शरीर में हो रही हलचल से और मन के प्रसन्न स्वरूप से स्वास्थ्य को तंदुरुस्त बनाने की एक अच्छी कोशिश हो सकती है। आज दुनिया में संगीत के वाद्य एवं धून पर व्यायाम कसरत करने के प्रकार दिखाई पड़ते हैं, ऑरोबिक, हेल्थ सेंटर इन में धून चालू रखकर शरीर के व्यायामकिये जाते हैं, इस प्रकार संगीत का सहारा लेकर अपने मन मस्तिष्क और शरीर को और तंदुरुस्त बनाया जा सकता है, उसी प्रकार योगविद्या का भी संगीत के माध्यम से अभ्यास किया जाता है।

मन और शरीर की स्वस्थता अपने स्नायु मंडल के स्वस्थ कार्यक्षमता पर अवलंबित है। श्रवण किया गया संगीत मस्तिष्क स्थित धैर्यमस पर प्रभाव डालते हैं तब मस्तिष्क के यही अवयव पर संवेदना, अनुभूति, चिंतन, कर्त अवलंबित होते हैं। इसी कारण धैर्यमस पर प्रभाव डालने वाले स्वरों के माध्यम से व्यक्ति का मानसिक जगत संपूर्ण रूप से तरंगमय हो उठता है, जिससे अपना मस्तिष्क स्वस्थ अवस्था को प्राप्त होता है।

मनुष्य के आचरण में सुखप्राप्ति तथा उच्चतर भावों को प्रेरित करना यही संगीत का प्रमुख उद्देश्य है। मूलतः मनुष्य में भावनात्मक क्रियात्मक, ज्ञानात्मक तरह के विविध पैलू होते हैं। मुख्यतः भावनात्मक पैलू को संतुलित बनाने में कला महत्वपूर्ण साधन है। इस भावनात्मक पक्ष में मनुष्य के शरीर स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य का संबंध प्रमुखता रखता है। मन को स्वस्थ बनाने से ही मनुष्य जीवन विकसित होता है, और उसे स्वस्थ बनाने का उत्तम माध्यम संगीत है।

संगीत का माध्यम चाहे शास्त्रीयसंगीत हो या सुगम, लोकसंगीत हो या फिल्म संगीत व्यक्ति अपने रुचानुसार श्रवण करने की मानसिकता रखता है। मनुष्य स्वास्थ्य के बारे में सोचता है तब मानसिक और भावनिक अंगों का विचार किया जाता है। इसलिये मनुष्य स्वास्थ्य तंदुरुस्त रखने हेतु शरीर और मन के स्थिती का विचार आवश्यक है। आंतरिक शक्ति की अनुभूति आत्मसम्मान यह मानसिक स्वास्थ्य देता है इनको विकसित करने के लिए संगीत श्रवण करना यह एक अच्छा माध्यम है। इससे मनुष्य स्वभाव में सकारात्मक वृत्ति बढ़ती है। जिसकी फलश्रुति मानसिक, शरीर स्वास्थ्य उत्तम रखने में संगीत यह उत्तम माध्यम है।

निष्कर्ष :- आज की इस व्यस्त, भागदौड़ की जिन्दगी में शरीर स्वास्थ्य के साथ मन स्वास्थ्य भी जरूरी है। और यह हमें संगीत से स्वस्थ करने वाली परिपूर्ण कला ही साथ देती है। इसमें सभी प्रकार का संगीत मन को आता है, वह अपने मन को

प्रसन्न करता है उसे क्षमता पूर्ण बनाने में अपनी भूमिका स्पष्ट करता है। संगीत एक ऐसी कला है जिसकी रुची हर एक प्राणी मात्रा में होती है। अपने अपने पसंद के अनुसार सुनते हैं, संगीत में जादु जैसा असर है, यह कोई भी मनुष्य के मुख में आता है संगीत यह ऐसा माध्यम है जो आत्मा और मन में असर करता है। मनुष्य को अपने जीवन में आत्मिक सुख मिलना यह केंद्रबिंदु है और आत्मिक सुख याने आनंद यह शरीर को सुदृढ़ ता तंदुरुस्त बनाने में सहायता करता है। निष्कर्ष पद विचार करते हुये यही कहा जा सकता है जीवन का आनंद उठाने के लिए यदी मन प्रसन्न हो तो तब स्वस्थ होता है, तब, मन, प्रसन्न व स्वस्थ रहे तो जीवन सुखमय होता है।

संदर्भ :-

- 1) श्री. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग 'संगीत विशारद' वसंत प्रकाशन कार्यालय, हाथरस
- 2) डॉ. निशा रावत यु.जी.सी संगीत उपकार प्रकाशन, आगरा - 2
- 3) डॉ. स्वतंत्र शर्मा सौन्दर्य रस एवं संगीत
- 4) डॉ. किरण तिवारी संगीत एवं मनो विज्ञान



Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati.

Late Dattatraya Pusadkar Arts College, Nandgaon Peth, Amravati.

Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

Jointly Organized One Day International Interdisciplinary E-Conference on

"Role of Physical Activities, Health and Fitness in Today's Crisis"

On 16<sup>th</sup> October, 2021

## - CERTIFICATE -

This is to certify that सहा. प्रा. अमोल द. वाडवे has participated in One Day International Interdisciplinary E-Conference on "Role of Physical Activities, Health and Fitness in Today's Crises" organized by IQAC and Department of Physical Education & Sports, Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati, Late Dattatraya Pusadkar Arts College, Nandgaon Peth, Amravati and Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati on 16<sup>th</sup> October, 2021. He/She has presented / published a paper entitled मान एवं शरीर स्वास्थ्य के लिये

संगति की मरुतपूर्ण भूमिका

 Dr. Manoj Thakare Principal Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati	 Dr. Vijay Dantre Principal Late D. P. Arts College Nandgaon Peth, Amravati	 Dr. Gopal Varsh Principal Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Amravati	 Dr. Shridhar Dhanubhai Convener Director of Phy Edu Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati	 Dr. Shrikant Mahabhai Convener Director of Phy Edu Late D. P. Arts College Nandgaon Peth, Amravati	 Dr. Krunal Alaspure Convener Director of Phy Edu Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Amravati
--	--	--	---	---	---



International Research Fellows Association's

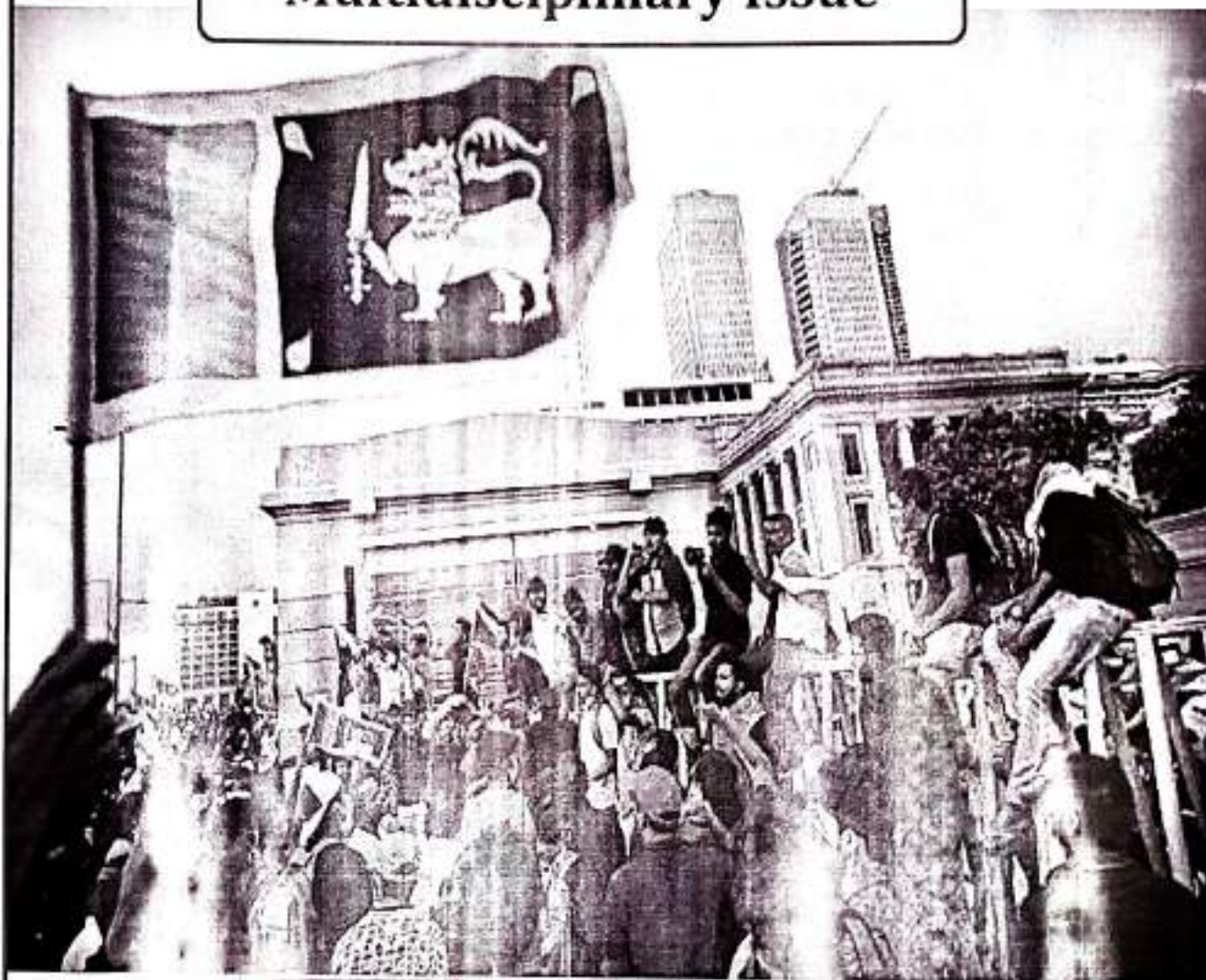
# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue 293

**Multidisciplinary Issue**



Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,

Assist. Prof. (Marathi)

MGV's Arts & Commerce College,

Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)

Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)

Mrs. Bhargavi Sonawane, Bhusawal (Marathi)

Dr. Rajay Sawar, Goa (Konkani)



April-2022

E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's  
**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal  
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal  
Issue-293

**Multidisciplinary Issue**

**Chief Editor -**

Dr. Dharmendra F. Dhangar,  
Assist. Prof. (Marathi)  
MGV's Arts & Commerce College,  
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

**Executive Editors :**

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)  
Dr. Gajanan W. Konde, Kinwat (Hindi)  
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)  
Dr. Rajay Pawar, (Konkani)

RESEARCH JOURNEY

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible, answerable and accountable for their content, citation, resources and the accuracy of their references and bibliographies/references. Editor in chief or the Editorial Board cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights. Any legal issue related to it will be considered in Yeola, Nashik (MS) jurisdiction only.*

*- Chief & Executive Editor*

**SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS**

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

**\*Cover Photo :** Sri Lankans protest outside the presidents office in Colombo, Sri Lanka. (Source-Internet)

**© All rights reserved with the authors & publisher**

**Price : Rs. 1000/-**



## INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
<b>English Section</b>			
01	The Roles of Mahatma Gandhi and Iqbal Nath Sarshar in The Novel Unreachable By Mulkraj Anand	Dr. Rajendra Sarode	05
02	An Angry Young Woman in Meena Kandasamy's Select Poems	Mrs. Rohini Ghoshmare	09
03	Ecological Concern in Aravind Adiga's 'The White Tiger'	Mr. P. S. Barve	13
04	A Critical Study of William Gibson's Novel Neuromancer As Cyber Text	Dr. Raji Patil	17
05	Chinua Achebe : A Quest of Identity through Literature	Dr. Dnyanesh Sathhai	21
06	Miss Raj Anand : A Voice of Suppressed Class	Miss Iti Tiwari & Dr. A. V. Mudgal	26
07	Pandit Nehru's Panchsheel for Peaceful 21 <sup>st</sup> Century World	Dr. P. S. Nardar	29
08	Future of Academic Libraries' Sustainability in Changing Information World	Dr. T. Joshi	31
09	Information and Communication Technology (Ict): Opportunity for Library Science Professionals	Dr. A. S. Bhakade	38
10	A Scientometrics Analysis of the Journals of Indian Library Association (JILA) : 2017-2021	Mr. Gautam Wani & Dr. Sudhakar	44
11	An Evaluation of Internet Use among Mahila Mahavidyalaya Students in Malegaon	Prof. S. S. Dixit	56
12	User Satisfaction Perspective with Model	Dr. S. S. Charkar	63
13	Semiotics of Emojis in the Digital Era : A Reflection	Dr. Prasannata Ramtirtha & Dr. S. S. Pawar	71
14	Misconceptions of Covid-19: The Role of Social Media in its Spread	S. D. Wakode & Dr. G. S. Bharkhi	74
15	Mobile and Internet Addiction among Youths	Dr. S. S. Chate	81
16	A Study of Need for Achievement among Male and Female Academics	Dr. S. S. Vitore	86
17	Impact of Covid-19 Pandemic on Mental Health Wellbeing	Dr. S. S. Sahare	89
18	The Relationship Between Emotional Intelligence and Happiness among College Students in Nashik District	Dr. Ramesh Nikam & Mr. P. S. Fadale	93
19	Relaxation Meditation for Stress Management of Traffic Police Personnel	Dr. S. S. Pawar	98
20	Population Foundation Growth in Kolhapur District (1991 To 2011)	Dr. Rajkumar	101
21	Phylogenetic Myxomycetous Biodiversity from Navegaon Biosphere Reserve, Maharashtra (India)	Dr. S. S. Sankar	104
22	Cardiovascular Endurance Status and Norms for Under 14 Boys	Dr. Manej Reddy & Dr. S. S. Bhawd	110
<b>हिंदी विभाग</b>			
23	भारत और विश्व के विद्यार्थियों की हिंदी शिक्षण संबंधी आवश्यकताएं	डॉ. ए. पी. पोहन	115
24	भारत में भारतीय मूल्य 'वर्तव्य' की रक्षा	डॉ. राजेश्वर	120



## **Information and Communication Technology (ICT) : Opportunity and Challenges for Library Science Professionals**

**Dr. Atul D. Wankhade**

Librarian

Mahatma Jyotiba Pule M.V. ,Amravati

Mobile - 7588085808

E-Mail :- lib.atulwankhade@gmail.com

### **Introduction:**

Today libraries are shifting their role from the custodian of traditional information resources to the provider of service oriented digital information resources. In this age of globalization, the importance of ICT to people generally and information professionals particularly cannot be overemphasized. This is true because ICT Facilitates quick and easy access to wide range of information/ information resources worldwide; In fact it is now difficult to imagine a world without information technology. The provision and use of ICT is a major part of the entire system of both the students, information professionals and the institutions.

#### **• What is ICT?**

The term "ICT" describes the use of computer-based technology and the internet to make information and communication services available to wide range of users. The term is used broadly to address a range of technologies, including telephones and emerging technology evinces. Central to these is the internet, which provides the mechanism for transporting data in a number of formats including text, images, sound and video.

#### **• Objectives of ICT:**

The general objective of this study is to determine the level of impact of ICT on cataloguing and classification of library materials. The specific objectives were.

- To identify the impacts of ICT on cataloguing and classification.
- To identify the constraints adduced to non-adoption of ICT-oriented cataloguing and classification service.
- To give access to digital learning materials, which are set to increase in both quality and quantity?
- To assist people to develop their ICT skills for accessing information.

#### **• Advantage of ICT**

Before embarking on an elaborate discussion of the issues involved in library training by deploying ICT, it is essential to understand the advantages of ICT in Library situation. These advantages include:

- Opportunities to deploy innovative methodologies and to deploy more interesting material that creates an interest in the librarians.
- Enables better management of library a librarian thereby improving the productivity of the tutor as well as the taught.
- Enables the librarian to concentrate on other tasks such as research and consultancy.
- Enables optimum utilization and sharing of resources among institutions thereby reducing the costs of implementing ICT Solutions.



### **Impact of ICT on Library Information professional:**

ICT have become ubiquitous with current and future Social and organizational development. The role of these technologies in national development is undeniably significant. As the positive effects of divided into two major categories, namely, Natural evolutionary changes on one hand and transformatory can be changes on the other. As natural evolution, the library and information science profession has harnessed ICT to perform old tasks better through the automation of housekeeping tasks such as reference work, bibliographic services, cataloguing serials, circulation and acquisition, which were performed more efficiently in an ICT environment

Transformatory Changes, on the other hand, include the divergence of new functions arising out of expanded, demand driven information society wider and/ or user needs. These transformative trends represent systematic changes that sustainability alters the boundaries of the profession.

### **Advantage of ICT information services**

- **No physical boundary:** The user of a digital library need not to go to the library physically, people from all over the world could gain access to the same information, as long as an Internet connection is available.
- **Structured approach:** Digital library provides access to much richer content in a more structured manner i.e. we can easily move from the catalog to the particular book then to a particular chapter and so on.
- **Preservation and conservation:** An exact copy of the original can be made any number of times without any degradation in quality.
- **Multiple accesses:** The same resources can be used at the same time by a number of users.
- **Space:** Whereas traditional libraries are limited by storage space, digital libraries have the potential to store much more information, simply because digital information requires very little physical space to contain them. When the library had no space for extension digitization is the only solution.
- **Cost:** The cost of maintaining a digital library is much lower than that of a traditional library. A traditional library must spend large sums of money paying for staff, book maintains, rent, and additional books. Digital libraries do away with these fees.
- **Networking:** A particular digital library can provide the link to any other resources of other digital libraries very easily thus a seamlessly integrated resource sharing can be achieved.

### **Issues in the digital library environment**

A number of activities together make up digital libraries and the development of it is dependent on a number of inter – related enabling factors. These include such as.

- **Technical issues:** Standards & security – Infrastructure development – Use of Appropriate technology
- **Collection issues:** Digitization - Acquisition of original digital works - Assess to materials.
- **Collaboration issues:** Resource sharing - Cooperative purchasing of - Information resources
- **Personal issues:** Staff commitment to new systems and Services - Changed staff training. Effect of automation on staff skills and professionalization
- **Financial issues:** Financial resources technologies - Changes to funding allocation
- **Client issues:** Client needs and client attitudes





- Legal issues: Copyright - Contracts - Privacy

#### **Challenges faced by librarian in digital information services:**

Creating "effective" digital libraries pose serious challenges for existing and future technologies. The integration of digital media into traditional collections will not be straight forward, like previous new media (e.g., video audio tapes), because of the unique nature of digital information, which is less fixed, easily copied, and remotely accessible by multiple users simultaneously. Some specific challenges are resource discovery, digital collection development, digital library administration, copyright and licensing, etc... Library of congress specified various challenges for building an effective digital library, which are grouped as broad categories as follows

- **Specialized staff:** Any Institution who have design digital library they must have a knowledgeable and skillful staff. They also have a technical knowledge for handling digital equipment's as well as digital information. In the digital library management has challenge to professional and skillful staff for keep library update and implements new activities. The library professional also have challenge to constantly update their own knowledge and skills base as to work in today's rapidly changing digital environment
- **Career advancement:** Equipping with the skill they now need is imperative. Job training and career advancement opportunities are vital in helping librarians overcome the challenges they face at work. New and emerging competencies which were not required five to ten years ago, such as data visualization and communication skills, are now required for librarians to become effective at what they do.
- **Understanding trends & the librarian's role in the research cycle:** The role a librarian plays in the process of connecting users to information goes beyond making content discoverable. New skill sets such as data management are necessary for librarians to stay ahead of research trends and provide users with the most relevant content in this era of information overload.
- **Staying current on policy changes:** The complicated nature of the industry means librarians have to constantly keep abreast of new developments and policies in the scholarly publishing space. It is not easy to decipher the regulations and understand how the changes will affect the library landscape.
- **Sustainable funding:** The digital library needs content financial support for managing digital information and provide instant access to the users. Funding for digital libraries are most frequent problem faced by professionals without essential find they are not able to manages, transfer, and disseminate information effective in this present days.
- **Retrieval of digital information resources:** Retrieval systems are necessary for users to obtain the information they require from the digital libraries. Though it is relatively straightforward in the case of textual information resources, it may be a subject of research for, pictures sounds and videos. Whatever the case, retrieved information must be delivered to the user. A digital library must also have some form of preservation mechanism. In that way there has to be a means of ensuring that what may be available today is still available tomorrow.
- **Protecting the intellectual property rights:** A major administrative challenge is in complying with copyright and intellectual property rights issues. The library Professionals have to discuss seriously with publishers on this aspect in order to evolve some mechanism



profitable to users, publishers as well as authors. Users may be charged for each access downloading from servers and each kind of digital library collection.

- **Right Management and Access Control in Digital Library:** A true digital library not only requires an organized collection of online digitized contents, it also requires that the contents be accessed and distributed as widely as possible to legal, users around the globe. Distribution does not mean just on site access, it also means allowing access to authenticated software are now available that allows a server to be configured to distribute information with -side or without right management. Most vendors of online digital contents supports password authentication to their products. The use of CGI scripting/proxy servers allow a subscribing institution to authenticate users from its server and then pass them through to the vendors with the assurance that they are in fact of legal users irrespective of their log-in-location.
- **Bandwidth problem:** Digital libraries are multimedia products such as, text, sound, graphics, pictures, photographs, video clips, etc. which require intensive use of bandwidth. Developing countries like India. Moreover, increased use of network for transferring data by more people would increase the load on network traffic. This is further compounded by the size transferred if it include full-text multimedia document. While simple text takes up only a small amount of space, pictures and graphics take up more, video and sound files are really space-hungry demanding much more space transmission time.
- **Preservation problems:** Through the enabling information created, manipulated, disseminated and locate with increasing convenience, preserving access to this information possess a great challenge. Unless preservation of digital information is actively taken, the information will become inaccessible due to changing technology platform and media instability.

#### **Information Explosion and need for Information Literacy:**

According to Jetty, Hopkinson & Vyas (2010) Information Literacy is the skill that is widely relevant and expands beyond the walls of classrooms into the world of social responsibility. Information revolution and the consistence explosive growth of knowledge have affected all aspects of life. Individuals were suddenly faced with myriad choice of information in both print as well as students to handle the information available in different type of formats. Collection development, organization and dissemination of knowledge or mere library orientation and bibliographic instructions are not enough but it has become responsibility of the library or information professionals to inculcate the information skills among the students and to train them in identifying, selecting, locating, retrieving, evaluating and presenting relevant information. The electronic media do not have assurance for quality, authenticity, validity and reliability, The process of reviewing, editing and publishing which is inherent part is of print media is somehow missing in electronic media specially the material published on internet cannot be guaranteed. Hence this pressing need of information skills force the academic libraries and the librarians to give serious thought to information literacy as students cannot acquire these information skills at their own.

- **User Education and Information Literacy:**

Information literacy services and instructions are now becoming essential components of academic libraries. Students do not make effective use of the library resources at their own. The lack of success can be attributed to the fact that students limited knowledge and restricted access



to the library resources. Due to legacy of inadequate schooling, lack of exposure to the school and public libraries and limited access to the resources, the majority of students deprived of even the basic library and information skills without which students find it difficult to cope successfully with their academic goals. Considering these facts librarians are imparting user education programs for the students since long but the introduction to the library by a single visit or single orientation lecture is not sufficient to give them confidence to handle the information environment which is too complex and changing too rapidly. More focus should be given on information retrieval skills, Critical thinking, data driven decision making and analytical problem solving skills. Information Literacy is a set of learning skills which enable a lifelong learner to effectively cope with massive amount of information, from a verity of media formats, such as books, journals, magazines, newspapers, audiovisual resources, database and internet. It is common to all learning environments, especially lifelong learning environment where learners become more self-directed, and assume greater control over their own learning.

#### **Conclusion:**

The world of information undergoing rapid change when one consider all the evidence of advancing technology, education reforms, societal changes, information literate customers, and globalization of "everything" and their impact on librarianship and libraries, it is crystal clear that 21st century libraries must be drastically different from all previous concepts. It requires a professional who embraces, and one who is more diverse. The library professionals who need to be changed to be benefitted from the technology and also give benefit to others. It is concluded that the digital information service is an essential part of the library environment and due attention must be paid while providing digital information services to the end users.

The emergence of information literacy has great impact on the academic librarianship. The success of information literacy initiatives is largely depending on the commitment of the academic librarian. This new complex role of librarian demand sound knowledge advanced teaching skills and ability to develop, deliver and facilitate effective learning experience. As information literacy is becoming an integral part of the modern education system the librarians should prepared to face the challenges and redesign their role.

#### **References:**

1. Shukla, R.K Automation of Library and Information centers : Concept publishing Company Pvt. Ltd, NewDelhi; ISBN 9788170225522 2.
2. Dhiman, Anil k.; Learn Computer Basics of Its Application in libraries, New Delhi, Ess Ess Publication 2002 Pg.58
3. Fadake, D.N., Library Automation & Modernisation: Pune, Universal Publication, 2008 Pg. 73-74. 4. Kumar, P.S.G.: Students, Manual of Library and Information Science ; Delhi ,B.R. Publishing Corporation.2002, Pg. 651-652. 5.
4. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3411261/>
5. Gadre, Asha and Rath, Prakashan; Librarianship to day, Pune, Dimand Publicationn, 2010.
6. Bhattacharya, Partha ( 2002 ) "Digital Information Services: Challenges and Opportunities". [http://members.tripod.com/siddique\\_q/Digitalinformationservices.pdf](http://members.tripod.com/siddique_q/Digitalinformationservices.pdf).
7. Vijay kumar N. Mulimani(2011). Management of digital libraries: challenges and opportunities for libraiains. UGC national seminar on Management of Digital/E-Resources,Sarojini Naidu Vanita Mahavidyalay college for women, Hyderabad.



# RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in  
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

**INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE**

On

**ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH  
AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS**

16<sup>th</sup> October, 2021

Jointly Organized by



IQAC, AND DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION & SPORTS  
MAHATMA JYOTIBA FULE MAHAVIDYALAYA, AMRAVATI. (M.S.)



LATE DATTATRAYA PUSADKAR ARTS COLLEGE, NANDGAON PETH,  
AMRAVATI. (M.S.)



NARAYANRAO RANA MAHAVIDYALAYA, BADNERA, AMRAVATI. (M.S.)

Special Issue on 16<sup>th</sup> October, 2021

[www.ycjournal.net](http://www.ycjournal.net)

43.	<b>DR. SEEMA V. DESHMUKH</b> Director of Sports And Physical Education Smt. S.R. Mohata Mahila Mahavidyalaya Khamgaon, Dist. Buldhana	<b>SIGNIFICANT ROLE OF NUTRITION IN ENHANCING SPORTS PERFORMANCE</b>	<b>154</b>
44.	<b>DR. SHRIDHAR R. DHAKULKAR</b> Director of Physical Education and Sports, Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati srdhakulkar@gmail.com	<b>EFFECT OF INDIAN TRADITIONAL TRAINING AND MODERN TRAINING METHODS ON SPEED AND MUSCULAR ENDURANCE OF WRESTLERS</b>	<b>157</b>
45.	<b>PROF. SUNIL G. DHAKULKAR</b> Physical Director, Shri. V. N. Art's and A N Commerce College, Mangrulpir	<b>ROLE OF MUSIC ON PSYCHOLOGY AND PHYSICAL FITNESS</b>	<b>160</b>
46.	<b>DR. PRASHANT GOVINDRAO GAWANDE</b> Director of Physical Education and Sports, Arts, Science and Commerce College, Chikhaldara, District Amravati, Prashantgawande3007@gmail.com	<b>COMBINATION OF DIAGONAL ATTACK, JUDGMENT KHO AND POLE DIVE; INNOVATIVE TACTICS FOR ATTACKERS IN KHO-KHO</b>	<b>162</b>
47.	<b>DR. AJAY S. BONDE</b> Director of Physical Education and Sports, Arts and commerce college, Bori Arab, Dist. Yavatmal, ajaysbonde@gmail.com <b>ASST. PROF. DR. RAVIJEET O. GAWANDE</b> Babaji Datey Kala Ani Vaniya Mahavidyalaya, Yavatmal District (M.S.) ravijeet.gawande123@gmail.com	<b>CORRELATION OF PHYSICAL FITNESS WITH EMOTIONAL INTELLIGENCE AND MENTAL IMAGERY OF INTER UNIVERSITY VOLLEY BALL PLAYERS</b>	<b>165</b>
48.	<b>PRADEEP K. INGOLE</b> Milind Mahavidyalay Mulawa Tq Umarkhed Dist. Yavatmal	<b>ROLE OF PHYSICAL ACTIVITY AND EXERCISE IN TODAY'S CRISIS</b>	<b>169</b>
49.	<b>DR. HARISH S. KALE</b> Director of Physical Education, Chhtrapati Shivaji Kala Mahavidyalaya, Asegaon Purna, Amravati (M.S.) harishkale1977@gmail.com	<b>STUDY OF THE EFFECT OF ZUMBA EXERCISE ON OVERWEIGHT FEMALE STUDENTS WITH NO DIETARY INTERVENTION</b>	<b>172</b>
50.	<b>SANJAY K. KALE</b> Director of Physical Education, Shri Shivaji College of Arts, Commerce & Science, Akola.	<b>OBESITY AND WEIGHT CONTROL</b>	<b>175</b>
51.	<b>PROF. SATISH ANANDRAO KALE</b> Physical Director, Appaswami Mahavidyalaya Shendurjana Adhao	<b>THE EFFECT OF MUSIC ON SPORTS AND SPORT PSYCHOLOGY</b>	<b>178</b>
52.	<b>DR. VINOD V. KAPILE</b> Director of Physical Education and Sports, Shri. Dr. R.G.Rathod Arts And Science College Murtizapur, Dist Akola kapile.vinod@rediffmail.com	<b>EFFECT OF THREE MONTHS YOGA PROGRAMME ON MENTAL IMAGERY AND COMPETITIVE ANXIETY OF COLLEGE LEVEL PLAYERS</b>	<b>180</b>
53.	<b>DR. SANGITA M. KHADSE</b> Director of Physical Education, Smt. Sindhutal Jadhao Arts and Science Mahavidyalaya Mehkar Dist. Buldhana	<b>PHYSICAL FITNESS, NUTRITION'S AND SPORTS PERFORMANCE</b>	<b>185</b>
54.	<b>AVINASH VITTHALRAO KHARAT</b> Director of Physical Education, Sant Bhagwan Baba Arts College, Sindhkedraja, Buldana akharat990@gmail.com	<b>EFFECT OF PRANAYAMA AND SURYANAMASKAR ON VO<sub>2</sub> MAX OF LONG DISTANCE RUNNER</b>	<b>187</b>





DR. SHRIDHAR R.  
DHAKULKAR

Director of Physical  
Education and  
Sports.

Mahatma Jyotiba  
Fule Mahavidyalaya,  
Amravati  
srddhakulkar@gmail.com

One Day International Interdisciplinary E-Conference On  
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS  
On 16<sup>th</sup> October, 2021 @

Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati, Late Dattatraya Pusadkar Arts College,  
Nandgaon Peth, Amravati. & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

EFFECT OF INDIAN TRADITIONAL TRAINING AND MODERN TRAINING METHODS  
ON SPEED AND MUSCULAR ENDURANCE OF WRESTLERS

#### ABSTRACT

The main purpose of the study was to find out effect of Indian traditional training and Modern training methods on Speed and Muscular endurance of wrestlers. The allied objectives of the study were: To compare the effect of Indian traditional training and modern training methods of wrestling on speed, muscular endurance. The study would be highlighting the differences which exist in Speed and Muscular endurance among the wrestlers practicing different training program and providing knowledge to the coaches and players regarding the need of development of Speed and Muscular endurance of wrestlers, may be helpful for the diagnosis of training program. The effectiveness of training program in developing Speed and Muscular endurance.

**KEY WORDS:** Indian traditional training, Modern training, Speed, Muscular endurance.

#### INTRODUCTION:

Sports in the present globe have become tremendously competitive. It is not the mere contribution or practice that brings out victory to an individual. Therefore, sports life is affected by various factors, like Sports Training, Coaches, and trainers are doing their best to improve the performance of the players of their country. Sportsmen personality is represented by his sport performance. Physical fitness, techniques and tactics alone are not enough. In virtually all sports, the educational component of sports training comes into sharp focus via methodical training. Speed, muscular endurance, and flexibility are a few examples. Athletes must be aware of the many forms of fitness in order to design an efficient training programme that focuses on weak or crucial areas.

**Purpose of the Study:** The main purpose of the study was to find out effect of Indian traditional training and Modern training methods on speed, muscular endurance.

**Hypothesis:** it was hypothesized that, there will be significant difference in Speed and Muscular endurance of Wrestlers practicing Indian Traditional training and Modern Training Methods.

It was further hypothesized that, Modern Training Method will be significantly better than Indian Traditional Training Method on Speed

It was further hypothesized that, Indian Traditional Training Method will be significantly

better than Modern Training Method on Muscular endurance

#### METHODOLOGY:

For the study one hundred fifty wrestlers were selected on random basis for the present study. Those who have participated in Amravati division competition all the selected subjects were ranged from 16 to 20 years of age. The subjects were converted into composite score and divided into three homogeneous groups respectively. Indian Traditional Training was employed to one group (50); Modern Training was employed to second group (50). The third group was not undergone any training and was treated as the control group (50). The duration of the experimental period was of 3 months. In the pre-test and post test, 50 meter dash was conducted for speed measurement and Sit-Ups Bent Knee test was conducted for Muscular Endurance

#### ANALYSIS OF DATA:

The data obtained from the Experimental groups before and after the experimental period were statistically carried out with descriptive statistics, paired sample t-test, Analysis of Covariance (One-Way ANCOVA), and the Least Significant Difference (LSD) Post hoc test employed. The level of confidence was fixed at .05 levels for all the cases. The data were compiled and analyzed using the Statistical Package for the Social Science (SPSS) for windows computer software (Version 16.0).



Group	Test	Mean	SD	SE	MD	t'-ratio
I.T.T.G.	Pre	41.740	9.705	1.945	5.120	8.521*
	Post	44.040	9.746			
M.T.G.	Pre	40.580	9.042	1.006	7.300	12.184*
	Post	44.100	9.022			
C.G.	Pre	40.020	11.483	2.280	0.280	1.772
	Post	40.640	11.313			

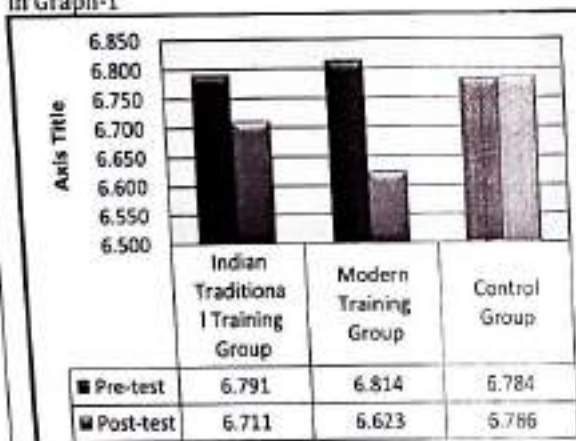
**TABLE - 1** The Summary Of Mean And Paired Sample 't' Test For The Pre And Post Tests On Speed Of Indian Traditional Training Group, Modern Training Group And Control Group

Group	Test	Mean	SD	SE	MD	t'-ratio
I.T.T.G.	Pre	6.791	0.626	0.124	0.080	7.113*
	Post	6.711	0.614			
M.T.G.	Pre	6.814	0.584	0.113	0.191	6.056*
	Post	6.623	0.544			
C.G.	Pre	6.784	0.614	0.124	0.003	0.364
	Post	6.786	0.623			

\*Significant at .05 level.

Table- 1 reveals that the 't' ratio values 7.113 and 6.056 of speed for Indian Traditional Training Group and Modern Training Group respectively are found to be significant at 0.05 level of significance. The table also shows that there is no significant improvement in case of control group as the calculated 't' ratio value 0.364 is not found to be significant at 0.05 level of significance.

The mean difference of pre-test and post-test of each group for speed has been depicted in Graph-1

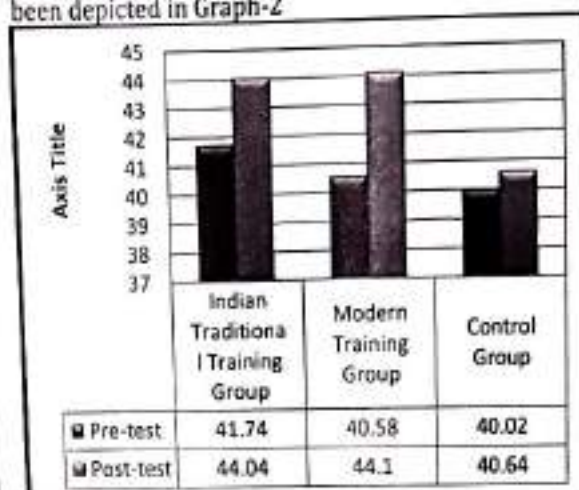


**GRAPH NO-1** Graphical Representation Of Speed Of Mean Difference Between Pre And Post Test Of Indian Traditional Training Group, Modern Training Group And Control Group

**TABLE - 2** The Summary Of Mean And Paired Sample 't' Test For The Pre And Post Tests On Muscular Endurance Of Indian Traditional Training Group, Modern Training Group And Control Group  
\*Significant at .05 level.

Table- 2 reveals that the 't' ratio values 8.521 and 12.184 of muscular endurance for Indian Traditional Training Group and Modern Training Group respectively are found to be significant at 0.05 level of significance. The table also shows that there is no significant improvement in case of control group as the calculated 't' ratio value 1.772 is not found to be significant at 0.05 level of significance.

The mean difference of pre-test and post-test of each group for muscular endurance has been depicted in Graph-2



**GRAPH NO-2** Graphical Representation Of Muscular Endurance Of Mean Difference Between Pre And Post Test Of Indian Traditional Training Group, Modern Training Group And Control Group  
**RESULTS:**

The finding of the study showed that the 't' ratio values 7.113 and 6.056 of speed for Indian Traditional Training Group and Modern Training Group respectively are found to be significant and there is no significant improvement in case of control group as the calculated 't' ratio value 0.364 is not found to be significant at 0.05 level of significance. There was F-value final adjusted means of Control Group, Modern Training Group and Indian Traditional Training Group in speed is 24.733, which is found to be significant at .05 levels. The mean difference values of Control Group and Modern Training Group (0.192), Control Group and Indian Traditional Training Group (0.082), Modern Training Group and Indian Traditional Training Group (0.110) reveal that there is significant difference in speed as the obtained mean difference



values are found to be significant at 0.05 level of significance

In muscular endurance the 't' ratio values 3.521 and 12.184 for Indian Traditional Training Group and Modern Training Group respectively are found to be significant and there is no significant improvement in case of control group as the calculated 't' ratio value 1.772 is not found to be significant at 0.05 level of significance. There was F-value final adjusted means of Control Group, Modern Training Group and Indian Traditional Training Group in muscular endurance is 23.378, which is found to be significant at .05 levels. The mean difference values of Control Group and Modern Training Group (2.916), Control Group and Indian Traditional Training Group (1.729), Modern Training Group and Indian Traditional Training Group (1.187) reveal that there is significant difference in muscular endurance as the obtained mean difference values are found to be significant at 0.05 level of significance.

#### CONCLUSIONS:

1. Comparison of speed between pre and post test of Indian Traditional Training Group and Modern Training Group showed significant difference.
2. It was concluded that Indian Traditional Training Group and Modern Training Group significantly improved speed of the wrestlers compared to control group and comparison between the experimental groups concluded that modern training group was better than Indian Traditional Training Group.
3. Comparison of muscular endurance between pre and post test of Indian Traditional Training Group and Modern Training Group showed significant difference.
4. It was concluded that Indian Traditional Training Group and Modern Training Group significantly improved muscular endurance of the wrestlers compared to control group and comparison between the experimental groups concluded that modern training group was better than Indian Traditional Training Group.

#### REFERENCES:

1. Research, Philip J. and Kroll, Walter Walter What Research Tells the Coach About Wrestling, (American Association for Health, Physical

Education, and Recreation, Washington, D.C., 2003).

2. Robergs, Robert A. and Scott, O. Roberts Fundamental Principles of Exercise Physiology for Fitness, Performance and Health, (Dubuque: Quebecor Printing Book Group, 2004).
3. Sanga, S.R. & Yadav, O.P. Training Manual Wrestling, (Patiala: Published by Sports Authority of India, NSNIS Patiala, printed Phulkian Press, India, 2002).
4. Sharma, O. P. and Bhadana, O. P. Psychology of Sports Performance, (Global Vision Publishing House, 2008).
5. Singh, Hardayal Sports Training General Theory and Methods, (Patiala: Publication Unit, Netaji Subash National Institute of Sports, 1984).
6. Uppal, A. K. Principles of Sports Training, (New Delhi: Friends Publications India, 2001).
7. Whitehead, N. Conditioning For Sports, (West Yorkshire: E. P. Publishing Ltd, 1975).

#### WEBSITE

1. <https://www.wisegeeek.com/what-are-the-five-components-of-fitness.htm>
2. <https://www.wisegeeek.com/what-is-motor-fitness.htm>